vol. 6 (Sept., 1882 – Aug. 1883)

(Formerly vol. 5, 6, & 7
were bound in one volume
and named as V. 2)

THE HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै बिबेक बिचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Sept. 1882.
Vol. VI.] [No. 1.

प्रयाग भाद्रपदकृष्ण ३ सं० १९३९
जि० ६] [संख्या १

पुस्तक प्राप्ति।

नारदीय भक्तिसूत्र तथा श्री वल्लभाचार्य कृत चतुश्लोकी। श्री हरिश्चन्द्र लिखित भाषा अर्थ सहित यह वैष्णव सम्प्रदाय का बहुत उत्तम ग्रंथ है भक्तिमार्ग क्या वस्तु है इसके देखने से अच्छी तरह प्रगट हो जाता है।

। रसिक मनोहर नख सिख ।

शिखा से नख तक प्रत्येक अङ्ग का वर्णन कवि लाला रघुनाथ प्रसाद बुन्देलखण्ड निवासी वख शीरियासत चरखारी कृत बनारस हरिप्रकाश यन्त्रालय में मुद्रित ; हमारी समझ मे इस तरह के ग्रन्थ जो अब तक बहुधा छप चुके हैं उन सबों से इसमें बहुत अधिक विच्छित्ति विशेष और चमत्कारी दिखलाई गई है ग्रन्थकार को पुस्तक प्राप्ति का अनेक धन्यवाद है ।

नया साल ।

सर्व नियामक सर्वान्तर्यामी परात्पर परमेश्वर की कृपा से कराल काल की गोलमाल में फस बेहाल न हो इस नए साल में आज हमने पग रक्खा यद्यपि वाचाल खलों ने हमे अभ्यसित एक चाल से अटकाय जंजाल में डाल कुचाल करना चाहा था पर अन्त को उनका सब गाल बजाना हम ऐसों की मराल गति के आगे बे ताल सुर की गीत हो गई फिर भी पद पद में लड़खड़ाना हमारे इस बालपन की शोभा ही थी क्योंकि ५ वर्ष की भुगत कितनी "अप्रगल्भा पदन्यासे वाचोनीरागहेतव: । सन्त्येकेवहुलालापा: कवयोवालकाइव" अस्तु जो हो गाई गीत का गाना क्या अब इस होनहार छठवें वर्ष के लिए षट् पद समान सारग्राही रसिक पाठकों से सविनय निवेदन करते हैं कि हम पर वैसी ही कृपा बनाए रहें जैसी अब तक बनाए रहे ; पाठकों से सहायता के लिए हम अधिक गिड़गिड़ाते हैं इसका यही कारण है कि समाचार पत्र का प्रचार इस प्रचलित समाज के बीच महा खट करम और अगूढ़ काम है छ शास्त्र छओ दर्शन का सारांश पिए हुए साक्षात् षडानन से सूर बीर भी पांच आदमी के साथ से बिना छठवें हुए कुछ नहीं कर सकते इसी से कहावत है "न दुःखं पञ्चभि: सह" खैर इस तीन पांच में क्या रक्खा

है हम अपने छूटे साल को खैर मनावें क्योंकि जीव इस मनुष्य के तन में वास कर काम क्रोध आदि दुर्जेय छ शत्रुओं से सदा घिरा रहता है तनिक चूका और मारा गया इसी से इसको निख्यारता देख बुद्धिमानों ने यह निष्कर्ष निकाला है "This is a state of trial not reward" उस अनोखे खिलाड़ी नट नागर से जहां सब अनोखापन देखा जाता है उसमें एक यह भी है कि वह अपनी इस रचना को जो साफ साफ गोरखधन्धा है कभी एक रूप में नहीं रहने देता ह्रास और वृद्धि का पखड़ सब के साथ लगाए हुए हैं देखो इसी १२ महीनों की कल्पना को दो २ कर ऋतु रूप से ६ टुकड़े कर डाला और उन्हें एक रूप में न रहने दिया इतनाही नहीं वरन उनमें दिनों को घटती बढ़ती का स्वांग लगा दिया तब निश्चय हुआ कि सर्जित वस्तु मात्र कभी एक रूप में नहीं रहती और न उनके ह्रास वृद्धि का क्रम ही किसी तरह ढीला पड़ सकता है तो इसी सूत्र के अनुसार क्या अचरज जो हमारे घटती के दिनों के अन्त आए हों और मङ्गलमयी वृद्धि की मोहनीसूरत देख हम इन नेत्रों की बहुत दिनों की प्यास बुझावें ; आशा ऐसी बुरी बला है जो मनुष्य मात्र के साथ लगा दी गई है साधक को सिद्धि का दरशन तो अदृष्ट के हाथ है पर आशा से मुंह मोड़ना किसी तरह बुद्धिमानी नहीं है ; हमारी वह आशा वह अदृष्ट वह हर्ष बढ़ाने वाली सिद्धि ग्राहक गण हैं ग्राहकों में भी केवल वे ही जो पत्र के रसिक पाठक हैं क्योंकि अरसिक नादेहनों को तो इसने पंचम वर्ष के स्वाहा के साथ स्वाहा में झोंक ग्राहक श्रेणी में जो खर पतवार आ लगे थे सब साफ कर डाला अब इस चिड़िए को मौत जिन्दगी उन्हीं के हाथ में है जो प्रेमी दयालु और सच्चे रसिक हैं। किमधिकम्।

आत्मशासन प्रणाली की कोई ठीक तदबीर नहीं होती।

हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे तक आत्मशासन प्रणाली की धूम मची है पर यह शासन प्रणाली कैसे चल निकले इस्का सहज उपाय अब तक कोई न किया गया; हमें तो यह बात शेखचिल्ली का खयाल सी जंचती है कि रोग नाशक दवा न खाय और माला ले दवा २ जपा करे सब रोग दोष दूर हो जाय; हमारा देश इङ्गलेण्ड नहीं है यह हिन्दुस्तान की पृथ्वी है अङ्गरेजों के लिए कानून दूसरा आब हवा दूसरी उनकी समझ हम से निराली बात व्योहार चाल चलन तौर तरीका रहन सहन सब में फरक तब क्या जरूरत है कि उनकी और हमारी शासन प्रणाली एकही तरह की हो और पार्लियामेण्ट के मेम्बरों के चुनने का दस्तूर जैसा वहां है उसी प्रकार का इलेक्टिव सिसटेम यहां भी प्रचलित किया जाय; क्या काम है कि एक नया शाका गाड़ा जाय आत्मशासन हमारा शुद्ध चित्त से यदि सरकार को मंजूर ही है तो क्यों पंचायत या चौधरायत वाले तरीके को जीमत न दी जाय और जो अब निरी सामाजिक या दीनी मामिले की बात समझी जाती है उस्से politics राज्य प्रबन्ध के इख़तियारात या खयालात चुभादिए जांय सब ठीक हो जाय न सांप मरा न लाठी टूटी; बिलायती ढंग का इलेकशन वाला दस्तूर हम लोगों में ठूसना साफ २ देशी चिड़िया मरद्दा भाषा है; जबसे इस्का विशेष आन्दोलन आरम्भ हुआ है तब से कितने हमारे भाई बन्धु इसे नई विपत्ति समझ घबड़ा २ आकर खोद २ इस्के बारे में हमसे पूछते हैं और हम भल २ उनके समझाने का यतन करते हैं कि इस तरह एक २ बड़े गांव और तहसीलियों में बोर्ड और कमेटी मुकर्र होगी जिस्मे सरकारी ओहदेदार कोई न रहेंगे और एक बड़ी कमेटी जिसे ज़िला कमेटी कहना चाहिए हर एक बड़े शहरों में होगी लो सरकार ने बड़ी कृपा की तुम्हारे देश के शासन का भार तुम्ही को सौंपे देती है तुम अब आजाद कर दिए जाओगे पर वे महात्मा एक नहीं समझते अन्त को जब घर चले जाते हैं; खैर हमें क्या इलेकशन अच्छा समझा गया है तो वही किया जाय पर

गाते २ व्याह नहीं होता उसकी तदबीर क्या सोची गई है हम देर से ज़ियादह इस पर को उलझे हुए हैं सो इसी लिए कि कहीं ऐसा न हो कि यह बात जिस उमङ्ग से उठाई गई उस तरह पर ख़ातिरख़ाह न हुई तो अन्त का सदा के लिए कलङ्क का टीका हिन्दुस्तानियों के लिलार पर दाग़ दिया जायगा कि सरकार क्या करे ये लोग तो इस लायक ही नहीं है और ऐसा होना कुछ असंभावित नहीं है क्योंकि लोग इसे अच्छी तरह समझते नहीं सरकारी नौकर तहसीलदार वगैरह के मारफत यह काम किया गया वैसेही जैसा स्कूल आदि की कमिटियों में तहसीलदार लोग शरीक हैं गूंगा कर चले आए कभी छिन भर के लिए भी शिक्षाविभाग की ऐसी इगी के समझ की माथा पिच्ची न करते होंगे ; इसी तरह पर इसे भी खर भरने का काम सा समझ कर बराय किसी तरह सिर का बोझा टाला सो हो चुका; हम यह नहीं कहते कि उनमें इस काम की योग्यता नहीं हैं किन्तु उन्हे इतनी फुरसत कहां कि तन मन से इस काम पर उतारू हों और इसके अभी थोड़े दिनों के लिए ऐसा आदमी चाहिए जो अपना undivided attention, तन मन सब इसमें लगा कर उतारू हो वैसा आदमी वही होगा जिसे अपना स्वत्व पहचानने की भर पूर समझ हो इसके उत्साह रखता हो और वे रोक टोक अपने मन से जो चाहे कर सके सरकार के वश बैठी २ देखा करे कि ये लोग क्या कर रहे हैं और जहां पर कुछ काम पाये भी बिगड़ते देखे सुधार दे तब हम अलबत्ता कहेंगे कि यह सच्ची आत्मशासन प्रणाली प्रचलित की गई ; जिसे दिहाती लोग समझें कि यह आत्मशासन क्या वस्तु है इस लिए अङ्गरेज़ी में जो रिज़ोल्यूशन छपा है उसका देश भाषा उर्दू या हिन्दी में तरजुमा हो गांव २ और तहसीलियों में हर एक पटवारी और ज़मींदारों के पास भेज दिया जाय ; यह तदबीर बहुत सुगम लोगों को इसके समझाने की है अभी बहुत कुछ इस बारे में लिखना है वह यथावकाश फिर प्रकाश करेंगे।

मिसर की लड़ाई और भारत खण्ड की अवनतिका लक्षण।

हमे अपने देश की हीन दीन दशा देख बड़ा खेद होता है कोई समय था कि यहां के लोग समर यश को

दीक्षा लेने का बड़ा उत्साह रखते थे और धर्म युद्ध को उपस्थित पाय ऐसे हर्षित होते थे जैसा चातक मेघ को देख सुखी होता है न केवल इस भू-लोक को दुष्टों के हाथ से छुटाने में प्रयत्न होते थे वरन दैत्यों से देवताओं को पीड़ित सुन देव लोक में भी देवताओं को जाकर उबारते थे शस्त्र को अपना भूषण और समर को अपनी सेज समझते थे वही आज का दिन है किरच का नाम सुन धोती खुल जाती है प्राण सूखने लगते हैं इसी भरोसे हमारे लेखिनी शूर तर्रार कलम वाले अपनी उन्नति की आशा करते हैं ; यह निश्चय जानिए हम हम खेती वनिज आदि में कितनी ही तरक्की करें कितना ही यंत्र कल आदि में दक्ष और प्रवीण हो जांय और कोटि यतन सरकार सेल्फ गवर्नमेंट के सिखाने का करै जब तक मन की कातरता न जायगी अपनी स्वतंत्रता और स्वत्व को न पहचानैगी और स्वास्थ्य और स्वतंत्रता की रक्षा हेतु धर्म युद्ध में दुष्ट दमन का उत्साह न आवैगा तब तक हमारी दुर्दशा के दिन कभी दूर न होंगे और सदा हमें दूसरे ही का मुंह ताकना पड़ैगा ; यह जानिए कि सब मनुष्य साधु और एक मत के किसी समय न हुए न होंगे महात्मा महम्मद और ईसा अपनी सी सब कुछ कर गए पर तौ भी जन समाज मात्र को एक सा न कर सके स्वभाव के खल और साधु सदाही होते रहैंगे तब खलों से साधु जनों की रक्षा के लिए धर्म युद्ध की आवश्यकता निरन्तर रहैगी ; लोग समझते हैं इस उन्नीसवीं शताब्दी का फल यही है कि चाहो कोई हमारा सर्वस्व छीन ले परन्तु हम हाथ जोड़ पैरों पड़ शान्त कर लें जिसे विद्रोह की आग न धधकने पावे पर यह भूल है खलों का स्वभाव ही है जितना उनसे दबता जाय उतना ही वे अधिक सताते जांय सिवा इसके यह काम कातरों ही का है हमारे आर्यों का तो यही प्रण रहा। "जो-रण हमैं प्रचारहि कोउ। लड़हिं सुखेन काल किन होऊ। छत्रियतन धरि समर सकाना। कुलकलङ्क तेहि पामर जाना" इन दिनों जब से मिसर की लड़ाई के समाचार यहां आए हैं तब से बहुतेरे लोग यही कहते हैं कि ये अङ्गरेज़ बड़े

स्वार्थलम्पट हैं उंगली छूते पहुंचा पकड़ते हैं खदेव का क्या क़ुसूर था। ज़बरदस्ती सूएज़ कनाल के बारे में उससे लड़ खड़े हुए ; हम कहते हैं इन्हों ने क्या बुरा किया क्या हमारे समान ये भी अपना सर्वस्व छोड़ बैठते ; याद रखना चाहिए कि ये अङ्गरेज़ हमारी तरह सन्तोषी साधू और अहेमक नहीं हैं कि एक न सही आधी ही में गुज़र कर लेंगे हाथ पांव कौन हिलावे सब तरह की झंझट कौन सिर पर लादे पराधीन ही रहे किसी तरह दिन तो कटता जाता है "कोउ नृप होउ हमें का हानी । चेरी छोड़ न होउब रानी ॥" हम कहते हैं धन और प्राण का लोभ कर स्वतंत्रता और विमल कीर्ति में बट्टा लगाय जिए भी तो क्या अन्त को मरैहींगे चिरकाल तक पराधीन रह जिसे दिन में सौ सौ बार मरना पड़ता है इससे रण में मरना कितना उत्तम है एक तो यश की पताका संसार में गाड़ जांयगे और जो जीत कर आए तो फिर क्या, मालामाल हैं सम्राट पदवी मानो हमारी बपौती होगी और जगत में सब ओर हमारी विजय पताका फहराती रहेगी इससे ये अङ्गरेज़ महाशय यदि स्वेज़ की नहर छोड़ बैठते तो कितनी बुराई होती मिसर वाले इन्हें डरा समझ और दबाते यहां तक कि इङ्गलिस्तान पर भी कुछ दिनों में दांत लगाते तो अचरज न था ; अब हम अपने हिन्दुस्तानी भाइयों को चिताते हैं कि तुम भी जो अपना भला चाहते हो तो अपने सामयिक प्रभु अङ्गरेज़ों के समान तन मन धन से अपनी कीर्ति और स्वतंत्रता की रक्षा करना इनके न भूले से सीखो और मिसर की लड़ाई में उत्साह पूर्वक इनके साथी हो पर ये बेचारे भी क्या करें सरकार ने हथियार इनसे छीन इन्हें निरा का पुरुष कर डाला युद्ध के उत्साह का अङ्कुर भी इनके जीसे उखड़ गया अब इन्हें मार २ जो चाहो इनसे कराओ कुछ उजर नहीं जितना चाहो उतना टैक्स लगाओ मन मानता लड़ाई का खरचा वसूल करो मन भावे खाने को दो या मदो भूखेही सो रहेंगे पर चूं न करेंगे मसल है दबी बिल्ली चूहों से कान कटाती है वे कश हैं लाचार हैं दास हैं शरण में पड़े हैं त्वंगति स्त्वंमति स्त्वंपतिः कर्त्ता धर्ता अवलम्बी सब तुम्ही हो चाहो रक्खो चाहो मिटाओ तुम पर निर्भर है ॥

धर्म सम्बन्धी शिक्षा।

शिक्षाकमिशन के कई एक प्रश्नों में धर्म सम्बन्धी शिक्षा का भी एक प्रश्न है निःसन्देह इस क्रम की शिक्षा का प्रचार होना स्कूलों में अत्यावश्यक है यह इसके न होने ही का फल है कि इन दिनों के नय शिक्षितों को खाल ढाल बोल सुभाव सब धाम का ताम होता जाता है शालीनता इनको किसी बात में नहीं पाई जाती एक तो अङ्गरेज़ी तालीम का स्वाभाविक असर है कि ताक़ वे इल्म की शुरूही से आज़ादगी का अङ्कुर जम ने लगता दूसरे जब मिल हमिलटन सरीखे नास्तिकों के ख़यालात उनके जीमे रोप दिए गए तब वे किसके धरे थांभे रह सक्ते हैं सम्पूर्ण धर्म नीति और समाजनीति Morality की नेह basis ईश्वर और मज़हब है जब मज़हब ही निरा ऊंठ का पाद समझ लिया गया तब समाजनीति कहां रह सक्ती है Eat drink be merry this is the goldenrule किसीको डर शङ्का रही नहीं परलोक और अदृष्ट पर चौका लगा बैठे तब उचित अनुचित जिस तरह बन पड़े दुनियवी लज्ज़तों से मुह मोड़ क्यों संयमी और परहेज़गार बन शरीर को क्लेश दें; किसी पाठशाले या मकतब के पढ़े को देखिए अपने से बड़ों को कैसी प्रतिष्ठा और सम्मान देते हैं और उस्ताद या शिक्षक को तो सर्व श्रेष्ठ मानते हैं वही किसी स्कूल या कालेज के पढ़े हुए को देखिए मास्टर से जरासख़ी करना चाहा भट बिगड़ खड़े हुए और बात की बात में उस बेचारे की लेव देव कर डाला; इस धर्म सम्बन्धी शिक्षा से हमारा यह मतलब किसी तरह नहीं है कि विलायत से पादरियों के बहुत कुछ अन्दोलन करने से इसाई धर्म की शिक्षा स्कूलों में ठूंस दीजाय या पादरियों को उत्तेजना दी जाय बरन इस देश के धर्म ग्रन्थों से चुन २ कर पुस्तकें बन जारी की जाय॥

सैयद महमूद की वक्तृता।

महाशय!

ता० १६ अगस्त को जिस दिन यहां मेयो मेमोरियल मे श्रीमान् डाक्टर हंटर को हिन्दू समाज की ओर से निवेदन पत्र दिया गया था उस जलसे आम मे मै भी एक ओर बैठा सुन रहा था एड्रेस आदि के पढ़े जाने के बाद आनरेबिल सैयद महमूद साहब ने भी एक स्पीच दी हमे आशा थी अधिक कि इनको

वक्तता इनकी योग्यता के सदृश होगी परन्तु एक कविने कहा है 'जिमि कुपंथ पग देत खगेशा, रहन तेज बल बुध लव-लेशा' सो बात यहां पर बहुत ही ठीक उतरी सैयद साहब ने पक्षपात के कारण ऐसा दुर्बल पक्ष लिया कि कितनाही उन्होंने उसे अपनी चतुराई से सम्भाला पर समझने वाले समझी गए होंगे कि यह निरा स्व जातिपक्ष पात है।

अब मै आप के पाठकों के लिए इसका सब व्योरा लिखता हूं और निज बुद्धि अनुरूप उनकी स्पीचको कछ भी दिखलाता हूं आप कृपा कर इसे अपने पत्र मे स्थान दीजिएगा; मै तो यह चाहता था कि किसी भांत यह सब सैयद साहब की नजर से गुजरता और उनको अपनी भूल मालूम हो जाती परन्तु वे हिन्दी पत्र काहे को पढ़ैंगे वेअसी है कह देना चाहिए कदाचित् उनके कान में पड़ जाय नहीं तो हमारे और देशी भाई तो सुनेहींगे; प्रथम तो उक्त साहब ने यह कहा कि जितने निवेदन पत्र आए उनमे एक प्रार्थना इस बात की है कि राज काज मे उर्दू की जगह हिन्दी हो जाय परन्तु शिक्षा कमिशन से इसका कुछ सम्बन्ध नहीं है कमिशन का काम केवल शिक्षा प्रबन्ध की देख भाल है इसे यह प्रार्थना व्यर्थ है; हम यह कहते हैं सैयद महाशय निवेदन पत्र को अच्छी तरह पढ़ते तो जानते कि हम लोगों की प्रार्थना निरी शिक्षा सम्बन्धी न थी हमने यह बात अच्छी तरह सिद्ध करदी है कि जिस भाषा का राजा के घर सन्मान रहता है उसी की ओर लोग अधिक झुकते हैं और उसी की वृद्धि होती जाती है अब यहां उर्दू का सन्मान और हिन्दी का अनादर होने से हिन्दी मुरझा सी गई है और दिन प्रति दिन उसकी दशा हीन सी होती जाती है इस लिए जब तक राज काज मे हिन्दी पूछी न जायगी तब तक इसकी वृद्धि असम्भव है; दूसरे सर्व साधारण शिक्षा का प्रचार बिना हिन्दी के और तरह होही नहीं सक्ता इस लिए हमारी प्रर्थना शिक्षा कमिशन से यही थीं कि वह गवर्नमेंट को यह मंत्र दे कि उर्दू का राज काज मे रहना साधारण शिक्षा का बड़ा बाधक है और जो गवर्नमेंट को " मास इज्युकेशन " साधारण शिक्षा का फैलाना सर्वथा मंजूरही है तो राज द्वार मैं हिन्दी अवश्य करनाही पड़ेगा॥

दूसरी बात मि॰ महमूद साहब ने

यह भी कही कि लोगों की बोली जो कुछ है वही है चाहो उसका नाम हिन्दी रखलो चाहो उसे उर्दू कहो इसी गवाही किस्को दी राजाशिवप्रसाद को जो कट्टर पक्षपाती उर्दू के हैं ; हम कहते हैं इस्मे राजा और सैयद दोनो की बड़ी भूल है इस देश में दो भाषा प्रचलित हैं एक का नाम हिन्दी है जिसे कुंजड़े से लेकर महाजन तक और हरवाहे चरवाहे से लेकर राजा तक सब बोलते हैं और वही देश भाषा है दूसरी उर्दू है यह प्रायः उन लोगों की बोली है जो राजा से कुछ सम्बन्ध रखते हैं और इसकी बड़ाई यही है कि जहां तक होसके फारसी अरबी शब्द अधिक हों इसी कारण यह सर्व साधारण की समझ में नहीं आती ; इन दोनो देशी विदेशी भाषाओं को एक कहना वैसाही है जैसा अङ्गरेज़ी और हिन्दी को एक बताना हां राजा साहब और सैयद साहब दोनो बड़े आदमी हैं तो उनकी समझ भी बड़ी होगी जो कहें सब ठीक है पर और सब लोग तो हिन्दी उर्दू को अलग ही अलग जानते आए हैं ॥

तीसरी बात सैयद साहब ने कही हिन्दू और मुसल्मान मत विरोध से चाहो जितना अलग हों परदेश सम्बन्ध से दोनो एक ही हैं इस्से दोनों को चाहिए कि आपस का वैर भाव छोड़ परस्पर प्रीति बढ़ावें और दोनो मिल अपने देश का हित साधन करें ; यह उपदेश वास्तव में बड़ी भलाई का है किन्तु केवल हाथी के दिखाऊ दांत हैं खाने वाले नहीं जो मै तो निवेदन पत्र का आशय सुन और इतने हिन्दुओं को एक मत देख कुढ़ गए होंगे ऊपर से चिकनाते चुपड़ते बोल उठे हिन्दू मुसलमान दोनो एक हैं पर काम पड़ने पर अब तक यही हाल है कि मुसल्मान हिन्दुओं को अन्य ही समझते हैं खैर जो हो आगे बढ़ कर सैयद महाशय आप ही इस परस्पर सुहृद भाव की जड़ पर कुल्हाड़ा चलाने से बाज़ न आए ; यह सब जानते हैं कि भाषा ही के द्वारा हम अपने मन की बात दूसरे से कह सुन सक्ते हैं और प्रीति तथा सौहृद बढ़ा सक्ते हैं जब देश भर की भाषा ही एक न रही तो मियां मदार का संग कैसा एक गावेंगे आल्हा दूसरे पढ़ैंगे शाहनामा कैसे दोनो का मेल मिलैगा ; जो उर्दू वा फारसी की उनके मत से कुछ सम्बन्ध होता तो कदाचित हम कुछ भी न कहते परन्तु

देखने में आता है कि और देशों में भी मुसल्मान हैं वे सब अपने २ देश की भाषा बोलते हैं केवल अपने धर्म ग्रन्थ को अरबी में पढ़ते हैं फिर फ़ारसी भी तो आदिमें काफ़िरों की भाषा थी जैसी फ़ारसी वैसी हिन्दी इनको व्यर्थ का हठ है कि हम उर्दू ही पढ़ै साधारण मुसल्मान चाहो मान भी जांय परन्तु सैयद सरीखे उनके पेशवा और भी द्रोह की आग भड़काते हैं और हम लोग तो सरल और सीधे मन से हिन्दी इसी लिए चाहते हैं कि सब साधारण लोग भी सुशिक्षित हो जांय और देश की दशा सुधरै पर वे अपनी उर्दू की टेक बांधे हुए हैं उनको अपनी भलाई से काम देश चाहो बिगड़ै चाहो सुधरै; सब जगह यही होता आया है कि जब कोई किसी देश मे जा बसा तो उसकी-रहन सहन बोल चाल सब वहां ही के मनुष्यों कीसी हो जाती हैं और तभी वह वहां का निवासी समझा जाता है जब तक उसकी बोलचाल रहन सहन वहां के रहने वालों से अलग रही तब तक सब उसे विदेशी समझते हैं सो इस एक होने के विरुद्ध सैयद महाशय चाहते हैं हिन्दू अपनी हिन्दी रक्खैं और मुसलमान अपने टेढ़े मेढ़े फ़ारसी ही अक्षर सीखैं अब बताइये यह तदबीर आपस की प्रीति और सौहृद बढ़ाने की है वा देश में दो विभाग करने की है हम सैयद साहब की बुराई नहीं करते केवल इतना ही कहते हैं उन्हे थोड़ा ध्यान देना चाहिए कि इस विभाग का परिणाम क्या होगा; कोई अर्द्ध शिक्षित युवक ऐसा कहता तो विलग मानने की जगह न थी किन्तु ऐसे सुशिक्षित प्रतिष्ठित मनुष्य जो इङ्गलिस्तान मे कई वर्ष तक रहने और वहां शिक्षा पाने से देशहितैषिता और ऐक्य का व्यवहार भली भांत समझ गए हैं सो भी ऐसा कहैं यही अचम्भा है; अब अन्त मे मि-महमूद साहब को धन्यवाद देते हैं कि गिरते पड़ते किसी तरह उन्हो ने इस बात को स्वीकार किया कि जो बहुत से लोगों की इच्छा यही है कि नागरी ही अक्षरों मे प्रथम साधारण शिक्षा दी जाय तो हम भी इसमे सम्मति देंगे; अब आशा है कि उक्त महाशय अपने प्रण को पूरा करैंगे और सरकार को वही उपाय सुझावेंगे कि जिसमे हिन्दू मुसल्मान आपसकी फूट से मुंह मोड़ देशभाइयों की भांत व्यवहार करैं और जो देश मे ऐक्य न हुआ और ऐसाही भेद बना रहा तो इसका दोष ऐसेही मंत्रियों पर आरोपण किया जायगा-

एकआर्य।

नए तर्ज़ का खपगान ।

अगस्त मास के नाइनटीन्थ सेंचुरी नामक मासिक पत्र में जो लंदन नगर में छपता है एक नए ढंग का आशय छपा है A cry from the Indian Mahomedans "हिन्दुस्तान के मुसलमानों का क्रन्दन" यह आशय नेशनल मुहमेडन एसोसिएशन के सेक्रेटरी और व्यरिस्टर ऐटला सैयद अमीरअली ने लिखा है इनके लेख के पद २ में मुसलमानों का स्वाभाविक तअस्सुब और डाह झलकती है निस्सन्देह इस शान्त ब्रिटिश राज्य में बहुत दिनों के बाद ये नए औरङ्गज़ेब उपज खड़े हुए हैं सरकार को उचित है ऐसे २ लोगों का जल्द तदारुक करे नहीं तो ये मुसलमानों को उभाड़ २ कोई फसाद बहुत जल्द बरपा कर देंगे इनके लेख का कोई कोना ऐसा नहीं है जिस्से राजविद्रोह न टपकता हो जैसा

unless effective msasures of reform are adopted, and that without delay, the unsatisfactory condition of the Mahomedans threaten to become a source of anxiety and danger to British administration in India,

"मुसलमानों के सुधर जाने की कोई असर पिज़ार तदबीर जलदी नहीं की जाती तो इनकी नाआसूदा हालत हिन्दुस्तान में अङ्गरेज़ी सलतनत को खतरा पहुचाने का ज़रिया होगी, (कोटिसु कीटायते) हम कहते हैं थोड़े से मुट्ठी भर मुसलमान प्रचण्ड प्रताप शालिनी सरकार को क्या खतरा पहुंचा सके हैं ऐसी २ गीदड़भभकी से कुछ होने वाला नहीं है ऐसे २ कीट पतङ्ग अपनी नाआसूदगी पड़े २ जाहिर किया करें क्या होता है जब कि सरकार बराबर से हिन्दू मुसलमान दोनों के साथ उचित और न्याय कर रही है; आगे आप लिखते हैं "इस २० वर्ष के बीच बड़ा अदल बदल हुआ और हर एक जमात ने इस अङ्गरेजी राज्य से भरपूर लाभ उठाया सिवा मुसल्मानों के" हम कहते हैं इस्में कुसूर किस्का है ये क्यों नहीं होते से जागते क्यों मजहबी तअस्सुब में गड़े आप हैं कौन इन्हें रोके हैं; दैव की मारे हम हिन्दुओं को कहो तो अलबत्ता हजारों रोक हैं जिस्से ये आगे नहीं बढ़ते एक तो निर्द्रव्य दूसरे अकिल से खारिज तीसरे समाज इनको महाचौपट चौथे सर्वनाशकारी धरम की पाबन्दी पांचवें आपस की फूट तन मन साहस बुद्धि सब से क्षीण और दुर्बल; मुसलमानों को सब तरह आसूदगी है इनमें एका बड़ा

एक नवाले के सब शरीक मजहब या समाज में किसी तरह की कैद नहीं बिलायत तक द्वार इनके लिए अपनी तरक्की करने का खुला है; वही हम हिन्दुओं की एक बात की आशाइश नहीं है तब मुसलमानों को किस बात की नाआसूदगी है; हम तो यही कहते हैं जैसा मुसलमान इन दिनों अपनी तरक्की में तेजरवां हैं ऐसा इस देश की दूसरी कौम नहीं है और जिस लायक और जितने इस मुल्क में हैं उस हिसाब से अधिक सरकारी नौकर हैं; और ऐसे ओहदों पर हैं जो एक २ सौ हिन्दू सरकारी नौकरों के बराबर हैं; हम लोग बैठे मुह ताकते ही रह गए यहां की हाईकोर्ट में एक मुसल्मान जज कर दिए गए और इस पश्चिमोत्तर और औध में २० मुसल्मान सबार्डिनेट जज और ५४ मुनसिफ हैं तो हिन्दू सिर्फ १४ सबार्डिनेटजज हैं और ४२ मुनसिफ हैं मुसल्मान २ असिसटेण्ट कमिश्नर हैं तो हिन्दू १ तहसीलदार मुसल्मान १२४ हैं और हिन्दू केवल ११३ आबादी के हिसाब से हिन्दू मुसल्मानों से सात गुना अधिक हैं इस लिये सात बड़े ओहदों पर हिन्दू हो जाने के बाद तब एक मुसल्मान होना वाजिब है सिवा इसके पुलिस में करीब करीब सब मुसल्मान हैं माल के महकमे में भी इन्ही का दारमदार है; अब कहिए अमीरअली साहब का क्यों पेट फूल उठा कि सरकार मुसलमानों की कुछ फिकिर नहीं करती बङ्गाल में तो चाहो मुसलमान बड़े ओहदों पर नहीं पर इस पश्चिमोत्तर औध और पंजाब में हम तहकीक कह सकते हैं कि बड़े ओहदों पर मुसलमानों का नम्बर हिन्दुओं से बहुत अधिक है सैयद साहब ज़रा अपने खपगाल की की दवा कर तब मुह खोलें ॥

(सीता वनवास नाटक)

प्रथम अङ्क।

स्थान

जानकी का महल।

राम और जानकी बैठे हुए ॥

(कञ्चुकी का प्रवेश)

कञ्चुकी। देव मुनिवर ऋष्य शृङ्ग के आश्रम से अष्टावक्र आए हैं ॥

राम। तो क्यों बिलम्ब करते हो आदर उन्हें यहां लेवाय लाओ ॥

कञ्चुकी। जो आज्ञा (बाहर जाय अष्टावक्र को साथ ले फिर आता है)

अष्टावक्र। महाराज आप दोनों को कुशल हो॥

राम। भगवन् मैं सविनय आप को प्रणाम करता हूं इस आसन पर विराजिये॥

जानकी। भगवन् नमस्ते मुनिराय कहिए हमारे गुरु जन और हमारी ननद आर्य्या शान्ता कुशलिनी हैं कभी हमारा भी स्मरण करती हैं॥

राम। भगवन् हमारे बहनोई महात्मा ऋष्य शृङ्ग का यज्ञ समाप्त हो गया और सपरिवार कुशल पूर्वक हैं?

अष्टावक्र। देव सब कुशल है (जानकी से) देवि तुम्हारे कुल गुरु भगवान् वशिष्ठ ने तुम से यह सन्देसा कहा है कि भगवती विश्वम्भरा पृथ्वी देवी ने तुम्हें उत्पन्न किया है साक्षात् प्रजापति समान महाराज जनक तुम्हारे पिता हैं हे देवी तुम उन राजाओं के कुल की लाड़िली बहू हो जिनके कुलगुरु प्रत्यक्ष देवद्युमणि सूर्य्य और तपोधन महर्षि वशिष्ठ हैं सो कौन सी ऐसी बात है जो तुम्हें प्राप्त न हो केवल यही आशीर्वाद करते हैं कि तुम वीरपुत्र की माता हो॥

राम। मुनिराय गुरुदेव वशिष्ट जब यह आशीर्बाद देते हैं तो अवश्य ही हमारा मनोरथ सिद्ध जानिए क्योंकि लोक व्यवहार परायण जो मुनि हैं वे पहले अपने वचन का पूर्वापर अर्थ विचार तब कोई बात मुख से निकालते हैं किन्तु जो तप श्रेष्ठ गुरु वशिष्ठ से आद्य ऋषि हैं वे चाहें जो कह दें उनको वाक्सिद्धि रहने के कारण अवश्य ही वैसा होता है॥

श्लोक।

लौकिकानांहिसाधूना मर्थंवागनुवर्तते।
ऋषीणांपुनराद्यानां वाचमर्थोनुधावति॥

अष्टावक्र। और महाराज भगवती अरुन्धती देवी कौशल्या आदि वृद्ध महिषीगण और कल्याणिनी शान्ता ने बार २ यह कहा है कि रामचन्द्र से समझा के कहना कि सुना है जानकी गर्भवती हैं इस्से जिस समय जो मनोरथ करैं वह सब तुर्त पुरै देना॥

राम। मुनिराय उन सबों से हमारा प्रणाम करना और कहना जानकी जिस समय जो अभिलाषा करती हैं तत्क्षण सब पुरै दिया जाता है हम एक पल मात्र भी आलस नहीं करते॥

अष्टावक्र। देवी जानकी तुम्हारे ननदोई महात्मा ऋष्य शृङ्ग ने सादर सस्नेह और सांत्वन पूर्वक यह कहा है कि वत्से तुम पूर्णगर्भा हो इस्से तुम यज्ञ में नहीं

बोलाई गई हो किन्तु जिसमें तुम अपने मन में कुछ बिलग न मानो इसी लिए राम और लक्ष्मण को भी तुम्हारे पास छोड़ आए हैं यज्ञ समाप्त हो जाने पर हम सब लोग अयोध्या आ कर अभिनव जातकुमार से तुम्हारी गोद भरी पुरी देखेंगे ॥

राम (प्रसन्न हो) मुनीश्वर गुरुदेव वशिष्ठ ने हमारे प्रति भी कुछ आज्ञा की है ?

अष्टावक्र। वशिष्ठ महाराज ने आप से यह सन्देश कहा है कि वत्स हम ऋष्यशृङ्ग के यज्ञ में फसे हैं कुछ दिन अभी हमारा यहां ही रहना होगा तुम बालक हो और अभी थोड़े दिनों से राज्य पद पर प्रतिष्ठित हुए हो इससे प्रजारञ्जन में सदा तत्पर रहना क्योंकि प्रजारञ्जन सम्भूत निर्मल यश ही रघुवंशियों का परम धन है ॥

राम। हम गुरुदेव के इस आदेश से परम अनुगृहीत हुए उनका यह उपदेश सर्वथा शिरोधार्य है आप उनके चरण कमलों में हमारा साष्टाङ्ग प्रणाम कर कहना प्रजागण के अनुरञ्जन निमित्त चाहो हमारा संपूर्ण स्नेह दया वा समस्त सुख भोग जाता रहै कहां तक कहैं प्राणप्रिया जानकी भी हम से छुट जांय तौ भी हम गुरुदेव की आज्ञा से मुंह न मोड़ेंगे ॥

जानकी। महाराज इसी से आप रघुकुल धुरन्धर हैं ॥

राम। कोई है ॥

कंचुकी (आ कर) आज्ञा महाराज ॥

राम। मुनिराज को ले जा कर टिकाओ ॥

कंचुकी। जो आज्ञा (अष्टावक्र को साथ ले बाहर गया)

लक्ष्मण का प्रवेश ॥

लक्ष्मण। महाराज आप की विजय हो आर्य्य हमने आप के चरित्र का चित्र बनाने को जिस चित्रकार से कहा था सो यह बना लाया है आप इस चित्रपट को देखिए ॥

राम। तात कहां तक का चरित्र इस चित्रपट में चित्रित किया गया है ॥

लक्ष्मण। आर्य्य, आर्य्या की अग्नि से शुद्धि पर्य्यन्त का ॥

राम। हा! शिव शिव वत्स तुझे ऐसा कहना योग्य नहीं है यह बात सुन हमारे मन को बड़ा क्षोभ और लज्जा होती है। हा धिक् यह कैसी निन्दा की बात कि जिन्हों ने अपने जन्म ग्रहण से संपूर्ण

जगत को पवित्र कर दिया उनकी विशुद्धि किसी दूसरी पावन वस्तु के द्वारा; हाय लोकरञ्जन ऐसा कठिन काम है कि इसमें पद पद में मानभञ्जन को भय उपस्थित रहती है (जानकी से) यज्ञ वेदिसुस्थिते आप इस बात से दुखी मत हो देवी क्या कीजिए अग्नि से विशुद्धि रूप यह अपवाद यावज्जीव के गले बँध गया अब इसके निवारण को कोई उपाय नहीं है॥

श्लोक।

कष्टंजनःकुलधनैरनुरञ्जनीय स्तन्नोयदुक्तम शिवंनहितत्क्षमस्ते। नैसर्गिकोसुरभिणःकुसुमस्यसिद्धा मूर्ध्नि स्थितिर्नचरणैरवताडनानि॥

जानकी। प्राणनाथ आप उन बीती बातों का सोच कर क्यों वृथा दुखी होते हो महाराज आप ने उस समय जो हमारी अग्नि से शुद्धि किया था वह किसी प्रकार अनुचित न था नाथ ऐसा किए बिना परम पूज्य रघुकुल में कलङ्क लगने का डर था और यह अपवाद किसी तरह हम से दूर न होता; आर्य्यपुत्र इन बातों के फिर फिर उद्घाटन में क्या रक्खा है देखिए इस चित्रपट में क्या क्या चित्रित किया गया है॥

(सब मिल चित्रपट देखते हैं)

जानकी (कुछ देर तक चित्रपट देख राम से) महाराज चित्रपट के ऊपर यह सब क्या खचित है?

राम। प्रिये ये सब जृम्भकास्त्र हैं ब्रह्मा ने वेद की रक्षा के लिए बहुत दिनों तक तपस्या कर इन तेजःपुञ्ज परमास्त्रों को पाया था गुरु परम्परा से भगवान कृशाश्व को ये अस्त्र प्राप्त हुए उनसे राजर्षि विश्वामित्र ने इन्हे पाया परम कृपालु राजर्षि सविशेष कृपा प्रदर्शन पूर्वक ताड़का ताड़नान्तर हमें उन अस्त्रों को दिया तब से ये हमारे अधिकार में हैं तुम्हारे जो तनय होंगे उन्हे भी ये प्राप्त होंगे॥

लक्ष्मण। आर्य्ये देखो यह मिथिलापुरी का वृत्तान्त चित्रित किया गया है यह तुम्हारे पिता जनक महाराज हमारे कुलगुरु वशिष्ठदेव की पूजा कर रहे हैं और यह जनक के पुरोहित शतानन्द हैं॥

जानकी। आहा विवाह कर्म की दीक्षा लिए ये चारों भाई हैं वत्स ऐसा जान पड़ता है मानो यह चित्रपट ठीक उसी समय का अनुभव करा रहा है॥

राम। प्राणप्यारी तुम सत्य कहती हो यह वही समय है जब कि मूर्तिमान् महोत्सव के समान तुम्हारे कोमल पाणि

पल्लवों को शतानन्द महाराज ने हमें ग्रहण कराया था प्यारी देखो तुम्हारे कर कमल में यह बिवाह का कंगना कैसा शोभा दे रहा है॥

लक्ष्मण (अँगुली से दिखा कर) और भी देखिए यह आप ही यह आर्या माण्डवी हैं और यह बधू श्रुतिकीर्ति है॥

जानकी। बत्स यह दूसरी कौन है?

लक्ष्मण (लज्जापूर्वक हँस कर स्वगत) आर्या उर्मिला को पूछती हैं अस्तु आर्या की दृष्टि यहां से हटा लें (प्रकाश) आर्यें यह दूसरा चित्र है यह अवश्य देखिवे योग है देखिये यह भगवान् भार्गव परशुराम हैं॥

जानकी (डर कर) क्या यह वही महाक्रोधी मुनि हैं जिन्हों ने २१ बार क्षत्रियों का निःक्षत्र किया है बत्स इनकी भयङ्कर आकृति देख हृदय में कँपकँपी होती है॥

लक्ष्मण। यह उस समय का चित्र है जब कि हम लोग जनकपुर से बिदा हो अयोध्या पहुंचे॥

राम। आहा वे वे दिन हैं जब हमारे तातचरण दशरथ महाराज विद्यमान थे और हम नए बिवाह के सुख का अनुभव करते थे, कौशल्या आदि मातृवर्ग दिन रात हमारा ही मुंह ताका करती थीं और यह जानकी नई बहू कहलाती थी जो अपनी मुग्ध मुखच्छबि और अङ्गविन्यास विभ्रम से हमारी माताओं को परम आनन्द देती थी॥

लक्ष्मण। यह मंथरा है॥

राम (बिना कुछ उत्तर के दूसरी ओर देखते) प्रिये वैदेही यह वही इङ्गुदी वृक्ष है जहां शृङ्गबेरपुर में निषादपति गुह के साथ हमारी मैत्री हुई थी॥

लक्ष्मण (हँस कर) मझली मा कैकेई का वृत्तान्त आर्य्य ने छिपा लिया॥

जानकी। यह इंगुदी वृक्ष आर्य्यपुत्र की जटा संयमन का वृत्तान्त प्रगट करता है; पुत्रों को राज पाट का बोझ दे दिवाय इक्ष्वाकु कुल के राजा लोग जो बन बास व्रत वृद्धावस्था में ग्रहण करते थे वह आर्य्यपुत्र ने बाल्यावस्था ही में अङ्गीकार किया॥

लक्ष्मण। प्रसन्न पुण्य सलिला यह भगवती भागीरथी हैं॥

राम। देवी रघुकुल की परम पूज्य देवता तुम्हें प्रणाम है; भगवती यह जानकी तुम्हारी बहू है इस पर अरुन्धती और कौशल्या के समान आप भी कृपा दृष्टि का प्रसाद किए रहैं॥

लक्ष्मण । महाराज कालिन्दी के तट पर यह वही श्याम नामक वट वृक्ष है जिसे चित्रकूट की राह में भारद्वाज मुनि ने बतलाया था ॥

जानकी । प्राणनाथ इस स्थान का स्मरण आप को है ॥

राम । प्यारी भला इस स्थान को हम कैसे भूल सक्ते हैं ; यह वही स्थान है जहां तुमने मार्ग चलने के श्रम से अत्यन्त खिन्न हो कमल नाल सदृश अपने कोमल अङ्गों का सब बोझ हम पर डाल चिरकाल तक गाढ़ी नींद लिया था ॥

लक्ष्मण । आर्य्ये देखो यह वही विंध्याचल है जहां आर्य्य ने विराध को मारा था ॥

जानकी । लक्ष्मण इसे रहने दो वह चित्र दिखलाओ जब कि आर्य्यपुत्र ने इसे ताड़ का छाता लगा कर दण्डकारण्य में प्रस्थान किया था ॥

राम । हां हां प्रिये यह वही स्थान है जहां पहाड़ी नदियों के किनारे के इन वृक्षों के तले कुटियों में अतिथि सत्कार तत्पर शान्तशील केवल मुट्ठी भर धान से अपना गुजारा करने वाले बनवासी मुनिजन रहते हैं ॥

श्लोक ।

एतानितानिगिरिनिर्झरिणीतटेषु वैखानसाश्रिततरूणितपोवनानि । येष्वातिथेयपरमा:शमिनोभजन्ते नीवारमुष्टिपचनागृहिणोगृहाणि ॥

लक्ष्मण । आर्य्ये यह वही जन स्थान मध्यवर्ती प्रस्रवण नामा पर्वत है इसका शिखर सतत सञ्चरमान जलधर पटल के कारण मानो नीलाम्बर ओढ़े आकाश के नापने को उद्यत वामन सा सोहता है जिसके ऊपर की पृथ्वी सघन वृक्षों के कुञ्ज से सदा व्याप्त रहती है और नीचे प्रसन्नसलिला यह गोदावरी कैसे प्रबल वेग से बह रही है ॥

राम । प्रिये तुम्हें स्मरण है इस स्थान में हम कैसा सुख पूर्वक वास करते थे लक्ष्मण इधर उधर से ढूंढ़ आहार उपयोगी फल मूल कन्द आदि जो कुछ लाते थे आहार कर पर्णकुटी में एक ही शैय्या पर शयन करते ऐसी गाढ़ी नींद लेते थे कि रात की रात बीत जाती थी कुछ नहीं जान सक्ते थे किधर रात गई ॥

लक्ष्मण । आर्य्ये यह पञ्चवटी है और यह सूर्पणखा है ॥

जानकी (डर कर) नाथ इस भयङ्कर राक्षसी से रक्षा कीजिए ॥

राम (हँस कर) प्रिये डरो मत यह सच्ची सूर्पणखा नहीं है किन्तु उसी की प्रतिकृति मात्र है ॥

लक्ष्मण। वाह धन्य चित्रकार की कारीगरी इसके देखने से जन स्थान का वृत्तान्त ऐसा प्रतीत होता है मानो यह सब अभी हो रहा है; दुराचारी निशाचरों ने सुवर्णमय मृग के छल से जो महा अनर्थ घटना का संघटन किया उसका यद्यपि समुचित प्रति विधान किया गया तथापि वे सब वृत्तान्त स्मृति पथारूढ़ होने से मर्म वेदना उत्पन्न करते ही हैं; यह इसी दुर्घटना का प्रताप है कि हमारे अग्रज मानव समागम शून्य इस जन स्थान के सूने भू भाग में विकल चित्त हो जैसा कातर भाव को प्राप्त हुए उसे याद कर पाषाण भी पिघल उठता है और महा कठोर वज्र का भी हृदय विदीर्ण होता है ॥ श्लोक।

अथेदंरक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना तथावृत्तंपापैर्व्यथयति यथाक्षालितमपि ।
जनस्थानेशून्येविकलकरणैरार्यचरितै रपि ग्रावारोदित्यपिदलतिवज्रस्यहृदयम् ॥

जानकी (आंख में आंसू भर) हा! इस हतभागिनी के कारण आर्य्यपुत्र को कितना दुख सहना पड़ा ॥

राम। भैया लक्ष्मण उस समय जैसी दुर्दशा में हम थे वह सब सह कर किसी तरह प्राण धारण नहीं कर सक्ते थे यदि यह बात हमारे जी में सदा न खटका करती कि अभी इस शत्रु कृत अपमान का बदला चुकाना है; इस चित्रपट को देख वे सब भूली हुई बातें फिर से ऐसी नई सी हो गई हैं मानो हमारी सब मर्म ग्रंथि मारे दुःख के ढीली सी होती जाती हैं ॥

लक्ष्मण। आर्य इस स्थान में दुर्द्धर्ष कबन्ध का वास था यह ऋष्यमूक पर्वत से मतङ्ग ऋषि का आश्रम है यह वही सिद्ध सबरी श्रमणा है और यह पम्पा सर है।

राम (सीता से) प्यारी तुम्हारी विरह अग्नि से सन्तापित हम तुम्हें खोजते खोजते इस रमणीय पम्पा सर के तट पर आ कर उपस्थित हुए और देखा कि प्रफुल्ल कमल मन्दवायु से हिलते हुए सरोवर की अनिर्वचनीय शोभा सम्पादन कर रहे हैं जिनकी मीठी सुगन्धि सब ओर से आ रही थी मधुपान मत्त मधुकर कल ध्वनि से गूंज रहे हैं हंस सारस चक्रवाक प्रभृति पक्षियों की भीड़ की भीड़ जिसके बिमल जल में आनन्द पूर्वक सब ओर कल्लोल कर रहे हैं उस समय हमारे नेत्रों

से ऐसी अविच्छिन्न अश्रुधारा बहने लगी कि उस सुन्दर सरोवर की शोभा भी भली भांति हम न देख सके ।

लक्ष्मण । यह महाबली वायुवेग मारुत नन्दन हनूमान हैं ॥

जानकी । चिरकाल तक दुःखसागर में मग्न हम ऐसी मन्दभागिनी की घोर बिपत्ति से उद्धार करने में समर्थ महानु-भाव अञ्जनानन्ददायी यही हैं ॥

राम । हां प्यारी अञ्जनानन्द यही हैं जिनके उपकार का बदला हम देवता की आयुष्य से भी नहीं दे सक्ते ॥

जानकी । वत्स यह जो पर्वत है जिस में कुसुमित कदम्ब वृक्ष की शाखाओं पर मदमत्त मयूर और मोरनीयों के झुण्ड नाच रहे हैं और शिथिल कलेवर आर्य्य-पुत्र वृक्ष के नीचे मूर्छित पड़े हैं और तुम खड़े २ रो रहे हो इस पर्वत का क्या नाम है ?

लक्ष्मण । आर्य्ये इस पहाड़ का नाम माल्यवान है यह स्थान वर्षाकाल में अ-पूर्व शोभा धारण करता है देखो नव ज-लद रस से अभिषिक्त शिखर देश में नवीन कोमल तृणों के द्वारा यह मरकत मणि की शोभा दे रहा है इस ठौर ह-मारे अग्रज तुह्मारे बिरह दुःख से एक समय अत्यन्त विकल चित्त हो गए थे ॥

राम । भाई लखन बस अब रहने दो इस माल्यवान को देख शोक सागर ह-मारे लिए अनिवार्य वेग से बढ़ता जाता है और प्राणप्यारी वैदेही का बिरह दुःख नया होता जाता है ॥

जानकी । आर्य्यपुत्र इस चित्रपट को देख हमारे चित्त में एक अभिलाषा हुई है नाथ उसे पूर्ण कर हमें अनुग्रहीत कीजिए ॥

राम । प्राणप्यारी वह कौन अभिला-षा है आज्ञा करो हम तुर्त उसे सम्पादित करें ॥

जानकी । महाराज मैं चाहती हूं कि एक बार जन स्थान वासी उन ऋषि पत्नियों का फिर दर्शन करूं ॥

राम । भाई लखन गुरु जनों की आज्ञा है कि जानकी जिस समय जो अभिलाष करे उसे उसी समय पुरे देना सो कल सवेरे ही जानकी को अभिलषित प्रदेश में ले जाना होगा ॥

जानकी । आप भी साथ चलियेगा की नहीं ?

राम । प्यारी यह बात तुह्मारे कहने योग है हम तुह्में अपने आंख की ओट में कर किसी तरह सुखी हो सकते हैं ॥

जानकी (लक्ष्मण की ओर देख) वत्स तुम्हें भी साथ चलना होगा॥

लक्ष्मण। जो आज्ञा (बाहर गए)

राम। प्यारी कल भोरही उठना है और अब रात भी बहुत गई तुम्हें ऊंघ आती है चलो सो रहो। (दोनों गए)

प्रथमोङ्कः॥

समाचार मड़ए के पाए
जब लपकौरे भांटि आए॥

यह एक गवांरू मसल है बे तौर से तुक्का पर इस मौके पर ठीक घटती है हाल में 'लेजिसलेटिव कौंसिल' कानून बनाने वाली सभा के सेक्रेटरी मि॰ फिट्जपेट्रिक ने सब स्थानीय गवर्नमेंट के पास इस मजमून का पत्र भेजा है कि किसी नए कानून की बिल सभा से इजरा होने के पहले नामी अखबारनवीस और सभाओं के पास एक एक draft पूर्व पीठिका उसकी देश भाषा में अनुवाद हो भेज दी जाय जिसमें सर्व साधारण उसे अच्छी तरह समझ सरकार को तद्विषयक कानून बनाने में अपनी २ सम्मति प्रगट कर सहायता दें; इसमें सन्देह नहीं लार्ड रिपन महोदय इस देश के लिए वर्तमान समय में एक बड़ी भारी बरकत boon हो रहे हैं जिनकी नित एक नई बात हिंदुस्तान की पूरी भलाई सम्पादन करने वाली सुन २ हम लोगों का चित्त हर्ष से गद्गद होता जाता है और जो यही चाहता है कि सदा ऐसे प्रभु हमारे शासनकर्ता हमे मिलते रहें तो हमारे सौभाग्य की सीमा नहीं है; पर गुलाब में कांटे की भांत एक एक कुचोद्दी नर सब ठौर घुसे रहते हैं न जानिए ऐसे उदार भाव सम्पन्न के कान में कौन हम हिन्दी वालों का शत्रु लगा है जो उक्त महोदय का कान हमारे विपक्ष में भरा करता है क्योंकि उस पत्र में आगे बढ़कर लिखा है कि देश भाषा में उर्दू सब से बढ़ कर होगी इस बात के सुझाने वाले आंख के अन्धे को इतना न सूझा कि 'पबलीसिटी' सर्व साधारण

की जानकारी जो इसका प्रयोजन था वह कहां रहा जब उर्दू में अनुवाद किया गया इस्से तो अङ्गरेजी ही क्या बुरी ; इसी से हम कहते हैं मद्दए का समाचार मिल गया हिन्दी के लिए भांत भांत के निवेदन पत्र भेजना और उसे अदालतों में स्थिर करने की चेष्टा सब व्यर्थ है लार्ड रिपन से उदार और न्यायशील भी उर्दू चाण्डालिनी का पिण्ड नहीं छोड़ा चाहते नागरी से सच्च २ दैव ही प्रतिकूल हैं तब मनुष्य कीड़े किस गिनती में हैं अस्तु ॥

प्रेरित ।

सम्पादक महाशय !

आप ने अपने अगस्त मास के अङ्क में राजा जी के बारे में जो कुछ लिखा है उस्से मुझे भी आप के पाठकों नगर वासियों तथा हिन्दी के हितैषियों से यह छोटा सा निवेदन करने का साहस होता है ; हमारे स्कूलों में राजा साहब का इतिहास तिमिरनाशक बहुत प्रचलित हो गया है यह जैसा अधम और निकृष्ट ग्रंथ है सब जानते हैं क्या इसके उठाने का प्रयत्न नहीं हो सकता ? बिहार से यह अनर्गल पुस्तक गर्दनिया दे निकाल बाहर कर दी गई है क्या यहां भी ऐसा यत्न नहीं हो सता ; कलकत्ते तक इस नीच पुस्तक की दुर्गन्धि पहुंच गई है गत सप्ताह के उचितवक्ता में राजा के इस ग्रंथ का यथोचित आदर किया गया है ; देश के सच्चे हितैषियों को चाहिए इस पुस्तक को शिक्षा विभाग से निर्मूल करने के अर्थ आन्दोलन कर इस्के स्थान में पंडित केशवराम भट्ट सम्पादक बिहारबन्धु का बनाया "हिन्दुस्तान का पूरा इतिहास" रखने के लिए सरकार से निवेदन करें ऐसा पक्षपात रहित सरल ग्रन्थ हमारे बालकों को निस्सन्देह लाभदायक है राजा साहब कृत यह इतिहास नहीं है वरन अपने उच्चपद मिलने के अर्थ धन्यवाद है जिसमें हिन्दू मुसल्मान बौद्ध आदि सब की निन्दा कर अङ्गरेज़ों की खुशामद प्रधान धर्म रक्खा गया है ; ऐसी जघन्य पुस्तक के प्रचार रहने से देश को बड़ी ही हानि है ॥

ह० रा० पा० अल्मोड़ा ।

शिमला या नैनीताल जाने वाले हाकिमों का भत्ता ।

बड़ा होना भी बड़ी बला है बड़े रुतबे बड़े मरतबे बड़े पद पर पहुंचने से मिजाज में नाज़ुकपन घुस जाता है दिमाग में अमीरी छा जाती है मेहनत करने का

जो नहीं चाहता गुलाब की पखुरी समान थोड़ी ही गरमी में कुम्हला उठते हैं हे ईश्वर तू हमें बड़ा न कर इन बलाओं से आज़ाद रख ; इन्हीं बलाओं में मुबतिला हो बड़े २ ओहदेदार चैत लगतेही पहाड़ों पर चले जाते हैं और ६ महीने तक वहां ही दरफ़िस्तान की शीतल और मन्द वायु में स्वेच्छा विहार पूर्वक अपने बड़प्पन का पूर्ण अनुभव किया करते हैं इन्हीं बड़ों के साथ छोटे २ क्लार्कों को भी पतङ्ग में पुछल्ले की भांत लाचार हो जाना ही पड़ता है क्या करें इस पापी पेट की आग बुझाने को सब कुछ सहते हैं ; पर इधर पर साल से श्रीमान रिपन बहादुर इन छोटे तनखाह वाले क्लार्कों की तकलीफ पर खयाल कर यह आज्ञा दी कि सौ से नीचे तनखाह पानेवालों को ४०) महीने के हिसाब से फ़ायदा मिला करे और १००) मौसिम भर के लिए मकान के किराया का दिया जाया करे और जो परिवार समेत न जांय उन्हें केवल २०) तनखाह से ज़ायद दिया जाय शिमला में अब इस हुक्म अनुसार के किया जाता है अब वहां के क्लार्कों को बड़ा आराम हो गया और सब के सब श्रीमन् रिपन साहब को असीस रहे हैं ; यही आज्ञा नैनीताल के लिए भी हुई थी पर बड़ी तनखाह वाले बड़े देवों ने इसमें अपना कुछ लाभ न देख इसे टाल टूल और मथोर अन्त को वही साबिक दस्तूर भत्ता को कायम रक्खा और बड़े लाट साहब के हुक्म के जवाब में सर आर्कलैंड कूपर साहब ने लिख भेजा "The old rules were much suited to these provinces and the employes being quite satisfied with them wished for no change पुराना तरीका इन ज़िलों के लिए बहुत अच्छा है और लोग इतने ही से बिलकुल आसूदा हैं नहीं चाहते कि कुछ तबदील की जाय ; अब हम पूछते हैं क्या नैनीताल में शिमले के माफ़िक मकान महँगे नहीं हैं या पहाड़ होने के कारन खाने पीने की चीजें शिमले से वहां कुछ कम गिरां हैं तब लोग क्यों आसूदा होने लगे ; खैर तब तो कूपर साहब का ज़माना था जो धींगधींगा न होता वही अचरज था हम लोग कूपर साहब से जब गए थे और वे हम से परे हुए नए लाट साहब श्रीमान् अलफ्रेड लायल तो बहुत न्यायशील और नेकमिज़ाज सुन पड़ते थे इन्हों ने भी उन्ही की पदवी का अनुसरण किया सुनते हैं अर्जी देने पर पुराना दस्तूर बहाल रक्खा ; अवध की हवाही का कुछ असर है कि जो कोई उस गद्दी पर आवेंगे सब एक तरह के ही निकलेंगे ॥

मिसर के युद्ध मे हिंदुस्तानी फ़ौज की फ़तहयाबी।

जो मुल्की हैं उनको उनके मुल्क से मिट्टी छूते सोना होता है वही दुष्कृती को सब बात उलटी होती है यही फ़ौज

लार्ड लिटन के समय काबुल युद्ध में गई थी पर लिटन से कुटिल का कहां ऐसा भाग्य जो यश मिलता वह यश यशस्वी श्रीमान् रिपन बहादुर के बांट में पड़ा है जिनका सरल भाव और सत्कर्म का परिपाक यश रूप कुसुम में प्रस्फुटित हो जगत भर को सुगन्धित कर दिया ; अब देखें रिपन महोदय हिन्दुस्तानी सेना की इस वीरता के प्रत्युपकार में क्या हित करते हैं अब तो इनके वीर्य्य और साहस की भरपूर परख हो गई कि जो सेना विलायत से आई थी कुछ न कर सकी खड़ी मुह ताकती रह गई हिन्दुस्तानी फौज चार ही घण्टे की लड़ाई में मिसरियों का मान मर्दन कर अरबी से महा शरबी को कैद कर सरकार के हवाले कर दिया ऐसा ही जब जब काम पड़ेगा ये हिन्दुस्तानी फौज अपनी गरदन दे देने में ज़रा भी कोर कसर न करेंगे तब आर्म्स ऐक्ट अस्त्रनिग्रह वाले कानून की तौकड़ी से इन्हें जकड़बन्द रखना बड़ी भूल है और इन खैरख्वाही के बदले में चाहिए कि दरजे बदरजे तरक्की करने का तरीका उठाय ठकुरान और ज़मीदारों में से चुन चुन यूरोपियन फौजी अफसरों के साथ २ हिन्दुस्तानी भी फौज के बड़े २ अफसर जरनैल करनैल आदि किए जांय क्योंकि दरजे बदरजे तरक्की पाने वाले दस्तूर के रहते अच्छे २ खानदानी राजपूत ब्राह्मण क्षत्री फौज में भरती होना पसन्द नहीं करते और साधारण सिपाही Common soldier हो कर फौज में रहना उनके लिए बड़ी बेइज्जती है ; ऐसे २ फौजी इखतियारात हम लोगों को दिए जांय तो अलबत्ता हम जानें कि सरकार बिलकुल सरल भाव से अब हिन्दुस्तान की पूरी भलाई कर रही है नहीं तो यह आत्मशासन का सब अन्दोलन निरी फुसलाने की सी बात जँचती है ॥

(प्राप्ति)

शिक्षा कमिशन में इलाहाबाद के डिप्युटी इंस्पेक्टर पं० दीनदयाल की गवाही । अलबत्ता इसे मोतबिर गवाही कहेंगे कि उक्त पण्डित जी अपनी गवाही में कहीं पर पक्षपात खुशामद या आत्म उत्कर्ष नहीं प्रगट किया जो कुछ सच और वाजिबी था बयान किया बहुत कम लोगों ने ऐसी पक्षपात शून्य गवाही दी होगी वही राजा की गवाही थी जिसे पढ़ जी कुढ़ गया था ।

सूचना ।

गए वर्ष की पूरी जिल्द हि-प्र-की हम आधे दाम पर देंगे पर मूल्य पहले भेज देना होगा । और स्कूल तथा पाठशालाओं के विद्यार्थियों को इस वर्ष से यह पत्र आधे दाम पर दिया जायगा पर दाम उन्हें पहले चुकता कर देना पड़ेगा,

अग्रिम मूल्य २॥) पश्चात देने से ४)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Oct. 1882. Vol. VI.] [No 2.

प्रयाग आश्विन कृष्ण ५ सं० १९३९ जि० ६] [संख्या २

(जेहलखानों के कारखानों की निसबत नया हुक्म)

हम अपने लाट साहब श्रीमान् रिपन बहादुर को अनेकशः धन्यवाद देते हैं जो प्रजा के हित में तन मन से उतारू हैं नित्य नित्य इनकी नए नए नियम सब प्रकार यहां वालों को लाभदायक और कल्याणकारी ही जंचते हैं फिर भी कोई २ अंश में भूल होती

जाती है एक आदमी चाहे जैसा विद्वान हो अकेला सब बातों को नहीं जान सक्ता इस लिए हम लोगों को उचित है कि ऐसे धर्मशील शुभचिन्तक शासनकर्ता को सब तरह सहायता पहुंचावें और जो बात अपने हित की समझैं उन्हें चितावें और जिसमें अपनी हानि हो उस्के दूर करने को उन से प्रार्थना करें; जेहलखानों में जो सब भांत के काम बनते हैं उस्से प्रजा को बड़ा नुकसान है रोज़गारियों का रोज़गार नित्य २ घटता जाता है क्योंकि लोग जेहलखानों की सी अच्छी और सुथरी चीजें इतने थोड़े दामों में नहीं बना सक्ते इसी से उनकी बिक्री नहीं होती तब लाखों आदमी निकम्मे हो गए यदि सर्कार के हाथ में यह काम न होता और वेही सब चीजें हम लोग बनाते जैसा पहले बनाते थे तो कितने लोग काम से लगे होते और प्रजा की कितनी भलाई होती इन्ही सब बातों को सोच बिचार हमारे नए लाट साहब ने २३ सितम्बर के गज़ट आफ इण्डिया में यह हुक्म दिया है कि जेहलखानों में जो अच्छे २ काम बनते हैं सब बन्द कर दिए जांय जिसमें प्रजा उन कामों को आप ही कर उस्से लाभ उठावे और बँधुओं से सिवा मेहनत के काम के हुनर कारीगरी वा कलों का कोई काम न लिया जाय जो काम खास उनके लिए आवश्यक हो वह करें और कुछ थोड़ा बहुत बाहर का काम भी करैं पर वह ऐसा ही काम हो जिस्से प्रजा के धंधे में कुछ बिगाड़ न हो और जेहलखानों की बनी चीजों के दाम इतने बढ़ा दिए जांय कि बाहर के कारीगरों के हाथ की बनी चीजें उस्से सस्ती पड़ैं जिस

में लोगों को बाहरी कारीगरों से लेने से गौं पड़े यहां तक तो यह प्रबन्ध बहुत ही उत्तम और सराहना के योग्य हुआ परन्तु आगे बढ़ के उसी हुक्म में लिखा है कि कैदी लोग सरकारी सड़कों और मकानों के काम में मजदूरी पर लगाए जांय इसमें बड़ी हानि यह है कि हजारों कारीगर राज मजदूर कुली आदि शागिर्दपेशे जिन्हें दूसरा कोई काम आता ही नहीं दिन भर की सख्त मेहनत से किसी तरह दो पैसे कमा खाते हैं सब व्यर्थ मारे पड़ेंगे इसलिये हमारी प्रार्थना है कि लाट साहब अपने हुक्मों को फिर सोचें और इस इतने अंश को बदल दें हमारी समझ में खेती से बढ़ कर और कोई दूसरा ऐसा काम न[illegible] है जो कैदियों से लिया जाय जो धरती जङ्गल पड़ी है सरकार उसे सुध-रावे उसमें खेती करावे इसमें प्रजा का किसी तरह का अक-ल्याण नहीं है किन्तु सब भलाई ही भलाई है एक तो जो धरती बे काम पड़ी है सब उठ जायगी और जो अन्न पैदा होगा वह प्रजा के बीच सस्ता होकर बिकैगा महँगी मनाने वाले बनियों की नानी मर जायगी सब तरह अच्छा ही अच्छा है किसी को किसी बात की शिकायत न रहैगी ॥

रेल के अधिकारियों का अविवेक।

क्या कारण है कि तीसरे दरजे की गाड़ियों में गोरे मुंह वालों के लिए एक कमरा अलग ही रख दिया जाता है कि कोई काला आदमी उसमें न बैठने पावे वही दूसरे और पहले दरजे की गाड़ियों में काई गाड़ी अलग नहीं लगाई गई जो सिर्फ हिन्दुस्तानियों ही के लिए हो यह रेल वालों का निरा अविवेक और अन्याय है ; जो साहब बहादुर को काले आदमियों के साथ बैठने में घृणा है तो

क्या हिन्दुस्तानियों को अङ्गरेज़ों के मुह की शराब की भभक और कच्ची मांस की दुर्गन्धि और उनके भ्रष्ट और दुष्टाचरण पोसाते हैं? बल्कि बहुतेरे हिन्दुस्तानी इसी डर से पहले और दूसरे दरजे की गाड़ी में नहीं सवार होते; ऐसा भी देखने में आया है कि लोगों ने उन दरजों का टिकट लिया अथवा उन दरजों का पास रखते हैं पर इसी दुःख के कारण इण्टरमीडिएट में बैठ कर गए आए हैं हम निश्चय कह सकते हैं कि जो पहले और दूसरे दरजे की गाड़ी हिन्दुस्तानियों के लिए अलग कर दी जाय और अङ्गरेज़ लोग उसमें न बैठने पावें तो उससे अधिक सुख। फिर पहले और दूसरे दरजे में जाया करें जितने अब जाते हैं और रेल वालों को भी बड़ा लाभ हो इस बात के संशोधन की ओर नीतिवती सरकार को भी बहुत कुछ ध्यान देना चाहिए क्योंकि बिना सरकारी डांट के ये रेल वाले कभी चेतने वाले नहीं हैं; कदाचित् कोई यह कहे कि तुम तो वह उपाय बतलाते हो जिससे अङ्गरेज़ और हिन्दुस्तानियों में कभी मन न मिले बल्कि दोनो में जो पृथक् भाव है वह दिन २ दूना होता जाय सो यह कहना और समझना बड़ी भूल है हम तो मन से यही चाहते हैं कि केवल अङ्गरेज़ों ही पर क्या सब संसार भर के लोग एक हो जांय परन्तु हमारे अकेले के चाहने से क्या होता है किसी कवि का वचन है। "प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिल ते न मिलाप" बलात् चाहो आप मिला दो नहीं तो दोनो में मिलाप होना बड़ा दुर्घट देखाई देता है जब तक अङ्गरेज़ लोग जेता होने का सब घमण्ड छोड़ हिन्दुस्तानियों से भाई की भांति न मिलें, "तुम तो बसत पहाड़ पर हम यमुना के तीर। अब का मिलना कठिन है पायन पड़ी जँजीर" जब स्वभाव से दोनो अनमिल ठहरे तो जब तक दोनों अपना अपना स्वभाव बदल कर एक न हो जावें तब तक क्या यह अन्याय नहीं है कि अङ्गरेज़ों के लिए तीसरे दरजे में अलग गाड़ी लगा दी जाय और हिन्दुस्तानी बेचारे पहले और दूसरे दरजे का टिकट भी ले अङ्गरेज़ों के दुबैल हो कर बैठा चाहें तो बैठें नहीं तो तीसरे दरजे में जहां जगह पावें जा कर बैठ रहें; फिर इस तीसरे दरजे में भी कभी कभी जो घमासान होती है उसे याद कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं खास कर

मेलों के दिनों में जब कि सब थान बारह पसेरी कर दिया जाता है महा नीच कुली कबारी जिनकी देह से दुर्गन्धि उठती है और कपड़ों में मैरी चीलर भरे रहते हैं अच्छे सुफेदपोश भलेमानुषों के साथ ठूंस दिए जाते हैं रैल के अधिकारी इसका कुछ प्रबन्ध किया चाहें तो क्या कुछ असम्भव है पर इन पर कोई जोड़ा करने वाला हई नहीं ये परम स्वतन्त्र कब सुनते हैं॥

सीतावनवास नाटक।

संख्या १ के आगे से॥

दूसरा अङ्क।

स्थान

जानकी का शयन गृह॥

(जानकी सोती हैं और राम बैठे हैं)

राम (कुछ देर तक जानकी का मुख देख) अहा प्रिया के मुखचन्द्र की शोभा देख हमारे चित्त चकोर को परम आनन्द होता है; यह हमारे घर की लक्ष्मी है और नैनों की रसाञ्जनवर्तिका है स्पर्श इसका चन्दन रस के अभिषेक से भी अधिकतर अङ्गों को शीतल करता है; अहा इसकी जितनी बात हैं सब में अलौकिक सुख है यदि इसकी जुदाई की असह बिरह बेदना सहने को भय न होती॥

द्वारपाल (आ कर) महाराज दुर्मुख आया द्वार पर खड़ा है क्या आज्ञा होती है॥

राम (स्वगत) अन्तःपुर में रहने वाला यह दुर्मुख हमारा अत्यन्त बिश्वसित सेवक है इसे हमने बतौर जासूस के इस लिए भेजा था कि यह जा कर नगर में घूम २ इसकी खोज करे कि पुरवासी लोगों की हमारे प्रति क्या सम्मति है (प्रकाश) अच्छा उसे भीतर ले आओ॥

द्वारपाल। जो आज्ञा, बाहर जा कर दुर्मुख को साथ लिए फिर आता है॥

दुर्मुख (स्वगत) हा कैसे सीता देवी का यह जनापवाद देव से कहेंगे अथवा क्या कीजिए इस मन्दभाग्य को यह आज्ञा दी है कि जा कर खोजो कौन हमारी निन्दा और कौन प्रशंसा करता है (पास जाकर प्रकाश) महाराज की जय हो॥

राम। दुर्मुख कहो क्या समाचार लाए हो।

दुर्मुख। महाराज अयोध्यावासी सकल नर नारी आप की स्तुति करते हैं क्या नगर के क्या गांव के रहने वाले सब यही कहते हैं राम राज्य में हम बड़े सुखी हैं॥

राम। यह प्रशंसावाद तो तुम लोगों का दस्तूर है ऐसा तो तुम सदा ही कहा करते हो इस लिए हम तुम्हें नहीं भेजते कि झूठी सांची बात गढ़ गढ़ाय हमारे सामने कह दिया करो किन्तु बतलाओ कोई हमें किसी बात में दोषी भी ठहराता है यदि कोई दोष हो तो उसे कहो हम जल्द उसकी वैसी उपाय करें॥

दुर्मुख (आंखों में आंसू भर) देव आज हमने एक ऐसी सर्वनाशकारी कथा सुनी है उसे जब हम सोचते हैं कि हाय यह दारुण वृत्तान्त हमें महाराज से कहना होगा तब हमारे संपूर्ण देह का रुधिर सूख जाता है महाराज हमने जैसा सुना वैसा निवेदन करते हैं इसमें हमारा अणु मात्र दोष नहीं है।

राम। दुर्मुख जो यथार्थ हो उसे तुम निःशङ्क हो कर कहो॥

दुर्मुख। देव प्रायः सकल पुरवासी एक मुख हो मन वच कर्म से आप की सुख्याति ही कहते हैं कि रामराज्य में हम बड़े सुखपूर्वक वास करते हैं; कोशल देश में आज लों ऐसा कोई राजा नहीं हुआ जो प्रजापालन का ऐसा उत्तम प्रबन्ध स्थापित किया हो किन्तु कोई २ राज अहितो महारानी सीता देवी के प्रति कुछ कुत्सित वचन कहते हैं कि सीता इकेली इतने दिनों तक रावण के घर में रहीं और बिना कुछ दोष बुद्धि के राम ने अपने घर को सिरमौर उन्हें कर लिया; भली अच्छा हुआ अब हम लोगों की स्त्रियों में यदि कोई कलङ्क लग जायगा और रामचन्द्र उनका शासन करने को उद्यत होंगे तो उन्हीं के दृष्टान्त से उन्हें कायल कर निरुत्तर कर देंगे; अथवा धर्म अधर्म दोनों का प्रवर्तक राजा ही होता है राजा जिस धर्म का अनुसरण कर चलता है प्रजा को भी उसी पथ पर चलना उचित है; महाराज जो कुछ सुना निवेदन किया हमारा अपराध क्षमा कीजिए (रोदन पूर्वक) हाय इस समय दुर्मुख यह नाम मेरा सार्थक हुआ॥

राम। हाय इतने पर भी हम अब क्या समझ देह धारण किए रहें; निश्चय हमारे समान हतभाग्य इस क्षिति तल पर दूसरा कोई न होगा; यह सब हमारे मन्दभाग्य ही का कारण था कि उपस्थित राज्य का तिरस्कार कर १४ वर्ष लों वन २ भटका किए केवल इतना ही नहीं वरन दुर्दान्त दशानन ने प्राणप्रिया जानकी से हमारा वियोग करा दिया जिससे परम पुनीत रघु कुल में हमारे कारण

इतना भारी कलङ्क लग गया; हा किसी प्रकार बड़े यत्न और श्रम से लङ्कापति की जीत जानकी मिलीं भी तो पर रहह दारुण रूप यह अपवाद ऐसा गले बँध गया है जो कोटि न्ह यत्न से आजन्म दूर होने वाला नहीं जान पड़ता; हा निस्सन्देह राम का जन्म केवल दुःखही भोगने को दिया गया है ॥ "यत्रा विचेद्रीपतं भूमिपालैर्लोकश्रेष्ठैः साधुशुद्धचरित्रैः । मत्सम्बन्धात्कश्मला किंवदन्ती स्याच्चेदस्मिन् हन्तधिङ्मामधन्यम्" अब इस समय क्या करना उचित है यह हम कुछ नहीं जान सके इस दुर्निवार लोकापवाद से बचने को क्या उपाय करें; इस अपवाद को अमूलक कह यदि उपेक्षा कर देते हैं तो कुल में कलङ्क सदा के लिए लगा ही रहैगा और जो कुल को इस कलङ्क से विमोचित करते हैं तो निरपराध जानकी का त्याग होता है; हा इस उभय सङ्कट में क्या करना चाहिए (गरदन नीची कर थोड़ी देर सोच दुर्मुख से) दुर्मुख अच्छा तुम जा कर अपना काम देखो हम इसको कुछ उपाय जल्द करते हैं ॥

दुर्मुख (जो आज्ञा) बाहर गया ॥

राम (ठंढी सांसें भर) अब हमें कर्तव्य अकर्तव्य के विवेचन का कुछ प्रयोजन नहीं है जब कि राज्य का सम्पूर्ण भार हमारे ही ऊपर आरोपित है तो लोकरञ्जन सब तरह हमारा मुख्य काम है सुतराम् अब जानकी का त्याग ही उचित है; हा हतविधि तेरे मन में क्या यही है कि हम निरपराध सीता देवी का त्याग कर दुरपनेय पाप पङ्क में मग्न हों; हा विषम दुर्घटना भावी प्रबल अष्टावक्र के सामने जो हमने प्रतिज्ञा किया था कि लोकरञ्जन निमित्त यदि जानकी भी छुट जांय तो वह भी हम करेंगे सो अब वही बात सच हुई; हा प्रिये जानकी, हा प्रियवादिनी, हा राम मय जीविते; हा अरण्यवास सहचारिणी, हा पति देवते, हा पतिप्राणे, हमें स्वप्न में भी यह अनुमान न था कि परिणाम में तुम पर ऐसी दुर्घटना आ पड़ैगी; हा जिनके जन्म ग्रहण से जगत भर पवित्र हो गया उनमें जन समाज से ऐसा भारी धब्बा लगाया जाय; जिनसे तीनों लोक नाथवान है सो अब अनाथ हो विपत्ति सागर में मग्न रहेंगी ॥

त्वयाजगन्तिपुण्यानि त्वय्यपुण्याजनोक्तयः।
नाथवन्तस्त्वयालोकास्त्वमनाथाविपत्स्यते॥

देवी हम ऐसे दुराचारी नराधम हत-

भाग्य के हस्तगत हो तुम्हें छिन भर के लिए भी कभी सुख न मिला हा तुमने चन्दन तरु के भ्रम से दुर्विपाक विष वृक्ष का आश्रय लिया " अपूर्वकर्मचाण्डाल मयिमुग्धे विमुञ्चमाम् । श्रितासिचन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाकंविषद्रुमम् ॥ " हा इम परम पवित्र राजकुल में पैदा हो कर्म में चाण्डाल से भी अधिक अधम हैं नहीं तो बिना अपराध क्यों तुम्हें त्यागते ; हा इस समय यदि हमारा देह पात हो जाता तो इस सीता परित्याग रूप पाप कर्म से छुटकारा पाते ; हा इस समय अब हमें संसार के कोई पदार्थ मन के रमावने वाले नहीं देख पड़ते ; यह संपूर्ण चराचर विश्व शून्य घोर अरण्य सा मालूम होता है अब हमारे जीवन का अन्त आ पहुंचा है (क्षण भर मूर्छा से हो) हा यह क्या असम्भावित सी बात आन पड़ी हाय हमें अब कहीं शरण नहीं है हमारी यह क्या दशा हो गई हा अम्ब अरुन्धती, हा मातः, हा तात जनक, हा देवि वसुन्धरे, हा कुलगुरो वशिष्ठ, हा भगवन् विश्वामित्र, हा प्रियबन्धो विभीषण, हा परमोपकारिन् सखे सुग्रीव, हा सौम्य हनूमान तुम सब लोग कहां हो इस समय यह दुरात्मा राम हतक तुम सबों का सर्वनाश करने पर उद्यत हुआ है अथवा हम सरीखे नराधम महापातकी तादृश महात्माओं के नाम ग्रहण के अधिकारी भी नहीं हैं उनका नाम हम ऐसे महापातकी की जिह्वा का स्पर्श पाय उन्हें भी पातकी करता है ॥ " तेहिमन्येमहात्मानः कृतघ्नेनदुरात्मना । मयागृहीतनामानः स्पृश्यन्तइवपाप्मना ॥" हा हम सरलहृदया शुद्धचारिणी पतिप्राणा जानकी सी बधू को नितान्त निरपराध जान कर भी अनायास परित्याग करने को उद्यत हुए हमारे समान पातकी दूसरा कौन होगा ; हा रामभद्र जीविते पामाथ हृदय नृशंस निठुर मेरे कारण तुम्हारी यह दशा होगी इसका कभी स्वप्न में भी तुम्हें ध्यान न रहा होगा ; निस्सन्देह राम का हृदय वज्रलेपमय है नतु वा अब तक विदीर्ण हो जाता अथवा विधाता ने जान बूझ हमारा ऐसा कठोर हृदय कर दिया नहीं तो यह चाण्डाल कर्म हम से कदापि न होता (खड़े हो कृताञ्जलि पूर्वक) प्रिये हतभाग्य यह राम तुम से अब जीवितावधि विदा मांगता है ; देवि वसुन्धरे दुरात्मा राम तुम्हारी पुत्री सीता का निरपराध त्याग करता है अतएव अब इसका पालन

पोषण रक्षण आविष्कार सब तुम्हारे आधीन है ; चलें एक बार अपने भाइयों से भी इस पाप कर्म को सलाह कर लें ॥

(अप्राप्त)

क्रमशः ।

(हमारे नई रोशनी वाले बेचारे कहां मुंह छिपा कर जाय बैठें)

यूरोप के हर एक प्रान्तों में इन दिनों मांस और मद्य से परहेज़ की निसबत बहुत कुछ आन्दोलन हो रहा है कितनी कमेटियां और सभाएं इसके लिये नियत हुई हैं और लक्षावधि मनुष्यों ने इसे त्याग दिया बल्कि कितने तो मांस से इस क़दर परहेज़ी हो गए हैं कि उन का चमड़ा और जानवरों की खाल का बना जूता तक पहनना छोड़ दिया ; अब हमारे धर्मांकुश विहीन नई रोशनी वाले हिंदुस्तानी मारे शरम के मुंह छिपाय कहां जा कर बैठेंगे कि सैरों साबुन पोतने पर भी उनका काला चूल्हा सा बुझा और काला कोयला सा चमड़ा गोरा न हुआ मनो बरांडी और शांपिन ढाल गए पेस्टरियों बिसकुट और अंडे तल तल चट्ट कर गए तो भी नीम साहब से पूरे न बने न साहब लोगों की सी तेज़फ़हमी समझ और साहस आया ; देश के सुदिन और कुदिन इसी को कहते हैं यूरोप के सब भांत सुदिन हैं कि वहां के लोग जो जो उनमें बुराइयां हैं उन्हें जांच २ छोड़ते जाते हैं वही हिंदुस्तान के कुदिन का उदय हो रहा है कि यहां के बड़े २ कुलीन सत्पथ निरिख २ कर झूठे साहब बनने की हौंसिले से बुराइयां ग्रहण करते जाते हैं और समझते हैं खाना पीना आदि भ्रष्टाचारी देश की उन्नति की पहली सीढ़ी है ; सच है मनुष्य स्ववश नहीं

है इसका किया कुछ भी नहीं हो सक्ता श्रीमुख वाक्य है "भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानिमायया" ईश्वर यदि सानुकूल न हो तो जितनी बात सदपट्ट पड़ती जाती है भलाई की इच्छा से और अच्छा समझ जो कुछ आदमी करता है वह परिणाम में बुरा और उसके लिए विष हो जाता है ; अरे टेढ़े मन वाले निरीश्वरवादियो अब भी तो अदृष्ट और ईश्वर पर बिश्वास लाओ ; जौन अक्लि का अजीरन तुम पर सवार है कि हम कितना ही कहैं तुम कभी टस से मस न होगे ; न हो लाचारी है ॥

(प्रत्यभिज्ञा दर्शन)

प्रत्यभिज्ञा मतावलम्बी कहते हैं जैसा तन्तुवाय के बिना हुए तूरी तन्तु आदि जड़ पदार्थ पट आदि कार्य के कारण नहीं हो सकते वैसा ही जगत् कार्य्य का कारण स्वरूप सिवा परमेश्वर के दूसरा नहीं है ; योगी अपने योग बल से चूना ईंट प्रभृति लौकिक कारण सापेक्ष न हो निज इच्छा ही से निविड़ अरण्य बन में भी योग बल से पक्का घर बना सक्ता है वैसे ही जगदीश्वर ने जगन्निर्माणार्थ जड़ात्मक जगदन्तर्गत किसी वस्तु की अपेक्षा न रख स्वेच्छानुकूल जगत् का निर्माण किया है ; फिर यह जगन्निर्माण रूप कर्म बिना किसी की प्रेरणा और सहायता के उसने किया है इस कारण वह स्वतन्त्रकर्ता कहा जा सक्ता है ; जैसा स्वच्छ दर्पण में मुखादि का प्रतिबिम्ब पड़ने से मुख आदि देख पड़ते हैं वैसे ही जगदीश्वर में सकल वस्तु का प्रतिबिम्ब पड़ने से सब प्रकाश हो जाता है इस लिए ईश्वर को हम जगद्दर्शन दर्पण भी कह सकते हैं ; इसी तरह जैसा बहुरूपिया स्वेच्छाक्रम से कभी राजा कभी रङ्क कभी स्त्री कभी बालक कभी वृद्ध कभी युवा आदि का रूप धारण कर लेता है ऐसे ही ईश्वर भी स्थावर जंगम अनेक रूप धर लेता है सुतराम् यह संपूर्ण जगत ईश्वरात्मक ही है ; परमेश्वर आनन्दमय और प्रमाता अर्थात् ज्ञान और ज्ञाता स्वरूप है तब घट पट आदि का जो जो ज्ञान हमें होता है वह सब परमेश्वर

स्वरूप है; अब यहां पर वादी यह प्रश्न करता है यदि समस्त वस्तु विषयक संपूर्ण ज्ञान एकमात्र ईश्वर रूप है तो घट के ज्ञान से पट के ज्ञान का भेद क्या रहा? विचार पूर्वक देखने से इस शङ्का का उत्थान ही नहीं हो सक्ता। क्योंकि समस्त वस्तु विषयक वास्तविक ज्ञान का भेद न होने से भी घट से पट का स्वरूप भिन्न है ऐसा मानने से कोई शङ्का नहीं उठ सक्ती जैसा कटक कुण्डल दि रूप में परिणत सुवर्ण का वास्तविक भेद न रहने से भी कुण्डल और कटकादि रूप उपाधि भेद से कुण्डल से कटकालङ्कार भिन्न है ऐसा सर्वजन सिद्ध व्यवहार हो सक्ता है; इस मत में मुक्ति प्राप्त करने की उपाय एक मात्र प्रत्यभिज्ञा ही है अन्य मत समान इस मत में जप तप पूजा ध्यान योग आदि के अनुष्ठान की कुछ आवश्यकता नहीं है प्रत्यभिज्ञा द्वारा ही सब की सिद्ध सम्भव है "सएवेश्वरोऽहम्" वही ईश्वर हम हैं, परमेश्वर सहित जीवात्मा के ऐसे अभेद ज्ञान को प्रत्यभिज्ञा कहते हैं; इनके मत में जीवात्मा से परमात्मा का भेद नहीं है इन दोनो का परस्पर भेद मानना, केवल भ्रम मूलक है और इस अभेद की सिद्धि अनुमान के द्वारा होती है जिस्की प्रणाली इस प्रकार से है; जिस व्यक्ति को ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति दोनों हो वह परमेश्वर है और जिसे यह दोनो न हो वह ईश्वर नहीं है जैसा गृह आदि जड़ पदार्थ; जीवात्मा में ये दोनों रहते हैं इस्से जीवात्मा परमेश्वर से अभिन्न है किन्तु आत्मा को प्रत्यभिज्ञा न होने से वह अपने को ईश्वर से भिन्न मानता है इस लिए प्रत्यभिज्ञा शास्त्र का अवश्य मनन करना उचित है॥

अथ शा० आ० श्रीमदम्बिकादत्तव्यास विरचितम्।

(द्रव्य स्तोत्रम्)

यस्यस्मरणमात्रेण सर्वेविस्मयंति जनैः। धर्मकामादिकांतस्मै द्रव्यायास्तुनमः सदा॥१ सुवर्णतास्त्ररजतमुक्ताद्या कृतधारिणे। अनेकरूपरूपाय द्रव्यायास्तुनमः सदा॥ २॥ श्रीमन्तोपि च श्रीमन्तो श्रीमन्तो न भवंति वै। अकार्ये यस्यशक्त्याके सर्वशक्तिमते नमः॥ ३॥ द्दिव्याकारं पिटकशयनं भासिताभं भवेशं, द्दणाधारं कनकतद्दशं श्वेतवर्णं द्दढाङ्गम्। कान्त्याकान्तंविहृतनयनं निर्धनध्यानगम्यं, वन्दे रूप्यं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥ ४॥ संध्येत्वांप्रणमामि

देऽसबिलः किन्तोऽर्थ्यदानैरितो, गङ्गे द्वा-
प्रयस्तवापि चलितो देवै गृहे स्थीयतां।
मागायाथ अपि प्रज्ञोपमखिल त्वमादार
श्रोस्म्यऽहं, द्रव्ये भव्यतीक्ष्णसमस्तसुखदे भ-
क्त्यानतो नम्यता ॥ ५ ॥ जले द्रव्यं स्थले
द्रव्यं द्रव्यं पर्वत मस्तके। यादृशा कस्थले
द्रव्यं सर्वं द्रव्यमयं जगत् ॥ ६ ॥ हिरण्यग-
र्भः समऽवर्त्ततोग्रे ततः समस्तः समभूतप-
क्षः। अतोहिरण्याय परेश्वराय विश्वस्य
बीजाय चिरं नमोऽस्तु ॥ ७ ॥ अपाणिपादो
जवनोग्रहीता यतीयकोभूतमहाशयाख्यः।
कुर्वन्महाधर्मं सुधर्मकारो धनाभिधः कस्य
न पूजनीयः ॥ ८ ॥ अलोगपदं कणभुक्
समस्तपदार्थजातस्य पुरः समानम्। ध-
नापराख्यः स न किं नमस्योस्त्यणो रणी-
यान् महतो महीयान् ॥ ९ ॥ ऋणजञ्जपाला-
दपरम्परामि मैन्त्वंशीकारकरैरवल्लम्।
करम्बनः सर्वजनस्य भूषः प्रियो न कस्या-
खिलभूविभागे ॥ १० ॥ शुद्रस्तु शूद्रापि
भवत्प्रभावात् प्राप्नो भवेत्किंचन तादृशस्तु।
बहन्तु मन्ये यवनापि चेत्स्यात्काद्वाजपेयी
भवतां न चित्रम् ॥ ११ ॥ सदर्प दुस्सह्यभि-
दुरूहदीर्घं दरस्य दुर्दण्डविमाननाभिः। भ-
व्या यदर्थं विबुधाः सहन्ते द्रव्याय तस्मै
नितरां नमोस्तु ॥ १२ ॥ हा हन्त वेदार्थं
विवेकशूरा विलोक्य दूरादपि यत्प्रभावात्।
वेदं विनीय स्वयमुत्सहन्ते द्रव्याय० ॥ १३ ॥
स्वयं विश्वदां दृढति व्यवस्थां ज्ञात्वापि सत्यं
सुबुधाणु दुःस्थाम्। यद्वचित्ता बुधवालिङ्ग-
ताय द्रव्याय तस्मै नितरां नमोस्तु ॥ १४ ॥
शास्त्रपडत: पण्डितमण्डलानामऽपण्डितो-
पि प्रभव न किं स्यात्। सुमण्डितस्त्वाभ-
रणै स्वदीयैस्तस्मै द्रव्य नमोस्तु तुभ्यम् १५
यदर्थमेते जननीं स्वसारं तातं पितृव्यं च
सहोदरं च। द्रुह्यन्ति लुण्ठन्ति च घात-
यन्ति च ता धमा द्रव्यमहं तदीडे ॥ १६ ॥
धर्माधिकारी विकणाद्धि धर्मं अधर्मदं कार्य
मवाप्य यस्य। मर्मस्पृशो नर्मकरा भवन्ति
यन्माथया द्रव्यमहं तदीडे ॥ १७ ॥ स्वाभि
प्रदत्तावपटादिसर्वं विस्मृत्य सेनापतयो-
प्यखर्वम्। यस्य प्रसादाद्विगुदासगर्वं भज-
न्ति तस्मै नितरां नमोस्तु ॥ १८ ॥ कुर्वन्ति
वैश्याः स्वयमुत्तमर्णा भूमीश्वरादीनपि चा-
धमर्णान्। येषां प्रभावादतिधन्यधन्यान्यश्री
धनान्यिव भजे न चान्यान् ॥ १९ ॥

सुगन्धितैलाद्रिलसत्सुकेशाः शूद्रा अपि
स्वीकृतवर्यवेशाः। सच्छन्दनाचर्चितभालदे-
शाः यतोऽभवंस्तं षितभूतलेशाः ॥ २० ॥
उपानहां स्यूतिकरोपि डेयः शूद्रोऽधमेष्वेव
विराजते यः। भवत्यहो यत्कृपया प्रियः
यशः कलापः किमु नास्य गेयः ॥ २१ ॥
कान्ता नवीनास्तरलास्तुरङ्गाः मतङ्गजा

भूधरभास्वदङ्गाः । उद्दा गरिष्ठाः कलधौ-
तरङ्गाः न दुर्लभा यत्कृपया सरङ्गाः ॥२२
यत्संयुताद्रुवगुणैर्विहीनात् कश्चाज्जनाद्प्य-
खिलो बिभेति । ईशस्य भक्तादिव याम्य-
दूतो द्रव्याय तस्मै प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥२२
यस्याभिलष्याभिन इत्युदीरिताः यज्ञाभि-
नो भोगिवराः समीरिताः । यद्दाभिनो
दानिन एव विश्रुताः धनाभिधास्ते नहि
केन संस्तुताः ॥ २४ ॥ व्यालसच्छविविभा-
विभासितम् । भिक्षुकाबलिमनः कृताशि-
तम् । को जनो बहुलभूतिभूषितम् । नो
धनं भजति भावकम्पितम् ॥ २५ ॥ नीरोग
भावो वपुषश्च कान्तिः कुशलत्वनिर्मतिरु-
न्नता च । यत्प्राप्तिमात्रेण भवेज्जनस्य
तस्मै धनायाद्य नमो ममास्तु ॥ २६ ॥
पवित्रतां सत्कुलजा अहाति स्वमत्कार्य्यं
च पुमान् कुलीनः । यस्य प्रभाभिः कुलमाव-
लिम्पात् द्रव्य सदा तच्छरणं ममास्तु ॥ २७
कुसान्तपत्राणि परःशतानि सुपाञ्चलैर्लैक्ष
शतैर्युतानि । स्वप्नाङ्कुकान् यानि सदार्थ-
यन्ति धनानि तान्यत्र न कि भवन्ति ॥२८
नृत्यन्ति गायन्ति हसन्ति यान्ति धावन्ति
गर्जन्ति रुदन्ति चैव । यदर्थमेते मनुजा
दरिद्रास् तदेव सर्व्वं प्रणमामि द्रव्यम् ॥२९
तप्तायसः पिण्डमही लिहन्ति रोहन्ति
वंशं च गुणी चलन्ति । यदर्थमाऽऽश्चर्यकरा

धनं तज् जिहृक्षितं सर्वजनस्य नौमि ॥३०
गतापराधानपि दण्डयन्ति कृतापराधान-
पि च त्यजन्ति । यद्भ्रान्तचित्ता किल रा-
जकीयाः वित्ताय तस्मै प्रणतिर्मदीया ॥ ३१
उपानत्प्रहारैरहो ताडिताङ्गा सुनिर्भर्त्सि-
ताः कारगेहे निबद्धाः । यदर्थं व्यथास्त-
स्कराः संसहन्ते धनायाऽद्य तस्मै नमस्ते
नमस्ते ॥ ३२ ॥ हा हन्त भूषणमुषः स्वव-
पुःपुरस्तो बालांल्ललामललना अपि घात-
यन्ति । पश्चात् स्वयं च नृपसंयमनैर्म्रिय-
न्ते यत्प्राप्तयेऽविदिततत्त्वमघं तदीडे ॥ ३३
त्यक्त्वा गृहाणि विदुषां कृपणेषु रक्ताम् भ-
क्तीकृते च गणिकागणकेऽपि सक्ताम् । लो-
कावितर्तितजगत्त्रितयं प्रधानम् वित्तं
नमामि नितरां सुखदं समानम् ॥ ३४ ॥
भ्रष्टवैगर्वा अतितुन्दिलाङ्गा महालसा मां-
समुरादिसक्ताः । प्रायो यतो वारवधू भुज-
ङ्गा भवन्ति मर्त्याः प्रणमाम्यहं तत् ॥ ३५
भेदो गिरीणां हननं हरीणाम् पूर्त्तिर्दरी-
णां च भिदाम्बरीणाम् । गतं तरीणामपि
दूरदेशे नदुर्लभं त्वत्कृपयास्ति वित्तम् ३६
नसंस्कृतस्योत्तमनं भवेत्किञ्चातिऽनुकूले त्व-
यि वित्त देव । सङ्गीतमङ्गीकृतमेतदाद्ये-
ऽर्पितं किं त्वत्कृपया पुनस्तत् ॥ ३७ ॥
सा ब्रह्मविद्यापि च वैद्यविद्या सांख्यञ्च
योगश्च रसादिविद्या । कलाकलापोऽपि न

शक्यते किम् प्रोक्षोभितुं ते सत्कवेः कटाक्षैः ॥ ३८ ॥ सताधुकर्म्मा परमां विधायैतदेशवास्तव्यजनेषु देव । कुरुष्व विद्योन्नमनं स्वभक्त देशाम्बतः पूर्णतया निदानम् ॥३८ तव धन महिमानं मःथवान् धन्यधन्यः क इह जगति विद्वान् वर्णयेत्पूर्णभावैः । अगदऽविदितत्त्व लिङ्गमात्रेण तत्त्वम् अपरत्वमनमागीनाचरीवाक्यिनां च । ४०॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव कीर्तिश्च यशस्त्वमेव । विद्या प्रतिष्ठा शरणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ ४१ ॥ द्रव्यस्तोत्रमिदं योच प्रातरुत्थाय संपठेत् । तस्य चेतःप्रसन्नं स्यात्प्रसादरहितं तथा ॥ धूर्त्तस्तु लभते धौर्त्त्यं शान्तस्तु शममृच्छति । लोभी लोभमवाप्नोति च त्यागी वैराग्यमुत्तमम् ॥ ४२ ॥ अन्यत्स्तोत्रसमं नास्ति द्रव्यस्तोत्रमिदं शुभम् । रसज्ञा यस्य कौशल्य कलाकौतुककोविदाः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्गौडेन्द्रवंशे हरचरणरजःपूरपूतान्तरात्मा दुर्गादत्ताभिधानः समजनि सुधश्रीभासिशोभाविशिष्टः । तत्पुत्रः शम्भुपादाम्बुजयुगमधुलिट् तातपादोपसेवी द्रव्यस्तोत्रं सभव्यं सकविरचित मानऽम्बिकादत्तशर्म्मा ॥४४

इति श्रीसाहित्याचार्यश्रीमदम्बिकादत्तव्यासविरचितमुक्ताहिरण्यमनोविनोदि द्रव्यस्तोत्रम् समाप्तम् शुभम् ।

या देवी सर्वभूतेषु द्रव्यारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥१

माघ मेला रिपोर्ट सरकारी गजट से ॥

मि० विन्सन जइन्ट मेजिसट्रेट इलाहाबाद जिनकी सिपुर्द इस मेले का इन्तिज़ाम किया गया था सिटी पुलिसइन्स्पेक्टर की बहुत कुछ तारीफ़ गाय रिपोर्ट में इसकी बद इन्तिज़ामियों को भरसक तोप ताप की है और अन्त में उक्त पुलिस इन्सपेक्टर को ५०० रुपया इनाम की सिफारिस की है ; जोतो सबकी खोल जाना इसी को कहते हैं देश भाषा तथा अँगरेजी अखबारों के इतना धूम मचाने पर भी कुछ असर न हुआ क्यायात्री क्या पण्डे क्या दूकानदार कोई इस मेले के इन्तिज़ाम से खुश नहीं रहे बल्कि जो २ अत्याचार लोगों पर हुआ है उसे कहते और लिखते काँपकपी होती है तो भी मुन्तज़िम साहब को ५०० रुपया

इनाम का हुक्म हुआ लाचारी है खैर आगे के लिए श्रीमान् आल्फ्रेड लाइल साहब लफटिनेगट गवर्नर ने हम लोगों के आर्त नाद पर कान दे यह आज्ञा दी है कि अब आगे से इस मेले के इन्तिज़ाम के लिए इलाहाबाद की म्युनिसिपल कमेटी की भी राय ली जाया करे और इसके महसूल और पुलिस आदि का बन्दोबस्त कमिशनर साहब की मंजूरी से हुआ करे और बिलकुल जिम्मेदारी इसकी जिलह के मेजिसटरेट पर रक्खी जाय; मेले में खाने पीने की जिन्स तथा पिंडे आदि की सामिग्री बेचने वालों को ठीके का बुरा दस्तूर उठा दिया जाय और दूकानदारों की जगह नीलाम के जरिये न दी जाय किन्तु एक साधारण किराए पर लोगों को जमीन बांटी जाय और दूकानदारों का चाल चलन अच्छी तरह दरियाफ्त कर लिया जाय खाने पीने की चीजों की एक निर्ख कर दी जाय उसे नियादह दाम पर कोई न बेचने पावे और उसमें किसी तरह की मेल दूकानदार लोग न करने पावें इसकी देख भाल उन लोगों के सिपुर्द रहै जो मेले के खास खास मुन्तज़िम हों; जिस दुकानदार की जिन्स में किसी तरह का मेल पाया जाय वह तुर्त मेले से निकाल दिया जाय और इस सब इन्तिज़ाम का पहले से एक आम इश्तिहार कर दिया जाय; मेले का सब खर्च दे दिवाय जो रुपया बचे वह इलाहाबाद म्युनिसिपालिटी की तहत में रहै और म्युनिसिपल कामों में खर्च किया जाय उक्त लाट साहब को इसका अनेक धन्यवाद है देखें आगे से इस मेले में कहां तक इन हुक्मों की पाबन्दी होती है॥

(करतूती कह देत आप नहि कहिए सांईं)

जहां गए सैयद अमीर अली देखें आ कर अपने सहवर्गियों की करतूत सदरउद्दीन ज़िलह फ़र्रुखाबाद के तहसीलदार २० वर्ष की नौकरी के बाद embezlement गवन के मुकद्दमे में फँस ६ महीने के लिए कैद हुए पहले डिपटी कलट्टर थे पद च्युत हो तहसीलदार कर दिये गए थे ; मासुमअली ज़िलह फ़तहपूर के तहसीलदार गवन के मामिले में फ़ँस नौकरी से बरतरफ़ किए गए ; और अब हमीरपुर के नायब तहसीलदार रिशवत के मामिले में फँस फ़ौजदारी सुपुर्द हो यहां आए हैं हमारे मेजिसटरेट साहब की कचहरी में इनका मुकद्दमा पेश है चांद घोटाए तसबी लिए सुफ़ैद डाढ़ी रक्खे रोज कचहरी में हाजिर रहते हैं ; सुनते हैं कि फ़तहपुर के पुलिस इन्स्पेक्टर भी किसी कसूर में मोअत्तल हो गए हैं * अब सैयद साहब से पूछना चाहिए कि मुसल्मानों के सुधरने को क्या तदबीर हो जिसमें उन्हें शिकायत की जगह न रह जाय इतने पर भी सरकार को कान नहीं होता हम गरीब हिंदुओं के मुकाबिले मुसल्मानों की फिर भी ज़ियादह कदर है सच है खुशामद में बड़ी ताक़त है ॥

(शिक्षा विभाग)

इलाहाबाद के लिए जो पश्चिमोत्तर देश का सदर मुकाम है मसल चिराग तले अँधेरा बहुत ठीक है और जहां और और बातें पुलिस आदि के प्रबन्ध में सरासर अंधेर हो है वहां शिक्षा विभाग भी अपनी मन मानी करने में क्यों पीछे रहे ; निस्सन्देह यदि ऐसा न होता तो यहां का जिला स्कूल एक उमदगी का

* ये महाशय भी मुसल्मान ही हैं।

नमूना क्यों कर बनता यहां जुलाई म-हीने में तीसरे दर्जे में पचास से ऊपर लड़के थे उनमें से कुछ छमाही परीक्षा में तीसरे से चौथे में उतार दिए गए और बाकी सितम्बर के अन्त तक उसी दर्जे में रहे ; जब मिडिल क्लास की प-रीक्षा के लिए लड़कों को फिहरिश्त में जाने का समय आया तो ४२ में से केवल २२ फिहरिश्त में दर्ज किए गए बाकी नालायकी के बहाने इमतिहान में श-रीक न किए गए ; यदि ये लड़के यथार्थ में बहुत सुस्त और खिलवाड़ी थे तो ८ महीने तक तीसरे दर्जे में क्यों रक्खे गए पहले ही उनको निकाल देना उचित था ; अब हम पूछते हैं वे लड़के एक बार चौथे दर्जे का इमतिहान दे चुके हैं फिर दोबारा उसी दर्जे में रह कर क्या करेंगे सिवा अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ गँवाने के ; सोचने की बात है लड़कों की ना-लायकी कारण सिर्फ उनकी सुस्ती नहीं हो सक्ती किन्तु इसमें मास्टरों का भी दोष है या तो उन्हें पढ़ाने का ढङ्ग नहीं आता या वे पढ़ाने में जी न लगाते हों; मास्टरों ने अपने लिए क्या अच्छा ढङ्ग निकाला है कि अच्छे २ लड़के दर्जे में रख लिए बाकी निकाल बाहर किए जब कभी लड़के कोई बात न समझें और पूछें तो यह कह देना I fio not care you understand or not I have done my duty "कुछ परवाह नहीं तुम समझो या न समझो हम अपना काम कर चुके" लायक लड़कों को लायक कर देने में कौन सी तारीफ है जब नाला-यक को लायक बनावे सच्ची तारीफ इसी में है ; साल भर मास्टर साहब चैन करते रहे इमतिहान का समय आया तब नींद से जगे सोचा कि कुल लड़कों के भेजने में पास हुए लड़कों की संख्या फीसदी बहुत कम हो जा-यगी इस लिए चुने चुने लड़कों को भेजें जिसमें हमारी नेकनामी हो ; यह सब अन्धेर साहब डइरेक्टर वा इन्-स्पेक्टर कोई नहीं देखते सुनते कोई हि-न्दुस्तानी हेडमास्टर होता तनक सी चूक के लिए बीसों बार टोका जाता साहब पन की पक्ख जिनमें लगी है उनमें किस की मजाल कि कुछ कहे सुने; इन दिनों अनरीत सब ठौर से सुड़ इसी शिक्षा विभाग को अपना घर कर लिया है यो-ग्यता और काम की बहुत कम सिर्ख है केवल बी० ए० और एम० ए० की दुम लगी रहनी चाहिए नए नए लोग

जिन्हें न कुछ तजरिबा है न पढ़ाने का ढङ्ग याद न लड़कों पर दबाव रख सक्ते हैं अध्यापक नियत होते हैं; और यदि-स्ती ते ज्यों ज्यों आदमी पुराना होता जाता है त्यों त्यों जानकारी के सबब उसकी कदर बढ़ती जाती है पर यरिस्ते तालीम के अफसरों की राय है कि आदमी जितना नया होगा उतना ही उस का इल्म ताज़ा होगा और अच्छा काम करेगा पर सच पूछो तो Art of teaching पढ़ाने का ढङ्ग बहुत कठिन है जो पुराने होने ही से आता है और यों तो कुरसी पर बैठ सभी टें टें कर सकते हैं; खेद की बात है जिन लोगों को अध्यापकी करते उमर की उमर बीत गई और जो इस काम में बड़े कुशल हैं उनको इन नए लोगों के आगे पुराने होने के कारण कोई पूछता ही नहीं; सुनते हैं अब कि साल फिर यहां ही के लोग मिडिल क्लास इमतिहान के परीक्षक नियत हुए हैं कुछ पर साल नाम पैदा किया है कुछ इस साल करेंगे सुनते हैं इस साल परीक्षकों को पारितोषक भी दिया जायगा; खैर ये तो शिक्षा विभाग की एक देशी बातें हैं जड़ पुष्ट रहे तो शाखा प्रशाखा आप ही हरी भरी बनी रहें;

हम ने १२ नम्बर में शिक्षा सम्बन्ध में कुछ लिखा था और अपनी उदार गवर्नमेण्ट से यह चाहा था कि विद्यानिधि विश्व श्रीयुत डाइरेक्टर साहब का सहायक एक अच्छा सुयोग्य विद्यानुरागी पुरुष नियत किया जाय जो विद्या विषयक विचार और गुण सम्बन्धी परामर्श में श्रीमान डाइरेक्टर साहब को सहायता दिया करै जैसा कि पुलिस के यरिस्ते में डिप्टी इन्स्पेक्टर जेनरल के रहते भी दफ़र में एक परसनल असिसटेण्ट इन्स्पेक्टर जेनरल साहब की सहायता के लिए रहता है इसी प्रकार हमारे शिक्षाविभागाध्यक्ष को सहायता को एक ऐसा पूर्ण विद्वान होना चाहिए जो किसी कालेज में कुछ दिनों तक प्रोफेसर रहा हो या किसी स्कूल का हेडमास्टर हो चुका हो क्योंकि स्कूलों में बिना कुछ दिनों तक अध्यापकी का काम किए शिक्षा विभाग के मर्म को कोई क्यों कर जान सकता है; सिवा इसके जो एतद्देशीय तथा योरोप देशीय विद्याबुधि रत्नों को चुन चुन के अपने हृदय भण्डार में रक्खे हुए हो जिसको अहर्निश सदा यही इच्छा रहती हो कि किसी प्रकार सुशिक्षितों की मण्डली बढ़े और निरक्षरों की संख्या घटती जाय यही र

सोसइटी और सभा का स्तम्भ हो अपने समय को समीचीन लेख वा ग्रंथ रचना आदि सत्कर्म में विभक्त किए हो; हम उस समय अपने भाग्य के गौरव और अपने देश की सुदशा की सराहना करते जब शिक्षाविभागाध्यक्ष के साथ ऐसा सुयोग्य सहकारी पाते पश्चिमोत्तर और अवध मिला के ४९ जिलों का शिक्षा प्रबन्ध और उसकी देख भाल उसमें गुण प्रसारण और दोषापकर्षण आदि कर्म बिना एक समीपवर्ती सहायक के क्योंकर सम्भव है; इस दशा में कितने काम दूरवर्ती विश्वासपात्रों के विश्वास पर छोड़ दिये जाते हों तो क्या अचरज है जो किसी तरह उसे कर कराय अपने शिर का बोझ हटाते हों; जिस प्रकार हमारी गवर्नमेण्ट हर एक प्रान्त के राजा बाबू रईस लोगों की मर्यादा घराना चाल ढाल योग्यता देखती और परखती रहती है और उसी के अनुकूल दरबारों में उन्हें दर्जा और खिलतें दिया करती है इसी तरह शिक्षाविभागाध्यक्ष को उचित है कि अपने प्राचीन देशोंके खण्डा-खुखण्ड पर दृष्टि रक्खें और जाने कि अमुक स्थान में अमुक घराना है जिनमें कुल परम्परा से अमुक विद्या या शास्त्र का अनुशीलन चला आया है अब उसकी क्या दशा है यदि हीन दशा उस घराने की हो गई है तो इसका क्या कारण है यदि द्रव्य हीन होने से हीनदशा हुई हो तो शिक्षाविभाग के अध्यक्ष को चाहिए कि गवर्नमेण्ट को इसकी इत्तिला दे हिन्दुस्तानी नरेशों से उनको सहायता करादे जाय अथवा सरकार खुद आप उनकी मदत करै यह बात शास्त्र प्रणाली को भी उपकारी होसकी है और धर्म सम्बन्धी शिक्षा भी इसमें बढ़ सकैगी जो शिक्षा कमिशन का एक अङ्ग है; हिन्दुस्तान की समाज को इसमें बहुत कुछ लाभ यह होगा कि जो पण्डित या मुल्ला धर्मशास्त्र या शराकी व्यवस्था देते थे अथवा धर्म के कामों में प्रधान या उपदेशक समझे गए हैं पर ग्रंथ गड्डा के अभिमान से मूर्ख होने के कारण उलटी सीधी बात बना के कह देते हैं जिससे प्रजा की बड़ी हानि है या तो उनके वचनों के पढ़ाने का यत्न किया जाय वा वह गौरवता उनसे छीन किसी दूसरे सुयोग्य को देदी जाय जो सच्चा देश हितैषी सत्यवादी और सर्व जन उपकारी हो; अच्छे विद्वानों की बात सीधी सादी होने के कारण कोई नहीं जानता

पाखण्डियों के गप सप और कपट हत्कारों लाखों मनुष्य सने हुए हैं जिससे दिन प्रतिदिन मूर्खता बढ़ती जाती है और समाज महामोघ और नष्ट हो गई है; पूर्वोक्त सत्यवादी परमार्थी सरल विद्वानों का आदर सत्कार सरकारी ओहदेदार जिनको विद्या सम्बन्धी कार्य्य सौंपा गया है केवल वचन से किया करें और सभा या कमेटियों में अच्छे श्रीमन्तों के सामने थोड़ी भी सराहना उनकी कर दें तो लोगों को उनके वाक्य या उपदेश के मानने में बहुत कुछ श्रद्धा बढ़ जाय इन्ही सब बातों के पूर्वापर को सोच विचार सर विलियम म्यूर साहब छोटे से छोटे स्कूलों में अच्छे लोगों को बटोर लेक्चर देते थे उक्त श्रीमान् का यह अभिप्राय था कि हमारी इस वृत्ति को देख पिछले हाकिम लोग भी ऐसा ही करेंगे सो उनके सिधारते ही उन सब बातों का उद्यापन कर दिया गया; बाजे नवशिक्षित समझते हैं कि हिन्दुस्तानी की खातिरदारी और उनकी विद्या के प्रचार से सरकार को क्या लाभ; हम कहते हैं देशी विद्याओं के प्रचार ही से मुख्य लाभ और उसके विपरीत करने से महा हानि है मूर्खता ही के कारण देशोपद्रव और विविध उत्पात उठते हैं इसकी परीक्षा भली भांत हो चुकी है गदर के जमाने में जिन रईस वा नरेशों के यहां अच्छे सुबोध सच्चरित्र सत्यवादी विद्वान रहे उन्हीं ने समझा बुझा के अपने अधिपति को शान्त और राजभक्ति में दृढ़ रक्खा और जहां केवल धूर्त पाखण्डी और टुटपुंजिये रहे उलटी सीधी राहु केतु की चाल बतला के उत्पात बढ़ा दिया और अन्त को आप और वे दोनों नष्ट हो गए; बङ्गाल में उत्साह बढ़ाने को अब तक विद्यासागर तर्कालङ्कार कवि रत्न वैयाकरण केशरी आदि की पदवी दी जाती है वहां के सत्प्रबन्धकों ने अपनी कुशाग्रबुद्धि से बि० ए० और एम० ए० के मुकाबिले बिसारद आदि की उपाधि नियत की है; एक तो हमारा देश चिरकाल से विद्या सम्बन्धी कार्यों की ओर से ऐस ही मरुभूमि बन रहा है दूसरे यदि हाकिम लोग काम निस्पृहता और बे परवाही से भुगतावें तो बस इतिश्री यह देश सुधर चुका; हम लोग गुण दोष प्रदर्शन का बोझ उठाए हुए हैं बिना कहे नहीं रहा जाता वही मसल है "काज़ी काहे दुबले, शहर के अँदेशे" यदि हमारे बिना कहे ही

अधिकारी लोग अपने अपने काम में सुचेत रहा करें तो हम लोग क्यों व्यर्थ सिर पचावें और राज काज को बातों से निश्चिन्त हो दूसरे विषय की ओर लेखिनी मोड़ें; किसी की प्रेरणा से अवध अखबार में किसी पहाड़ी महाशय का लिखा हुआ एक प्रेरितपत्र छपा है हम को इस्से क्या प्रयोजन लेखक महाशय चाहै पहाड़ी हों या चाहो जो हों परन्तु खेद इतना ही है कि उक्त लेख में जिन बातों का चर्चा भी न था निरर्थक वे बातें उन्हों ने बड़े जोश खरोश के साथ लिख दी हैं और एक परलोक वासी की निन्दा से पत्र भर दिया है; या, काकोवरण पर यह दोष आरोपित किया कि वे शराब पीते थे हम कहते हैं कायस्थों में मद्यपान तो परम्परा से चला आया है जिन लोगों के घर में स्त्रियां मांस की मिट्टी और मछली को जल तोरी कह कर जिह्वा को अपवित्र नहीं किया चाहतीं उन्हीं में से कितने लोग तनक सी अङ्गरेजी की छौंक लग जाने से कुसङ्गत में बैठ न जानिए क्या२ खाते पीते हैं और बाजारों में न जानिए क्या क्या करम कुकरम करते फिरते हैं; जिस में जो गुण दोष होते हैं कहे ही जाते हैं उक्त बाबू की प्रतिष्ठा किसी लोभ से नहीं लिखी गई किन्तु उनकी सत्कीर्ति ने हम से हठात् लिखवाया क्या भया जो उनमे एक पान दोष था "एकोहिदोषोगुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोःकिरणेष्विवाङ्कः" बाबूसाहब ने आगरा कालिज में अङ्गरेजी और हिन्दी फारसी हासिल की थी विद्वान् और आलिमों के बड़े कदरदां थे बरेली में नैंव स्कूल बैठाए और लिटरेरी सोसाइटी के स्थापन में बड़ा यत्न किया करते थे यहां तक कि अपना छापाखाना उस सोसाइटी को दे दिया उर्दू हिन्दी के कई ग्रंथ बनाए और छपवाए सर विलियम म्यूर साहब के समय गुलदस्ते तहजीब नामक किताब के लिए उन्हें २००) इनाम भी मिले हजारों रुपया खर्च कर हिन्दी भाषा का एक बड़ा भारी कोश तैयार कराया यदि वह छप गया होता तो हिन्दी रसिकों को इस समय बड़ा उपकारी होता; हम लोग मनुष्य के सद्गुणों को देखते हैं जिन से कुछ देश की भलाई हो खानगी कामों से हमें क्या गर्ज़; लम्बी तनखाहें फटकार लिया दफ्तर के कामों के बाकी वक्त को जिसने निरे खेल कूद में सर्फ कर मिट्टी का पुतला बना बैठा रहा वह बड़ा

सुशिक्षित और शाइस्तगी की नाक हुआ तो इसे क्या; हमारे लेख को उन्मत्त प्रलाप ठहराया कदाचित् समझ में नहीं आया खैर पढ़ा तो इसे बड़ा हर्ष इसी बात का है कि जो लोग न हमारे ग्राहक न करेस्पांडेण्ट वे भी इस पत्र को पढ़ते हैं; हमारी उन्मत्तता मिटने की यही परमौषधि है कि गरीब वा कृपिण जन इधर उधर से मांग जांच पत्र पढ़ा करें कुछ दिनों में उनकी समझ सुधर हो जायगी तब हमारे उन्मत्त प्रलाप का सब मर्म वे जान जायगे; जब हम देखते हैं कि कई किरोड़ प्रजा मिल कर बड़ी कठिनाई और श्रम से एक बड़ा भारी रजतगिरि बना देती है कि हमारी सरकार इस पर प्रसन्न रहे और सरकार उस रजतगिरि को तोड़ उसके बड़े बड़े टुकड़े महानुभाव देश प्रबन्धक राजपुरुषों को इस लिए बांटती है कि वे लोग उस रजतगिरि सम्पादिनी प्रजा की रक्षा अपने अपने ओहदे के अनुसार करें अर्थात् कोई उन्हें ठग चोर वंचक दुष्टों से बचावे कोई अमृत सञ्जीविनी औषधि से उन्हें स्वस्थ और नीरोग रक्खे कोई उनके उद्यम व्योपार के बढ़ती की फिक्र करे कोई उनका न्याय चुकावे कोई उन्हें बिद्या गुण सम्पन्न रक्खे जिस प्रकार वे बिद्या सीखें वही यत्न करे; जिस तरह प्रजा अपने रुधिर को सुखाय सुखाय रजतगिरि बनाती है वैसही उस रजतगिरि के खण्डानुखण्ड भोगी राजपुरुष भी यावत् बुद्धि बलादि श्रम किया करें; हाकिमों के लिए यह बात शोभा नहीं देती कि अमुक साहब बड़े अमीर हैं उनके इस्तबल में २० घोड़े बंधे रहते हैं उनके पास दस बारह फिटिन बिलायती हैं उनकी कोठी बेशकीमती असबाबों से ऐसी सजी है जिसकी उपमा नहीं; सोचने की बात है इस प्रकार की गौरवता तो साधारण धनी और व्योपारी लोगों को भी प्राप्त है हाकिम और ओहदेदारों की बड़ाई और प्रशंसा वही है जो उनके ओहदे की राह से प्राप्त हो; सूर्य की इस लिए बड़ाई करते हैं कि उनके उदय हम लोग अन्धकार से रक्षित रहते हैं अगर कोई खुशामदी रात को किसी तारा की ओर लक्ष्य कर कहे यह सूर्य दिन के सूर्य से भी बड़ा प्रतापी और अन्धकार दूर करने में समर्थ है तो कौन उस खुशामदी के कहने से तारा को सूर्य मान लेगा; सरकार चाहो एक एक बात का कायदा बना दे चाहो बने

हुथों को तोड़ डाले पर हम यही कहेंगे बिना रूल के आश्रय रेखा सीधी नहीं बनती कैसा ही चतुर खींचने वाला हो कुछ न कुछ टेढ़ी होही जाती है अतः सर्वतोभावेन रूल की आवश्यकता है विशेष कर शिक्षा विभाग में जिसके उद्देश्य से इस लंबे नीरस लेख का आरम्भ हुआ है बस अब वर्ण विन्यासक तू विश्राम कर ॥

चोरों की ढिठाई ।

चोरी इस महीने में भी किसी तरह कम नहीं हुई मसल है दिया के तले अँधेरा हम उसमें इतना और जोड़ते हैं दिया बड़ा हो तो अँधेरा भी बड़ा होना ही चाहिए ; यह स्टेशन बड़े २ सरकारी दफ्तर और अदालतों का घर है और पहले की बनिसबत इसे जिआते हैं तो यह शहर अब इस समय बड़े उन्नति पर है और हर एक बात की तरक्की यहां है तो इस हिसाब से चोर और उचक्कों की भी तरक्की क्यों न हो ; चोरों के डर से बहुधा लोगों को रातों जागते बीतता है फिर भी चोर बहुधा अपना मतलब कर ही लेते हैं; यद्यपि वारदात का छिपाना भी एक जुर्म है पर लोग पुलिस की जहमत में पड़ने की डर से अक्सर चोरियों की रिपोर्ट ही नहीं करते और यही समझ सन्तोष कर लेते हैं कि यहां नुकसान सह लेना अच्छा है पुलिस के हाथ में जान बूझ अपने को छोड़ दुर्गति सहने से ; जिस जिस बात का इन्तिज़ाम पुलिस के सुपुर्द है सब में गड़ बड़ देखा जाता है माघ मेले का इन्तिजाम पुलिस के सपुर्द था जैसा हुआ सब जानते हैं कहां तक तारीफ की जाय ; सहर की देख भाल पुलिस के सुपुर्द है उस्का यह हाल है ; रोशनी और छिरकाव पुलिस के हाथ से निकाल जब से म्युनिसिपल कमिश्नरों के हाथ में कर दिया गया है तब से इन दोनों में जो कुछ तरक्की हुई है प्रत्यक्ष है तो अब

हम यही सलाह देते हैं कि सफाई और शहर की देख भाल भी पुलिस से छीन म्युनिसिपल कमिश्नरों के आधीन कर दी जाय तो चोरी आदि का सब खटका मिट जाय और सफाई का जितना कोढ़ है सब साफ हो गन्दगी से प्राण बचे नहीं तो यह सफाई भी चोरी से कुछ कम दुखदायी नहीं है ॥

सूचना।

हिन्दी के निसबत निवेदनपत्र वा लोगों का दस्तखत आदि जिसे भेजना हो और उसकी कार्रवाई न हो वह प्रयाग हिन्दू समाज के पास भेज दे इस समाज के सभासद श्रीमान् डाक्टर हंटर के पास बहुत सुगमता के साथ भेज देंगे ॥

विज्ञापन।

बिदित हो कि हिन्दी भाषा के पक्ष में यद्यपि बहुत से मेमोरियल शिक्षा कमिशन में पहुंच चुके हैं, पर तथापि अभी बहुत से शहर, कसबा, ग्राम आदि ऐसे हैं कि जिन से मेमोरियलों का जाना बहुत आवश्यक है, और जब हमारे पश्चिमोत्तर, पञ्जाब, अवध या राजपूताने के सर्कारी जिलों की करोड़ों प्रजा हिन्दीभाषा के राजद्वार में प्रचार होने की अभिलाषा करती है, तो उन में से लाखों दस्तखत हो जाना कुछ कठिन नहीं है, और इस देशोपकारी कार्य्य के पूरा करने के लिये अनेक देशोपकारी सज्जन प्राणपण से उद्यत भी हैं, परन्तु बहुत से महाशय छपे हुए मेमोरियलों के न मिलने वा शिक्षा कमिशन के ठीक ठीक सम्वाद न जानने से इस प्रकार से विरक्त हैं, अतएव मैं सर्व देशोपकारिणी "भाषावर्द्धिनी" सभा अलीगढ़ की आज्ञा के अनुसार बिदित करता हूं कि जो महाशय हिन्दी भाषा और देवनागरी अक्षरों के राजद्वार में प्रचार करने के लिये अपने नंबरों से बहुत से सत्पुरुषों के हस्ताक्षर भिजवा सकें, वह छपे हुए मेमोरियल, शिक्षा कमिशन का ठिकाना हस्ताक्षर कराने की बिधि आदि, मुझ से मंगा लें। और जहांतक बन इस शुभ समय को हाथ से न जाने दें। मेमोरियल भेजने का समय ३० नवेंबर तक है। देखें कौन पहिले बोलता है?

श्रीराधाचरण गोस्वामी।

वृन्दावन।

अग्रिम मूल्य	२॥/)
पश्चात देने से	४/)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या मैं जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Nov. 1882. Vol. VI.] [No. 3.

प्रयाग कार्तिक कृष्ण ६ सं० १९३९ जि० ६] [संख्या ३

ढोल गँवार सूद्र पशु नारी ।
ये सब ताड़न के अधिकारी ॥

गुसांई तुलसीदास जी हमारे लिए प हिलेही से कैसी२ बातें गढ़ कर रख गए हैं परन्तु क्या किया जाय कोई समझता ही नहीं; रिफार्मर समाचार पत्र मे

सेलम के हिन्दू मुसलमानों के झगड़े के बारे में लिखा है कि ५४ हिन्दुओं को कठिन कारागार की सजा हुई जिनमे ११ लड़के हैं जिनकी उमर ८ बर्ष से भी कम है और मुसलमान सब के सब छोड़ दिए गए इस पर रिफार्मर साहब बड़े

थोक के साथ लिखते हैं कि यह महा अन्याय और बहुतको अयोग्य हुआ ; हम कहते हैं यह बहुतको योग्य हुआ रिफार्मर महाशय तुक ऊपर की चौपाई के सब लक्षण हम हिन्दुओं में मिला कर विचारें कि ये वास्तव में दण्ड के योग्य हैं या नहीं तब इसमें कौन सा अचंभा और अन्याय है ; फिर यह भी कहा है "सेवक सुख चह मान भिखारी । व्यसनी धन शुभगत व्यभिचारी ॥ लोभी यश चह चारु गुमानी । नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥" अब हम एक २ के गुण इनमें मिलाते हैं सुनते चलिए — ढोल में यह गुण है कि उसे जितनाही पीटो चुप चाप पिटती जायगी वरन जितनाही पीटो उतनाही उसमें से सुन्दर और मधुर ध्वनि निकलती आवैगी इसी प्रकार हिन्दुओं को जितनाही पीटो कुछ न सनकैंगे किन्तु उतनाही अधिक नम्र उपकारी और दास बनते जांयगे जरा सेल्फ गवर्नमेंट आदि की डोरी लगा दो निहाल हो जायगे और भी अधिक सुरीले तान आप को सुनावैंगे तो अब यह निश्चय साबित हो गया कि ये ढोल हैं । गँवार ये एक अर्सा से बन रहे हैं गँवारों का काम है उजड्डपने के साथ बहुत अड़ भिड़ खड़े होना पर जहां किसी ने आंख दिखाई साम हाथ का डील कौन बस कर भी दबी बिल्ली बन जाना भी यह लक्षण गंवारों का इनमें भर पूर मिलता है गंवारपने से व्यर्थ की लड़ लड़े हुए अथवा जब जानते हैं मुसलमान लोग बढ़े के हिमायती हैं जब २ इनसे झगड़ा हुआ इन्हीं की जीत हुई तब भी भिड़ गए जब मेजिस्ट्रेट ने डांट बताई तो चुप हो के कान दबा जेहलखाने को चले गए ; यह सब गंवार पन नहीं तो क्या है ; लखनऊ बरोदा अलवर आदि के राजा गंवार पने से अपने २ रजीडंटों से बिगड़ बैठे अपने में कुछ बूता न था प्रजा उनकी दुश्चरित्रों से त्राहि २ पुकार रही थी जब तक रजीडंटों से मिले रहे कुछ न बिगड़ा अपने गंवार पने से उनसे उलझ उठे सब कुछ खो बैठे सब इतना भी न हुआ कि जैसा अमरगढ़ पहुले थे वैसा कर देखाते महाराजों का यह हाल प्रजा का यह सम्बाद तब इन के गंवार होने में क्या सन्देह है ; इनके उपदेशक जो गुरु लोग ब्राह्मण बैरागी गुसाईं आदि हैं वे यह समझते हैं कि जब लौं ये गंवार बने रहेंगे तभी तक हमारी सब बातें चलैंगी कहीं इन्हें बुद्धि

हो गई तो हमारी रोटी न रह जायगी इसी से ये इन्हें बुद्धि के शत्रु बनाए हैं और आप तो छई हैं; गुरु लोग अपने चेलों को यही उपदेश देते हैं सुना तुम दुनिया के बखेड़ों में मत पड़ो विद्या बुद्धि दोनों सन्मार्ग की लुटेरी हैं तुम अपने कोने में बैठे गोविन्द भजन किया करो जो कुछ कमा खाया उसी से न कुछ हो तो हो न पुत्रों को शिक्षा में लगाओ मोटा झोटा खा पहन जो कुछ बचे वह ठाकुर जी और गुरु महराज की भेंट कर दो; कोई ये अंगरेजी पढ़े विधर्मी लोग उठ खड़े हुए हैं वे तुम्हें देशोपकार और सर्व साधारण के हित के लिए तुम से बहुत पुकार २ कहेंगे, प्रांत २ की सभायें और कमिटियों कर तुम्हें वहां बुलावेंगे और हर तरह से तुम्हें बढ़ावा देंगे, पर तुम चौकस रहो उनकी ओर कभी न झुक जाना नहीं तो बस फिर नरक की आग से कभी न उद्धार पाओगे; खैर ऐसे ब्राह्मण और गुरु लोग अपने २ गंवार यजमान और चेलों से हराम की रकम पुजाय भीम राम और देहाराम से उसे व्यय न कर व अपने या अपने शिष्यों के वा दूसरे लोगों के उपकारार्थ उनको शिक्षा आदि अच्छे कामों में उसे लगाते तो भी कुछ बुरा न था प्रत्येक मनुष्य अलग २ कक्षाओं में न आगे एकाही ने उन सबों की ओर से कार्याध्यक्ष बन काम किया सो भी नहीं होता। ऐसे २ उच्छाद और कुप्रवृत्तियों से वह धन उड़ता है जिसे प्रकाश करते लज्जा होती है; परन्तु वाह! धन्य है इनकी चतुराई का। वैसे किसी से कोई कहे तू भूखा मर और अपना सब धन मुझे दे डाल कि मैं उसे भोगूं विलसूं तो कभी कोई एक कौड़ी न दे परन्तु ये लोग मजी दे २ धन लूट ले जाते हैं स्त्री को पति से पुत्र को पिता से और पिता से पुत्र को अलग कर अपनी ओर झुका लेते हैं और ये जिनमें बुद्धि का लेश नहीं है गांठ का गंवाय निरे गंवार बनते हैं।

अब आगे बढ़िए शूद्रपन। इसकी घटती है या कहां भी देखना चाहिए शास्त्रों में जन्मतः सब शूद्र माने गए हैं गुण और कर्म से ब्राह्मण आदि वर्ण अलग २ किए गए हैं और जो विद्या बुद्धि बल और धन से हीन हो वही शूद्र है सो विद्या के ये परम वैरी हैं "मातु पिता बालकन बुलावहि। उदर भरै सोइ कर्म सिखावहि" विद्या पेट भरने की उपाय है जिनको अच्छी विद्या और सद्गुण थे सब वह

गए किसी ने अपने आराम में बाधक समझ किसी ने आलस्य के कारण किसी ने पाप समझ किसी ने अपनी स्वाभाविक जड़ता से वेदादि सत् शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना छोड़ दिया अथवा अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार थोड़ा सा जैसा कुछ समझ में आया ले उड़े आलस्य और आराम से मुंह मोड़ कड़ी मिहनत कर अच्छी तरह पारङ्गत हुए होते तो इनकी बुद्धि कहां तक विमल और शुद्ध न रहती परन्तु अब इस बुद्धि की मलिन दशा में जो कुछ सोचते समझते हैं सब कुआं के मेढ़क समान होता है इसी से तुलसीदास जी ने कहा है। "कलिमल ग्रसेउ धर्म सब गुप्त भए सदग्रंथ। दम्भिन निज मत कल्प करि प्रगट कीन बहु पंथ" ब्राह्मणता का पूर्ण अङ्ग विद्या जो इनमें होती तो इस तरह की आपस की फूट और डाह कभी न बढ़ती जैसा इस समय बढ़ रही है जिसके परिणाम में ये अपना सर्वस्व खो बैठे तब भी नहीं सम्हल कर चलते कि खैर अब भी चेतें दूसरों की हिकमत और चतुराई पहचानि जिसमें आगे को भलाई हो और सांसत में न पड़ें ब्राह्मणत्व इस तरह पर गया क्षत्रियत्व का प्रधान अङ्ग बाहुबल जो बाल्य विवाह आदि नष्ट कुरीतों से धूर में मिल गया साहस इनमें जैसा है वह स्पष्ट ही है कि आपस में सिर फोड़ने को बड़े शूर और बाहरी से काम पड़ें तो आंख मींच ऐसा भागें कि कोसों पता न मिले गदर में लखनऊ के बेलीगारद वाले गोरों के मुकाबिले सहस्रों लोग गोमती में डूब कर मर गए पर रण की सम्मुख आंच न सह सके पुरुषार्थ का अङ्ग प्रत्यङ्ग छिन्न भिन्न कर "ह्वै है वहि जो राम रचि राखा" मूल मन्त्र सा जपते रहते हैं दूसरों को बढ़ते हुए देख कर भी उत्साह और उमङ्ग इनके जी में जगह नहीं पाता इससे क्षत्रियत्व सब गया गुजरा हुआ। अब वैश्य का काम है धन का उपार्जन, अपनी विद्या और बुद्धि से इसी बनिज आदि के द्वारा देश की सम्पत्ति बढ़ाना बात का सच्चा और पक्का होना चाहे प्राण जाता रहे पर मुंह से जो कहा सो कहा, भांत २ के यंत्र और कलों को बनवाना और नए २ प्रगट करना जिस बात की कमी देखै वा जिसके बिना देशवालों को क्लेश पहुंचता हो उसे जल्दी सम्पादन कर देना इत्यादि; देश को मूर्खता से छुड़ाना ब्राह्मणों का काम है शत्रु और दुष्टों से बचाना क्षत्रि-

यों का और दरिद्रता के दुःखौघ से देश को सुख रखना वैश्यकर्म है जो वैश्यही हमारे देश में होते तो दरिद्रता इस तरह अपना पसार पसारे रहती सुतराम् यहां के निवासी ब्राह्मणत्व विहीन होने से मूर्ख गंवार और गवुचर हो गए क्षत्रियत्व न रहने से निर्बल निरुत्साही निस्सत्व जनखे और पस्तहिम्मत हो गए वैश्यता न रहने के कारण निर्द्रव्य स्वार्थ पर और नीच बुद्धी हो गए हैं इसी से जान पड़ता है कि सिवा शूद्र के और वर्ण अब रहे ही नहीं॥

इनके पशु होने में तो कुछ सन्देहही नहीं है क्योंकि "आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्"। इत्यादि लेख के अनुसार मनुष्य और पशु में केवल बुद्धि और ज्ञान बल से भेद है सो हम लोग सिवा खाने पीने सोने और खेल कूद के परिणाम कभी नहीं सोचते दम पुचाड़ा दे जो चाहो सो छीन लो जो चाहो सो करा लो पशु की भांत जितना चाहो मार पीट लो दाना घास आगे डाल चले जाओ कभी २ हाथ भी फेर दो तो फिर क्या निहाल हो जांयगे और जो कभी अपने पशु स्वभाव से दुलत्तियां झाड़ने लगें एक कोड़ा लगा दो सीधे हो जांयगे।

नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं। अवगुण आठ सदा उर रहहीं॥ साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक अशौच अदाया॥ ये आठ औगुण स्त्रियों के तुलसीदास ने कहे हैं सो भी इस हिन्दुओं में निर्ख के साथ देखे जाय तो एक से एक बढ़ बढ़ कर निकलेंगे तब ये दण्डनीय और ताड़ना के अधिकारी न हों यही अचरज है फिर सेवक और भिखारी को सुख और मान चाहना ऐसाही है जैसा आकाश से दूध दुहने की आशा जिस दिन से हम अपना मान और मरजाद खो कर रण से विमुख हुए तभी से यवनों के आश्रित हो गए और अपना सब सुख खो बैठे तब बैठे बैठाए हम अपनी बड़ों से क्यों भिड़ खड़े होते हैं; खैर ये हिन्दू कुल कलङ्क यवन दास तो थे ही इस अंगरेजी राज्य में भिखारी भी बन गए अपना कुछ पुरुषार्थ चलताही नहीं जब कुछ हुआ अपने जेताओं से भीख मांगने लगे सो भीख तो पछोर २ नहीं दी जाती जो दाता के मन में आया वह दिया और जो उसकी समझ में बेजा हुआ न दिया तब हिन्दुओं को इस बात का मलाल रखना भूल है कि सरकार हमारे मुकाबिले में मुसलमानों का पक्ष

करती है हिन्दू लोग मुसलमानों की रीस कैसे कर सकते हैं वे किसी समय उनके स्वामी थे और अब भी उनका वही गुमान और रोब कहीं नहीं गया और अब है वही अभी जैसी को तैसी बनी है "रसरी जल गई ऐंठन न मिटी" तब तो और अभी साहब ऐसे २ कड़े पालिटिकल चमक उठते हैं। टेढ़ जान शंका सब काहू। बक्र चन्द्रमा ग्रसै न राहू॥ मुसलमानों के लिए हज्ज जाने वालों को पास पोर्ट देने को सरकार ने लाखों रुपए साल का खर्च मंजूर कर लिया हिन्दुओं पर प्रयाग में माघ स्नान करने वालों पर पिलग्रिम आदि की टाक्स ले जाती तथा पगड़े नाऊ और मालियों से कितना अधिक कर लिया जाता है इसी से हम कहते हैं हिन्दू लोग लड़ना भिड़ना छोड़ अपना समय जैसे हो व्यतीत करें; लार्ड रिपन महोदय के समय में यह आशा थी कि सब प्रजा एक समान समझी जायगी सो उक्त महोदय जहां तक करें उनके कान तक जिस बात की खबर पहुंच जाती है उसको वे ठीक कर देते हैं फिर भी एक अकेला आदमी कहां तक करै कुछ भेदों का क्या प्रबन्ध हो सकता है; फिर जिस देश में एक दो क्या सैकड़ों भेद हैं वहां किसकी सुनी जाय किसको अनसुनी कर दी जाय अभी थोड़े दिन हुए लखनऊ में जैनियों का मन्दिर बनता था उसके रुकवाने को हिन्दू मुसलमान दोनों एक हो गए हिन्दू जब अपने उजलत भाभड़ी अपने दुर्भाग्य को बुलावें तो कौन चारा है; जयचन्द ने अपने शत्रु पृथ्वीराज को जीतने के लिए अपनी जन्म भूमि को यवनों के चरणों से रुंधवाया वैसाही वैष्णव लोग सरावगियों के बिगाड़ के पीछे अपने बिगाड़ की जड़ जमा रहे हैं ऐसे मूर्खों को कहां लौ कोई समझावे; यह तो समझदार और बुद्धि के अंकुश से चलने वालों की बात है कि क्या हिन्दू क्या मुसलमान क्या ईसाई क्या सरावगी क्या वैष्णव जितने एक मुल्क में रहते हों सब भाई हैं सब आपस में मिल कर चलें एक दूसरे के मत में बाधक होने के एवज एक एक के संग हो कर उनका उत्साह उस काम में बढ़ावैं और जो न मानें उनके विरुद्ध हो उसे सब मिल अपने समूह से अलग कर दें—नीति है "त्यजेदेकं कुलस्यार्थे" इतने पर भी जब कोई दुष्टता करने से बाज न आवे तब सब मिल कर अच्छी तरह उस की खबर लें ऐसा नहीं कि सेलम वालों

तरह पहले तो सिर उठाया अब गैजिस्टरेट ने डांट बतलाई तभी बिल्ली हो गए वरन उस समय सबको सब लड़ाई से साथ सरकार को यह साबित करा देती कि हम कौम से नहीं हैं कि पिसवा जांयगे बरन अपना न्याय करा छोड़ेंगे।

Success कामयाबी।

कामयाबी या कृत कार्य होना मनुष्य के इस क्षणिक जीवन का सार है जिस अभागी ने अपने सौभाग्य के झकोरे से छिन्न भिन्न हो दुस्साध्य श्रम का फल स्वरूप इसकी मोहिनी मूर्ति का दर्शन न पाया उसके समान हत जीवन कौन होगा ; दिनों रात मेहनत करते २ पिस गए रातों उठ २ किताब की किताब मुखाग्र कर डाला, इम्तिहान देने गए, दैवात कोई बात न बन पड़ी चूक गए कृत कार्य न हो सके, जितनी उमङ्ग और हौसिला सब पस्त हो गया, यह जगत् जीर्ण अरण्य सा मालूम होने लगा, उस समय बड़ी २ मन को रमाने वाली वस्तु भी निरस और फीकी जंचती है ; लाखों का रोज़गार कर रहे हैं सूत का धंधा हाथी का सब कारबार गाढ़ी को पहिया सा ढुलका चला जाता है वेपारी तथा दल्लाल साहु जी की हां में हां मिलाते अहर्निश खुशामद में लगे हैं जिधर देखो उधर लाला साहु आज रुई में लाख बचे कल तीसी में पचास हाथ लगे परसों केरोसीन के काम में ३० घर आए अचानक कहीं चीटकिए का भाव गिर गया पांच लाख का धक्का बैठ गया साहु जी साहब खिन्न हो गए न किसी का मुंह देखते हैं न अपना दिखाते हैं चार लाख का बाजार का देना निकला एक लाख की दरसनी हुण्डी खड़ी है होसवाले को कुरकी कुदा आ लगी दिवाला पिट गया दुकान का ताला बन्द हुआ मुंह काला किए भीतर पड़े मक्खी मारा करते हैं कोई बात को नहीं पूछता अब न कभी दलाल आते हैं न कोई क्यों मारी खोलता है पहले के खुशामदी चुटकी बजाने वाले अब नाम लेते गाली देने लगते हैं ; वही लाला जी हैं वही कोठी है वही रोज़गार है किन्तु ईश की सहज समान कामयाबी बिदा हो गई जूती चटकाने लगे ; चारों ओर से लोगों की भीड़ ठटाठट है दो मल्ल अखाड़े में कूद पड़ते हैं हर तरह के दांव पेंच और करतब दिखा रहे हैं कहीं एक पकड़ गया

जुआरी की भीड़ से निकल ऐसा भागा कि काफ़ूर हो गया जीतने वाले को वाह वाह शाबाशी इनाम और खिलत का ढेर लग गया ; कामयाबी के हष से सुशोभित एक लार्ड लिटन दिल्ली राजसूय में रहे कि मन मानता भूंभुर भूल गए वही लिटन काबुल युद्ध की नाकामयाबी से चार दिन की चांदनी हो ऐसा सिधारे कि लोग अब उनका नाम लेते भी घिनाते और कोसते हैं ; आशिक तन हैं इश्क की बीमारी में मुबतिला हो यार के दीदार के प्यासे जुदाई का सहरा और जङ्गल छानते आजिज़ आ गए एक तो इश्क की बीमारी दूसरे जुदाई के जङ्गल की लम्बी सफर दैवात् यार ने चश्म फैयाज़ी से नियाज मन्द कर दिया कामयाब हो मकसद बरारी को पहुंचे निहाल हो गए, नाकामयाब हुए मजनू के समान इश्क के जनून में जन्म भर पड़े २ झंखते रहे ; अदृष्ट की द्योतक परात्पर की इस जगज्जयिनी शक्ति के जागरूक रहते भी निरे पुरुषार्थवादी अपने पुरुषार्थ के घमण्ड में फूले नहीं समाते और कोरे पुरुषार्थ पर लक्ष्य कर दिन रात छपटते २ पांव की खलरी उड़ जाती है दांतों पसीने आते हैं यत्न और उद्योग के छोर तक पहुंच कर ईश्वर की इस अदृष्टात्मक शक्ति की प्रेरणा से अनन्त हौसिले के ऊंचे शिखर से औंधे मुंह गिर हाथ मलते हैं सिर धुनते हैं बार २ पछताते हैं और कोशिश की कोई कला लहते न देख चाम्भ चाम्भ पुकार मचा देते हैं पर अपने जी का बांका पन दूर बहाय औंधे मन से जगद् स्रष्टा की विजयनी शक्ति पर तौ भी नहीं निर्भर होते ; धन्य हैं वे भाग्यमान् पुरुष जिन्हों ने कामयाबी का दुःख भाग अपने जीवन काल में कभी नहीं देखा वरन सदैव इसकी मङ्गलमयी मूर्ति के अनुक्षण अवलोकन से कृतकार्य होते रहे ; पुराने ज़माने के सिकन्दर सिसिरो रणजीत सिंह प्रभृति बहुतेरे कामयाब फ़तहयाबी के पताका हो गए पर इस समै हमारी महारानी विजयनी देवी की समता किसी में न आई जिनके प्रतुष्टों का स्पर्शमात्र पारस को मात किए है कटाक्ष पात में सोना बरसता है वचन में बड़ी २ सम्राट् पदवी और लम्बे चौड़े खिताब बसे हैं ज़रा दास्य भाव के स्वीकार से पुरुष रमा का रमणीय मन्दिर बन जाता है किम्बहुना धन्य हैं वे अनन्त पुण्य भोगी नर जो सदा सब बात में कृतकार्य रहे ।

यह जगत् एक अद्भुत नाट्यशाला है।

यह जड़ात्मक जगत् एक अद्भुत नाट्यशाला है जिसमें उस सूत्रधार शिरोमणि की प्रेरणा से सब लोग नट बन २ भांति २ की लीलाओं का अभिनय कर रहे हैं इसी हम अद्भुत इस लिए कहते हैं कि इसमें देखने वालों को एक साथही नवोरस की "अभिनय का अनुभव होता है; और आठ रस तो अपने विभाव अनुभाव समेत कार्य वश संचारी हुआ करते हैं पर वह अद्भुत रस कभी नहीं बदलता सदा एक रूप से स्थायी रहता है; एक वैचित्र्य इस नाटक में और भी है कि वह सूत्रधार एक बार इसकी रचना का सब प्रस्ताव कर पीछे आपही इस नाटक के खेल का देखने वाला बन जाता है और किसी के काम में कुछ दखल न दे दीपक की टेम सा केवल साक्षी मात्र रहता है वरन इस नाट्यशाला के सभासद लोग आपही पात्र बन २ पृथक् २ अपनी २ लीला का अभिनय कर देखाते हैं; कोई इसमें राजा का रूप धर कर आए और कहने लगे देखो ये भांति २ के कानून हम ने तुम सब प्रजा गण की भलाई के लिए जारी किए हैं हम तुम्हारे पहले के अत्याचारी निठुर संगदिल बादशाहों से नहीं हैं किन्तु नीति पथ के देखाने वाले और सभ्यता के सिखाने को परमाचार्य हैं हम तुम्हें अनन्त सुख के दाता और तुम्हारे लड़के वालों को इनलइटेंड कर देंगे पर धन तुम्हारे पास न रहने देंगे क्योंकि इसी के लिए हजारों कोस का समुद्र डांकते नाघते हम इतनी दूर से आए हैं और इसी रुपए की गरमी ने तुम्हें बिगाड़ डाला इस लिए अब इसका रहना तुम्हारे पास किसी तरह गुणकारी नहीं है; इतने में धीरी ढीली कमर झुकाए लाठी टेकते एक पण्डित जी आए और रो २ कर कहने लगे हाय २ कैसा विषम

काल आय उपस्थित भया लोगों की चाल ढाल नित्य २ बदलती जाती है और श्रौतस्मार्त कर्म सब लोग छोड़ते जाते हैं शौचाचार की विरोधी हो २ आर्य धर्म से विमुख हो गए ; हे अशरण शरण प्रणत पालक दुष्ट जन घालक परमेश्वर तूही एक रक्षा करने वाला है ; पण्डित जी का यह रोना समाप्त नहीं हुआ था कि नेपथ्य का परदा झट पट उठाय देखने में बड़े लट खट कुछ खट पट करते किताब बगल में दबाए एक पादरी साहब आकर यह वाज़ करने लगे "तुम सब लोग बड़े अंधेरे में पड़ा हुआ है अपना सब नाता रिश्ता छोड़ मुक्तिदाता हमारे प्रभू की शरण में क्यों नहीं आता हमारे बाप की आज्ञा है कि जोई उसमें विश्वास लावेगा वह कभी न मरेगा वरन अनन्त जीवन का अधिकारी होगा" पादरी साहब यह सब राम रमरा गातेही रहे कि झट से एक दयानन्दी अपनी गन्दी समझ के अनुसार डेढ़ चावल की एक जुदी खिचड़ी पकाते बोले "पुराण और स्मृतियां सब गप्प हैं आज तक जितने आचार्य और पण्डित हो गए वेद का मर्म सिवा स्वामी जी के किसी ने नहीं जाना मूर्ति पूजन महा पाप है श्राद्ध और तर्पन बड़ा अनारपन है जितने साएन्स विज्ञान और विद्याएं हैं सब वेद ही से निकली हैं रेल तार और विमान के एकर रेंजे पुर्जों का ज्ञान तो प्राचीन आर्यों के लिए कुछ बातही नहीं है टेलीफोन इलेक्टरीसिटी अथवा और नई ईजाद जिसे यूरोप वाले प्रगट करते जांयगे सब वेद में ठूंसी हुई हैं धन्य हैं नए नबी स्वामी जो जिन्हों ने हम लोगों के नेत्र खोल दिए नहीं तो इस अन्ध परम्परा के लपेट से क्योंकर गला छुटता" यह अपनी गीत गा रहा था कि चपके से परदा उठाय तोंद फुलाए मैली धोती पहने उदासीन मन मलीन आंख में भरे कोठीवाल शाह जी रङ्गभूमि

के एक कोने में आकर खड़े हो गए और अपनी तङ्गदिली की टकसाल से निकाल २ यह खयाल गढ़ने लगे "क्या कहें घाटाही घाटा देख पड़ता है सोना छूते मिट्टी होती है खरच दिन २ बढ़ता जाता है आमदनी की कोई सूरत नहीं है हुण्डी पर्ची सब मनीआरडर ने चट्ट कर डाला रहा वनिज व्योपार सोचूंगा और टिकस के हलाल हुआ रेल के कारन परता किसी माल का लगताही नहीं उलटा व्याज का नुकसान सहना पड़ता है ; अभी पार साल छन्नू का व्याह किया ५ हजार उसमें लगा अन्न भराया था सो अब कि साल बरसात अच्छी होने से रुपए की आठ आने उसमें भी देख पड़ते हैं भगवान् वेड़ा पार लगावे ; घूर की रस्सी बट काम चलाते हैं तौभी जमा नहीं जुड़ती तो अब कहां तक छपि-पाता कर दो महीने से देखा धोती फटी है पर वही एक धोती से गुजारा करते हैं द-मड़ी का घी जहर बराबर समझते हैं ; इसका यह सीखना पूरा नहीं हुआ कि झट्ट से परदा उठाय नाक भौं चढ़ाए लाल रंग की फुंदनेदार टोपी जमाए डाढ़ी रखाए एक गैचरिए जोश में भरे हुए कहने लगे हम मुसलमानों की कोई फिकिर नहीं की जाती इसका नतीजा अच्छा न होगा ; हाय इस दीन इसलाम में क्या अब बिलकुल जोश बाकी न रहा कहां गए औरंगजेब तैमूर और नादिर सालीम के अक्स ने हमें भूली भुलाई बात फिर से सुझा दिया अब इन काफिर हनूदों की रोज़ बरोज़ तरक्की हम कैसे बरदास्त करें ; इतने में धीरे से परदा उठाय समाचार पत्र हाथ में लिए एक एडिटर महाशय आए और अपनी अस्फुट मधी बाणी से यह वक्तृता करने लगे "जिनको गणना मनुष्यों में है और जिनसे हमें कुछ आशा थी कि वे हमारे लिखने पर ध्यान देंगे वे ऐसा मत्सर

ग्रस्त हो रहे हैं कि केवल अपनी भलाई छोड़ किसी देश हितैषी कामों में कभी प्रवृत्त होने की स्वप्न में भी इच्छा नहीं करते किन्तु हम लोगों के लेख में दोष निकालने में बड़े कुशाग्र बुद्धि बनते हैं; अबोधोपहत मूर्ख मण्डली से हमें कुछ सरोकार न रहा जिनके आगे गुण का प्रकाश मानो भैंस के आगे बीन बजाना है; देश के धनी लोग धन के मद में उन्मत्त हो रहे हैं उनके धन का कहां ऐसा भाग्य जो हम ऐसों की सहायता में लगाया जाय न दैव ने उन्हें इतनी बुद्धि दी कि समाचार पत्र पढ़ सकते हों तो अब जो कुछ हमारे मन में है वह सब हमारेही साथ रहा सच है "बोद्धारोमत्सरग्रस्ता प्रभवःस्मयदूषिताः। अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥ इतने में परदा गिर गया सब लोग उठ गए मैंने भी अपने घर की राह की।

।सीतावनवास नाटक।

द्वितीय अङ्क—द्वितीय गर्भाङ्क।

स्थान—राजसभा—रामचन्द्र बैठे हुए।

राम। कोई है।

द्वारपाल। आज्ञा महाराज।

राम। जा देख लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न क्या कर रहे हैं कहो तुम्हारा बड़ा भाई दुरात्मा राम तुम्हें बुलाता है।

द्वारपाल। जो आज्ञा न जानिए आज महाराज ऐसे दीन और कातर क्यों हो रहे हैं। (बाहर गए)

लक्ष्मण का प्रवेश।

लक्ष्मण। (स्वगत) अभी सांझ को आर्य आर्या जानकी के साथ चित्र देख रहे थे और तपोवन के दीर्घ तपा ऋषियों के दर्शन रूप मनोरथ पूर्ण करने को आर्या के साथ हमें भी जाने की आज्ञा दी थी असमय में अकस्मात् फिर क्यों बुला भेजा।

भरत और शत्रुघ्न का प्रवेश।

भरत। अग्रज आज कर कमल गोल कपोल पर रक्खे क्यों उदास बैठे हैं बार बार ठंढी सांस भर रहे हैं निरन्तर आंसू की धारा बह रही है आर्य की ऐसी बुरी दशा आज क्यों हो रही है इसका कुछ

कारण नहीं जान पड़ता। (तीनों चुप चाप रामचन्द्र के सन्मुख आ खड़े हो जाते हैं।

राम। (राम शोक का वेग रोक खेद पूर्वक) भद्र लक्ष्मण भाई भरत बेटा शत्रुघ्न यहां बैठो।

तीनों। जो आज्ञा (तीनों बैठ जाते हैं)

लक्ष्मण। आर्य आप की यह अवस्था देख हम लोग अत्यन्त शोक संक्लिष्ट हो रहे हैं आप के इस कातर भाव से स्पष्ट होता है कि कोई बड़ी ही अनिष्ट संघटना में आप इस समय पड़े हैं क्योंकि अतलस्पर्श अथाह समुद्र किसी क्षुद्र कारण से आकुलित नहीं हो सकता; प्रभात काल के चन्द्रमा समान आप का मुखारविन्द उदास और निष्प्रभ देख पड़ता है।

राम। (ठंढी सांसें भर) भ्रातृगण हमारे पूर्व पुरुष इक्ष्वाकु कुल धुरन्धर नरेश सर्वतोभावेन प्रजा रञ्जन अपने जीवन का प्रधान उद्देश्य मानते आए हैं और इसी से इस कुल की इतनी प्रतिष्ठा और मर्यादा है किन्तु मुझ हत भाग्य पापिष्ट नराधम के कारण आज यह कुल पर गृह वासिनी सीता को पुनः स्वीकार रूप कलङ्क से कलङ्कित हो गया; हा धिक्कार हमारी ऐसी रजाई पर जिसके कलङ्क की घोषणा पुरवासियों से घर २ और आदमी २ पुकार रहे हैं इस लिए हमने प्रतिज्ञा की है कि सीता का अवश्य परित्याग करेंगे क्योंकि जिस तरह बने प्रजा का मनोरञ्जन करना ही राजनीति का प्रधान अङ्ग और राजा का परम धर्म है अपनी जो इच्छा जीवन धारन के फल का इस लिए भाई लक्ष्मण इस सीता का परित्याग रूप कर्म में तुम हमारी सहायता करो; हा धिक्कार हमें जो अपने दुराचरण से ऐसे पवित्र वंश को कलुषी पाप पङ्क में मग्न कर डाला।

लक्ष्मण (रुदन पूर्वक) आर्य आप ने जब जो कुछ कहा है यह दास कभी आज्ञा के बाहर नहीं हुआ इस समय भी आर्य की आज्ञा पालन को तन मन से सन्नद्ध हूं किन्तु यह आप की कठिन प्रतिज्ञा सुन हमारा जी कांप उठा नितान्त अमूलक लोकापवाद सुन कर आप सरीखे महानुभाव चल चित्त हो उठें यह एक महान् आश्चर्य है; सामान्य लोग जिन्हें न्याय अन्याय की कुछ परख नहीं है जिनमें न बुद्धि है न कार्य अकार्य की विवेचना शक्ति है सम्भव असम्भव का विना विचार किए जो कुछ मन आया कह सुन डाला ऐसे क्षुद्र लोगों के कहने पर

ध्यान देने से मनुष्य को संसार यात्रा का निर्वाह भी कठिन हो जाता है। सर्वदा स्वहितमाचरणीय किंकरिष्यति जनो बहुजल्पः। विद्यते न खलु कोपि उपायः सर्वलोकपरितोषकरोयः। अलौकिक अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण आर्या जैसी शुद्ध चारिणी हैं इस विषय में कौन सन्देह कर सक्ता है

राम। सीता के शुद्धचारिणी होने में हमें अणुमात्र संशय नहीं है किन्तु यावज्जीव पुरवासियों की दृष्टि में दूषित और कलङ्कित होने से प्राण परित्याग श्रेय है प्रजानुरञ्जन के लिए सो भी करने को उद्यत है वत्स यदि तुम हमारा जीवन चाहते हो तो यह हमारा कहना करो कल सवेरे सीता को रथ पर बैठाय वन में त्याग हमें कलङ्क से छुटाओ इसी लिए हम तुम सबों को इस समय कष्ट दिया रात अधिक गई अब जा कर विश्राम करो।

तीनो। जो देवेच्छा वलीयसी (सब उठ खड़े होते हैं)

। जवनिकापतन ।

सहस भाय से कौतुक करैं।
एक एक बल्लव कोहि कोहि धरैं॥

आज कल आत्मशासन के प्रकर्ण में स्वतंत्रता पाने को लोग हर एक प्रान्तों में बहुत कुछ पुकार मचा रहे हैं क्या इन लोगों को यह न सोचना चाहिए कि हमारी इस कौआरोर के अनुकूल कितने प्रधान राज्य कर्मचारी या प्रकृति गण हैं जो इसे स्वतंत्र देख काल भुज खाक मे हो हर्षित और प्रफुल्लित होंगी तब व्यर्थ इस मन का लड्डू खाने से क्या फल है; ऐसे लोग थोड़ी देर के लिए स्वार्थ की सब आतुरता छोड़ और बहके हुए चित्त को हटाके बुद्धि के स्थान पर रख सभ्योचित बात पर विचार करैं तो यह विषय दर्पण सा नेत्र के सामने आप से आप आ जायगा और इस दर्पण के द्वारा सो प्रतिक राज्य कर्मचारियों का सामर्थ्य करतब वर्ताव चाल ढाल भाव इङ्गित आचार ईप्सित साफ २ देख पड़ने लगेगा और यह भी मालूम पड़ जायगा कि सब तरह ऐसों के प्रतिकूल हो हम इस दुर्लभ स्वतंत्रता के अभिलाषी हैं क्या हुआ जो लाखों किरोड़ों के बीच एक विलक्षण नीति पुंज दया वारिद दूरदर्शी

पुरुष इस भाग्य हीनों के दौर्भाग्य ध्वंस से प्रवृत्त हो गया है; न इसी हम अपनी को झट पट भाग्यमान् मान सके हैं न उस विधाता की चतुराई ही प्रशंसा योग्य है जिसने सैकड़ों वर्ष के उपरान्त और इतनी विपत्ति झेलने पर एक सत्पुरुष "लार्ड रिपन" को प्रगट कर दिया; तो क्या यह सिरजनहार की निपुणाई नहीं है अथवा इसका नाम घुणाक्षर न्याय नहीं है जैसे घुनते २ संयोग से लकड़ियों पर अक्षर सरीखे बन जाया करते हैं? हम विधाता की निपुणता तो तब कहते कि उसने जिस कारीगरी से लार्ड रिपन सदृश महानुभाव के हृदय भण्डार में सद्गुणों को भर दिया उसी कारीगरी से दस बीस पचास हाकिमों के जी में कुछ ऐसा दया का अंकुर जमा देता कि वे भी प्रभुवर लार्ड रिपन की आज्ञानुपालन में हम पर नाराज न होते; हमको खूब मालूम है कि उक्त श्रीमान् प्रभुवर थोड़े ही कालान्तर में जब इङ्गलिस्तान को सिधारेंगे तो उनकी कीर्तिरूपा छाया मात्र यहां रह जायगी फिर उन्हीं महाशयों से काम पड़ेगा जिनके प्रतिकूल हम स्वतंत्रता आदि बातों के लिए हलना झगड़ना रहे हैं; इस बात का जामिनदार कौन हो सक्ता है कि ऐसेही गवर्नर जेनरल फिर तुम्हे प्राप्त करा दूंगा; हमारे सामयिक वाइसराय बहादुर की विमल चित्त में वे सत्गुण शुद्ध आग्रह न्यायोदक से धोए हुए और दया के रस में भीगे हुए भरे हैं कि जिनका गुज्ञान इस कराल कलिकाल में बहुत कठिन है; जितने साहबान विलायत से हिन्दुस्तान को चलते हैं उनमें से बहुतों की अपने यात्रा काल में यही प्रतिज्ञा रहती होगी कि एक लाख से कुछ अधिक जमा लावेंगे और सामर्थ्य भर भारतवासियों पर दया और उपकार करेंगे; पहली प्रतिज्ञा तो अवश्य सिद्ध होती है किन्तु दूसरी इच्छा यहां के पवन पानी के विकार से बदल जाती है; हम श्रीयुत लार्ड रिपन बहादुर के डाक्टर महाशय की कहां तक बड़ाई करें कि जिनकी सहायता से उक्त श्रीयुत के विचार और कर्तव्य को यहां के जल वायु कुछ बाधा न पहुंचा सके। "संत कुसंगति पाइके ताको भ्रष्ट न विवेक। सतप्रधान ताकी कहत जाहि राज की टेक"। यह सब कुछ सही पर आधीन अध्यक्षों की बिना सहायता प्रधान अध्यक्ष क्यों कर पूर्ण काम हो सकता है; शासन प्रणाली और स्वतंत्र का

विषय तो बड़ा भारी और लाखों किरोड़ों का मामिला और आमदखर्च का बखेड़ा है खूब समझ बूझ के प्रबन्ध होना चाहिए लोकल गवर्नमेंट जितना सोच विचार के काम करे उतनाही अच्छा हम इस समय एक दूसरे विषय के यथोचित वर्ताव में सन्देह करते हैं जो कि श्रीमान वाइसराय ने कानून की बिलों पर प्रजा की सम्मति लेने के सम्बे प्रगट किया है; उसी यह बात भी संयुक्त है कि वह भाषा जिसे सब कोई समझ सकें उसी में इसकी कारवाई होनी चाहिए और न उस भाषा में अरबी फारसी के कठिन शब्द रक्खे जांय नाम उस भाषा का उर्दू करके लिखा है; इसमें इतनी बड़ी भारी भूल है कि जिस भाषा में अरबी फारसी के कठिन शब्द न आवेंगे और ऐसी सरल और सीधी होगी कि उसे सब समझ सकें उसको हिन्दी कहना चाहिए; उसमें यह भी आशा है कि लोग फारसी पढ़े हैं उनको फारसी अक्षरों में और बाकी सब को देवनागरी अक्षरों में उसी सरल भाषा के द्वारा कानून का मतलब ज़ाहिर किया जाय; हम अपने बड़े लाट साहब के अत्यन्त धन्यवादी हैं कि जो कानून ऐसे गूढ़ विषय में भी लोग होन प्रजा की सहायता लिया चाहते हैं; हमको किसी तरह पर विश्वास नहीं होता कि यदि सरल भाषा बनाने का काम उन अरबी फारसी के आचार्यों को सौंपा जायगा जो अपनी भाषा में कठिन शब्दों के लाने को अपने पांडित्य का गौरव समझते हैं और सब के समझने लायक भाषा को तुच्छ और दिहकानी कहते हैं पूरा पड़ेगा; इस्तेमाल के बदले बर्ताव, ख़्वासॅक की जगह सब लोग, सिलहया असलह के पलटे हथियार, मक़बज़ी की ठौर सेंध, शब के स्थान में रात, मुस्तना का तर्जुमा छोड़ के अब उन्हें अच्छा करेगा, इस क़दर का इतना, मामूर का भरा हुआ कब भावेगा, खुद कुशी को आपघात कभी न लिखेंगे, तिग्ननगी की प्यास तिफ़्ल की लड़का या बालक कहते उनकी छाती दरकैगी; और हमारे बड़े लाट साहब की यह इच्छा हुई कि प्रजा को कानून का मसौदा सरल भाषा और देशी अक्षरों में दिखाया जाय और उनकी राय ली जाय पर उन श्रीमान को इतनी खबर नहीं है कि कानून तो देश भर के लिए है और जो कुछ उसमें हानि लाभ है वह सब के

लिए समान है; मनुष्य को विशेष काम को विशेष ममता होती हैं अदालत में मुकद्दमे लगाते हैं हजारों रुपए खरचते हैं परन्तु मुकद्दमा सम्बन्धी कागज पत्र एक अक्षर भी नहीं पढ़ सकते अब ऐसी बातों में उन पर दया नहीं की जाती और गवर्नमेंट अंगरेजी की अदालतों में फारस और अरब की भाषा और अक्षर बरतती हैं तब कानून के मसौदे को प्रजा ने पढ़ा तो क्या न पढ़ा तो क्या; जो भाषा और अक्षर सर्कारी कचहरियों में रहेंगे उन्हो की जियादह कदर होगी न उनके कारण देशी भाषा में शिक्षा वृद्धि होने पावेगी और न किरोड़ों प्रजा का कुम्हिलाया हुआ हृदयाम्बुज विकास पावेगा; यह बात तो तब होती जब कि छोटे बड़े हाकिम परदेशी भाषा और अक्षरों से प्रजा की हानि समझ वही गवर्नमेंट से चाहते सो उन्हें क्या पड़ी है दस पंदरह का एक मुनशी रख झट पट उर्दू सीख ली फजीलत का इम तिहान दे हजार पांच सौ अधिक तन-खाह ऐंठने लगे रहा कचहरी का काम काज आप से आप होता जाता है आड़ के लिए एक हाकिम भी चाहिए, वेही हाकिम हमारे सब कर्ता धर्ता ठहरे तो काहे को वे देशी भाषा और अक्षरों के लिए शिफारिस करेंगे प्रजा घुसरी चाहे जीवै चाहे मरे चाहे रसातल को चली जाय इसी से हम कहते हैं एक लार्ड रिपन बहादुर क्या २ कर सकते हैं। प्रजा अभागी कुल गांव आंधर किसे २ आंखो दें।

कुलाङ्गनोपदेश और पं० छोटू राम तिवारी।

बिहारबन्धु और क्षत्रियपत्रिका के संपादक अपने २ पत्रों में लिखते हैं कि किसी पत्र प्रेरक ने एक अंगरेजी पत्र में पण्डित छोटू राम त्रिपाठी संस्कृत व हिन्दी प्रोफेसर पटना कालेज की निन्दा निरर्थक की है; जिसने लिखा है कि कुलाङ्गनोपदेश नाम पुस्तक अति उत्तम और भाषा उसकी बहुतही अच्छी है इसको पं० छोटू राम पटना कालिज में डाह के मारे नहीं जारी होने देते और जो पुस्तकें इन्होंने बिहार के

स्कूलों में जारी की हैं सब संस्कृत और निरे गंवारू शब्दों से भरी हैं ; हम लोगों ने कुलाङ्गनोपदेश पुस्तक को देखी है "इसकी भाषा स्कूलों मे लड़कों को पढ़ाने योग्य किसी तरह नही है पर पण्डित छोटूराम त्रिपाठी की निन्दा हम लोग भी इस लिए करते हैं कि वे बीस वर्ष से विहार प्रदेश में हिन्दी की वृद्धि का यत्न कर रहे हैं सरकार के कई हजार रुपए हिन्दी पुस्तकों के बनवाने में खर्च करा दिए तौभी वहां ऐसे लोग रह गए हैं जो कुलाङ्गनोपदेश की हिन्दी को बहुत अच्छा कहते हैं यह दोष श्री पण्डित छोटूराम के सिवा किसी दूसरे के गले नहीं मढ़ा जा सकता। क्षत्रिय

दत्तक चन्द्रिका।

पंजाब महाविद्यालय के रेजिस्ट्रार डाक्तर लइटनर साहब एम ए--की आज्ञा से पण्डित वर हृषीकेश भट्टाचार्य महोदय प्रणीत भाषानुवाद सहिता--यह दत्तक चन्द्रिका Hindu law on adoption एक हिन्दू मुतबन्ना की बाबत है इस कलियुग में कैसे कैसे को मुतबन्ना बनना चाहिए और कौन २ मुतबन्ना बन सकते हैं इत्यादि बातों का बहुत अच्छी तरह से बयान इसमे किया गया है इसकी भाषा बहुतही सीधी और सरल है निस्सन्देह भट्टाचार्य महाशय ने बड़े श्रम से इसका अक्षरार्थ अनुवाद किया है प्रतिमास विद्योदय संस्कृत मासिक पत्र पढ़ने से इनकी संस्कृत में योग्यता और संस्कृत के लेख की उत्तमता भरपूर हमारे नेत्रगोचर थी अब इस पुस्तक का भाषानु

वाद देख हिन्दी लेख में भी इन की योग्यता का सम्यग ज्ञान हमे हो गया ; पण्डितों में यह बात बहुधा नहीं पाई जाती गूढ़ से गूढ़ संस्कृत काहे खरें या खर्रा खिंच डालें पर हिन्दी शुद्ध और साथ महाविरे की कभी एक पंक्ति भी न लिख सकैंगे ; मूल्य ॥)

इलाहाबाद स्पिनिंग और वीविंग कम्पनी लिमिटेड ।

यहां के कई एक बड़े प्रतिष्ठित महाजन और हाईकोर्ट के वकीलों ने मिल कर पुतली घर के द्वारा कपड़ा बनाने को एक कंपनी खड़ी की है इस कारखाने मे ५ लाख रुपाया लगाया जायगा सौ २ रुपए के ५ हजार हिस्से रक्खे गए हैं ; सब के सुबीते के लिए हिस्सादारों से उनके हिस्से का रुपया कई एक किस्तों में लिया जायगा अन कविनेंटड मरचिस ब्यांक लिमिटड इलाहाबाद में यह रुपया जमा होता है ।

कार्तिक का नहान लम्पटों की पहचान ।

देखत के बहुरैया आवैं पांचों पोर । आहा नमस्कार नमस्कार आप हैं वैष्णवाग्रणी — यह आप की लम्बी माला ली खुबसी टट्टी के आड़ में शिकार है — आकण्ठलम्बिनी माला कर मालाप्रकीर्तिता । धन्य हो वनमालाधारी वनचारी छैल बिहारी चढ़ती उमर हुई तो क्या जी की हवस तो तदर्द वैसीही नई बनी है जाइए जाइये स्नान को देर होती है देखा बीत गई तब नहाने में लुफतही क्या रहैगा; यह कौन आये पण्डित जी "मालिकस्य धापसंवध:" । आद्युत्वं लिङ्गधारणम् । हुप धिक मूर्ख इनके स्वरूप को तू नहीं जानता अरे ये पण्डित जी हैं पण्डित जी — यजमानों को राह दिखलाने वाले — क्या भया जो आप खुद अन्धे काम किङ्कर लोभ के पुतले बने हैं — परं पाखिकाल के पेसे को हिकर ज धर्मोपदेष्टा होते हैं — मूर्ख तूने इतने दिनों तक पढ़ २ क्या धूर पाटा याद कर अपनी कल की सन्ध्या "धर्मोपदेशोऽमपथ: कैतवे रसमन्वित: । पुत्रायनयनेषाम बलात् कपिलपसा:" अपराध क्षमा कीजिए स-

छाराल मे नहीं जानता था आप ऐसे महात्मा हैं परखते परखते आदमी जाना जाता है लाइये २ वेलातिक्रम हो गया अमुक—को अमुको चली जायगी तब आप जाड़ों के क्या करेंगे ; आगे बढ़ो यह कौन आए सुखिया जी—सुखिया जी—सुखिया जी—दुखिया जी—"कहा कहूं आज सोहि टुक मझन्ता में विलम्ब ह्वै गयो अपुन जान तो बहुत छकनाओ तब अतिकाल होही गयो अब काहे को भेंट होयगी काल्ह के भोर तड़ोसी उठो जो ; और ये केला के गाछ समान स्त्रिास मे कौन खड़े हैं क्या इनको कुछ उन्माद है—से भी चक्के से क्यों हो रहे हैं—इनकी टकटकी तो भीत के चरेहे पुतलो को भी मात करती है—आहा आप हैं बड़ी देर बाद पहचाने गए अभी नई उमङ्ग है इश्क के कूचे में कदम रखना शुरू किया है—ग्यारह महीने परखते २ किसी तरह अंगुलियों दिन गिनते बीतता है अब इस कातिक में भी को को इसका न पुकारो । इन्हे न उन्माद है न विक्षिप्तता है सृष्टि कर्ता ने अब की कारीगरी झलकाने को ऐसी भोचक्की सूरत में गढ़ो दिया है० लाला जी रात की के सूरतही ऐसी है ; राजा जी इतने पर भी हम तुम्हारी भलाही चाहते हैं काहे तांबे उतर चुके अब भी सोचते और इस फिक्कार पन से मुंह मोड़ते यह टुच्च पन तुम्हारे कुल शोक और काम के सब तरह विरुद्ध कहेंगे वालिको सोका आवे मानो चाहो न मानो ; आहा यह मोटी लाश कौन हैं—आपही—आपतो आप सब पुश्तियों के बड़े बाप—जै गुपाल लाला जी जैगुपाल आइए आइये मिलिए आपही की कसर थी ; अब यह कौन आई बड़ी बी चुड्डी चलाबाई—चल झड़कनी छनाछन यह मारा वह काटा लूटा—अठिलात जात गोरी रंग में भरी कदम ब कदम यह कौन चले आते हैं पोथाधारी कथक्कड़ व्यास—गोपियों में कन्हैया इन्हें जो चैन है सो किसी को न होगा धर्म के वक्ता अधर्म के कर्ता लम्पठता के आचार्य इनकी रसीली तिरछी चितवन ने कितनी अबलाओं का मन अपने मूठी में कर रक्खा है "तिरछी चितवन पीतम प्यारे मन वैरागी मोरा रे । जाइये २ मैं आप के आनन्द में बाधक नहीं हुवा चाहता । और अब ये विकट सूरत रोरी का आड़ा जमाए कौन आए दिनोपवासी तुनिम्ब-भिप्रासी जटाधर सत्कुटाभिलासी "

कुकुट भट्ट टुकड़े टुकड़े भट्ट की इन का सा गुल होला भी काम रक्खा है गुप्तोगुप्तः प्रकटोभ्रष्टः । आइये आइये आप को अभी देर तक संध्या करना है ; अब हम भी इन लम्पटों का कुचलन देखते २ अकताय जांय अपने काम से क्यों ।

प्रयाग हिन्दू समाज की पुकार ।

आज कल हिन्दुस्तान में भिन्न २ जाति और धर्म के लोग अपनी २ उन्नति के लिए सभा स्थापित कर रहे हैं—जो अंगरेज इस देश में बस गए हैं वे इलाहाबाद कलकत्ता मद्रास तथा और नगरों में सभा कर अपनी जाति के लिए बहुत कुछ यत्न कर रहे हैं। मुसलमान भी अलीगढ़ मेरठ लाहौर कलकत्ता बम्बई आदि शहरों में सभा कर बहुत कुछ लाभ उठा रहे हैं । मुसलमानों में यह एक बड़ी खूबी है कि मुसलमान चाहे मद्रास का हो या पंजाब का हो एक दूसरे से बड़े हेल मेल के साथ पेश आते हैं कलकत्ता की सभा ने कोई बात उठाई कि तुरन्त बम्बई में उसका गुल मच गया॰ सर्कार को भी उस पर कान देना पड़ता है मतलब उन सबों का पूरा होता है—भला भारत वर्ष के हिन्दुओं में ऐसा एका क्यों नहीं॰ क्यों न बम्बई के हिन्दू मद्रास के हिन्दुओं के साथ या पश्चिमोत्तर देश के हिन्दू बंग देश के हिन्दुओं के साथ वैसाही एका रक्खें जैसा कि हैदराबाद के मुसलमान अलीगढ़ के मुसलमानों से रखते हैं या कलकत्ते के मुसलमान पटने के मुसलमानों से रखते हैं, मुसलमानों में तो केवल उनका धर्म ही इस एका में मुख्य कारण है पर हिन्दुओं के एक होने में तो और भी कारण हो सकते हैं एक तो जाति का सम्बन्ध का भिन्न २ देश के हिन्दू लोग भूल गये हैं कि वे उन्ही आर्य पुरुषों के वंश हैं जिनके नाम से अभी तक हम लोगों का गोत्रोच्चार होता है क्या वशिष्ठ याज्ञवल्क्य गर्ग गौतम इत्यादि ऋषियों के सन्तान दूर देशों में बसने के कारण अपना सनातन का नाता त्याग देंगे ।

अब रहा देश का सम्बन्ध सो सब देश के हिन्दू मात्र सनातन धर्म कुछ न कुछ मानते ही हैं गौ पर दया, ब्राह्मण साधुओं का आदर, तीर्थादि की यात्रा यह सब बातें भी एकही हैं सो चाहिए कि भाषा का भेद, पहनाव का भेद, जगह२ का आचार और व्यवहार का भेद हमारे एका में दखल देने न पावें स्वजाति की

उन्नति में सब हिन्दू एक चित्त होवें चाहे किसी छोर का हिन्दू क्यों न हो सबको चाहिए कि आत्मा को अवलम्ब कर तिनके की बरी रस्सी हाथी को भी बांध ली है इस बात पर ध्यान देकर सब हिन्दू मिल कर स्वजाति की एक पताका उड़ावें॥

उचित है कि नगर नगर में गांव गांव में हिन्दू समाज स्थापित होवें, खास कर के उन तीर्थ स्थानों में और राजधानियों में जहां देश २ के हिन्दू एकत्र बसते हैं। इस तीर्थराज के हिन्दू समाज के उद्देश्य नीचे लिखे जाते हैं।

१—सब देश के हिन्दुओं में एका हो और हर एक हिन्दू जाति और संप्रदायों के बीच प्रीति बढ़े इस का यत्न करना।

२—भाषा में सस्ते पुस्तक और पत्रों के प्रचार का उत्साह देना जिस में गांव और नगर के लोगों को समाज की नीति वो राजनीति की शिक्षा मिले।

३—समाज से नियुक्त विद्वानों के द्वारा समाज और राजनीति सम्बन्ध प्रस्तावों पर समय २ पर व्याख्यान दिलवाना।

४—ऐसी रीतों को जिन से लोगों का चरित्र बिगड़ने का डर है मृदु उपाय से दूर करना।

५—हिन्दुओं के प्रयोजन की बातें सर्कार से सूचित करना जो किसी बात को सर्कार बिना जाने बूझे कर बैठे जिस से कि हिन्दुओं की हानि पाई जाती हो उसको बचाना।

ये मुख्य उद्देश्य बिना मेहनत और खर्च के सिद्ध नहीं हो सकेंगे अब इनका पूरा होना देश के धनी गुणी विद्वान सज्जनों के हाथ में है आशा है कि सब लोग अपने सामर्थ्य भर इन बातों के पूरा करने में प्रयाग हिन्दू समाज की सहायता देवें

लक्ष्मीनारायण व्यास सभापति
काशीप्रसाद आर्य्य संपादक
कोमेश्वरदास सहकारी संपादक
वा कोषाध्यक्ष।
प्रयाग हिन्दू समाज
व्यास जी का बाग
अहियापूर
इलाहाबाद

जंचे हुए सिद्धान्त।

राजभक्ति और प्रजा का हित दोनों एक साथ कभी नहीं निभ सक्ते one man can not serve two masters यह

नाईं का बजाना और बहरी का बखाना साथ नामुमकिन है।

पुराने लोगों की बुड्ढी और शीठिल अकिल पर आज कल के इस नये ढंग की सिकली च-ढ़ाने की कोशिश निपट अनारी पन और व्यर्थ का दिमाग खाली करना है। स्त्रियों के शिक्षित और शासित हुए बिना समाज की सुधरावट की बाहिरी दमक दमक चूना पोती कबर के समान है हिन्दुओं में न स्त्रियां कभी पढ़ाई जांयगी न इनकी निकम्मी समाज किसी गत की होगी।

हमारे देश के निरक्षर महाजन लाल कर खूसटदास माड़वारि-यों का शिक्षित और विद्या रसिक होना पत्थल पर दूब का ज-माना और बिना भीत के चित्र का उरेहना है।

इतने आदमी सदा सुतन्त्री और अपवित्र रहते हैं स्त्री जित जोरू का गुलाम, कौड़ी २ दांत से थांभने वाला कादर्य्यां कट्टर सूम, स्वार्थ लम्पट अनदेखा।

बिना दास्य भाव ग्रहण किए केवल अंगरेजी द्वारा स्वाधीन शी-क्षा, मुसलमानों के गाजने हि-न्दुओं को सरसब्जी और हिन्दू पन के साथ मुल्क की तरक्की कि-सी तरह सम्भावित नहीं है।

एडिटर महाशय।

आज कल अपनी देश भाषा की उन्नति के लिए सभी उद्योग कर रहे हैं, मेमोरि-यल पर मेमोरियल जा रहे हैं और इस कार्य्य की अवधि भी अब थोड़ी ही अर्थात ३० नवेंबर तक है। उपरांत किसी का पत्र नहीं लिया जायगा, इस लिखित जहां तक हो सके शीघ्रता करनी चाहिए नहीं तो फिर पछिताए होता ही क्या है। इस पछतावे को मिटाने का यही उपाय है कि श्री राधाचरण गोस्वा-मी हिन्दूयन जिला मथुरा या भाषा स-म्बर्द्धिनी सभा अलीगढ़ से छपे हुए मेमोरियल पत्र मंगाने सहित मंगा लीजिए और उनमें हस्ताक्षर जोड़ कर जिमला या अपने जिला सभा के सभा पति को भेज दीजिए। मैं यहां इस देशानुरागियों को कोटिशः धन्यवाद देता

हैं जिन्हो ने स्वयं शुभसागरी नागरी के प्रचारार्थ प्रयत्न किया और करते जाते है। यहां कुछ देश भाषा सम्बन्धी लाभ व उपकारों का लिखना अवश्य नहीं पत्र सम्पादक जानते होंगे।

अब प्रश्न यह है कि अभी तक प्रायः जितने मेमोरियल गये, उनमें नगर निवासियों से अधिक और गांव वालों के बहुत थोड़े हस्ताक्षर हैं इसका एक मात्र कारण यही है कि प्रथम तो उन लोगों का इस विषय की सूचना अच्छे प्रकाश नहीं और जो लोग जानते हैं वे इस चिन्ता में वञ्चित हैं कि कहां भेजें किससे लिखावें, कहां किस प्रकार रजिस्टरी करावें इत्यादि। यदि यह अड़चल न होती, तो हस्ताक्षरों की संख्या बहुत बढ़ जाती; परन्तु कुछ चिन्ता नहीं अभी समय है, उद्योग चाहिए मेरी अनुमति में यदि ऐसे देशानुरागी जिन्हों ने मेमोरियल भेजे है, सुचेष्टा करें तो अति उत्तम हो और कुछ कठिन बात नहीं क्योंकि अच्छे रईस और पदाधिकारी इसमें उद्यत हो चुके हैं, वे अपने किसी पटवारी वा जमीदार अथवा अन्य मित्र द्वारा, अथवा जिले के डिपुटी इन्सपेक्टर के द्वारा, अथवा सब ग्राम तहसीली मदर्सों से इसका प्रयत्न करा देते। इत्यादि बहुत सी रीति मिल सकती हैं, इस चेष्टा से साधारण में हस्ताक्षरों की संख्या विशेष बढ़ जायगी, और किसी को कुछ अड़चल न होगी। *

आपका शुभचिन्तक

गणेशप्रसाद लेखाध्यक्ष

आर्यसमाज फर्रुखाबाद।

गत संख्या के बिहारबन्धु में यह देख के हम लोगों को बड़ा दुःख हुआ कि वह पत्र इस बरस के बाद प्रकाशित नहीं होगा। यद्यपि बिहारबन्धु ने अपने जीवन काल में बिहार का बहुत उपकार किया परन्तु बिहार की अभी ऐसी अवस्था नहीं हुई कि ऐसे पत्र के बन्द होने से उसको कुछ हानि न हो। विशेष कर यह पत्र १० बरस से प्रकाशित होता है और इसका इस तरह से अन्तर्ध्यान होना हम लोगों को बहुत कष्ट देता है।

---

* स्थाना भाव से हम लोग उन लोगों का नाम नहीं प्रकाश कर सके, जिन्हो ने मेमोरियल पर हस्ताक्षर करा के भेजे हैं

भा० मि० के द्वि०प्र०।

अग्रिम मूल्य २।) पश्चात देने से ४)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Dec. 1882. Vol. VI.] [No. 4.

प्रयाग मार्गशीर्षकृष्णा ७ सं० १९३९ जि० ६] [संख्या ४

नरपतिहितकर्त्ताद्वेष्यतांयातिलोके
जनपदहितकर्त्तात्यज्यतेपार्थिवेन।
इतिमहतिविरोधेविद्यमानेसमाने
नृपतिजनपदानांदुर्लभःकार्यकर्त्ता।

यह वाक्य श्री महाराज भर्तृहर जी का है जो प्राचीन काल में भारत वर्ष के बड़े राजाओं में हुए हैं जिन्हों ने राज सिंहासन छोड़ जोग लिया और उसे यथा योग्य निबाहा; यह वाक्य बहुत सार्थक और बहु मूल्य है इसके अनुवाद भाषान्तर में भी पाए जाते हैं और बहुधा लोगों के मुखारबिन्द से निकलते

सुनाई देते हैं जिसका तात्पर्य यह है कि जो राजा का हित चाहने वाला है वह प्रजा का द्वेष्य होता है और जो प्रजा का हित करता है उसे राजा कब चाहेगा इस तरह राजा और प्रजा के हित में बराबर से सदा विरोध रहते ऐसा एक मनुष्य दुर्लभ है जो अपनी कारगुजारी से दोनों का हित करे; इस समय ऐसे लोगों से जो दिल्ली के पांचवें सवार बन हर एक बातों में अगुआ बनने को मुस्तैद रहते हैं उनके प्रति हमारा कथन है कि राजभक्ति और प्रजा का हित दोनों का साथ कैसे निभ सक्ता है जैसे हंसना और गाल का फुलाना दहुरी चाबना और शहनाई का बजाना एक संग नहीं हो सक्ता ऐसा ही यह भी असम्भव और दुर्घट है; अङ्गरेज़ों में एक कहावत है If you wish to please half the world mind not what the other half says" "यदि तुम आधी दुनिया को राजी रखना चाहो तो दूसरे आधे के कहने पर ध्यान मत दो,, तो इस सब का सारांश यही ठहरा कि मनुष्य से एकही ओर का काम अच्छी तरह सध सक्ता है इससे हम उन लोगों से जो राजभक्ति और प्रजा का हित दोनों के साधने की युक्ति ढूंढ रहे हैं । सविनय निवेदन करते हैं कि उन्हें एक ओर ही जाना चाहिए कूड़ी के इस पार या उस पार; राजभक्ति का फल निस्संदेह पहले देखने में बड़ा मीठा है पर परिणाम में महा मदकारी और हखा है इसे बहुत खाते २ मनुष्य क्षीण वीर्य्य क्षीणसत्व और क्षीण तेज हो जाता है रग रग और रोम रोम में दास्य भाव अलर्क अर्थात् कुत्ते के विष समान ऐसा असर कर जाता है जिसके दूर करने को कितनी ही तदबीर हो कुछ कारगर नहीं होती इस फल के चखने वाले ऐसेही कोई कहीं बचे खुचे पड़े होंगे जो स्वार्थपरता की कीचड़ में न फंस स्वच्छ उदार भाव के कुण्ड में अभिषिक्त कर मन वच कर्म से निर्मल और शुद्ध हों । वही प्रजा के हित का फल यद्यपि देखते कडुआ फीका और अरोचक है पर अन्त को बड़ा उत्तेजक वीर्य्यवर्धक और पौष्टिक है इस फल के खाने वाले देशोपकारी सर्वजन हितैषी और बड़े उदार प्रकृति होते हैं परन्तु पछतावा इसी बात का है कि इस अरोचक फल के खाने वाले हमारे इन प्रान्तों में अभी बहुत कम लोग हुए हैं बल्कि बनारस अलीगढ़ आदि कई स्थानों में दो एक ऐसे महा पुरुष कुछ

बीरन उपज खड़े हुए हैं जो स्वार्थ लम्पटता के आगे देश के हित पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं; हम उनके चेलों को फिर भी यही चितावनी देते हैं कि वे अब भी राज भक्ति और प्रजा के हित में अन्तर देख यही बात अङ्गीकार करेंगे जिससे उनकी विमल कीर्ति और उनका उदार भाव संसार में दधीच और हरिश्चन्द्र के यश के समान चमके और चिरस्थायी हो कर देशानुरागियों के मुरझाये चित्त को आनन्द से परिप्लुत कर देश और जन पद का मान बढ़ावे विशेषत: लिबरल दल शिरोमणि श्रीमान् लार्ड रिपन से वाइसराय के समय जिनको प्रजा का हितही अधिकतर प्यारा है।

—o—

मान न मान मैं तेरा मेहमान।

ज़बरदस्त का ठेंगा सिर पर आप अच्छा खांय अच्छा पहिनें कपड़े रंगायें ढोल पीटें झाड़ फानूस टागें रोशनी और जलूस की जगमगाहट से चकाचौंधी आवें उसमें कहैं गम करो मोहर्रम है; रोओ पीटो रुलाई न आती हो तो प्याज का गट्ठा लिए रहो दम बदम आंख में मल लिया करो व्याह शादी तिहवार वार काम काज सब बन्द मोहर्रम है; हम किसी समय तुमसे सरकार थे तुम्हें रौंदा करते थे अब हमारे अत्याचार से फुरसत पाय तुम क्यों अपने मनकी कर गुजरने में ज़रा भी नहीं सकाते; बुतपरस्त बेदीन कुफ़ार तू किस भरोसे भूलता है काटेंगे मारेंगे मर जांयगे पर तुझे चैन के साथ वे राई रोटी न खाने देंगे-सच है "नवोपायवनात्पर:" हमारे सहचारी सारसुधानिधि ने अपने एक आर्टिकिल में इन यवनों का वर्ण सङ्करत्व सिद्ध किया है वह हमें बहुतही सटीक जचता है ठीक २ यही बात है कि ये लोग पश्चिम से आय यहां की हीन जाति का संयोग पाय पैदा हुए हैं; क्या भया जो मुसलमान स्वभावही के जघन्य और नीच होते हैं फिर भी यदि इनमें संकरता के कारण दोगला पन न होता तो कहां तक अपनी असालत पर कायम न रहते और ऐसे बेहूदा पने के साथ मौका पाय जब तब अपने डाह की धूम को ख्यालों में न भड़काते तेरे खैर जो हो गत मुहर्रम में यहां जो हिन्दू मुसलमानों की बीच झगड़ा हुआ था उसमें सिटीपुलिस इन्स्पेक्टर से तो कुछ न बन पड़ी पर श्रीमन् पेटरसन साहब मेजिसटरेटने भर पूर साहस और उदार भा

व प्रगट कर उचित न्याय किया हिन्दू विजयी और निर्दोष रहे और मुसल्मानों को हर तरह पशम नवाई की गई उक्त साहब को इसका अनेक धन्यवाद है।

—— o ——

सरकार के लिए आमदनी की एक नई सूरत।

हम कई बार लिख चुके जुआ खानो के बन्द करने का कुछ बन्दोवस्त नहीं होता यहां कम से कम चालीस फड़ हैं जिनमे खुला खुली वे रोक जुआ होता है हर एक महल्लों मे दो दो एक एक फड़ है यदि सरकार को जुआ खानो की तरक्की ही मंजूर है और इससे प्रजा की कुछ हानि नहीं समझी जाती तो इन जुआ खानो का ठीका दे दिया जाय जो माल पुलिस के अधिकारियों और नाल लेने वालों को कटता वह आमदनी सरकार ही को हो हज़ार रुपये महीने का ठीका सिर्फ एक मुठ्ठी गंज के बड़े जुआ खाने का हो सक्ता है माने चाहे कोई न माने हम तो सरकार के लिए सदा फाइदेही की सूरत तजवीज़ा करते हैं निस्सन्देह जुआरियों को इस कदर आजादगी भी अंगरेज़ी राज्य की एक शोभा है।

——

माघमेला कमिटी।

इस कमेटी मे जहां और कई आदमी भरती हुए हैं वहां एक मुसल्मान भी शरीक किए गए हैं सोचने की बात है कि हिन्दुओं के मजहवी मेलों के इन्तिजाम मे मुसल्मान के घुसने की क्या दरकार है हमे इन लक्षणो से ऐसा मालूम पड़ता है कि मेले के प्रधान अधिकारी भी हरसाल के माफिक वही मियां साहब होंगे मेले के निसवत गवर्नमेंट गज़ट मे जो आज्ञा छपी थी हम उसे क्या निरा पोथी का भांटा और सिर्फ फुसलाने की बात समझें ? न्याय परायण श्रीमान पिटरसन साहब के अधिकार मे तो हमे ऐसी आशा नहीं होती आगे देखें जैसा हो जो हुआ सो सो देखा है

और जो जो होगा सो भी देखि हींगे किन्तु इस मेले का कोढ़ साफ होना दुर्घटही है क्योंकि बड़े २ लोगों के दांत इसमे डूब रहे है।

—o—

रसेश्वर दर्शन।

पदार्थ के निर्णय मे प्रत्यभिज्ञा दर्शन और रसेश्वर दर्शन का सब तरह पर एक मत्य है किन्तु प्रति भिज्ञा दर्शन मे पारद पदार्थं के विषय मे कहीं पर कुछ नहीं लिखा जिसे रसेश्वर दर्शनावलम्बी सविशेष प्रति पादन करते हैं; जैसा प्रत्यभिज्ञामतावलम्बी महेश्वरही को परमेश्वर मान जीवात्मा और परमात्मा दोनों की अभिन्नता स्वीकार करते हैं ऐसाही रसेश्वर दर्शनावलम्बी भी महेश्वरही को परमेश्वर और जीवात्मा परमात्मा का अभेद मानते हैं; किन्तु प्रत्यभिज्ञा मतावलम्बी स्वकपोल कल्पित एक मात्र प्रत्यभिज्ञाही को जो परम्पद और मुक्ति का साधन मानते हैं इस बात पर रसेश्वर दर्शन वाले बिश्वास न कर मुक्ति साधन का एक दूसरा मार्ग स्थिर करते हैं ये कहते हैं कि मुमुक्षू को पहले देहकी दृढ़ता और स्थैर्य के सम्पादन मे यत्न करना चाहिए पीछे से योगाभ्यास करते करते क्रमश: जब ज्ञान का उदय होगया तब इस जीव के मुक्त होने मे कौन सा सन्देह बाकी रहा सो इस देह का स्थैर्य सम्पादक पारद के अतिरिक्त कोई दूसरा पदार्थ नही है; महेश्वर प्रभृति देवगण वालखिल्य आदि ऋषि गण चर्वटि कपिल व्यालि कपालि आदि सिद्धगण इसी पारद रस द्वारा देव्य देह सम्पादन पूर्वक जीवन्मुक्त हो यथेष्ट विचरण किया करते थे; इसे जीवन्मुक्ति ही इनके मत का मुख्य उद्देश्य है; कोई २ ऐसा कहते हैं सच्चिदानन्द स्वरूप परम तत्व की स्फूर्ति के बिना मुक्ति हो नहीं हो सक्ती सुतरां मुक्ति के लिए इस शास्त्र मे प्रवृत्ति होने की आवश्यकता क्या है परन्तु यह बात युक्ति सङ्गत नहीं हो सक्ती क्योंकि मुक्ति के लिए पहले तत्वज्ञान अवश्य और तत्वज्ञान बिना समाधि सुकर नहीं है सो समाधि चिरकाल के अभ्यास से होती है और इस क्षण भङ्गुर देह से उसकी निष्पत्ति महा कठिन है क्योंकि पहले तो यह शरीर श्वास कास आदि रोगों का आश्रय है और समाधि करने मे जो क्लेश होता है उसके सहन मे अशक्त और असमर्थ है दूसरे बाल्य अवस्था

मे बुद्धि इतनी प्रौढ़ता को नहीं पहुंची रहती कि समाधि की उपयोगी बातों को समझ सके यौवन अवस्था मे विषय रस के आस्वाद मे यह जीव व्यग्र रहता है इस अवस्था मे विवेक शक्ति जाती रह ती है पश्चात् देह का पात हो जाता है सुतरां इस क्षण भङ्गुर देह से समाधि की निष्पत्ति सर्वथा असम्भव है इस लिए पहले सिद्ध पारद द्वारा दिव्य देह को प्राप्तिकर तब क्रमश: यम नियम प्राणा- याम आदि अष्टाङ्ग योग साधन द्वारा पर म तत्व की स्फूर्त्ति हो सक्ती है इसी कारण से इस रसेश्वर दर्शन मे देहस्थैर्य साधन का एक उत्तम मार्ग दिखलाया है।

इसके सिवाय पारे को और सामान्य धातु समान जानना अनुचित है स्वयम् भगवान् महेश्वर ने भगवती पार्वती से कहा है यह पारदरस हमारा स्वरूप है और हमारे प्रत्यङ्ग से उत्पन्न हुआ है औ र हमारे ही देह का रस है इसी से यह रस पद वाच्य हुआ; संसार सागर के पार का देनेवाला पारद शब्दका अर्थ है "संसारस्यपरंपारं दत्तेसौपारद:स्मृत:। पारदोगदितोयस्मात्परार्थंसाधकोत्तमै:। सुप्तोयंमत्समोदेवि ममप्रत्यङ्गसम्भव:। मम देहरसोयस्मा द्रसस्तेनायमुच्यते। अभ्रक स्तवबीजन्तु ममबीजन्तुपारद। अनयोर्मे लनंदेवि मृत्युदारिद्र्यनाशनम्"

यां महादेव जी कहते हैं पारा हमा- रा वीर्य और अभ्रक पार्वती तुम्हारा इन दोनों का मिलन मृत्यु और दरिद्रता को दूर करता है; मूर्छित पारा रोगनाशक है मारा हुआ पारा खाने से जीवन देता है बद्ध पारा साक्षात् सदा शिव रूप है जिसके दरस या पूजन से पुण्य मार्ग मे प्रवृत्ति होती है जो पारा कई रंग हो जाय घनता और चपलता आदि धर्म्म उसमे न हो उसे मूर्छित कहते हैं जो पारा आर्द्रत्व तेजस्विता गुरुता और चपलता आदि गुण युक्त न हो वह मृत पारा है ऐसाही जो पारा अक्षत निर्मल तेजस्वी और भारी हो और चलद टेढ़ ल जाय वह बद्ध पारा है; पारा का गुण कहां तक लिखा जा सक्ता है यह पारद धर्म्म अर्थ काम मोक्ष स्वरूप चतुर्वर्ग साध- न का मूल है सकल विद्या और कुशल ज्ञानता का आधार देह को अजर अमर कार देनेवाला है इसके अतिरिक्त देह को नित्यता सम्पादक कोई दूसरी उपाय न- ही है; पारद सकल उत्तम गुण विशिष्ट होने के कारण इसकी संज्ञा रसेन्द्र वा रसेश्वर है और इस दर्शन के रसे-

श्वर का गुण निर्दिष्ट किया गया है इस लिए यह रसेश्वर दर्शन कहलाता है।

सीतावनवास नाटक।

तृतीय—अङ्क।

स्थान---तपोवन।

वासन्ती और बटोही के भेष मे आत्रेयी का प्रवेश।

वासन्ती। प्रिय सखी तपोधना आइये तुम्हारा कल्याण हो अच्छे लोगों का साथ बड़े पुण्य के फल से मिलता है आज कोई सुकृत का फल उदय है जो मैंने तुम्हारा दर्शन पाया प्रिय सखी इस तपोवन को तुम अपना ही समझो सघन पेड़ों को शीतलच्छाया स्वच्छ शीतल और स्वादिष्ट झरनों का पानी तपस्वियों के भोजन योग्य कन्द मूल फल यहां सब प्रस्तुत है उन्हे अपना समझ खा पी सुख पूर्वक वास करो; हमारे आश्रम को तीर्थ तुल्य करते इस समय कहां से आती हो और इस दण्डक बन मे आप किस प्रयोजन से आई हो।

आत्रेयी। प्रिय सखी वासन्ती इस दण्डक बन मे अगस्त्य सरीखे अनेक महात्मा सामग रहते हैं उनसे ब्रह्म विद्या सीखने को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम से हम चली आती हैं।

वासन्ती। क्या कारण कि औरर मुनि लोग ब्रह्म विद्या सीखने को महर्षि वाल्मीकि के पास जाते हैं और तुम यहां इतने दिनों तक रह सब सुभीता ज्ञान के अभ्यास का छोड़ फिर प्रवास का सब श्रम उठाय यहां आई हो।

आत्रेयी। क्या कहें प्रिय सखी वहां स्वाध्याय का एक बड़ा विघ्न आ उपस्थित हो गया है न जानिए किसने दो स्तनंधय बालक महर्षि वाल्मीकि को लाकर दिये हैं उनके लालन पालन मे न केवल महर्षिही सदा व्यग्र रहते हैं किन्तु सचराचर जगत उनकी मुग्ध मुग्धच्छवि और रूप माधुरी पर मोहित हो सभी उन बड़ों से स्नेह करते हैं।

वासन्ती। उन दोनों बालकों का नाम क्या है?

आत्रेयी। उन्हे लोग कुश लव इस नाम से पुकारते हैं भगवान वाल्मीकि ने उन्हे क्षत्रियों की कुल प्रथानुसार उपनीत आदि सब संस्कार पूर्वक वेदत्रयी पढ़ाते हैं वे बालक ऐसे तीव्र बुद्धि हैं कि उनकी सपाठ मे हमारी सन्या नहीं चल सकी इससे घबड़ा कर पाठ मे विघ्न

समझ हम चली आई और एक दूसरा कारण और भी है।

वासन्ती। वह क्या है?

आत्रेयी। एक दिन मध्यान्ह के समय वेही महात्मा महर्षि तमसा नदी मे स्नान को गए थे तहां क्रौंच पक्षी के जोड़ा मेसे एक को व्याधा ने मार डाला यह देख महर्षि के मुख से अकस्मात् खेद और विषाद पूर्ण अनुष्टुप छन्द मे यह देववाणी प्रगट हुई- "मानिषादप्रतिष्ठांत्व मगमः शाश्वतीःसमाः, यत्क्रौंचमिथुनादेक मव धीःकाममोहितम्"

वासन्ती! आहा यह तो वेद के अतिरिक्त एक नये प्रकार के छन्द का प्रादुर्भाव हुआ प्रिय सखी तब क्या?।

आत्रेयी। उसी समय पद्मयोनि ब्रह्मा प्रगट हो महर्षि से बोले मुनिवर तुमको शब्द ब्रह्म मे अपूर्व शक्ति है सो तुम कुछ राम चरित्त वर्णन करो इसमे तुम्हारी अव्याहत गति होगी सब बात तुम्हे आप से आप फुरती जायगी कहीं रुकोगे नहीं और जगत् मे आदि कवि के नाम से विख्यात होगे ब्रह्मा से यह अभीप्सितवर पाय महर्षि ने रामायण रूप एक नये प्रकार का प्रबन्ध छन्दोबद्ध कर मनुष्यों मे प्रगट किया।

वासन्ती। तो अब संसार मे काहे कोई मूर्ख बच रहेगा।

आत्रेयी। इसी से तो हम कहती हैं कि हमारे स्वाध्याय मे बड़ा विघ्न हुआ क्योंकि अब रामायण रूप परम रोचक वाल्मीकि की सरस्वती के आगे वेद के निरस पठन पाठन की ओर कौन चित देगा; प्रिय सखी हम यथेष्ट विश्राम कर चुकीं अब हमे अगस्त्य के आश्रम का मार्ग बतलाओ।

वासन्ती। आओ आओ सखी इस गोदावरी नदी के किनारे २ यही पञ्चवटी हमारी प्यारी सहेली जानकी का आश्रम इस तपोवन की शोभा है।

आत्रेयी। प्रियसखी अब तुम इसे जानकी की क्यों सुध दिलाती हो उसकी सुध कर हमारी छाती दरकती है।

वासन्ती! क्यों २ हमारी प्रिय सखी जानकी का क्या अहित हुआ?

आत्रेयी। प्रियसखी जानकी का क्या हाल पूछती हो वह तो पर अटूवाद रूप कलङ्क के कारण त्याग दी गई।

वासन्ती। (आंखमे आंसू भर) हा राम मय जीविनी हा! अरण्य वास प्रिय सखी हा! महा भागी ऐसा तुम पर दुर्बिपाक आपड़ा प्यारी सखी क्या हत बिधा

ता ने तुम्हारे लिलार मे सुख बिलखना लिखाही नहीं; सखी आत्रेयी तो अब नीति धुरन्धर वह राजा रामचन्द्र क्या कर रहे हैं जिनको सं ता सी सती के त्यागने मे टुक बिचार न आया।

आत्रेयी। वे महाभाग अब यज्ञ का आरम्भ किया है।

वासन्ती। तो उस यज्ञ मे अब सहधर्म चारिणी कौन होगी क्योंकि यज्ञ तो सपत्नीक को करना बिहित है।

आत्रेयी। सुना है सोने को सीता की मूर्ति बना लिया है।

वासन्ती। हां भाई सच है- "वज्रादपिकठोराणि मृदूनिकुसुमादपि, लोकोत्तराणांचेतांसि कोनुविज्ञातुमर्हति" जो लोग सब से निराले ढंग के हैं उनके चित्त का अभिप्राय कौन जान सक्ता है जिनका चित्त उनके कामो से कभी तो वज्र से भी अधिक कठोर जान पड़ता है कभी तो कुसुम से भी अधिक मृदु तर इसी से ऐसों को लोकोत्तर संज्ञा है।

आत्रेयी। सुनती हैं शम्बूक नाम किसी शूद्र की तपस्या के कारण एक ब्राह्मण का बालक मर गया है सो वह ब्राह्मण रामचन्द्र की डेहुड़ी पर अपने मृत बालक को रख रोता पीटता राजा के अपराध से अपने पुत्र की मृत्यु सिद्ध करता है इस लिए उस शूद्र की खोज को रामचन्द्र पुष्पक यान पर चढ़ कर निकले हैं।

वासन्ती। वह शम्बूक तो इसी तपोवन मे तप कर रहा है तो चलो चलें दिन भी अब दो पहर हो गया (दोनों गई)

क्रमशः।

मिडिल क्लासएङ्गो बर्नेक्युलर की परीक्षा।

इस परीक्षा मे सवाल इस साल लड़कों की समझ से बहुत कुछ मुआफिक थे इस परीक्षा मे देश भाषा से अङ्गरेजी मे और अङ्गरेजी से देश भाषा में अनुवाद करने के लिए प्रश्न दिये जाते हैं केवल अन्तर इतना ही है कि देश भाषा से जो अङ्गरेजी मे तर्जुमा करने को मिलता है वह हिन्दी उर्दू वालों को एकही रहता है उससे उनकी अङ्गरेजी मे अनुवाद करने की योग्यता इकसां जंच जाती है पर ऐसा प्रश्न के उस कागज मे नही होता जो अङ्गरेजी से हिन्दी और उर्दू मे तर्जुमा के लिये दिया जाता है क्योंकि हिन्दी और उर्दू के परीक्षक अलग होते और वे अपनी २ रुचि के अनुसार जुदे जुदे प्रश्न देते हैं सम्भव है कि एक दूसरे

की अपेक्षा अधिक क्लिष्ट हों जैसा कि इस साल देखने मे आया जिस्से उर्दू वालों की अपेक्षा हिन्दी वालों की या यद कुछ हानि हो चाहिये कि तर्जुमा और प्रबन्ध लिखने के कागजों का मजमून हिन्दी और उर्दू पढ़ने वालों को एकही दिया जाय; हां यह बात बेशक है कि किताबें हिन्दी और उर्दू की जुदी २ हैं उनके सवाल जुदे रहें पर उनमे भी इतना देख लिया जाय कि वे दोनो इकसां सहज या क्लिष्ट हों वर्नेक्युलर देशी जबान की परीक्षा के प्रश्न अच्छे थे पर हिसाब के सवाल बहुधा लड़कों की समझ के बाहर थे विशेष कर रेखागणित में; पहले तो ऐङ्गलोवर्नेक्युलर और वर्नेक्युलर ये दोनों इम्तिहान यहां के एक से हैं तो सवालों के कागज भी जहां तक हो सके एकही होना चाहिए यदि जुदेही रहें तो ऐङ्गलोवर्नेक्युलर के सवालों से वर्नेक्युलर के सवाल कदापि कड़े न हों क्योंकि केवल हिन्दी या केवल उर्दू पढ़ने वालों को अभी तक अच्छी पुस्तकें नहीं मिलतीं जैसा कि अङ्गरेजी पढ़ने वालों को हर एक विषय की उत्तम से उत्तम पुस्तकें मिलसक्ती हैं; दूसरे उनके अध्यापक भी दस या बारह रुपये से अधिक तनख्वाह के नहीं होते जिनकी लियाकत भी कुछ ऐसी वैसी रहती है बहुधा ये मुदर्रिस आप भी नारमल स्कूलों के मिडिलक्लास ही तक की परीक्षा दिए रहते हैं तब वे अपनी विद्यार्थियों को अधिक कहां से बतला सकते हैं; आशा है आगे से शिक्षा विभाग के अधिकारी इनबातों का खयाल रक्खेंगे और अब कि बार यह परीक्षा उत्तम रीति से हुई प्रश्नों की चोरी आदि किसी तरह की बात सुनने में नहीं आई।

ताजिया लीला।

जहां सैकड़ों फजूल खर्च वाली वेहूदगी इस मुल्क मे रायज है उनमे ताजियेदारी भी एक अनूठे ढंग की वेहूदगी है; यह तैमूर और नादिर के समय से होती चली आई है मुसल्मानों मे केवल शिया इसे करते हैं और सुन्नी तो यहां तक इसे घिनाते हैं कि अपने २ घरों में कोठरी बन्द किए बैठ कर किसी तरह दस दिन काटते हैं; कुरान मे इसका कहीं लेख नहीं यह निरी लोकाचारी की बात है फारस मे निरे शिया रहते हैं और और स्थानों मे भी हैं पर कागज पत्री बांसे

और घासफूस की ताजियाएं कहीं नहीं बनाई जातीं इस बेहूदगी को मुसल्मानों ने हिन्दुस्तान ही में आकर सीखा है; शिया लोगों में भी थोड़े से मूर्ख और नीची जात के मुसल्मान इसे अधिक मानते हैं जिन्होंने अपने यहां का पूरा इतिहास तक न पढ़ा न सुना होगा कि हमारे पुरखे मुहर्रम के दिनों में क्या करते थे; इस ताजिए दारी में लोग हज़ारों रुपये कागज पन्नी बांस के ठठरों में उड़ा देते हैं केवल थोड़े से मूर्ख और सनकी मुसल्मान इसे धर्म की नेव पर मानते हैं बाकी ताजिएदारी के शौक़ीन बहुत कर हिन्दूही हैं; जिस मुहल्ले में जाइए चाहो उसे बिल्कुल हिन्दू रहते हों वहां भी दो एक जरीह मुबारक को इमामबाड़े के चबूतरे पर धरा देखिएगा ११ महीना तक हिन्दुओं के मुहल्लों में रहने वालों को यही मालूम पड़ता है कि जहां हम बैठते हैं वह हमारी दूकान या बैठक है पर बारहवें महीने मुहर्रम के दिनों में मियां साहब आकर खड़े होंगे "यह जगह खाली कर दीजिए हम इस पर इमामबाड़ा बनावें" दस दिनों तक उस जगह को मियां अपनी बपौती ही समझते हैं हिन्दू भाई नौकरों के सिर पर शरबत का घड़ा रखाए सौरनी का दोना हाथ में लिए हरा कपड़ा पहने झोली गले में डाले घर २ में इमाम साहब की जियारत को निकलते हैं "जरीह मुबारक" ताजिया के एक ओर फ़ातिहा हो रही है एक ओर मातम की ठठाठट्ट है एक ओर छाती पिटती है एक ओर हसन हुसैन के नामोचारण की चिल्लाहट कान फाड़ती है; लोग अपने २ ताजिए के सामने शरबत रेवड़ी को भेंट रख नाक रगड़ चले जाते हैं कोई २ भरने के तौर अपने मनोकामना की सिद्धि के लिए ढेला या ईंट इमामबाड़े पर रखते देख पड़ते हैं, कोई लोहबान की धूप सुलगा रहा है, कोई ताजिए में परवाना टांग रहा है, कोई बड़े प्रेम से झुक २ सिजदा कर रहा है; मुहर्रमी बांके प्रसिद्ध हैं मुसल्मान लड़कपन से पटाफेकना सीखते हैं इस मोहर्रम में ऐसी सफाई के साथ अपना करतब देखाते हैं कि अङ्गरेजी वलंटियर सिपाही उनके सामने मात हैं; पहले सच्चे हथियार से खेला करते थे अब से शस्त्र निग्रह वाले कानून का जन्म हुआ तब से वह बाना पटा टिन काठ और पन्नी लगे बांस का हो गया

है; हम सोचते हैं मोहर्रम के दसवीं मे जो अकसर जगह बजगह होता रहता है ये मुसल्मान मोहर्रमो यांकि जो कहीं सच्चे हथियार पावें तो इस सफाई के साथ चलावें कि हम हीन सत्व हिन्दुओं की क्या दशा हो जिन्होंने आर्मस् ऐक्ट के जारी होने पर कभी कोई हथियार हाथ से भी नहीं छुआ और न छूने पाते हैं; दसवें दिन बड़ी भीड़ भाड़ के साथ आलम लिए गाते बजाते ताजिए को करबला मे ले जाकर दफ़न करते हैं अकसर ताज़ियों के साथ रोटी बटती है जिसे हजारों नीच हिन्दू अलभ्य पदार्थ समझ महा प्रसाद की भांत उड़ा जाते हैं और दूसरे साल के मोहर्रम की राह जो हते घर लौटते हैं॥

इति मोहर्रम पर्वणि ताजिया खोला॥

परीक्षा गुरुः।

प्रथम तो हमे हर्ष इस बात का है कि महाजन खास कर माड़वारियों के जघन्य समूह मे जहां मूर्खता का राम राज्य है स्वार्थ परता मन मानता दो लत्तियां झाड़ रही है कादर्यांपन बेइमानी बुद्धिमान्य आदि अतसः एसे प्रबलतर दोष इस फिरके को घेरे हुए हैं जिस्से कभी आशा नहीं होती कि यह जाति कभी को उन्नति के शिखर पर चढ़ने लायक हो वल्कि सच कहो तो देश इन दिनो दोही के नमूने से चौपट हो रहा है एक महाजन दूसरे अपढ़ ब्राह्मण तब हमे क्यों हर्ष न हो जब हम पत्थर पर दूब जमी देखते हैं कि महाजनो मे एक ऐसा चमत्कारी प्रतिभासम्पन्न पुरुष हो निकला जो ऐसा बिद्या रसिक खास कर देश भाषा की उन्नति का स्तम्भरूप बन रहा है; इस उपन्यास की भाषा और "प्लाट" वन्दिश दोनो बहुत कुछ सराहने के योग्य हैं ग्रन्थ कर्ता ने अङ्गरेजी फारसी संस्कृत और बिज्ञान मे अपनी लियाकत जहां तक हो सका भरपूर इसमे प्रगट किया है पर न जानिये क्यों हमे इस लेख मे एक प्रकार का रूखापन जंचता है पदों का वह लालित्य

और माधुर्य नहीं आया जैसा बाबू हरिश्चन्द्र के लेख मे होता है नाटक वा उपन्यास के प्रधान अङ्ग शृङ्गार हास्य आदि रस और और करुणा होते हैं सो उन सबों की इसमे कहीं झलक भी नहीं है क्या निरा विदुरप्रजागर और ठौर ठौर बेलून आदि वैज्ञानिक बातों हो के भर देने समस्त लेख चातुरीसमाप्त हो गई; Novel writing उपन्यास सम्बन्धी लेख और विज्ञान तथा नीति से क्या सरोकार बहुत लोग नोवेल जैसा मिस्टरीज़ आदि किताबे हैं उनका पढ़ना बुरा समझते हैं और उपन्यासों "इश्कारल" असत् उपदेशक कहकर बदनाम कर रक्खा है पर सच पूछो तो बुराइयों का परिणाम दिखा कर अपनी लेख शक्ति के द्वारा पढ़ने वालों का जी आकर्षण करते जैसा संस्कृत मे कादम्बरी है अन्त को एक अपूर्व उपदेश निकालना उपन्यासही मे है सो बातें इसमे नहीं पाई जातीं; अस्तु फिर भी जहां कोई पेड़ नहीं वहां रेंड़ही रूख हिन्दी मे अब तक कोई उपन्यास नहीं छपे इस लिए यह अवश्य उत्तमोत्तम है क्योंकि कवि की उक्ति है "सतृतचविशिपदुर्लभः सदुपन्यस्यतिकृत्यवत्मं थ:" दूसरी बात लाला श्री निवास दास की यह अति प्रशंसनीय है कि सा-सु-नि- के ग्राहकों मे इसे मुफ्त बांटा इस्से कितने लोगों को उपन्यास पढ़ने का शौक हो जायगा और देखा देखी कदाचित् और लोग भी नोवेल लिखने का मन करें तो क्या अचरज है अन्त को श्री निवासदास को अनेक धन्यवाद पूर्वक हम इस ग्रन्थ को स्वीकार करते हैं।

इलाहाबाद की खूब सूरती।

बीच बाजार मे खडंजे की नाली; मानो बुढ़िया के पोपली मुह मे खोढहे दातों का खड्डा; ऊंची नीची जिस्मे पानी खुल के कभी नही बहता ईंट के दरारों

से जञ्च ही रोग का घरनसी सदा पैदा किए रहता है और पानी जमा रहने से ऐसी दुर्गन्धि उठा करती है कि दूकानदार बेचारों का नाकों दम आ लगा है पर क्या करें क्या चारा है; ज़ियादह हिस्सा चुङ्गी की आमदनी का इन्ही बाज़ार के दुकान दारों से वसूल होता है जिसके प्रतिफल मे यह आराम उन्हे दिया जाता है; श्रीमान् पिटरसन साहब को चाहिए कि बाज़ार की इन महा मैली नालियों के सुधरवाने को अवश्य कोई उपाय करें क्योंकि यह नाली रोग का घर और सफाई की बड़ी बाधक है; हम उस अनूठे कारीगर की कहां तक तारीफ करें जिसने तमाम अपना दिमाग पच्ची कर इनकी निर्माण के इल्म को छोर तक पहुचा दिया; बहुत दिनो से गाते २ बड़ी मुशकिलों से रोशनी का बन्दोबस्त हुआ भी तो इतनी दूर २ खम्भे गाड़े गए कि एक ईर घाट एक मीर घाट हमारे प्रेसिडेंट साहब का इसमे कुछ कुसुर नही है दो एक म्युनिसिपल कमिश्नरों की खैर खाही का नतीजा है; मसल है तेल तेली का जले फटे मशालची की खैर बीच २ एक खम्भे और कर दिये जांय तो इसकी कल मिट जाय फिर भी बाजार वाली सड़क पर दस बीस लालटेनें गाडदी गईं तो इसी क्या रोशनी खतम हो गई तमाम शहर भर की गलियों मे तो पाताल पुरी का तिमिर छाया रहता है; हुई हो रोशनी गली कूचों के रहन वालों को क्या फाइदा हमे तो उसी अन्धकार मे टटोलते फिरना है और उसी खुली नाली की दुर्गन्धि सूंघते २ जन्म बिताना है; लोग कहेंगे इसे सदा भीखने की आदत पड़ गई है ऐसा ही जब तब बक उठता है यह किस्से कहैं कि ऐन दरवाजे पर दिन रात नाली बहा करती है जिसकी दुर्गन्धि की परिमाणु नासा रन्ध्र के द्वारा घुसते २ दि-

माग से जमा हो रहे हैं जहां तक फितूर न पैदा करें न यह दुर्गन्धि दूर होगी न हमारे दिमाग का फितूर कम होगा जब तब यक उठना ही इस फितूर को दवा हमें समझ पड़ती है चाहो कुछ असर हो या नहो।

राजा जी अपनी ओर से न चूके।

औवल तो हम यही कहेंगे कि यह सरकार की तरफ से हम हिन्दुस्तानियों के पक्ष मे कौन सा न्याय है कि हर एक मुल्की इन्तिजाम के काम मे वेही पूछे जाते हैं जो अच्छी तरह कमीटी मे कस लिए गए हैं कि ये निरी खैर ख्वाही के जोश मे भर मुल्क की पूरी दुशमनी कर रहे हैं उसमे भी तुर्रा यह कि सरकार तो अब हिन्दुस्तानियो को हर एक बात मे पूछने लगी और हर तरह के अधिकार इन्हे देने लगी; हम तो पहले ही अपना माथा ठोक बैठ रहे थे जब सुना था कि लोकल सेल्फ गवर्नमेंट की प्रोविंशियल कमिटी के मेम्बर कई एक नई उपाधि वाले राजे किए गए हैं उनमे राजा शिवप्रसाद भी ठूंस दिये गए हैं जिनकी कमेटी मे यह राय करार पाई डिसट्रिक्ट कमिटी के "चेयरम्यन" सभापति जिलह के मेजिसटरेट का होना लोग महज़ इस खयाल से नहीं पसन्द करते कि सरकार का यह मनशा है और ऐसा करने से सरकार की ओर से सुखं कई हिन्दुस्तानियों को हासिल होगी वरन देखते हैं तो बिना एक अङ्गरेज कर्मचारी के सभा पति हुए काम चली नहीं सक्ता इसका पक्का सबूत एक यही है कि पश्चिमोत्तर और औधभर मे कुल ५ शहरों की म्युनिसिपलिटी मे हिन्दुस्तानी सभापति हुए और बाकी सब जगह मेजिसटरेट ही सभापति कायम रहे राजा साहब को कोई योग सिद्धि या इल्म गायब दानी है जिस्से वे जान

लेते हैं कि जैसा हमारे मे दास्य भाव है वैसा कुल हिन्दुस्तानी मात्र मे है इस लिए जो हमारी राय है और जो हम पसन्द करते हैं वही हिन्दुस्तानी मात्र की राय होगी और सब उसे पसन्द करैं गे; क्या राजा सरीखे खुशामदी दास्य भाव वाले मनुष्यों का हिन्दुस्तान से अभाव हो गया है जो अपनी खुशामद का जोश न जाहिर करैं किन्तु एक २ दो २ राजा से आदमी सब ठौर पड़े हैं; जैसा सुनने मे आया है कि बनारस मे राजा साहबही ने वहां के गवुर्नर महाजन और रईसों को बरगलाय फुसलाय जबरदस्ती वहां के मेजिसटरेट को कमिटी का प्रेसिडेंट करवाया; क्या बनारस से प्रतिष्ठित नगर मे हिन्दुस्तानियों के बीच कोई इस योग्यता का आदमी ही नथा जो प्रेसिडेंट किया जाता ? धन्य हो राजा आप किस २ बात मे चौका नहीं पीत चुके; ऐसाही पूरब पच्छिम सब ठौर एक २ बुजदिल खुशामदी कोढ़ मे खाज तैयार हैं क्यों न सब ठौर यूरोपियन प्रेसिडेंट हों ; ५ शहरों मे जहां हिम्मत वाले समझदार लोग रहे वहां हिन्दुस्तानी सभा पति किये हो गए; इन्ही के साथ राजा जैकिशुन दास, जो मिस्त बने थे तब तो इस मिस्त बनने ही के प्रताप से राजा कर दिये गये; अफसोस इतना जोर मारने पर भी इन राजाओं की एक न सुनी गई तौ भी राजा को शरम नही आती और न इस जिद से बाज आते हैं कि अदबद के हो बात कहना और करना जो मुल्क के फाइदे के खिलाफ है सच २ तो यों हैं कि ये नई उपाधि वाले राजे दोएक मिसटर दो एक खां बहादुर हमारे लिए बड़े ही सरदर्द हैं पर क्या करैं कुछ बस नहीं चलता।

एडिटरों के लिए सूचना ।

हम अपने सहवर्गी एडिटरों को सूचित किए देते हैं कि आप लोग हम मन हम कंजूस कौड़ी चूस लोगों से खबरदार रहो और कभी भूल से भी उन्हे न पतिआना ऐसों के न इमान का प्रमान न इनको अपनी बात का कुछ लिहाज; हम नहीं जानते इनके समान नराधम पापिष्ट नारकिक कोई दूसरा मनुष्य इस सृष्टि में पैदा हुआ होगा। क्योंकि हम लोग सदा सब की भलाई मे तत्पर रहते हैं और अपनी बड़ी २ हानि सह कर देश के उपकार के लिए राज कर्म चारियों से बराबर भिड़ खड़े होते हैं ऐसे महोपकारी को तुल देना क्या कोई साधारण पाप है; यद्यपि ऐसों का नामोच्चारण महा पाप है क्योंकि "कथापिखलुपापानामलमश्रेयसेयतः" तथापि अपने सहयोगी लोगों के उपकारार्थ हमें उनका नाम गोच उद्घाटनही करना पड़ा।

मदन मोहन जबल पूर भवानी प्रसाद हेडमास्टर मंडला मोहन लाल शाह रानी खेत बिसेसर दयाल सिगनलर व्यांडीकुईस्टेशन रनछोरी लाल मुरवाल बच्चूलालमिश्र कलकत्ता N. P. घोस स्कूल इन्स्पेक्टर जबलपूर अभी और बहुतेरे हैं जिनका कीर्तन दूसरे अङ्क मे करेंगे और इन लोगों ने लिख कर पत्र मंगाना शुरू किया बहुतों के पत्र अब तक हमारे पास मौजूद हैं कितनों को फाड़ कर रद्दी मे फेंक दिया और कई साल तक बराबर आशाही आशा मे पत्र भेजते रहे पर अन्त को निबुआ नोन चटा दिया तब हार मान उनके साथ हमे शठंप्रतिशाठ्यं करना पड़ा अभी जिनसे कुछ आशा पाई जाती है उन्हे अमानत मे रख छोड़ा है कभी को उन्हे भी प्रकाश कर देंगे।

पुलिस का अटल अधिकार।

नीति पुंज दयावारिद हमारी प्रतापवती सरकार ने प्रजा पालन के शासन भार को सुगमता के लिए और जिससे प्रजा को किसी तरह पर कष्ट न पहुंचे इस लिये स्थानीय राज कर्मचारी चाहे अङ्गरेज या हिन्दुस्तानी अधिकारियों को चिरकाल तक एक ही स्थान मे और एकही ओहदे पर कायम रखना मुनासिब न समझ एक ओहदे से दूसरे पर उनकी तरक्की या एक स्थान से दूसरे स्थान मे उन्हे बदल देने का उत्तम प्रबन्ध नियत कर रक्खा है पर यह बात न जानिये किस कारण से पुलिस के अधिकारियों मे नहीं बरती जाती जिनको युग का युग एकही स्थान और काम पर बीत गया है और जो अपने नियुक्त ओहदे के बल अन्धा धुन्ध अन्धेर मचा रहे हैं पर कोई नहीं देखता सुनता; एक तो इस अंगरेजी राज्य का कोढ़ पुलिस योंही प्रजा को महा त्रास जनक और भय उत्पादक है दूसरे जब अटल अधिकार के कारण इनके अत्याचार पर किसी बड़े राज्य कार्मचारी का कुछ ध्यान न रहा तब इनके अत्याचार के रुकने का कौन चारा हो सक्ता है; मुख्य प्रयोजन पुलिस का यही है कि उत्पथ गामी दुष्टों से भले मानुषों की रक्षा हो और दुष्टों को उनकी दुष्टता का भरपूर दण्ड दिया जाय पर इसके अधिकारियों को एकही स्थान मे चिरकाल तक दृढ़ हो जाने से सब खटका इनका ऐसा बैठ गया है कि बदमाश लोग थोड़ी २ घुगुंची इन्हें चटा कर मन मानता जो चाहते हैं कर गुजरते हैं किसी बड़े अधिकारी को खबर तक नहीं होती; भले मानुष पर नागहानी

से कोई बात आपड़ी पुलिस वालों को ठेग चढ़ी उस बेचारे की इज्जत बिगाड़ने मे तनिक दरेग नहीं करते कभी २ ऐसा भी देखने मे आया है कि बदमाशों ने अपने सरहंगपने से इन्हें दबा लिया है और उनसे ये दब निक ले हैं तो निश्चय हुआ कि जो मतलब पुलिस का है कि प्रजा के बीच भले मानुषों की रक्षा हो और दुष्टों का दम न हो उसके प्रतिकूल होता है यह सब इनके एकही स्थान मे चिर काल तक स्थायी रहने का सबब है; हिन्दुस्तानी तो पुलिस के अधिकारी बहुधा यहां तक निपट निरक्षर देखे जाते हैं जो अपना नाम नहीं दस्तखत कर सक्ते और तमाम दुनिया भर के छीलन छालन कूड़ा करकट भर दिए गए हैं तब इनसे हमे पीड़ा क्यों न हो ये लोग अच्छे क्रत विद्य हों तो कहां तक अच्छे भले मानुषों की इज्जत का खयाल न रक्खें परन्तु क्रत विद्य होने से अपने समीपी ओहदेदारों Immediate superior की चार दासी कैसे निभ सके इस लिए जान बूझ पुलिस के अधिकारी ऐसे वैसे लतमरूआ कर दिए जाते हैं; भले लोगों को पीड़ा होती है हो साहब लोगों का तो भरपूर मत लब सधता है और यही कारण है कि प्रजाके मुकाबिले इनकी कार रवाई से नुकस पाने को बार हरतरह पर साबित हो जाने से भी हमारे हाकिमो की निगाह मे उनकी लियाकत दिन २ दूनी ही होती जाती है तो अब हमारी राय से बेहतर होगा कि सरकार की ओर से एक आम इश्तिहार कर दिया जाय कि कभी सब लोग अपनी बदली कर डाले और कहीं अन्यत्र जा-

कर अपने रहन सहन का ठिका ना खोजैं पुलिस के अधिकारियों के निसबत कुछ न होगा क्योंकि वे हाकिमों को बहुत प्यारे हैं इसी लिए वे दिल्ली के कुतबमीनार समान एकही जगह गाड़ दिए गए हैं ।

बिकीरण पुरानी का॰ प॰ से ।

पदार्थों के उस गुण को जिस्से उनको गरमी निकल कर उनके बाहर जा रहती है बिकिरण Radiation कहते हैं; यदि तपे हुए लोहे का कोई टुकड़ा ठंढा करने के लिए हवा मे रक्खा जाय तो जिस तरह सूरज और दिये से प्रकाश निकल कर चारो ओर फैलता है उसी प्रकार लोहे मे से भी गरमी निकल कर चारो तरफ़ फैलने लगता है; पदार्थ विद्या जानने वाले पण्डितों ने अनुमान किया है कि गरमी प्रति सेकेंड ३३८०० कोस जाती है उतनाही उस्का तेज घटता जाता है परन्तु जिस पदार्थ से गरमी निकलती है उस्से एक हाथ दूर पर जितना उस्का तेज रहता है दो हाथ पर उस्का आधा और तीन हाथ पर तिहाई नहीं रहता वरन एक हाथ की दूरी पर जितना तेज रहता है दो हाथ पर उस्का चौथाई तीन हाथ पर उस्का नवां हिस्सा और चार हाथ पर सोलहवां हिस्सा रहता है; इस्का नियम यह है कि दूरी का वर्ग करने से जो अङ्क मिले उतने की एक भाग गरमी उस जगह पर रहेगी ।

सब पदार्थ की विकिरण शक्ति बराबर नहीं होती जिस चीज मे बहुत से छेद रहते हैं वा जिस्का तल ऊंचा नीचा होता है उस्की विकिरण शक्ति चिकने धात से अधिक होती है लाहकी विकिरण शक्ति सोना चांदी और तांबे से आठ गुनी है, जानना चाहिए कि इसी विकिरण शक्ति के कारण ओस पड़ती है; सूरज जब अस्त हो जाते हैं तब पृथ्वी मे की समाई हुई गरमी धीरे २ बाहर हो कर हवा मे ऊपर जाती है जिस्के कारण भूमि और उस्के पास की हवा ठंढी हो जाती है और अधिक सरदी से भूमि के निकट की भाफ जम कर ओस बनजाती है; जैसा ऊपर लिख चुके हैं सब पदार्थों मे विकिरण शक्ति बराबर नहीं है इसी लिये सब चीजों पर ओस बराबर नहीं जमती; जिस वस्तु की विकिरण शक्ति

अधिक है उसकी गरमी झट निकल जाती है और वह वस्तु बहुत जल्द ठंढी हो जाती है इस कारण उस चीजके चारो ओर जो भाफ का समूह है वह जमकर ओस की बूंद के रूप मे उस वस्तु पर देख पड़ता है; जिस वस्तु की विकिरण शक्ति कम है वह वैसी ठंढी नहीं होती और इसी लिये उसपर ओस भी कम जमती है; धात से भेंड के रोए की विकिरण शक्ति अधिक है इस लिए रात को अगर भेड़ का रोआं और धात का कोई बरतन एक जगह रक्खे जांय तो सवेरे देखने मे आवेगा कि रोए पर बहुत सी ओस लगी है बरतन पर एक बून्द भी हो या नहीं; ऐसा भी देखने मे आता है कि एकही जगह एक पेड़ पर तो ओस पड़ी है उसके पासही दूसरे पेड़ पर कहीं नाम को भी एक बून्द नहीं है इन पेड़ोंकी विकिरण शक्ति कमती बढ़ती रहना ही इसका कारण समझना चाहिये।

अगर किसी तरह की रोक से जमीन की गरमी न निकल सके तो इसके पास की हवा ठंढी नहीं होती और इसी कारण ओस भी नहीं बटुरती; जाड़े के ऋतु मे जिस रात को बदली रहती है उस रात को पृथ्वी की गरमी बादल फाड़ कर नहीं ऊपर निकल जा सकती और इसी लिए धरती के पास की हवा ठंडी न होसकने के कारण जाड़ा भी कम लगता है और ओस भी नहीं पड़ती इसी तरह जहां पेड़ की छाया वा दूसरे प्रकार की आड़ रहती है वहां भी ओस नहीं जम सकती; यह भी लोगों ने देखा है कि जिस रात को तीव्र पवन बहती है उस रात को और चीजों की कौन कहै घास पर भी जिसका विकिरण शक्ति बहुत अधिक है ओस कम जमती है; इसका कारण यही जान पड़ता है कि यद्यपि घास के पास की हवा ठंढी होती है तो भी बयार के बहने से चारो ओर की हवा आकर उसे बहुत ठंढी नहीं होने देती इस लिए ओस भी कम जमती है और जिस रात को हवा और बदली दोनों होती है उस रातको तो बिल्कुल ओस नहीं जमती; मिट्टी और कंकड़ से घास की विकिरण शक्ति बहुत अधिक है इस लिए उनपर ओस भी बहुत अधिक जमती है; ये सब नियम ईश्वर ने बिना युक्ति के नहीं बनाए अनाज छोटे २ पौधों को बचाने और बढ़ाने के लिए बहुत सी ओस चाहिए इस कारण प्रकृति के इस नियम के अनुसार वहां अधिक ओस जमती है।

वैष्णव पत्रिका ।

यह पत्रिका काशीस्थ पण्डितवर अम्बिकादत्त व्यास के प्रबन्ध से प्रतिमास मे छप कर निकलती है इसके एडिटर बहुत अच्छे कृतविद्य और काशी विद्यालय के कई एक प्रसिद्ध छात्रो मे हैं साहित्य मे बड़े निपुण हैं और हिन्दी का लेख भी बाबू हरिश्चन्द्र के लेख की छाया पर अच्छा लिखते हैं पर यह पत्रिका जिस उद्देश्य से निकाली गई है कि वैष्णवों को किसी तरह हम अपने ढङ्ग पर ढलवाय इन्हे देशो पकार की ओर रुजू करें या Public good सर्व साधारण का हित क्या वस्तु है इसका अङ्कुर इनकी जीमे जमावें सो कभी होना नहीं है "नीम न मीठी होय सींच गुड़ घीसे" "यथ्रनिम्बंपरसशुना यथैनंमधुसर्पिषा यथैनंगन्धमालाभ्यां सर्वथ्रकटुरेवत:" कदाचित् व्यासजी को अभी इसका अनुभव नहीं है हम इन फजूल बातों मे बहुत सिर दुखा चुके हैं और बहुत कुछ प्रयत्न किया कि इन वैष्णव ब्राह्मण या दूसरे लोगों को जिन्हे हिन्दू मत से कुछ सम्बन्ध है इस पुखाड़ा दे उन्नति के सापान पर चढ़ने को प्रोत्साहित करें जिसे दीन और दुनिया दोनो सुधरी रहे मैल और तलछट साफ हाकर हिन्दूपन की बेहूदगी से गला छुटे और देश की उन्नति भी हो पर उसी दुर्घट देख मत मतान्तरों के झगड़ों को उभाड़ना और उनकी अनार पन को अच्छा कह उनका उत्साह बढ़ाना निरी खाम खयाली है ये सिवा दिन २ और बिगड़ने के कभी न सुधरेंगे; इसों इनकी निसबत भांत २ का मनोरथ मन से हवा के किले के मा-

फिक्र उठाय और उसकी पूर्ति मे कृतकार्य न हो क्यों जी पर रंज की चौगुनी रंजक देना; क्यों कीचड़ मे पांव डुबो कर फिर उसे धोना; इस्से इनकी बुराई भलाई मे किसी तरह का हर्ष बिषाद न रख इनसे तटस्थाही रहना उत्तम है।

—०—

मित्र के षवदारा प्रकाश हुआ कि लाट साहब बड़े उदारचित्त हैं, सूखा पड़ने के वक्त काश्तकारों को जो तकलीफ होती है, उससे बचने का उपाय कर रहे हैं, और उसी के अनुसार महाराजा बनारस भी जलाशय बनाने में मदद करने की चेष्टा में लगे हैं। ऐसी उत्तम और प्रजा हित की बातें न मालूम अवध के तालुकेदारों के मन में क्यों नहीं, समाती लो कि और उलटे अत्याचार कर रहे हैं। काश्तकारों को कुएं बनवा देना तो जुदी बात है, जो कोई अपना रुपया खर्च के बनवाता है, उससे कुछ दिन बाद दावा लिखा लेते हैं। यह कौन सा न्याय है? अंग्रेजी गवर्नमेंट यदि ऐसा नियम कर दे कि तालुकेदार लोग हर साल वैसो लगान करने, १२ बरस से ज्यादा काश्त को बेदखल करने और कुएं बनाने में रोकने न पावें तो अवध की गरीब प्रजा को कुछ लाभ पहुंचे"।

यदि सर रिचर्ड गार्थ साहब कभी बाहर निकल कर जमींदारों और तालकेदारों के प्रजापीड़न के अत्याचार को देखते तो कभी भी जमीदारों का पक्ष कर के प्रजा के साथ लड़ने के लिये तइ्यार न होते। इस विषय में हम लोग अवध के काश्तकारों को यही सलाह देंगे कि, उनलोगों पर जहां कहीं तालुकेदार का अत्याचार होता हो, वहीं से सब मिल के, तालुकेदारों के जुल्म का सब बयान लिखकर गवर्नमेंट में दर्खास्त करें। यदि यह समझ कर कि उन के पुरखा लोगों ने जमींदार के जुल्म से

बचने की कोई तदबीर नहीं की थी, इसलिये वे लोग भी परम्परा की रीति को किसतरह छोड़ें, ये लोग चुप चाप बैठे रहें तो इस में उन्हीं का दोष है। भारतवासियों के लिये यह समय चुपचाप बैठ रहने का नहीं है, जहांतक हो सके, सब को मिल कर आन्दोलन करना चाहिये।

भारतमित्र से। हि॰प्र॰

शंख

एक चौबेजी और उनका लड़का खाना खाने को एक साथ बैठे, औरत ने अपने बेटे को कोई चीज़ ज्यादा परोस दी, उसके मालिक ने अपनी थाली से कोई चीज़ बेटे की थाली में ज्यादा देख कर अपनी औरत से कहा कि ये क्या तेरा खसम है? वह बोली तू क्या मेरा बेटा है?

विज्ञापन।

समुदय विद्वज्जनों से निवेदन है कि, विद्योदय नाम जो संस्कृत मासिक पत्र प्रतिमास मत्कर्तृक सम्पादित होकर प्रकाशित होता है, उस में साधारण लोगों के उपकारार्थ अच्छे२ संस्कृत पुस्तकों को हिन्दी में उलथा कर प्रकाश किया जाता है, जिन्में से दत्तक चन्द्रिका हिन्दू कानून बाबत् मुतवन्ना के, और तर्कामृत सम्पूर्ण हुए हैं और पृथक करके भी मुद्रित किये गए। इस विद्योदय का वार्षिक मूल्य केवल दो रुपैए हैं; डाक महसूल छपने से सन १८८३ के जनवरी महीने से और २ उपकारी संस्कृत पुस्तक अनुवाद के साथ प्रकाशित होंगे जिस्को आवश्यक हों नीचे लिखे हुए ठीकाना पर चिठी भेजै। अग्रिम मूल्य से विना पत्रिका नहीं भेजी जावेगी।

दत्तकचन्द्रिका ८ आने।

तर्कामृत ४ आने।

पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य।

ओरियंटल कालिज लाहौर।

अग्रिम मूल्य	२।॰)
पश्चात् देने से	४।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ लो को छपता है ।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Jan. 1883. Vol. V.] [No. 5.

प्रयाग मार्गशीर्षकृष्ण ७ सं० १९३९ जि० ५] [संख्या ५

सन ८३ का पञ्चाङ्ग ।

समय साहूकार की बे ओर छोर बही खाते के अनादि और अनन्त पन्ने से सन बयासी क्षेम कुशल के साथ बिदा हुए और अब तिर्यासी सन तिरासी आए; अपने आगमनी की खुशी में यार दोस्तों में बांटने के लिए बतौर तोहफा के क्या २ लाये, हम सब प्रजा लोगों के लिये खुशनूदी, गरीब दुखियाओं के लिये सुकाल, वाइसराय साहब को उनके अच्छे

कामो के लिये सैकड़ों धन्यवाद, महाराणी विजयिनी के लिये मिसर की विजय पताका, हिन्दुस्तानी फौज को खिलत और इनाम की तगमें छोटे अदने हाकिमों के लिये आत्मशासन की धूम सुन २ उदासी, रासी अंगरेज़ों को लालच बढ़ाने वाली डाली, हमारे लेख पर चिढ़ने वाले कुचाली लोगों के लिये गाली, एडिटरों की तेज़ कलम के लिये सुस्ती और खामोशी जिन्हें सब ओर शान्ति और अमन चैन देख कोई बात ही न रही जिस पर अपनी लिखनी की चरब ज़बानी ज़ाहिर करें; इस वर्ष में राजा दयावान् परम सुजान सकल गुणखान् श्रीमान् लार्डरिपन साहब हैं इनका फल कुल हिन्दुस्तान आसाम रंगून और ब्रीटिश बरमा तक है इनके राज्य में प्रजा के धन धान्य की वृद्धि हो सब लोग सुखी रहें हर एक बात में यथोचित न्याय हो परन्तु अंगरेज़ अधिकारियों की इन की नीति अनीति जान पड़ेगी इस लिये उनका समूह इन से खुश न रहेगा सिवा इसके वृहस्पति के साथ राहु के समान कोई २ कौंसिली इन पर अपना ज़ोर ज़ाहिर किया चाहेंगे पर उन दुष्ट ग्रहों की इनके सौम्य और सरल सुभाव के आगे एक न चलेगी। छोटे राजा श्रीमान् सर आलफ्रेड लायल साहब हैं जिनका फल कुल पश्चिमोत्तर और औध पर छा रहेगा इनके अधिकार का फल अभी तक गुम सुम है पर इतना निश्चय होता है कि अपने पहले अधिकारी की अपेक्षा सब अच्छा ही अच्छा करेंगे; इस वर्ष में विद्या के अधिकारी श्रीमान् डाक्टर हंटर साहब हैं उम्मेद है कि शरिश्ते तालीम को इनके ज़ात से कुछ न कुछ फाइदा पहुंचे लोतार मुख लक्ष्मी समान हिन्दी गरीबिन का बनना बिगड़ना इन्ही के हाथ में है; कोशाधीश इस साल भी वही मेजर बेयरिङ्ग रहेंगे जिसका फल है कि प्रजा पर कोई

जया टैक्स न लगाया जाय तो मिश्र के युद्ध का खरचा अलबत्ता हिन्दुस्तान को कुछ न कुछ देना ही होगा ; और बहुत सी छोटी २ बातें जैसा पुलिस जन्य पीड़ा म्युनिसिपल कमिशनरों का चिस २ सफाई का अप्रबन्ध सिविलियन हाकिमों में हिन्दुस्तानियों के मुकाबिले गोरे रङ्ग वालों की तरफदारी सब यथास्थित रहेंगी ॥

हमारी हीनदशा का कोई शोक नहीं है ॥

इस अपार संसार में जितने पदार्थ हैं सदा एक अवस्था में नहीं रहते किन्तु आदि मध्य अवसान सब के साथ लगा हुआ है ; दूर क्यों जाइये इसी २४ घंटे के बीच देखिये सूर्य के उदय से दिन का आरम्भ होता है कालान्तर में उसी दिन की मध्य अवस्था प्राप्त हो जाती है तब सूर्य का असह्य प्रताप और विशेष प्रकाश होता है उपरान्त धीरे २ प्रकाश भी लोप हो जाता है तब और अन्धकार छा जाता है उसी को रात्रि कहते हैं बिना दीपक के काम नहीं चलता उस समय वही दीपक सूर्य से भी अधिक प्रतिष्ठा पाता है ; इसी प्रकार मास वर्ष युग आदि में भी अवस्थान्तर देखी जाती है अधिक सोचने से यह बात प्रगट हो जाती है कि काल देश व्यवहार आचार विचार जनस्थिति सब में अदल बदल हुआ करता है तो सिद्ध हुआ कि हमारे देश की स्थिति भी जैसी अब हम देखते हैं आगे ऐसी न थी और न सदा ऐसी ही रहेगी किन्तु अवश्य घटेगी या बढ़ेगी और कुछ की कुछ हो गई और हो जावेगी ; कविवर भवभूति ने इसी फेर फेर का कैसा उत्तम चित्र खींच रक्खा है "पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम् । बहोर्दृष्टं कालादपरमिव मन्ये वनमिदं निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति" पदार्थ विद्या से यह निश्चय किया गया है कि जब एक वस्तु किसी ओर चलने लगती है तो बिना किसी के रोके या फेरे नहीं रुकती या फिरती किन्तु बराबर आगे को बढ़ती चली जाती है ; अब हम को सोचना चाहिये कि हमारे देश की स्थिति या जन रीति

उन्नति की ओर जा रही है वा अवनति की ओर ; यह तो प्रत्यक्ष है कि अब तक हमारी यह जन रीति और देश स्थिति अवनति की ओर बड़े वेग से दौड़ रही है सिवा इस बीस छठीले कुछ रोशनी वालों के जो बड़े हठ के साथ इस बात को मान रहे हैं कि हम उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ते चले जाते हैं बाकी सब लोग एक मत हो यही विश्वास करते हैं कि पूर्व काल से सांप्रत में हम लोग बल बुद्धि पराक्रम वीर्य और सुख सम्पत्ति विहीन हो गए क्योंकि यह तो प्रकृत सिद्ध है कि गति का रोक बिना किसी विरुद्ध प्रेरणा के नहीं हो सकता और जब कोई कारण उसके रोक का न ठहरा तब उसकी वह अवस्था बढ़ती रहेगी ; हिन्दुस्तान के घटती की दशा दिनो दिन वेग गति से एक ओर को जा रही है उसके करने के कई एक कारणों में प्रधान कारण हम लोगों की साम्प्रतिक दरिद्रता का उपद्रव है जिस ने यहां की भूमि और जल वायु को अपना घर बना रक्खा है और जिस के त्रास से अस्थिरा लक्ष्मी समुद्र की बड़ी २ लहरों में चकराती और दूर २ की खाड़ियों में टकराती द्वीपान्तर को अपनी वास भूमि कर डाला नई कला नई तरहदारी नए फैशन नई अक्किल नई २ ईजाद नई रोशनी नए दिमाग को पाय भारत दशा में पड़ा हुआ इस पुराने भारत के पुराने भेष पुराने ढंग पुराने ख्याल पुराने तर्ज़ को चञ्चला लक्ष्मी कब पसन्द कर सकती है सच रहीम ने कहा है " चपला यह न रहीम थिर कोउ चाहत सब लोय । पुरुष पुरातन की बधू क्यों न चञ्चला होय " यह उसी चञ्चला के स्थिर हो जाने का प्रताप है कि यहां की मिट्टी कांच और खूदड़ सोने चांदी के भाव बिकते हैं हमारे यहां सोना चांदी भी बट्टे से बिकता है ; कैसी ही कारीगरी के गहने बने हों बिकती समय सोने चांदी के भाव से कमी को बट्टे से बिकते हैं ; लोग कहते हैं इस देश वाले नई अक्किल के हैं चीजों को appreciate कदर करना नहीं जानते हैं ; पेट भरने के लिए भी तो लाले पड़े हैं कारीगरी की निर्ख और कदरदानी कहां से करें हाल में विलायत में एकलाई का असबाब नीलाम हुआ था कई लाख की सिर्फ तसबीर जो उनके कमरे की सजावट के लिए थी नीलाम हुई महाराणी के तोशे खाने में बीस बीस हजार रुपयों की

जैसा मिट्टी की रकाबियां हैं जितने का हमारे राजाओं के घर सोने चांदी का असबाब न होगा ; यह चाप बित्त हो जाने हो का नतीजा है कि यहां के लोग चीजों की कारीगरी और ठीकापन नहीं देखते किस यत को चमक दमक और सुथरेपन पर मोहित हो सस्ती समझ हीरा दे कांच खरीदते हैं नहीं तो कौनसी दस्तकारी यहां नहीं है किन्तु सब कदरदानी की जड़ रुपया उड़ गया ; नव शिक्षित युवकजन जिन्हों ने सिवा अपने कतिपय सहपाठी और कालेज के प्रोफ़ेसरों के इस अथाह असीम संसार सागर का एक कोना भी नहीं थहाया बन्दर जिस तरह आदमी की नकल करता है ठीक उसी तरह कोट पतलून छड़ी घड़ी से अङ्गरेजों का अनु करण करते नई रोशनी के घमंड में फूले नहीं समाते और इस बात के सबूत में अपनी लियाकत का सर्वस खर्च किये डालते हैं कि पहले से अब हमारी सब भांत उन्नति है परन्तु विचार शील मनुष्य जिसे पूर्वापर का बहुत अच्छी तरह अनुभव है उस्के शुद्ध विचार में यह बात किसी प्रकार नहीं समा सक्ती कि वेग गामिनी हमारी उस अवनति प्रवाह का अब तब कोई रोक हुआ है बरन हमारी रीति नीति चाल स्थिति में जो कुछ बाहिरी चमक दमक देख पड़ती है सब मिल देश को निन्य २ पोला किए डालती है और वास्तविक उन्नति का बीज हम कहीं पर किसी कोने में जमते नहीं देखते न उस्के जमने की कोई आशा है ॥

सङ्ग्रह ।

शहन में बाग में घर में सरे शामी से पड़ती है ; जबर कैसा ही हो कोई न टारे उस्के टरती है। कहैं कवि सिद्ध जाड़ों में हमेशा ओस पड़ती है ; किसी का डर नहीं उस्को सरे बाज़ार झाड़ती है।

महीना चैत से गरमी दिनो दिन रोज़ बढ़ती है ; सुरज की सामने होते हर एक की जान डरती है। कहैं कवि सिद्ध आंधी ज़ोर से पेड़ो से लड़ती है ; हमारे नीम की पत्ती सरे बाज़ार झाड़ती है ॥

सवैया।

लिय आनि दया पिय प्यारे सुनो मत दूरहि तें तरसइवो करो; बिन देखे तिहारे तपै नित प्रान न बातन में बहरइवो करो। कमला कर की बिनती इतनी भला रोज न जो तुम आइवो करो; पिय दूज के चन्दसी सूरत सो दिन तीस पै तो दिखरइवो करो॥

चैन नहीं दिन रैन परै जब ते तुम नैननि नेक निहारे; लाज बिसार दिये घर के जन काज पै लाज समाज बिसारे॥ सो बिनती मन मोहन मानियो मो सों कहूं मति ह्वजियो न्यारे; मोहि सदा चित सों अति चाहियो नीके कै नेह निबाहियो प्यारे॥

झूलना छन्द।

रङ्ग देखि लाल बिहारी के अनबेधि मोती सनक गए। क्या घट दस आला छपा कर को हो दो दो भिरचें भड़क गए। मुसक्याते हुए लखा जब से रस भीने दाड़िम दरक गए। शरमिन्दह कली चमेली की तड़िता के शीशे तड़क गए। हम खूब तरह से जाने हैं तुझे जैसा आनन्द कन्द किया। गुन शील रूप अरु तेज पुंज सब तेरे हि भीतर बन्द किया। तुझ हुस्न अदा की बाकी ले फिर बिधिने यही प्रबन्ध किया। चम्पा कदली सोन जुही नरगिस चामी कर चपला चन्द किया॥

—o—

अदृष्टवाद सुदर्शन समाचार से।

यह अदृष्टवाद न हमारे हिन्दुस्तान में ऐसी जड़ पकड़ली है जिसके कारण बुद्धि विवेक पुरुषार्थ स्वाधीनता आदि सब बातें हमारे दृष्टिपथ से छिप गई और मनुष्य ज्ञात वा मनुष्य की शक्ति के बाहर जो जो काम देखे जाते हैं उन सबों का हेतु हमारे कल्पनाकृत चित्त पट में दैव की इच्छा ही ठहरती है; हम जो पाप करैं वह भी दैव की इच्छा है और जो किसी पुण्य के कार्य्य में अग्रसर हों वह भी ईश्वरेच्छा

क्षत माना जाता है "जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानामि पापं न च मे निवृत्तिः । त्वया हृषीकेश हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ।" धर्म किसे कहते हैं यह हम जानते हैं किन्तु धर्म में हमारी प्रवृत्ति नहीं होती अधर्म किसे कहते हैं यह भी हम जानते हैं किन्तु अधर्म से हम निवृत्त नहीं होते हृषीकेश तुम हमारे हृदय में स्थित हो जैसी प्रेरणा करते हो वैसा हम करते हैं ; इस दैवेच्छा पिशाची ने सर्वार्थ साधक पुरुषार्थ का यहां तक मूलोच्छेद कर डाला कि राज्य का उत्थान और पतन देश की उन्नति और अधोगति रोग शोक विपद् सम्पद सब अनियत तन्त्र अदृष्ट मूलक और ईश्वर की अहैतुकी लीला का विलास मात्र है सत् असत् पौरुष अपौरुष किसी काम में मनुष्य का किञ्चिन्मात्र सम्पर्क नहीं है मनुष्य हाथ पांव ढीला कर केवल अदृष्ट पर विश्वास किये बैठा रहै और अदृष्ट चक्र के आवर्त में पड़ जहां कहीं वह ले जाया जाता है वहां ही श्रोतो विक्षिप्त काष्ठ फलक वा मिट्टी के ढेले के समान जा गिरता है ; यदि भाग्य में पराधीन हो दास्यवृत्ति लिख दी गई है तो वही स्वर्ग सुख है एवम् अदृष्ट में यदि पद घात सहना अपमान का लाञ्छन लगना बदा है तो यह सम्मान की अतुल सम्पत्ति से अधिकतर श्लाघनीय है ; सिकन्दर की असीम सेना तरङ्ग साथ ले सिन्धु नदी की वेला का अतिक्रम कर बराबर भारत भूमि को ग्रास करता मध्य देश लों बढ़ आया सो भी अदृष्ट में लिखा था और उसी पर हार मदार रख कोई सावधान हो उसके सम्मुख हो कर न लड़ा ; आर्य धर्मोच्छेदक मर्कट मूर्ति यवनो ने आकर भारत भूमि के वक्षस्थल में पदाघात कर सर्वनाश किया इसका भी यही कारण है कि यह भाग्य में लिखा था और अब भांत २ के कर और टैक्स के बोझे से हम

क्षीणवृत्ति क्षीण धन और क्षीण सत्व हो गए यह भी अदृष्ट ही का एक शासन है; हा अदृष्ट तुम अवनीतल की ललाट मणि हो मूर्खता रूपी क्षार समुद्र से उत्पन्न हो भारत भूमि के ग्रसने को कमर बांध मुस्तैद हो रही हो आलस्य निरुद्यम और तङ्ग-दस्ती की जननी वाली तुम से हमारा गला छुटना महा कठिन काम है॥

—— ० ——

कणाद दर्शन।

जिस महर्षि ने इस दर्शन का प्रचार किया है उनका नाम कणाद वा उलूक था कणाद यह शब्द दो शब्दों से बना है "कण" अन्न का किनका और "अद" खाना; समझने की बात है कि पहले के ब्राह्मण यहां तक गरीबी हालत में थे कि अन्न को किन को खा कर जीवन पार करते थे पर समझ के इतने विलक्षण और कुशाग्र बुद्धी थे कि ऐसे २ दुरूह और आकर दर्शन का सूत्रपात कर गए जिस्को समझने में आज कल के लोगों को दांतन पसीना आता है और उमर की उमर बीत जाती है वही धन लोलुप विषय लम्पट काम किङ्कर इन दिनों के ब्राह्मण हैं कि धनाशा में धावमान कभी एक पल भर के लिए भी कणाद का सा त्याग उनके मैले जी में जगह नहीं पाता; और २ दर्शनों की अनभिमत विशेष नामक एक स्वतन्त्र पदार्थ इस्में निर्दिष्ट है इसी से इसे वैशेषिक दर्शन भी कहते हैं॥

वेदान्त सांख्य पातञ्जल मीमांसान्याय और वैशेषिक इन्हीं छहों को षट दर्शन वा षट शास्त्र कहते हैं इन में वैशेषिक दर्शन के कर्ता महर्षि कणाद ही थे; इनके मत में अत्यन्त दुःख निवृत्ति ही को मुक्ति माना है जिस दुःख की निवृत्ति हो जाने से फिर किसी काल में और दुःख न हो उसे अत्यन्त दुःख निवृत्ति कहते हैं वह अत्यन्त दुःख निवृत्ति आत्मा का साक्षात्कार स्वरूप तत्वज्ञान के बिना नहीं होती सो तत्वज्ञान श्रवण द्वारा हो सक्ता है तस्मात् शास्त्र का श्रवण मनन निदिध्यासन यही ३ बात तत्वज्ञान के लिए उपयुक्त है; पहले उपनिषद आदि द्वारा आत्मा का स्वरूप और गुण आदि किस प्रकार वर्णन किया गया है उस्का श्रवण पश्चात् श्रुतियों में आत्मा का स्वरूप और गुण आदि जैसा प्रतिपादित है वह युक्ति सिद्ध है

वा नहीं यह सन्देह निरासार्थ उसका अनुमान स्वरूप मनन फिर उसी का निदिध्यासन ; इस कारण भगवान् कणाद ने शिष्यों की प्रार्थनानुरोध से मनन का अद्वितीय साधन रूप दशाध्यायात्मक वैशेषिक शास्त्र का निर्माण किया है ; इन १० अध्यायों में दो दो आन्हिक नामक विराम स्थान किये हैं तहां प्रथमाध्याय के प्रथमान्हिक में द्रव्य गुण और कर्म पदार्थका निरूपण है, प्रथमान्हिक में जाति और विशेष पदार्थ का निरूपण है, द्वितीयाध्याय के द्वितीयान्हिक में पृथिवी जल तेज वायु और आकाश पदार्थ का निरूपण है, द्वितीयान्हिक में दिशा और काल का तृतीयाध्याय के प्रथमान्हिक में आत्मा का लक्षण है द्वितीय में अन्तः करण का, चतुर्थ अध्याय के प्रथम आन्हिक में शरीर की उपयोगी वस्तुओं का विवेचना है द्वितीय में शरीर का, पंचम अध्याय में कर्म का विचार है तहां पहले आन्हिक में शारीरिक कर्म का दूसरे में मानसिक, छठी अध्याय के प्रथम में दान और प्रति ग्रह धर्म का निरूपण है द्वितीय आन्हिक में ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यस्त चारो आश्रम के धर्म का निरूपण है सातवें अध्याय के प्रथम में बुद्धि निरपेक्ष गुण पदार्थ का प्रतिपादन है द्वितीय में बुद्धि सापेक्ष गुण पदार्थ और समवाय पदार्थ का प्रतिपादन है, आठवो अध्याय के प्रथम में सविकल्पक प्रत्यक्ष का लक्षण है द्वितीय में निर्विकल्पक प्रत्यक्ष का, नवम में अलौकिक सन्निकर्षो दिजन्य प्रत्यक्ष और अनुमान का स्वरूप कहा है, दशम के प्रथम में आत्मा के गुण का परस्पर भेद और द्वितीय में विशेष रूप से समावायी प्रभृति ३ कारणो का निरूपण है॥

इस दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान यही २ प्रमाण माने गए हैं और दर्शनकारों ने शब्द आदि को भी प्रमाण माना है उसे ये अनुमान ही के अन्तर्गत करते हैं इनके मत में पदार्थ भी दो माने गए हैं भाव और अभाव ; भाव पदार्थ द्रव्य गुण कर्म जाति विशेष और समवाय ६ प्रकार के हैं इनमे द्रव्य पदार्थ ९ प्रकार के हैं पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन; जिस द्रव्य में गन्ध हो वह पृथ्वी है जैसा फल पुष्प आदि वस्तु जिसमे किसी प्रकार की महक हो सब पार्थिव द्रव्य हैं जिस का ज्ञान नासिका द्वारा होता है क्योंकि

गन्ध के ज्ञान की अधिष्ठाची नासिका ही है ; जो द्रव्य द्रव गुण युक्त हो अर्थात् जो टेघल सके वह जल है जल पदार्थ का ज्ञान रसना इन्द्री से होता है ; जो पदार्थ उष्ण और स्पर्शवान् हो वह तेज है तैजस पदार्थ का ज्ञान रूपादि द्वारा नेत्र को होता है ; जिस्का स्पर्श अनुष्णाशीत है अर्थात् न गरम हो न ठंडा उसे वायु कहते हैं स्पर्श की अधिष्ठाची त्वचा इन्द्री द्वारा वायु का ज्ञान होता है ; पृथिवी जल तेज वायु ये चारों द्रव्य प्रत्येक नित्य और अनित्य भेद से दो प्रकार के हैं ; सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के नष्ट हो जाने पर भी ये चारों पदार्थ परमाणु रूप में बने रहते हैं सृष्टि के समय वेही सब परमाणु एकत्र हो अलग २ पृथिवी जल आदि स्थूल रूप में हम को बोध गम्य होते हैं ; सूर्य की किरण का सम्पर्क पाय झरोखों के निकट जो सूक्ष्म पदार्थ दीख पड़ता है उसे त्रसरेणु कहते हैं इस्को ६ बराबर टुकड़ों में विभाग करने से एक टुकड़े को द्व्यणुक कहते हैं और द्व्यणुक को दो बराबर अंश में विभक्त करने से एक अंश को परमाणु कहते हैं आकाश के सिवा शब्द का कोई दूसरा आश्रय नहीं है अर्थात् बिना आकाश के शब्द नहीं हो सक्ता और शब्द का ज्ञान श्रोत्र से होता है इस लिए आकाश का अधिष्ठाता श्रोत्र हुआ ॥

जिस्से बड़ाई से जेठे और लहुरे का व्यवहार किया जाय वह काल है एक ही मा के दो लड़के हैं परन्तु जिसे पैदा हुए बहुत दिन हुए वह जेठा कहलाता है और जिसे थोड़े दिन हुए वह लहुरा समझा जाता है इस कारण यदि काल न होता तो किसी प्रकार यह ज्येष्ठ कनिष्ठ का व्यवहार न होता ; जिस्से दूर और निकट का व्यवहार हो वह दिशा है जिस दिशा में सूर्य का उदय होता है उसे पूर्व कहते हैं और जिस दिशा में अस्त हो वह पश्चिम है ; जो चेतना युक्त है वह आत्मा है सकल शरीर और इन्द्रियों का अधिष्ठाता आत्मा ही है आत्मा के न रहने से केवल इन्द्रिय द्वारा कोई काम नहीं हो सक्ता आत्मा दो प्रकार का है जीवात्मा और परमात्मा मनुष्य से कीट पतङ्ग तक सब जीवात्मा कहलाते हैं परमात्मा एक अनादि परमेश्वर ही है ; जिस्के द्वारा सुख दुःख का अनुभव हो शरीराभ्यन्तर्वर्ती सूक्ष्म पदार्थ को मन कहते हैं शेष आगे ॥

बिन भय होहि न प्रीति।

लोग कहते हैं हिन्दुस्तान में एका नहीं है क्यों एका होने लगा यदि हम सब एक हो जांय तो कौन सा पद मिल जायगा और न भी एक हुए तो कौन सी हमारी हानि है हम एक २ रहेंगे, आधे २ रहेंगे, न रहेंगे, कटमरेंगे, तीन तेरह हो जांयगे, फिर तुम्हें क्या तुम्हारा साझा; हाय यह हमारी आंख से कैसे देखा जाय कि हम तुम दोनो एक ही मास एक ही लहू एक ही सा खान पान एक ही सा रूप रंग रहन सहन सब एक सी और तुम हम से बढ़ जाओ हम खड़े २ मुह जो हैं; एका चाहो हो या काली के खप्पर में झोंक दिया जाय अपने अलतन यह डाह की आंच हम से कैसे सम्हारी जाय ऐसे एका में लगै आग पड़ै पत्थर उजहि जाय वह एका; हमारे मन की मौज जैसे चाहेंगे तैसे रहैंगे या न रहैंगे हमे डर किस्का तुम बड़े से बड़े सात ताड़ दस शहतीर बराबर हो फिर हम नहीं तुम्हे मानते क्या कोई राज कीय नियम या कानून है कि हम तुम से डरैं क्या तुम कहीं के लाट हो जिले के मेजिसटरेट हो तहसील-दार हो या शहर के कोतवाल हो बस जाओ हम तुम्हे न मांनेगे हमारा क्या करलोगे; क्या यह भी ताजीरात हिन्द का कोई ऐक्ट है कि तुम्हे एक हो कर रहना ही पड़ेगा न एक रहोगे तो सरकार के मुजरिम ठहरोगे अथवा इस्मे किसी तरह का Political significance राज कीय प्रतिष्ठा है कि कि तुम एक हो कर रहोगे तो राजा की ओर से तुम्हे बड़ा लम्बा चौड़ा खिताब या तगमा मिल जायगा बल्कि हमारे सामयिक राजा की शासन ऐसे ढंग से होना चाहिए कि ये एक न होने पावें नहीं तो ये सहज़ोर पड़ जांयगे इस्से ऐसा करैं कि फुट २ रहैं इनका जुग न बंधने पावै; बलिहारी और सैकड़ो सावाशी ऐसे धर्म राज्य की

जिसने हमें सामाजिक और मज़हबी मामिलों में आज़ाद कर दिया और हम अपनी समाज में चाहो जैसे रहें राजा की ओर से कोई कैद न रहेगा इसी से तुलसीदास जी का यह महा वाक्य है (बिनभय होहि न प्रीति)॥

—o—

जूरी और असेसर।

अक्सर खून या किसी दूसरे भारी मुकद्दमो में फ़ैसला होने के समय थोड़े से लोगों की पंचायत जज के साथ बैठाई जाती है उन में अंगरेज़ों के मुकद्दमो में जो लोग बैठाये जाते हैं वे जूरी कहलाते हैं और जूरी जो बैठते हैं वे भी अंगरेज़ ही होते हैं और किसी हिन्दुस्तानी के मुकद्दमे में जो दौरा सुपुर्द होते हैं जिन लोगों की पंचायत बैठती है वे असेसर कहलाते हैं; असेसर हिन्दुस्तानी लोग होते हैं अबोध और अपढ़ रईसों में से कचहरी के अमलों को जिन्हे तङ्ग करना मंजूर होता है उनका असेसर में नाम लिख देते हैं महीने दो महीने बाद वे बेचारे बिपत्ति के मारे गोबर के ढेहा से बुलाकर थाप दिये जाते हैं मुकद्दमे में सियाह सुफ़ैद जो कुछ करना हो जज साहब अपने मन से जैसा चाहें कर गुज़रें असेसर केवल साक्षी के लिए जज साहब के साथ गुड़िया सा बैठा रहै मुकद्दमा हो जाय उठ कर घर की राह ले एक्के के किराए का पैसा डांड़ जून पर हाज़िर न हो सके ५०) जुरमाना; जो जूरी किये जाते हैं उनकी बिना राय के जज कुछ नहीं कर सक्ता और बड़े मान्य और प्रतिष्ठा के साथ बुलाकर बैठाये जाते हैं अलबत्ता जूरी हो कर जाना बुरा नहीं है और जिस बात के लिये बुलाये गए उसमे भी भरपूर दस्तन्दाज़ी कर जज को अपने मन की करने गुज़रने से रोक सक्ते हैं; लार्ड-रिपन महोदय ने बहुत से अच्छे २ काम किये और हर तरह से हिन्दुस्तान को फ़ाइदा पहुचाने

का यत्न कर रहे हैं इस अफसरी का दुखदायी दस्तूर उठ कर हिन्दुस्तानियों के मुकद्दमे में भी जूरी क्यों नही बैठाए जाते इस अफसरी से हमारे नासमझ निरे गोबरौड़ा बनिये महाजन बिचारे अमलों के चंगुल मे फंस व्यर्थ को तङ्ग किये जाते हैं; जो कहो ये अभी इस लायक नहीं हैं सो क्यों आनरेरी मेजिसटरेट ये किये जांय म्युनिसिपल कमिश्नर ये हों सेल्फ गवर्नमेंट के लिये उभाड़े जांय जूरी होने लायक नहीं और फिर यह कौन सी राज नीति और प्रजा के हित की तदबीर है कि जिस लायक हम न हों उससे सार २ लायक न किये जांय; मसल है "तुरक हुए तो बेहना के साथ" इतनी तकलीफ उठाय अपने काम काज की हरजा कर बार २ कचहरी दौड़ा करें पर फाइदा कुछ नहीं करैं धरैं सब जज साहब काठ के उल्लू बन आप हम दिए जांय।

कपट नाटक की प्रस्तावना।

हम सब लोग कपट के पट से ढपे हुए सरल भाव को यहां तक बिरल कर डाला कि मनुष्य का यह क्षण भंगुर जीवन केवल कपट नाटक की प्रस्तावना हो गया; कौआ अपनी घात बकैला अपनी घात; क्या राजा क्या प्रजा क्या हम क्या तुम क्या कोई तीसरा सब इस कपट नाटक की लीला के प्रस्ताव में सुबह से सांझ लौं व्यग्र हैं; एक बना ब्यौपारी दूसरा बना दूकानदार ब्योपारी चाहता है हम रुपये का माल चौदही आने में लें और दूकानदार इसी घात में है कि शिकार हाथ लगा है जाने न पावे किसी तरह एक के दो करैं नहीं तो ड्योढ़े सवाई में तो फर्क न पड़े; माल दिखावें और दें कुछ और अधिक बीजक और ही ब्योपारी के दिखलाने को दूसरा इन दोनों के कपट नाटक की लीला हो ही रही थी कि एक तीसरे दल्लाल साहब आ पहुंचे ये अपने कपट ब्यौपार से दोनों की आंखली दे दिखाय

अपनी दुलाकी की टट्टी खातिरखाह जमा रफू चक्कर हुए; इस कपट नाट की प्रस्तावना का एक दूसरा बड़ा भारी अड्डा अदालत और पुलिस है " जो नहिं माने हमारी सीख । जाय अदालत मांगे भीख " मुवक्किल इस घात में है कि हम वकील मुख्तार कफन खसोटू अमले अमलों को झांसा दे अपना मतलब कर लावें वकील साहब एक दाव कानून के एक पेंच में फसाय सब सयाने कौओं को साफ २ उल्लू बनाय एक २ बाल उखाड़ पैदा करना लिया ; इसी कपट लीला के पात्र एक बने यजमान दूसरे हुए पुरोहित यजमान चाहता है पुरोहित जी की दिखाने ही दिखाने में रख मतलब निकाल लें पुरोहित जी घाट पर के गीध समान बरसों से ताक लगाये बैठे रहे कि किसी तरह इस कनछिदे की चूंदी हाथ में आने पावे अब चंगुल में आफंसा है तो इस मक्खीचूस कंजूस से बिना एक की चार पुजाए न जाने दें; इसी तरह गुरु और चेलों में भी इस कपट लीला का पूरा २ बर्ताव देखा जाता है चेले जी सोचा निगुरा रहना अच्छा नहीं लाओ एक मंत्र ली से तो मतलब निकलता है कुनवा लें या न निगुरे तो न कहलावेंगे ; गुरु जी ने समझा बहुत दिनों से परचाते २ हाथ में आया है फूंक दें कान यातो तन मन धन सब गुरुजी के अरपन होना नहीं तो रोज चूल्हा फूंकते ही है जहां इस फूंक रोज चूल्हे में मारते हैं वहां एक आज इसके कान में भी सही ; इसी तरह डाक्टर साहब और पेशेंट रोगी और वैद्य दाता और भिखारी व्याज खोर महाजन और मोहताज कर्जदार जिमीदार और असामी सब एक २ इस कपट नाटक का अलग २ अभिनय कर रहे हैं ; सच पूछिये तो जितनी सभ्यता चतुराई और लियाकत सब इस कपट ही पर निर्भर है तुम बहुत सच्चे पक्के और खातिरदारी के साथ लोगों से नहीं मिलते लोक में तुम रूड़ गवांर बेहूदा और असभ्य कहे जाओगे ; जिन की सूरत देखते जी कुढता है नाम लेते तबियत घिनाती है जो जीसे हमारे खून के प्यासे हैं उनसे भी जो इस निश्छल भाव और खातिरदारी से साथ न मिलो तो लोग कहेंगे ये बड़े रूखे खुश्क मिज़ाज और खर दिमाग हैं ; जिन की एक अधर से भेंट नहीं उन्हें भी लौकिक बरताव के अनुसार लिखना

पड़ता है सकलगुणगणा स्फुट ; सम्पूर्ण देव की खान हीं जितना खोटा पन सब रोम में भरा हो पर लिखने में उसके लिए भी सर्वोपमा योग्य लिखा जाता है ; सिद्धान्त यह कि यह संसार कानन कपट जाल के वितान से व्याप्त अंजाल मय हो रहा है-सरला विरलाय ते घनायन्ते कण्टिद्रुमाः । नम्रसौरभ पुन्नागोद्यानस्थं मारकानते ।

——————

पायोनियर साहब की एक

उपज ।

बैठे बैठाए कुछ नहीं था तो पायोनियर साहब को इन दिनों यही एक सनक सवार हुई कि हिन्दुस्तानी राजाओं की फौज घटा देनी चाहिए विशेष लक्ष पायोनियर का हुलकार सिंधिया और निजाम की फौज पर हैं कुल फौज हिन्दुस्तानी राजाओं की ३८०,००० से ३९०,००० के बीच पायोनियर शुमार करते है छठवां हिस्सा जिस्के सवार हैं और २००० तोप सब मिला कर है; जिस्मे एक लाख फौज और १५०० तोप सिर्फ राज पुताने के राज पूत राजाओं के कब्जे मे है पायोनियर लिखते हैं कुशल इसी मे है कि ये रांजे आपस मे एका नहीं रखते नहीं तो इतनी जियादह फौज सरकार के लिए बड़े खतरे का बाइस हो सक्ती है; उक्त साहब लिखते हैं कि हुलकार की फौज से इतनी डर नहीं है क्योंकि फौज उनकी कुछ अच्छी तरतीब मे नहीं है पर मारटिनी हेनरी वाली बन्दूक का उनकी फौज मे अधिक प्रचार अलबत्ता शंका का स्थान है; सिंधिया की १२००० जरीर फौज और ४८ तोप जिस्के रखने की सन १८६० के सुलहनामे मुताबिक सरकार की ओर से सिंधिया को इजाजत है आधी कर देना चाहिए क्योंकि सुप्रीम गवर्नमेंट को जब

सदैव निगहबानी की नज़र है सब ६००० फौज और २४ तोप मातहत जमीदार और ठाकुरों की हिफाज़त को काफी है; नीज़ाम को ५०,००० फौज है अलावे उस्के जो मातहत सरदार और अमीर लोगों की तहत में है; पा योनियर साहब की राय है इतनी फौज रखने का क्या काम है दो या तीन हज़ार फौज दस या बारह तोप मुल्क के इन्तिज़ाम के लिये बहुत है थोड़े दिनों मे निज़ाम बालिग होने वाले हैं और जैसा कि लिबरल दल वाले विलायत के मंत्रियों का इरादा है कि बालिग होने पर बिरार का मुल्क निज़ाम को लौटा दिया जाय इस्की इवज मे यह ज़रूर है कि ५०००० फौज तोड़ कर अवश्य थोड़ी कर दी जाय नही तो एक दिन इतनी बड़ी हिन्दुस्तानी रियासत सरकार को खतरे का बाइस होगी; यद्यपि यह सम्भव नही कि ये रियासतें सरकार के मुकाबिले मे कभी एक हो सकेंगी पर गाफिल चुप चाप बैठे रहना और इन्हें उभड़ने देना किसी तरह राजनीति नही है; हम नही जानते पायोनियर के मन मे क्या समाई है और क्या किया चाहते हैं जो बैठे बैठाए ऐसी २ बेसिर पैर की गीत गाने लगते हैं; क्या यह मिसर मे हिन्दुस्तानी फौज की फतहयाबी का इनाम है या रूस वालों के आगमन की खयाली शंका के निवृत्ति को उमदा तद्‌बीर है? जो हो लार्डरिपन के शान्त राज्य मे ऐसी २ निरर्थक बातों का आन्दोलन किसी तरह उक्त श्रीमान् की यश का हेतु नही है।

मत डरो, यह आत्मशासन हौआ नहीं है जो काट खायगा। जरा हिम्मत पकड़ो ; कमर बांध मुस्तैद तो हो, देखो सब कुछ कर सक्ते हो या नहीं कान पूंछ दबाय भागे क्यों जाते हो, एक बार अजमाय के देखते तो सही कि पहले ही से पुकार मचा रहे हो हम से कुछ न होगा बिना मेजिसटरेट साहब के प्रेसिडेंट हुए कैसे काम चलैगा, मेजिस्टरेट क्या कोई देवता बन स्वर्ग से आए हैं या उन्ही में कुछ सुर्खाब का पर लगा दिया गया है कि वे ही प्रेसिडेंट हों तो काम चलै ; जो दो हाथ पांव आंख कान तुम्हारे सो उनके तब वे क्यों विशिष्ट और कदर के लायक हुए और तुम क्यों अहमक़ सी बिकदर और कौड़ी के भी महगे हो गए निश्चय जानो यह सब तुम्हारे हतोत्साह ही जाने का कारण है " नोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम् " " उत्साहवन्तोहि नरा न लोके सीदन्ति कर्मस्वतिदुष्करेषु " न बैर ने कुछ बिगाड़ा न फूटने कुछ फोड़ा है ; यह सब हतोत्साही होने का हेतु है जिस दिन उत्साह बांधी यह सेल्फगवर्नमेंट क्या सत्यलोक में भी सीढ़ी लगा कर इन्द्र की सिंहासन पर बैठ सक्ते हो।

—o—

प्रेरित ।

इन दिनों इलाहाबाद गवर्नमेंट हाईस्कूल के अप्रबन्ध की चर्चा बहुत सुनाई देती है हमको इस बात का विश्वास न था पर एक दिन एक लड़के को दाखिल कराने और इस बात की तहकीकात करने के खयाल से जब वहां गए तो सब बातें यथावस्थित पाईं अब उन बातों को लिख शिक्षा विभाग के अधिकारियों से आशा करते हैं कि उनका यथोचित संशोधन कर देंगे; प्रथम तो स्कूल में शोर गुल इतना होता है कि किसी मतलब की भी सुनने में नहीं आता दूसरे कितने मास्टरों को भी छुट्टी के घंटे के बाद

र घूमते पाया पढ़ाने की यह कै-
फ़ीयत है कि लड़कों से कह
दिया जाता है यहां से यहां तक
याद कर लाओ उनका सबक
अच्छी तरह बताने और समझाने
की कुछ फिक्र नहीं की जाती
जिनको मकदूर है वे निज खर्च
से मास्टर नौकर रख पढ़ाते हैं
नहीं तो लड़के सबक याद करने
को दर २ डोलते फिरते हैं; दूसरे
यह देख मुझे और भी अचम्भा
हुआ कि छोटे २ बच्चों के बीच
दस २ पांच २ मोंछ दाढ़ी वाले
भी दिखाई दिये जिनकी उमर
शायद मास्टरों से भी अधिक हो
गी हम नहीं समझते कि ऐसे
लोग किसी अच्छे खयाल से मद
र्से मे आते हैं सिवा इसके कि को
मल हृदय वाले बच्चों को बिगा
ड़ा करें यदि किसी मास्टर ने
उनके कुचरित्र संशोधन के लिए
कुछ कहा तो उसी से बिगड़ ख-
ड़े हुए अभी एक मास्टर की
बहुत बुरी दशा इन बदमाशों ने
कर डाली जिसे निश्चय हो गया
कि अब उस्तादों की यह कैफीयत
हुई तो लड़कों की आबरू और
जान की रक्षा तो ईश्वर ही के
आधीन है आश्चर्य यही है कि
शिक्षा विभाग के अधिकारी इन
बातों पर कुछ ध्यान नहीं देते
और महकमो मे किसी चपरासी
पर भी कुछ जुल्म होता है तो
गवर्नमेन्ट तक खबर होती है यहां
एक प्रतिष्ठित अधिकारी के लला
ट से सेरों खून निकल गया हेड
मास्टर इन्स्पेक्टर या डइरेक्टर
कुछ मदद करना एक ओर रहा
मनके भी नहीं न अदालतही मे
लिखे इंसाफ करते हैं सो किया
गया पुलिस वालों ने इस मुकद्द-
मे को केवल साधारण मार पीट
शुमार कर ताजीरात हिन्द की
३२३ दफा के अनुसार चलान
कर दिया यद्यपि मजरूब १५
दिनो तक अस्पताल मे पड़ा रहा
हम इसी शहर के कितने मुकद्द-
मे बता सक्ते हैं जो इस्के चौथाई
भी संगीन न थे और उन्मे ऐसी
सख्त सजाएं हुईं कि वाकई उस

बात का सदा के लिए इन्तिजाम हो गया इस्से शरिश्ते तालीम के अफसरों का निरा बोदापन अच्छी तरह साबित होता है फिर यह शरिश्तह जब सरकारही को प्यारा नहीं तब इस्के मुखालिफों को जो चाहो सो फजीहत करो कौन सुनता है क्योंकि हमने सुना है अदालत में मास्टर साहब से यह सवाल किया गया कि तुम अपनी हिफाजत क्यों न कर सके तुम किस बात में कमजोर थे हम पूछते हैं हर कोई अपनी रक्षा का प्रबन्ध आपही कर ले तो बदमाशों से बचाने को पुलिस और अदालत किस वास्ते है शरीफों के हाथ की छड़ी तक नहीं रहने पाती बदमाश लोग बीच बाजार में लट्ठ लिए घूमा करते हैं इस हालत में जब किसी लुच्चे ने एक भले मानुस को तक लिया वह बेचारा क्या कर सकता है फिर यह मुकद्दमा पुलिस के लिखने पर अदालत ने सरसरी के तौर पर किया जिसे उसकी २ बातें सबूत को अनसुनी रह गईं; शरिश्ते तालीम की बद रोबी देख हम अब यही राय देते हैं कि प्रतिष्ठित लोग अपने लड़कों को मद्रसे न भेजें घरों में पढ़ावें इस्से असभ्य लड़कों की संगति से बच कर शरीफों के लड़के अपने उस्ताद से प्रीति करेंगे और नम्रता से पेश आवेंगे और स्कूल के लड़कों के समान सरकश और आवारा न होंगे ; यदि सरकार हमारी शिक्षा का बोझ अपने ऊपर लेती है तो स्कूलों में पाठकों को वही अधिकार और स्वतंत्रता दे जैसी मकतब और पाठशालाओं में है नहीं तो स्कूल सदा दो कौड़ी के रहेंगे और न उच्च जाति के पढ़ाने की मनशा सरकार की कभी पूरी होगी।

एक विद्या विभाग का हितैषी।

शुरू साल की खुशी में लतीफे।

देहली के भुर्र के लड्डू - हमारे नादेहन ग्राहक।

बुढ़िया को टेली० आजकल के वकील मुख्तार० कमनमेपुरसद कि भैया कौन हो।

अन्धेर नगरी चौपटराजा प्रयाग का माघ मेला।

जिस्की लाठी उस्की भैंस०मि सर की मालहथाकी।

खुद्रमरदुमबाद मरदुम० सर विलिएम स्यूर की लफटिनेंटी।

रोटी तो किसी तौर कमा खाय मुछन्दर० मुल्लासिना।

धोबी का कुत्ता न घर का न घाटका०अधकचड़े अङ्गरेजीखां।

बदन का कांटा० देशी अङ्गरेजों की नजर में हमारे नव शिक्षित युवक।

अन्धों में कनवा राजा० कोई २ अनररी मेजिसटरेट।

न दीन के न दुनिया के०इन दिनों के अपढ़ ब्राह्मण।

कौड़ीके तीन तीन० हिन्दी के अखबार और उनके एडिटर।

बने के साला की बिगड़े के० मिसर की विजय और काबुल की हार।

बन्दर के हाथ का नारियल० हिन्दुस्तानियों के लिए सेल्फ गवर्नमेंट।

चिराग तले अन्धेरा०इलाहाबाद की म्युनिसिपलिटी।

पांचो अंगुली गप्प०माघ मेला और कोतवाल।

सवैया।

कोइल कूकैं रसाल की डारिन एक छिनो नहिं मौनता धारैं। फूलैं गुलाब कली कचनार अनार अँगारन भुंड गुँजारैं॥ किंसुक लाल कीद्वार लसै मनो नाहर के नखहू अनुहारैं॥ सांचो बिधाता बनायो इन्हैं जगमें बिरही सिय के उर फारैं॥

जब तें रितुराज को राज भयो तब तें अतिही दुख हूखन लागी। पात भुराय परें महि में सरिता सर को जल सूखन लागो॥ मारुत जोर कीद्वार वहै किरनै बड़वानल पूखन लागो। कोइल कूकत आम की डारिन सो सुनि कै उर हूकन लागो॥

अग्रिम मूल्य २।॥) पश्चात ४॥)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bha.. Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Feb. 1883. Vol. V.] [No. 6.

प्रयाग माघ शुक्ल ५ सं० १९३९ जि० ५ [संख्या ६

आधा तीतर आधा बटेर।

वही कानून वही दफा वही कोड उसी इंडियन पीनलकोड से हिन्दुस्तानियों को सजा दी जाय उसी से अंगरेजों को तब इठ वर्मीन छोड़ आधा तीतर आधा बटेर सा इसमें कौन सी दलील और इंसाफ है कि अङ्गरेज़ों का मुकदमा हिन्दुस्तानी जज या मेजिस्टरेट न फैसल किया करें; जो कहो आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ तो यह

कौन सो हिमाकत है कि जो बात कभी नहीं हुई उसके लिए विचार दृष्टि को काम में न लाना; पहले जूरी भी तो हिन्दुस्तानी नहीं होते थे अब बहुधा अङ्गरेजों के मुकद्दमे में दो एक हिंदुस्तानी भी क्यों जूरी किए जाते हैं? हाल में वाइसराय साहब की कौंसिल के लेजिसलेटिव मेम्बर मि० इलबर्ट ने इस आसिले को जब से कौंसिल में पेश किया है तब से विलायत के समाचार पत्र बहुत चिढ़ उठे हैं और अंगरेजों का मुकद्दमा काला आदमी करे इस बात से अपनी बड़ी हतक समझ भांत २ की उपज ले रहे हैं; कोई कहते हैं लार्डरिपन साहब हिन्दुस्तानियों से दब गए हैं कोई कहते हैं गवर्नर जेनरल को हिन्दुस्तानियों की इस कदर खातिर मंजूर है तो साफ २ यही न कह दें कि हम सब अंगरेज साथ अपना २ डेरा डंडा उठाय हिन्दुस्तान से चंपत हो विलायत चले जावें; कोई कहते हैं रिपन बुद्धि साहस और दूर दर्शिता सब से खारिज हैं जो हम विलायत वालों के लिये हर तरह चौका लगा रहे हैं इत्यादि अनेक उपज उनके क्षुद्र चित्त रूपी चर्म्म से निकल २ बड़ी हड़बड़ाहट मचाए हुए है अब देखें श्रीमान् रिपन महोदय कहां तक उदार भाव को इस खलबली के समय काम में लाते हैं।

———०———

आत्म शासन नहीं यह कलट्टर शासन है।

लीजिए एडिटर साहब आपकी कहां आत्म शासन तो बहुतही अच्छा चल निकला चाहता है हाल में जो पश्चिमोत्तर और औध की गवर्नमेंट गजट में एक हुक्म छपा है उसे आपने देखाही होगा वही बात हुई टांय २ फिस; हमने पहले ही आपको लिखा था कि जब तक इसकी योग्यता न होगी तब तक लार्डरिपन साहब लाख चाहेंगे कुछ न होगा; जहां राजा सरीखे मंत्री हैं वहां आत्म

शासन का गुज़र कब होने वाला है अब गवर्नमेंट को उचित है कि उनके घर का भी प्रबन्ध गेजिसट रेंट के सिपुर्द कर दें क्योंकि अपना प्रबन्ध वे न कुछ कर सक्ते हैं न चाहते हैं कि हो; आत्म शासन से दोही बात मुख्य थी एक प्रजा के नियत किए हुए मनुष्यों को कमेटी मे भरती करना दूसरे कलट्टर साहब का उस कमेटी मे मुखिया न बनाना सो दोनोमे एक भी न हुई तब ऐसे आत्म शासन से लाभ क्या; कलट्टर साहब मुखिया बने ही रहे और वैसेही अपने मन माफिक मुसाहब खुशामदियों को कमेटी मे भर दिया करेंगे तब यह कलट्टरशासन नहीं तो क्या हुआ; हां सर आलफ्रेड लायल साहब ने इतना अलबत्ता कर दिया कि जहां की कमेटी कलट्टर को छोड़ किसी दूसरे को प्रसिडेंट बनाना चाहै वहां पहले गवर्नमेंट से मंजूरी मंगाले तहसीलियों मे भी तहसी ली बोर्ड के मुखिया तहसील दार ही रहैं तब यह स्पष्ट है कि जो कलट्टर और तहसीलदार साहब करेंगे वही होगा और जिसे मेम्बर चुन देंगे वही उस कमेटी मे शरीक होगा वे लोग यातो निरे गवांर और लाल बुझक्कड़ होंगेय। कलट्टर और तहसीलदार साहब के खुशामदी रहैंगे औरइन दोनो के अन्योन्याश्रय दोष से यह पुरानी गाथा चरितार्थ होगी उष्ट्राणांविवाहेषु गर्दभागायकाभवन्, परस्परंप्रशंसन्तिअहोरूपमहोध्वनिः तहसीलदार या कलट्टर पर जब मेम्बरों के चुनने का दार मदार रहा तो वही खुशामदी नासमझ लोग चुने जायगे जो सिवा हां हुजूर कहने के कलट्टर के खिलाफ कुछ कहैं या कलट्टर साहबको कमिटी का प्रेसिडेंट न करैं यह कभी होही नहीं सक्ता इसी से हम कहते हैं कि यह आत्म शासन से अब कलट्टर शासन हो गया; धन्य सर अलफ्रेडलायल साहब की समझदारी जिन्होने म्युनिसिपल कमिटी मे यह ठीक

समझा। कि लोग अपनी ओर से सभासद और प्रेसिडेंट नियत करें परन्तु लोकाल कमिटी के लिये यह ठीक न ठहरा इसका क्या मर्म है कुछ ध्यान में नहीं आता जो यहां की प्रजा इस योग्य है जो नहीं तो म्युनिसिपल कमिटी के लिए कैसे हुई और जो है तो लोकल कमिटी के लिये क्यों योग्य नहीं; भला जो यह कहिये कि म्युनिसिपल कमिटी के लोग बहुधा पढ़े लिखे होशयार होते हैं ऐसे सब तहसीलियों में न मिलेंगे तब यह आज्ञा देना ठीक हो सक्ता था कि जहां लोग चाहें वहां प्रजा के नियत किये हुए सभासद लोकल कमिटी में लिये जांय और शेष स्थानों में सरकार की ओर से नियत हों; सिवा इसके लार्डरिपन साहब का तात्पर्य तो यह नहीं था कि यहां के लोग आत्म शासन के योग्य हैं किन्तु यह अभिप्राय था कि लोगों को आत्म शासन की रीत सिखाई जाय सो सब सिखना सिखाना हो चुका जितना सीख चुके वही बहुत है; उचित है कि महामान्य लार्डरिपन साहब फिर इसे सोचें और यही आज्ञा दें कि म्युनिसिपल और लोकल दोनो कमिटियां प्रजा के इलेक्शन से हुआ करें तहसीलदार और मजिस्टरेट को कुछ भी वास्ता इन कमेटियों से न रहे हां कमेटी जो कुछ उन से पूछे उसकी सलाह भलीभांति दे दिया करें तब हम मानेंगे कि हमें आत्म शासन का ढंग सच २ सिखाया जाता है और इस बात के लिए सरकार के बड़ेही उपकार न मन्द होंगे नहीं तो यह सब कठपुतली का खेल खेला जाता कौन कहता है आप इस खेल खिलौने से बाज रहैं।

एक-मर्मज्ञ

हा ! ! ! सर सलारजङ्ग वाहरे सलारजङ्ग।

तुमने जान क्या दी कुल हैदराबाद की जान लेगए; दक्षिण का सितारा डूब गया; हिन्दुस्तान का

सान मन्दिर ढंगया; क्या सन क्यामी का धूम केतु तुम्हारे ही बसने को उगा था; फरासीस के गर्यबिटा से मिलने की ऐसी क्या उतावली की; क्या प्रिंस बिस्मार्क से राजनीतिज्ञ राजनीति मे तुम्हारा साथ देने को यहां मौजूद न थे; आने वाले को किसने रोका है पर बरस छ महीना का सबर तुमसे न हो सका कि निजाम को बालिग तो होने देते; यार अब बिरार फिर पाने का कौल करार सब बेकरार हो गया; तुम्हारी वह स्वामि भक्ति भी चल सीवार तुम्हारी दामनगीर न हुई जो तुम्हारे रग २ नस २ मे भरी हुई थी; हा तुम्हारे जीते जी इस हिन्दुस्तान की धरती भी अभिमान करने से न चूकी कि हम किसी काम है हमारे उदर से भी सरजङ्ग बहादुर सरसलारजङ्ग से राजनीति महोदधि के थहाने वाले मनुष्य पेदा हुए हैं; क्या पोलिटिक्स के चलते पुरजे जो तुम्हारे ही दम से इस देशी को पहुंचे थे घिस घिस कर अब हिन्दुस्तानी विस घिस मे मिला चाहते हैं; हा प्यारे सलारजङ्ग क्या हिन्दुस्तान की बद किस्मती डाइन तुम्हारी ही जान की भूखी थी; अफसोस मुसल्मानों की तेरहवीं सदी ने तुम्हे भी न छोड़ा तुम इस असार संसारसे नहीं गए हैदराबाद को लाचार कर छार में मिला गए; इस जहान से तुम नहीं उठ गए वरन आलम मे नाम पैदा कर गए; हा काल काल किसी को नहीं छोड़ता सच है (काल काहि नहिं खाय)।

—०—

बेजड़ का कोई नहीं है।

पेड़की जड़ तो तुम जानतेही हो जिन्दगी की जड़ सांस; सलतनत की जड़ तिजारत; बेइमानी की जड़ अदालत; हुकूमत की जड़ लाट साहब; खुशामद की जड़ खैरखाही; रिशवत की जड़ अमले; हिकारत की जड़ काम।

रङ्ग ; धर्म की छिलावट की जड़ मूर्खता ; अनाचाराद्धर्महानिरत्याचारस्तुमूलम् मूर्खता ; फूटकी जड़ जात; रेलकी जड़ सट्टरई शम; मौत की जड़ देशी हकीम; पाप की जड़ लोभ; लोभ की जड़ तमा; मक्कारी की जड़ लखनऊ; गर फदारी की जड़ सिविलिएन सा हब लोग; साहब की जड़ मेम साहब; प्रजा पर अत्याचार का जड़ पुलिस; गांवों की जड़ पट वारी; लड़ाई की जड़ वकील; झूठ की जड़ गवाही; नई रोशनी की जड़ यूरप; जेहालत की जड़ गोबरीहा महाजन; दौलतइसलाम की जड़ एकाग्निवालों की शिरकत; निकम्मापन की जड़ मुफलिसी; फसाद की जड़ औरत इत्यादि।

TRANSIT सूर्यान्तर्हिति तारान्तर्हिति वा ग्रहण।

हमारे यहां के पूर्व कालीन ज्योतिषियों ने केवल सूर्य और चन्द्रमा ही का ग्रहण माना है कारण इसका यही है कि बिना किसी यन्त्र के सहारे जितना वे केवल नेत्र के द्वारा देख सके उतना ही को लेख बद्ध किया परन्तु इन दिनों यूरोप के बड़े २ खगोल सारवित् लोगों ने दूरबीन यंत्र के द्वारा आकाश के अनेक आश्चर्य प्रगट कर २ लिपिबद्ध करते जाते हैं, उन बहुतेरे खगोल सम्बन्धी आश्चर्यों में यह transit भिन्न ग्रहों का ग्रहण भी है; रात्रि के समय हमको ऊपर आकाश की ओर अनगिनत प्रकाशित पिण्ड देख पड़ते हैं जिनको तारा गण कहते हैं परन्तु उनमें सब तारे नहीं हैं वे इतना दूर हैं कि अत्यन्त छोटे जुगनू से चमकते देख पड़ते हैं वास्तव में वे सब एक २ हमारे सौर मण्डल Solar system के सदृश हैं; ये छोटे २ तारे एक एक सूर्य हैं जिनके साथ इतनेही ग्रह उपग्रह लगे हुए हैं जैसा हमारे सूर्य के साथ बुध शुक्र आदि ग्रह हैं; सूर्य मध्य में रहता है उसके चारो ओर ग्रह अपने २ उपग्रह समेत वृत्ताकार घूमते रहते हैं ये सब पिण्ड स्वय प्रकाश मान नहीं हैं किन्तु उनमें सूर्य का प्रकाश पहुंचने से प्रकाशित हैं ये सब पिण्ड अपने घूमने के समय कुछ अंश में या सम्पूर्ण ढंक लेते

जाते हैं इनका आपस में मिल जाना अनेक प्रकार की भिन्न २ आश्चर्य जनक बातें ग्रहण सूर्यान्तर्हित तारान्तर्हित आदि नाम से कहि जाती हैं; इनमें ग्रहण तो स्पष्टही है सूर्यान्तर्हित transit वह ज्योतिष सम्बन्धी आश्चर्य है जो उस समय होता है जब कि सूर्य का बिम्ब किसी निकृष्ट ग्रह से ढांप लिया जाय; बुध और शुक्र का transit सूर्यान्तर्हि बहुधा हुआ करता है यह तभी होता है जब कि बुध या शुक्र पृथ्वी ग्रह के बहुत समीप आ जाते हैं कब कि उनका प्रकाशित अर्द्ध भाग की ओर सूर्य रहता है और उनका अँधियारा अर्द्ध वृत्त hemesphere पृथ्वी की ओर रहता है और बुध या शुक्र पृथ्वी और सूर्य एक सीधी रेखा में आजाते हैं; यह सूर्यान्तर्हित केवल दूरबीन के द्वारा सूर्य मण्डल में छोटे से धब्बे के आकार से देख पड़ता है; Occultation तारान्तर्हित वह आश्चर्य phenamina है जो उस समय होता है जब कोई मुख्य तारा किसी ग्रह वा चन्द्र से जो कि देखने वाले के बीच और उस मुख्य तारे के बीच आगया हो ढक लिया जाय; ग्रहण कई प्रकार के होते हैं जब सूर्य ढंक लिया जाय तो उसे सूर्य ग्रहण कहते हैं और जब चन्द्रमा किसी दूसरे पिण्ड से ढक लिया जाय तो उसे चन्द्र ग्रहण कहते हैं; यदि उस लोक के किसी ग्रह का चन्द्रवत् पिण्ड अदृश्य हो जाय तो ग्रहण उस चन्द्रवत् पिण्ड का कहलाता है; यदि कोई पिण्ड दूसरे पिण्ड से सम्पूर्ण ढक लिया जाय तो उसे सम्पूर्ण और यदि थोड़ा ढक लिया जाय तो उसे खण्ड ग्रहण कहते हैं; मुद्रिका कार ग्रहण वह कहलाता है जब की बीच में आने वाले पिण्ड के छाह की लम्बाई पृथ्वी तक पहुंचे और इतना सूक्ष्म ग्रहण हो कि पिण्ड उद्दीपित मुद्रिका की तरह चमकता रहे; इन्ही सब ज्योतिष सम्बन्धी आश्चर्यों को हमारे पुराने आचार्यों ने ग्रह युद्ध पातव्युति वेध आदि नाम से कितने मत सम्बन्धी झगड़े लगा कर भांत २ की भ्रान्ति लिख दी है किन्तु यूरोप वालों का यही मत है कि ये अपने नीचे रहने वाले मनुष्यों पर कुछ असर नहीं कर सक्ते तब ग्रहों को मान २ डरा करते रहना भीरु चित्त और मूर्खता की पहचान है।

कैलाशनाथ---कोशी---जिन्द---मथुरा।

श्री हिं०प्र० संपादक महाशय समीपेषु।

आप के दिगम्बर मतोंके के पत्र में पहले लेख के तात्पर्य को लोग कदाचित

उलटा समझेंगे इसलिए मैं उस लेख का सविस्तर विवरण लिखता हूं छाप कर इसे अपने पत्र में स्थान दीजिए।

वास्तव में राजभक्ति और प्रजा का हित एक ही बात है ; राज्य एक प्रबन्ध है जो प्रजा के हित के लिए नियत किया जाता है ; जहां तक राजा अपने धर्म में सावधान रहता है अर्थात प्रजा पालन और प्रजाहित साधन में तन मन से तत्पर रहता है वहां तक उस प्रबन्ध का नाम राज्य है और तभी तक उस राज्य की श्री वृद्धि रहती है और उसके वैभव और तेज से दुष्टों की आंख तिलमिलाया करती है और वह राजा भी सदा निर्द्वन्द रह अपनी प्रजा की प्रीति और भक्ति से कृतकृत्य हो सुख पूर्वक अपना जीवन पार करता है परन्तु जब इसके विरुद्ध राज्य से प्रजा को क्लेश पहुंचाता है तब उसका नाम अन्धेर नगरी चौपट राज हो जाता है ऐसे राज्य की शोभा और श्री दिन दिन घटती जाती है और प्रजा के पीड़ित होने से उस राज्य का तेज दिन २ क्षय होता चला जाता है और अन्त को रसातल में मिल जाता है वह राजा भी सदा दीन और दुखी हो अपनी अनीति के कारन भय भीत रह इस संसार में तो सब उससे घिन करते ही हैं पर लोक में भी यमराज के डंडों से उसकी अच्छी तरह गत बनाई जाती है॰ "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नर्क अधिकारी॥ इसी तरह जहां राज्य प्रबन्ध नहीं होता वा जहां के लोग अपने राज्यशासन से कुछ सम्बन्ध नहीं रखते और उसके सुप्रबन्ध के प्रचार और कुप्रबन्ध के रोकने में यत्न वान नहीं रहते वहां भांत २ के क्लेश प्रजा को सहने पड़ते हैं जहां इसके विपरीत प्रजा राज्य को अपना हितकारी समझ उसकी सहायता में रहती है वहां सब प्रकार आनन्द और अमनचैन रहता है ; तो अब इन बातों से स्पष्ट हो गया कि राजभक्ति और प्रजा का हित दोनों एकही है भिन्न नहीं; जो मूर्ख प्रजाहितैषी नहीं हैं वा राजा को ऐसी बात सुझाते हैं जिस्से प्रजा को हानि है या प्रजा की भलाई चाहने वालों को बुरा कहते हैं उनको पूरा राज विद्रोही समझना चाहिए; कभीकी ऐसा होता है कि राजा अपनी नासमझी से अपना हित ऐसी बात में मान लेता है जिस्से प्रजा को क्लेश पहुंचाता है उस समय जो सच्चे राजभक्त हैं वे अवश्य राजा को उस नासमझी से रो

झते हैं वा जो राजा प्रजा के हित में अपना अनहित समझता है उसको उचित रीति पर समझाते हैं जो लोग देखने में बड़े राजभक्त हैं; और वास्तव में राजा को उलटी सीधी समझाय प्रजा का हित अनहित बिना विचारे अपना मतलब गांठते हैं जो राजा को उस समय हित हो चाहो परिणाम में उस्से कैसाही अनर्थ होने की सम्भावना हो ऐसों को राज भक्त कहना रात को दिन और दिन को रात बनाना है। "सचिव बैद्य गुरु तीन जो प्रिय बोलहिं भय आस । राज धर्म तन तीन कर होय बेगही नास ॥ ऐसेही झूठे राजभक्तों ने रावण का राज्य खोया चार्ल्स इङ्गलेंड के राजा की कौन्सिल के हाथ से गरदन कटवाई फ्रांस देश में घोर उपद्रव मचवाया ऐसों के सम्पर्क और परामर्श से राजा को सदा बचाए रहना उचित है और अपने को प्रजा के हित का रक्षक समझ सब सुख भुलाय इसमें लगना चाहिए ; इसी प्रकार जो राज्य के विद्रोही हैं वे प्रजा के हितकारी कभी नहीं हो सक्ते अब देखना चाहिए राज्य के विद्रोही कौन २ लोग हैं ; चोर उठाईगीरे जुआरी लम्पट आदि निरर्गल प्रकृति वाले हैं सब राज्य के शत्रु होते हैं क्योंकि इनका स्वभाव ठहरा लोगों को पीड़ा पहुंचाना और राज्य का काम है प्रजा को पीड़ा से बचाना इस हेतु भाव के कारण राज्य में और इनमें सदा विरोध रहता है ये तो प्रगट बैरी हुए ; अब गुप्त बैरियों को सुनिए जो प्रबन्ध के खोट को राजा को नहीं सुझाते और अच्छा प्रबंध होने में सहायता नहीं देते वरन जहां तक हो उलटी ही सुझाते हैं जैसे जिनमें हमारे लोगों में उपज खड़े हुए हैं कि जो मान् लार्ड रिपन सी हमें मनुष्य बनाने में यत्नवान् हो रहे हैं और सेल्फगवर्नमेंट यही मंत्र दे रहे हैं जिससे गौरांग का सर्वार्थ सफल न हो और हम लोग जैसे के तैसे पशु बने रहें तब इन्हें राज्य का शत्रु नहीं तो मित्र कौन कहेगा ; जैसा अच्छे राजभक्त का यह काम है कि राजा को प्रजा के हित साधन का परामर्श दे वैसेही सच्चे प्रजाहितैषी को भी चाहिए कि राजभक्ति का बीज प्रजा के चित्त में बोता रहे उसको हर तरह योग्य बनावे और समझाता रहे कि राज्य के स्तम्भ तुम्ही लोग हो क्योंकि तुम्हारेही कुढंग आलस्य और निरुत्साह से राज्य भला या बुरा हो सक्ता है अकेला राजा बिना तुम्हारी सहायता के कुछ तुम्हारा हित

साधन नहीं कर सका; प्रजा पर जो कुछ कष्ट राज्य के कुप्रबन्ध से आ पड़ता है वह इन्हीं की निरुद्यमता का दोष है जो हम लोग योग्य हों तो राज्य प्रबन्ध कहां तक अच्छा न हो बंगाल इन दिनों इसका कुछ २ नमूना तैयार है और जो हमी कह बैठें "कोउ नृप होउ हमैं का हानी"। तो फिर क्या राजा तो मनुष्य ही है नालायकों को तो ईश्वर भी दुख दायी होता है "दैवो दुर्बल घातक:"। अब वह योग्यता कौन सी है जिसकी प्राप्ति के लिए हम यत्न करें आलस्य और निरुत्साह का त्याग उचित और नीति पथ पर आरूढ़ होना धर्म्म और स्वतंत्रता की प्राण पण से रक्षा; अधर्मी और पराधीन को कभी सुख नहीं मिलता चाहो संसार भर का वैभव उसके पास क्यों न हो जाय; बहुतेरे लोग सुखका लोभ कर मान पत स्वतंत्रता और धर्म्म सब खो बैठे परन्तु सुख उनके अभाग से और कोसों हटता गया क्योंकि सकल सुख का मूल स्वाधीनता ही जब खो बैठे तो फिर रह क्या गया जिन वस्तुओं को हम सुख देने वाली समझते थे और जिनको आशा से दूसरों के हाथ में सब कुछ दे बैठे वह सब तो पराई हो गई अब हमको उन पर कुछ अधिकारही न रहा जो कुछ स्वामी की इच्छानुसार मिल जाय वह खाय पड़े रहें; इस पर कितने निर्लज्ज सुखमान मग्न रहते हैं बात २ में इनका मान मर्दन होता है तो भी हया में नहीं आते; इसी तरह बहुत से संसारी सुखों में बाधक समझ धर्म को छोड़ बैठे और अधर्म में अहर्निश व्यतीत करने लगे परोपकार के बदले आपस में एक दूसरे का गला काटते हैं असत्य के व्यवहार से परस्पर की प्रीति और प्रतीति खोदी स्वार्थ परायण होने से एक को दूसरे का विश्वास जाता रहा। बलवानों की प्रसन्नता के हेतु बराबर वालों या अन्य सुहृद मित्रों को अन्याय पक्ष में पीस डाला यह सब कुछ किया पर जिस सुख को खोजते थे उसे न पाया क्योंकि सुख तो केवल धर्म में था सो उसे से तिलाञ्जलि दे ही चुके तब सुख कहां से आवे ऐसे २ अनर्थ से उपार्जित धन को भी २ भांत खाया पहना ऊंचे २ मकान बनवाये सवारियां रक्खीं सैकड़ों खुशामदी लोगों की भीड़ रखने लगे मद्यपान वेश्या प्रसङ्ग और बहुत से उपाय किये परन्तु सुख तो मन के सङ्ग है सो पहलेही से कलुषित हो चुका भांत २ के विकार उसमें भरे हुए हैं इसलिये इन सब

बातों के करने से भी चित्त कभी प्रसन्न नहीं होता जो प्रसन्नता एक दुखिया के दुख मिटाने से होती है वह इन्द्र पदवी के भोग विलास से भी नहीं मिलती; जो लोग धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा करते प्राण भी तज देते हैं प्रसन्नता ऐसों का कभी साथ नहीं छोड़ती जीते जी स्वाधीनता का अखण्ड सुख भोग मरते समय यश की पताका गाड़ जाते हैं ऐसों को मरने का तनिक सोच और क्लेश नहीं होता क्योंकि वे खूब समझे हुए हैं कि मनुष्य जन्म का यही फल है कि अपने धर्म और स्वाधीनता की रक्षा में प्राण त्यागें; जब तक मनुष्य का चोला पाय ऐसे २ विचार न आए तो उसमें और पशु में क्या भेद रहा " आहारनिद्राभय-मैथुनंच सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्, धर्मो हितेषामधिकोविशेषो धर्मेणहीनाःपशुभिः समानाः " यही कारण है कि सुराज्य के सुख का रस जो केवल मनुष्य के लिए सजा गया है ऐसों को कभी नहीं मिलता न उनको कपट के सनी राज भक्ति का विश्वास हो सक्ता है क्योंकि वे तो अपना मतलब छोड़ न राजा को जीते चाहें न राज्य प्रबन्ध के सुधारने या बिगड़ने से उन्हें कुछ सरोकार है सच्चे राज भक्त वही हैं जो प्रजा को निज धर्म में प्रवृत्त रख स्वतंत्रता रक्षा की शिक्षा देते हैं और अपने राजा से सदैव प्रीति रखते हैं, प्रजा को सब भांत पुष्ट और बलवान् करना भी राज नीति का एक अङ्ग है जहां की प्रजा स्वयं बलिष्ट और हृष्ट पुष्ट होती है वहां राजा को प्रजा की ओर से सब तरह सुचित्ती रहती है और वहां प्रजा भी राज्य की रक्षा में तन मन से तत्पर रहती है; प्रजा को बलवान् बनाने का उपाय यह नहीं है कि उनके हथियार छीन लिए जांय और दिन प्रति दिन उन्हें भोग विलास में फसाते जांय किन्तु उन्हें वीर प्रकृति होने को सिखाते रहैं और पुरुषही पूरे राज भक्त होते हैं और भोग विलास वाले तो अमोलकी खांके भाई बन्धु निकल जाते हैं; और पुरुष वे ही कायर हैं।

शौरज धैर्य जाहि रथ चाका।
सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल विवेक दम परहित घोरे।
क्षमा दया समता रजु जोरे॥
ईश भजन सारथी सुजाना।
विरति चर्म सन्तोष कृपाना॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा।
वर विज्ञान कठिन को दण्डा॥

संयम नियम शिली मुख नाना।
अमल अचल मन तूण समाना॥
महाअजयसंसाररिपु जीतसकैसोवीर।
जाकेअसरथहोइदृढ़ सुनौसखामतिधीर॥

शौर्य वा सूरता पन उसका नाम है कि जो इस बात का आगा पीछा न सोचे कि मैं इस संग्राम मे लडूंगा या जीऊंगा अथ्वा शत्रु मुझसे बलवान है या निर्बल किन्तु जहां धर्म उसे बुलावे वहां सब से आगे कमर बांध मरने मारने को मुस्तैद रहे हमारे देश मे परतंत्रता और दास्य भाव तभी का हुआ जब से सूरता पन का अभाव हो गया है; धीरज कहते हैं दृढ़ता को कैसी ही बिपत्ति आपड़े कभी न घबड़ाना, जिस काम मे लगी उसे चाहे कितने ही बार हतोद्यम हो जाए हों परन्तु फिर भी सोच बिचार उसका उपाय करने से न हटना जैसा स्काटलैंड का राजा ब्रूस कई बेर हारा पर अपनी करनी से न हटा ; जो शौर्य और धैर्य जिस रथ के पहिए हों सत्य और शील की उसमें ध्वजा पताका हो बल बिवेक दम परहित ये ४ घोड़े उस रथ मे लगे हों यही ४ घोड़े हैं जिनसे पुरुषार्थ रूपी रथ खींचा जा सक्ता है; बल के बारे मे लोगों की जुदी २ राय है मूर्ख मण्डली केवल शारीरिक बल को बल मानती है बहुतेरे अस्त्र शस्त्र को बल कहते हैं कितने लोग बहुत लोगों से एक मत को बल कहते हैं, कितने सेना ही को बल बताते हैं कि कितने विद्या को परम बल मानते हैं जिससे शरीर से एक क्षुद्र आदमी महा बलिष्ट सिंह को भी मार लेता है यह सब ठीक है परन्तु ये सब सबल के संगाती हैं बल तो कुछ और ही वस्तु है सन ५७ मे पुरबिये सिपाहियों के पास क्या न था पूरब से पश्चिम तक उन्ही लोगों ने जय किया था और वही आप पीछे से गीदड़ समान जहां तहां मारे गये; बल नाम है आत्मा की श्रद्धा के मन मे प्रवेश होने का जब मन श्रद्धा सहित किसी काम मे लगता है तब वह काम तत्काल सिद्ध हो जाता है हमारे देश बान्धवों का यह मन यदि स्वतंत्र की रक्षा मे लगता तो काहे को हम दीन दशा मे रहते; उचित अनुचित के बिचार को बिवेक कहते हैं; इन्द्रियों के स्वाद जो संसारी जीवों को बिषय वासना मे फसाए रहते हैं उनका रोकना दम है, परहित अर्थात प्राणी मात्र का हित साधन जिसके जीवन का मुख्य उद्देश्य है; ये ४ घोड़े क्षमा दया और समता की

हारियों से बँधे हों ; अपनी तरफ़ कोई कितनोही बुराई करे तो भी उस अपराधी की अज्ञानी बालक समान समझ तत्कृत अपकार को चित्त में न लाना क्षमा है ; दूसरों को दीन हीन दशा देख दुखी होना और उनके दुःख दूर करने को भर सक उपाय सोचना दया है, सब प्राणियों को बराबर एक दृष्टि से देखना और आले का भेद न रखना समता है जैसा किसी घर में १० प्राणी हों तो घर के मुखिया को उन सब से एक सा स्नेह होता है ऐसेही वीर पुरुष संसार भर को अपना घर समझ सब से एक सा स्नेह और बरताव करते हैं "उदार चरितानान्तु वसुधैवकुटुम्बकम्"। ईश्वर का भजन उनका सारथी होता है जो इस रथ में बैठाय उनको ले जाता है यहां ईश्वर के भजन से यह मतलब नहीं है कि राम राम अपना पराया माल अपना बैठे २ माला सटका किए इसका तात्पर्य यह है कि जिनका ध्यान सदा ईश्वर ही पर रहता है न उनको अपने पुरुषार्थ का घमण्ड है न दूसरों से सहायता की अपेक्षा है वे जो कुछ करते हैं सब ईश्वर प्रीत्यर्थ करते हैं चाहो उन कार्य हों चाहो न हों और दूसरे लोग चाहो उनका साथ दें या न दें ; विरति की ढाल और सन्तोष की तलवार सदा अपने संग रखते हैं। विरति कहते हैं संसारी वस्तुओं में राग का न होना क्योंकि जब कोई वस्तु संसार में उनके लुभाने वाली होगी तो कभी वह वस्तु उन्हें वीरता की ओर न जाने देगी इस लिए विरति की ढाल अवश्य साथ रखनी चाहिए सन्तोष भी विरति का एक अङ्ग है सन्तोष इसका नाम नहीं है कि "होइ है सोइ जो राम रचि राखा"। किन्तु धर्म में प्रवृत्त रह जिस वस्तु को प्राप्ति न हो सके उसको अधर्म से न लेना और न उसके न मिलने से उदासीन होना ऐसा न करना जैसा अलीम की खानि लखनऊ और भोला नाथ ने भरतपुर बिगड़वा दिया अपनी सर्वस्व हानि क्यों होती हो पर आपस में फूट न पड़े हमारा हक़ हमारे भाई के भोग रहे पर उसके लिए अदालत न करना दूसरे के हाथ में अपना देश और राज्य जाता हो पर इसे उसके कुछ लाभ होने की सम्भावना है तो उस लाभ की इच्छा न करना यही सन्तोष है; दानवीर और पुरुष के लिये करता है हमारे भारत वर्ष के दानियों ने अपने आलस्य और निरुद्यमता देश

भर ने फेंका दिया ऐसे दान का दान नहीं कहेंगे किन्तु जिस दान से देश का पूरा हितसाधन होता हो वह दान है, बुद्धि उस शक्ति का नाम है जिस्से मनुष्य भले २ बातें अपने लोगों को उपकारी निकालता है और सत् असत् का विचार करता है जिन बातों को हानि कारक समझता है उनके मिटाने का यत्न करता है बुद्धिमान यह कभी न करेगा कि हमारे बाप दादे ऐसाही करते आए, है हम भी उसी लकीर पर फकीर बने रहें इस लिये बाप दादों की कुरीतों को न छोड़ कुरीतन ग्रहण करें बाल्य विवाह आदि कुरीतों पर दृढ़ रहें और विधवा विवाह आदि सुरीतों की प्रबन्ध कर दी थी तो हम भी वैसाही करते जांय; अनेक कुरीतों के बद्धमूल होने से हम यही निश्चय करते हैं कि हमारे अन्ध जन निपट बुद्धि रहित हैं यदि इनमे बुद्धि होती तो युद्ध के शत्रु को सिर पर आते देख ज्योतिषी जोसे साइत पूछने और युद्ध यात्रा का अच्छा मुहूर्त न पायकर वे विमुख हो बैठते; जब महमूद गोरी ने चढ़ाई की तो अपने चारो ओर गोएं खड़ी कर दीं उस समय कुबुद्धि ग्रसित लोगों ने यही सलाह दी कि अब युद्ध यात्रा करना उचित नहीं है परिणाम यह था कि इस समय तो थोड़ी हानी होके सिर झिकाती है देश यवनों के हाथ मे हो जाने से तो कोटियों गोवों की हत्या होगी और नित्य इसी प्रकार २ इस कोढ़ को आधार हो देखते रहेंगे पर कुछ कर न सकेंगे उस समय भगवान् जैसा सरीखे मंत्रियों का काम था जो युधिष्ठिर राजा को यही मंत्र देते कि अनी को संग्राम भूमि मे आप माता पिता गुरु आदि का भी विचार न करना चाहिए और वह तो यवनों से लड़ने थे गोवों से नहीं जो अकस्मात् गाय मर जाय तो उनका कौन दोष है ऐसी २ बातों का आगा पीछा सोचना बुद्धि है जो स्त्री और पुरुषोंही के पास रहती है; स्त्रियों और पुरुषों का धर्म है अर्थात् हर एक बातों के तत्व को पहचानना कि धर्म सब का सार है जिस्के बिना संसार के सब पदार्थ तुच्छ हैं (वित्त देह वक्ति रूप सुवाना (धर्म चरित्र सहित मनुष्ठ माना संयति मय अर्थात् नीति शास्त्र की आज्ञानुसार कर्म करने से चलना ही धर्म है जिससे वह अपनी बैरियों को सहज मे जीत लेता है; अमल और अचल मन जो किसी तरह न डिगे यही तरकस है जिस्के सहारे

वे संयम नियम रूपी बाण रख सक्ते हैं जिस राजा के प्रजा गण ऐसे वीर हों उस राज्य की किस्की सामर्थ्य है कि आंख उठा कर देखे; अब तो महाशय आप के पाठकों का अच्छा तरह मालूम हुआ होगा कि राजभक्ति भी प्रजा के हित का अङ्ग है तब राजभक्ति और प्रजा का हित की दो जुदी बात हुई। ह० प्र०

सीतावनवास नाटक।

तृतीय अङ्क द्वितीय दृश्य।

स्थान वाल्मीकि का आश्रम।

राजा जनक का प्रवेश।

जनक हा यह कैह का विलक्षण है तनया जानकी से जो हमने ऐसा स्नेह कर रक्खा था उसी का परिपाक आज हमें भुगतना पड़ा कि उसका परित्याग रूप अहित सुन आज हमारी छाती दरक रही है हा इस वृद्ध अवस्था में हमें यह दुःख सम्वाद सुनना पड़ा तो भी हम निर्लज्ज देह का पात नहीं होता; हा दैव सज्जन सन्तति सीते क्या तुम्हें विधना ने इसी लिए सृजा कि तुम यावज्जीव दुःखही भोगा करे; हा भगवति वसुन्धरे तू निश्चय बड़ी कठोर हृदय है कि अपनी कन्या सीता का जिसे तूने अपने गर्भ से पैदा किया उसका ऐसा भारी अनिष्ट सुनकर भी तेरी छाती नहीं फटती; जिस्की महिमा और जिस्के शुद्ध निर्मल चरित्र का सब छाया अग्नि देव दण्डकारण्य वासी मुनि जन जानते हैं रघुकुल के परम पूज्य देव दिन मणि सूर्य जिसके साक्षी भी हैं पृथ्वी जो तू सहती है इसी जाना जाता है कि तेरा सा कठोर मन कठोर चित्त किसी का न होगा।

नेपथ्य में महाराणी जी इधर आइये।

जनक अरे यह तो कंचुकी को साथ लिए भगवती अरुन्धती और महाराज दशरथ की धर्मपत्नी कौशल्या आ रही हैं हा पहले जिनको भेंट से हम मारे आनन्द के फूले नहीं समाते थे आज उनसे चार आंखहो जाने पर हमारी असह दुःख वेदना में मानो घाव पर नोन छिड़कना होगा।

आगे आगे कंचुकी पीछे पीछे अरुन्धती और कौशल्या का प्रवेश।

कौशल्या हा ऐसे समय विदेह राज जनक की भेंट मानो एक साथ दुःख का समुद्र उमड़ आया सा।

अरुन्धती तुम सच कहती हो महारानी जी; दुःखित मनुष्य का दुःख प्रियो जन के मिलने पर मानो एक साथ सह-

स धारा से टूट पड़ता है।

जनक (आगे बढ़) भगवती अरुन्धती विदेह जनक का सविनय प्रणाम।

अरु० विशुद्ध सत्व मूर्ति सूर्य देव तुम्हें पवित्र करें आत्म ज्ञान रूपी ज्योति तुम्हारे आत्मा को प्रकाशित करे और महाराज शतायु हों।

नेपथ्य में (चिल्लाने का शब्द)

(लवकुश और कई एक बालकों का प्रवेश)

सब बालक मिलके चलो २ सब मिल खेलें आज गुरु जीने छुट्टी दी है राम करै रोज ऐसेही गुरूजी के घर मेहमान आया करैं जिस्से यह शिष्टानध्याय के कारण हमें सदैव छुट्टी मिला करे।

कौशल्या भगवती अरुन्धती यह किस्के दोनों बालक हैं जो हमारे प्यारे रामकी मुखकी छवि का अनुहार करते हैं इन्हें देख सब दुख भुलाय हमारा कलेजा क्यों एक बारगी दृढ़ होगया भगवती इनपर क्यों हमारा सहज स्नेह बढ़ताही जाता है।

अरु० महाराणीजी हम भी तो आजही आई हैं नहीं जानती ये दोनों किस्के बालक हैं।

जनक कुवलय दल श्याम मूर्ति अपनी स्निग्ध मुखच्छवि से इन बालकों की मण्डली को शोभित करते ये दोनों कौन बालक हैं ऐसा कोई क्षत्रिय ब्रह्मचारी है क्योंकि चूल तथा लम्बी कङ्कपत्र भूषित पृष्ठ भाग में दो तूनी लिए हैं विभूति भूषित इनके सर्वाङ्ग सुन्दर देह पर यह मंजीठ का रंगा कपड़ा और कृष्ण चर्म कैसी अपूर्व शोभा दे रहा है इनके एक हाथ में धनुष और रुद्राक्ष की माला दूसरे में पीपल की लकड़ी का दण्ड है इस्से ये दोनो अवश्य निरे ऋषि पुत्र नहीं किन्तु कोई क्षत्री के बालक हैं, कञ्चुकी तुम जाकर इन बालकों को हमारे पास लेवा लाओ और जो न आवे तो वाल्मीकि से विनय पूर्वक हमारी ओर से कहना कि इन दोनों को हमारे पास पठै दें

कंचुकी जो आज्ञा (बाहर गया) क्रमशः

———o———

चलता है

चलता है—रांड़ का चरखा भी अतियारिन का गुड़ वह जो चला जाई को रोकि सकता है; कर्कशा लड़ाकिन बेहूदियों की ज़बान एक एक मुंह में सौ सौ गाली जबान क्या कतरनी ही गई आंधी

हो गई रेल चली इंजिन की गाड़ी चली सो चली अब कौन ऐसा दैव का दूसरा पैदा हुआ है जिसकी रोके रुक सकै किसी का कुछ चला तो किसी का हाथ चल निकला दे तमाचा गालों में चट दोनों ओंठ औटा करते गटपट हो लड़ते २ लस्त हो गये पर जबान न थकी वाह रे इस चल ने का काम ; इस चलने की मत पूछो सूरज चलता है चांद चलता है जमीन चलती है आसमान चलता है दिन चला रात चली ५० वर्ष के हुए सौ के हुए उमर की उमर बीत गई कुछ बाए रह गए लोगों को खबर हुई बांस बंध चार जने आदमियों के कन्धे पर सवार हो चले राम राम सत्त है सब चले सो चले अब नहीं लौटेंगे ; आज हम चले कल तुम चले परसों किसी दूसरे की बारी आई इस चलने से कोई नहीं बचते कितनाही बच्च करो० चलाचलमिदंसर्वं कहां तक गिना दे काल चक्र की प्रेरणा से यह जमाना ही जो चल रहा है आज और है कल कुछ और ; हुकुम चलता है राजा का हुक्म चलता है प्रजा का हुक्म चलता है ओहदे का हुक्म चलता है लाट का हुक्म चलता है कलक्टर का हुक्म चलता है कोतवाल का हुक्म चलता है सफाई वाले मियां का हुक्म चलता है कहां तक कहें म्युनिसिपालिटी की कृपा से कूड़ा ढोने वाले मेहतर का भी हुक्म चलता है बड़ों से सुनते हैं बादशाही जमाने में किसी समय चाम की चकती चली थी इस अंगरेजी राज्य में कागज का रुपया चलता है लाख रुपया एक मुट्ठी में इस तरह को किसी को मालूम न हो ; और जिस को कहें जिसे सब लोग चाहते हैं खोटी सो भी चलती है ; आप लोगों के खुश करने को हमारी कलम निधड़क चलती है लोग तके हुए हैं कितनों के हाथों अभी चढ़े हैं मारे सोच के दिन बीतता है तो रात नहीं कटती गाहकों से पैसा वसूल नहीं होती ; मजीसाहब कहां आप का खयाल है इस फागुनाहट में अब दो चार दिन बाद जाड़ा भी चलता है अब चला माघ तिलै तिल बाढ़े फागुन गोड़ा काढ़े ; लम्पटों की आंख का इशारा चलता है ; चोरठगों का पराए माल पर मन चलता है डाकों के दिनों में रंग चलता है, दलालों में औघ बाजार घड़ी घड़ी के लिए जूता चलता है; सूद खोर महाजनों का सूद चलता है दिन दूना रात चौगुना सौ दिया दो सौ का तमस्सुक लिखवा लिया दो वर्ष में दो सौ

कारखाने बात की बात में हो गए, कुल पुतलीघरों का नाम चलता है टोडर मल टिकइतराय सरीखे न जानिए कब हुए हैं जिस तीर्थ में देखो टिकइतराय का धर्मशाला तैयार है शालिवाहन और विक्रम को किसने देखा है पर उनका शाक आज तक चला जाता है, साहूकारों की साख चलती है घर में भूंजी भांग न हो हुण्डी चारों में साख बंध गई लाखों का भुगतान बात की बात में होता है, रोजगार चलता है दिन रात जब सुनो तब रुपयों की झनझनाहट गाड़ी पर गाड़ी चली आती है माल पर माल गिरता जाता है जिस चीज को देखो अटी पड़ी है कतार की कतार, मुनीम और गुमाश्ते बैठे बही के पन्ने उलट रहे हैं एक ओर मकान छिड़ा है एक ओर शालीशान मन्दिर में रुपया बरबाद हो रहे हैं माने बजाने वाले कायम आठ पहर घेरे हुए हैं रोज तबला ठनकता है बीच २ पण्डितों की का मतलब निकलता जाता है ५ ब चार होली के कमल में लग गया उग न काम ने सोख लिया दो दो चार चार हजार खुशामदी चुटकी बजाने वाले चाट गए पूंजी रकम निकल गई गड़्ढा पड़ने लगा चलता कार है कुछ मालूम नहीं पड़ता इत्तिफाक से कहीं हाथ न चला गाड़ी को पहिया लुढ़कती जाती थी रुक गई धम से अरराकर गिर पड़ी सा जो आप ने कितने औरों को चापट कर डाले, साहबो आपने कभी खयाल दौड़ाया है इस मुल्क में अब ऐसा कौन है चल ती चहूं कैलोघड़ काढ़ी लगा है अब चल ती है हिन्दोस्तानी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द पुकार २ कह रहे हैं इस देश की भाषा नहीं है तब हम लोग जो बोलते हैं सो यह कौन सी बोली है जो चलती हुई इस मुल्क में रायज है, धर्मशीलों का सदावर्त चलता है रोज चलता है दुनियां भर के आवारा मुफतखोरे आय जुड़ते हैं धर्मशील महाराज के अपव्यय को सीमा नहीं है, इस सब चलते हुए के बीच देखे कतिपय नादिहन्द मक्खीचूस सूमड़ों के सहारे हमारा पत्र अब के दिन चलता है

——o——

हिन्दुस्तान को तुर्त फाइदा पहुंचाने की सहज तद्वीर।

हिन्दी समाचार पत्र के एडिटरों को द्रव्य सम्बन्धी सहायता

देना जिस्से परे यह लोक पर लोक दोनों का सुधारने वाला दूसरा ऐसा कोई उत्तमोत्तम दान हई नहीं हमने सकल श्रुति स्मृति धर्म शास्त्र सब छान डाला ऐसा सद्धर्म कोई न पाया; पञ्चविंश महाजन राजे और इतर मनहूस बनियों को सांसत घर मे बन्द कर उनका सब धन छीन देश की भलाई के कामों मे लुटा देना विश्वास न आता हो एक बार करके देखलो नई रोशनी वाले पकड़ २ फास खुलवा दिये जांय जिस्से कोई २ अंशमे जो वे बहक से गए हैं दुरुस्त हो सीधी राह पर चलने लगें; पुराने बुड्ढों को इकट्ठा कर एक करावे मे उनका अचार छोड़ दिया जाय अथवा बरेली या बनारस के ल्युनाटिक असीलम मे वे रख दिये जांय जिस्से वहीं बैठे २ मन भावे सो बर्राया करें नये लोगों को तो अपनी नमूने से चौपट न करेंगे; सिविलियन साहबान हब्श के मुल्क मे भेजवा दिये जांय जिस्से वहां कुछ दिनों रहने से रङ्ग उनका भी तव दोख को काला पड़ जाय तब तो काले लोगों को देख न भड़कें गे; इङ्गलिशम्यान और पायोनियर प्रभृति अंगरेजी अखबारों की जीभ सी दी जाय जिस्से हम लोगों के निस्बत बदख्वाही का कलमा जो उनके मुंह से जब तब निकलता है सो न निकालें; हिन्दुस्तानियों की आंख फोड़ दी जाय और छोटे २ बच्चों का ब्याह करते हैं करैं इसे क्या पड़ी है कि उन्हे उनको बेहूदगी से बाज रक्खें पर ब्याह कर वह आंख का सुख जिस्के लिये वे मर रहे हैं सो तो न देखने पावेंगे इत्यादि कितनी तदबीरें हैं तुम करते चलो हम बताते चलें।

—— ——

पण्डित चतुर्भुज और स्वामी दयानन्द।

यह पण्डित चतुर्भुज वर्षंसे एक बार यहां माघमेला के दिनों में आय दयानन्द के विरुद्ध अपने मन की जो कुछ चाहते हैं बक भिक जाते हैं चाहो उसका कुछ असर हो या नहो कोई समझदार उनकी बात पर कान दे या न दे पर ये व्यर्थ की टांय २ करने से नहीं चूकते सो क्यों अवश्य इसमें चतुर्भुज का कोई गुप्त मतलब है कहावत है (घटंभिन्द्यात्पटंछिन्द्यात् कुर्य्याद्रासभरोहणं। येनकेनप्रकारेण प्रसिद्धःपुरुषोभवेत्) यह तो प्रसिद्ध बात है कि चतुर्भुज में दयानन्द की सी विद्या नहीं है तब ये अपने को किस तरह संसार में उजागर कर रोटी कमा खांय; कुछ न था यही एक युक्ति सूझ गई कि हर एक पुराने ढंग के छोटे मोटे रजवाड़ों में प्रवेश पाने की यह बहुत अच्छी हिकमत है; ये अपने को राज पौराणिक कह कर प्रसिद्ध किये हैं पर पूछना चाहिये कि यह पण्डित राजकीय उपाधि आपको किसने दी है अज्ञापितगुणतांयाति स्वयंविख्यापयन्गुणान्। दूसरे यह की जहां कहीं पहुंचे दस बीस धूर्त ब्राह्मणों को मिलाय सौ पचास आदमियों का कहीं पर इकट्ठा कर झूठा गाल घंघोटा कर कराय चम्पत हुए; इन दिनों के अशिक्षित अल्पज्ञ ब्राह्मणों ने अब हिन्दू मत के कायम रखने की यही युक्ति सीख लिया है कि न कुछ विद्या का काम है न मऊर या लियाकत चाहिये बस इसी तरह धूर्तता के साथ गाल घंघोटा कर कराय प्रजा की आंख में धूर झोंकते जांय और हिन्दू धर्म की असलीयत को इसी तरह पर छिपाते हुए सब मानता मूर्ख दीन दीन प्रजा का

शिकार कर २ मारते खाते रहैं सो अब इस उन्नीसवीं शताब्दी यह बात चलने वाली नहीं है पढ़े लिखे लोगों का किसी तरह चतुर्भुज की सी वे सिर पैर की बातों से श्रद्धा नहीं हो सक्ती; क्या बनारस या रीवां के दो एक पुराने ढंग के राजाओं ने चतुर्भुज को अपने दरबार में आने दिया इतने ही से बस थे राज पौराणिक हो गये झींगुर और मचके वाली मसल; हमको दयानन्द से कुछ प्रयोजन नहीं न हम सर्वांश मे उनके मत के पोषक हैं न हमको किसी तरह का वास्ता उनसे है परन्तु इतना कहेंगे कि दयानन्द सहज सनसनधा एक फकीर आदमी है सच्चे जी से देश की भलाई चाहता है क्या भया जो कहीं २ पर कितनी बातों मे वह का हुआ है भरपूर करते बन नहीं पड़ता फिर भी उनकी जात से मुल्क को बहुत कुछ लाभ पहुंचा है; चतुर्भुज तथा इस समय के निर्विद्य ब्राह्मण सिवा अपना मतलब निकाल लेने के देश या जन पदको कौन सा लाभ पहुंचाते हैं जिसे सोच समझ हम अपनी पक्षपात शून्य अनुमति न प्रकाश करें।

—o—

कणाद दर्शन पूर्व प्रकाशितानन्तर

द्रव्य पदार्थ का निरूपण कर चुके अब गुण पदार्थ का निरूपण करते हैं गुण २४ हैं तद्यथा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, यत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म, और शब्द; लाल पीला नीला हरा सुफेद आदि रंग को रूप कहते हैं जिस वस्तु का कोई रूप नहीं है वह दृष्टि पथ मे नहीं आसक्ता; रूप ६ प्रकार के है कटु, तिक्त, कषाय, अम्ल लवण और मधुर, गन्ध दो प्रकार का है सुगन्धि और दुर्गन्धि; स्पर्श ३ प्रकार का है गरम ठंडा और अनुष्ण शीत अर्थात् न गरम न ठंडा; एकत्व द्वित्व त्रित्व आदि भेद से संख्या अनेक प्रकार की है; परिमाण ४ प्रकार का है स्थूल सूक्ष्म दीर्घ और ह्रस्व; जिस्के सहारे से "घट: पटात्पृथक्" अर्थात् घट पट से जुदा है ऐसा व्यवहार हो वह

पृथक्त्व है; दूरकी दो वस्तुओं का विभक्त होना और समीप की दो वस्तुओं का अविभक्त होना यथाक्रम संयोग और विभाग है; परत्व और अपरत्व देश और काल के भेद से दो प्रकार के हैं देश परत्व जैसा प्रयाग से काशी परे है देश अपरत्व जैसा पाटलिपुत्र से काशी निकट है कालकृत परत्व और अपरत्व यथाक्रम ज्येष्ठ और कनिष्ठ व्यवहार में लिया जाता है; बुद्धि ये तीन ज्ञान को मानते हैं जो दो प्रकार का है प्रमा और भ्रम जिसे जो जो गुण वा दोष हैं उन्हें निगुणात्मक समझना प्रमाण है भ्रम उसको कहते हैं जैसा पण्डित व्यक्ति को मूर्ख कहना और छिठहार को अच्छा, अनुभव और स्मरण भेद से बुद्धि भी दो प्रकार की है; सुख और दुःख की उत्पत्ति यथाक्रम धर्म और अधर्म से है सुख यावत् प्राणी मात्र को अभिमत है और दुःख किसी को नहीं; किसी वस्तु की अभिलाषा का नाम इच्छा है, जिसके होने से दुःख की सम्भावना हो और इष्ट साधन कुछ न हो वह द्वेष का कारण होता है जैसा तिग्मांशु की तीक्ष्ण किरणों से तप्त बालुकामय प्रदेश में मध्याह्न के समय यात्रा करना अत्यन्त क्लेशदायी है इस कारण ऐसी यात्रा से द्वेष होता है पर जो कहीं उस यात्रा में तत्काल सहस्र मुद्रा की प्राप्ति रूप इष्ट साधन हो तो वह यात्रा द्वेष का हेतु किसी तरह पर न होगी किन्तु अनेक लोग मनुष्य बड़े उत्साह से इसमें प्रवृत्त होंगे; किसी बात के करने की इच्छा को यत्न कहते हैं; अधः पतन के कारण को गुरुत्व कहते हैं जिस वस्तु में गुरुत्व नहीं होता वह नीचे नहीं गिर सकती; क्षरण का जो हेतु सो द्रवत्व है जो स्वाभाविक और नैमित्तिक भेद से दो प्रकार का है जलमें स्वाभाविक द्रवत्व रहता है जिसका द्रव होना किसी निमित्त से हो वह नैमित्तिक द्रवत्व कहलाता है जैसा सोना चांदी आदि धातु अग्नि के संयोग से द्रव हो जाती है; जिसका संयोग पाय अग्नि अधिक तर प्रज्वलित हो जाय वह स्नेह है; जिसके द्वारा पूर्वानुभूत पदार्थ का स्मरण हो सके उसे संस्कार कहते हैं; पुण्य आदि पद वाच्य शुभ अदृष्ट को धर्म कहते हैं; अशुभ अदृष्ट को अधर्म कहते हैं हिंसा आदि पाप कर्मों से इसकी उत्पत्ति है प्रायश्चित्त आदि से इसका नाश और नर्कादि अधोगति इसका परिणाम है; शब्द दो प्रकार के हैं वर्णात्मक और ध्वन्यात्मक कण्ठ तालु ओष्ठ दन्त मूर्द्धा से जो शब्द हो वह वर्णात्मक है जो स्वर और व्यञ्जन के भेद से दो प्रकार के हैं; ध्वन्यात्मक शब्द जैसा मृदङ्ग आदि वाद्य से उत्पन्न शब्द हैं.

क्रमशः ।

रूठे हुए को कैसे मनाना ?

जो अपना भाई रूठ गया हो तो उसे कैसे मनावे कैसे मनावे क्या उसके पास जाकर अपनी कहै उसकी सुने जो कोई मखुन अपने और उसके बीच आगया हो उसको जैसे बने सफाई कर डाले या तो अपना कुसूर उसे साबित करावे नहीं तो यह उसे जंचा दे कि तुम कुटिल क्रूर बिगाड़ने वालों के बहकाने में आय व्यर्थ ही को तिनिग उठे हो यह आप के अकिल की तारीफ है खैर इतने पर भाई मान जाय तो सब अच्छा ही अच्छा है क्योंकि इस पानी भरी खाल से चन्द रोज़ जिन्दगी में क्यों किसी को भला बुरा कह अपनी ओर से बिगाड़ना अब इस पर वह भाई न माने और सिकोर कर ताड़ी जाय तो करै क्या चाहा है, हम लोग तो इस बात का ठेका ले बैठे हैं कि जिस ओर जहां पर कुछ बिगाड़ देखेंगे उसके सुधरावट के लिये लिखेंगे पढ़ेंगे सुनेंगे अपने भर सक सब तरबीर करैंगे न हो लाचारी है जिन्हों ने हम से बुरा मान लिया है उन्हे चाहिये भर पूर इन साफ और न्याय को काम में लाय तब आगे चलें नहीं तो सिवाय पछताने के कुछ हाथ न लगेगा थोड़े से लोगों के बहकाने में आप हमारे मुसल्मान भाई हमसे रूठ गये हैं उन में जो सज्जन शिराफत की खूशबू से भरे भल मनसाहत के नशे में है बने हुए कान जन हैं उनसे हमारा अति नम्र निवेदन है कि उन पर लक्ष्य कर न हमने कभी कुछ लिखा है न ऐसे सूपात्रों को कभी अपनी ओर से बिगाड़ा चाहैं हमारा लक्ष्य केवल उन्ही पर है जो हम दीन हीन हिन्दूओं की जब तब व्यर्थ की डाह पर बस हो हर तरह से क्लेश पहुंचाया चाहते हैं इस्से उन शरीफों से हमारी विनती है कि वे नाराज न हों आगे उनकी इच्छा हमारा तो कहने मात्र का बस है।

—०—

माघ मेले का अन्त।

माघ मेला इस साल निर्विघ्न क्षेम कुशल से हो गया किसी तरह की बेइन्तजामी देखने सुनने में नहीं आई गवर्नमेन्ट गजट के रिज़ोल्यूशन के मुताबिक म्युनिसिपल कमिटी की राय से सब इन्तिज़ाम किया गया; यहां के कमिश्नर मि० क्विन्टन मेले के प्रेसिडेंट थे मि० पेटरसन और मि० विलसन नित्य मेले में आया करते थे और हर एक बात की जांच खूब मुस्तैदी के साथ किया करते थे किसी को किसी बात की शिकायत नहीं है सिवा प्रयागवालों के जिन बेचारों के लिये यही मसल हुई दिल्ली की कमाई चपर घटे में गमाई पारसाल के कुम्भ में जो कुछ जमा रक्खा था सो सब अब कि साल खो बहाय खुक्ख हो बैठे; मेला इस साल कुछ हुआ ही नहीं न दूर २ के यात्री आये तब इनको भरपूर आमदनी कहां से हो सक्ती है इतना भी न मिला कि ज़मीन का सरकारी महसूल चुकता कर देते कितनों को पास से देना पड़ा होगा हम नहीं समझते इसमें क्या कारण है कि मेले के सब बड़ इन्तिज़ामियों की शिकायतों का भरपूर इलाज हुआ परन्तु गरीब पण्डे बेचारों के लिए कुछ बोझ हलका न किया गया चाहो मेला हो या न हो यात्री आवें या न आवें ज़मीन का किराया लिया ही जाय यह सर्वथा अन्याय है; इस मेले में मुख्य जीविका इन्हीं लोगों की है और साल भर इसी आमदनी से अपना सब तरह का खर्च निकालते हैं और हिन्दू धर्म के अनुसार ये यहां के स्थान पति पूज्य हैं सो यही लोग सुख से गौण कर दिये गये, यात्री दुकानदार पेशेवाले सबों की इस नये इन्तिज़ाम में कुछ न कुछ फ़िकिर की गई पर प्रयागवाले वैसेही कोरे के कोरे रहि आया है मेले के अधिकारी इसपर अवश्य ध्यान देंगे।

अग्रिम मूल्य २।)
पश्चात ४)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabah.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाट्य, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Mar. 1883. Vol. V.] [No. 7.

प्रयाग फागुन कृष्ण ७ सं० १९३९ जि० ५ [संख्या ७

न घर के न घाट के।

हमारे हिन्दुस्तानी "नेटिव" न घर के हुए न घाट के; सख्त मेहनत कर पच २ मरे सब कुछ पढ़ा, लिखा, सब तरह की लियाकत और योग्यता हासिल की, जात छोड़ा पांत छोड़ा, लोग कुटुम्ब सब को छोड़ विलायत की बरफान हवा में बरसों वास कर सैकड़ों सख्तियां झेलीं, भाई बिरादरी से निकाल दिये गये अंगरेजी चाल चलने लगी, इन्हीं का सा

खाना उन्हीं का सा पहिनना उन्हीं की दिनरात सङ्ग सोहबत, बोल चाल रङ्ग ढङ्ग सब में अङ्गरेजी तरीका अख़्तियार किया पर इस समय किसी से कुछ काम न सरा अन्त को नेटिव ज्यू रि सडिक्शन बिल पास होने के समय जिनका हमे बड़ा विश्वास था और जिस अंगरेजी कौम को हम बड़ा उदार चित्त समझे हुए थे वही हमारे लिये कण्टक हुई शहद के धोखे हमे ज़हर का प्याला पिलाने पर तईं हुई; हमारे मे कालारङ्ग ऐसी बुराई है जो हमे सब ओर से रोके हुए है न "एज्यूकेशन" तालीम का असर हम से पहुंच सका है न सभ्यता सरा सकी है न नई रोशनी ने हमारे काले रङ्ग को रोशन किया लाचारी है, हम बेईमान हैं, फरेबी हैं जालसाज़ है, विषय लम्पट हैं, हमारे दीन ईमान का कुछ ठिकाना नही, न हम लोक निन्दा से डराते हैं न हमे परलोक की कुछ भय है, बरतन धोता ठठेरी को देकर दूसरा बदला लेते पर इस कुदरती रङ्ग को क्या करैं हजारों मन साबुन तो पोत डाला सौदागरों की दूकान की दूकान खाली कर दी तो भी देह का तिल भर चमड़ा भी तो गोरा न कर सके, रिपन महोदय आप क्यों ज़रासा इंसाफ को काम मे लाय अपने भाई बिरादरी की ओर से खड़े बनते हो; हा तो हमारे ही धन से धनी हमारेही बल से बली हमी को नीच खसोट परम सभ्य परम बुद्धिमान् परम भाग्यमान् बन बैठे वेही आज हमारी जड़ खोदने पर मुस्तैद हुए धन्य रे एहसान फरामोशी; यह हमारी ही सिधाई राज भक्ति और एक की जगह आधी ही खाय सन्तोष कर बैठ रहने का नतीजा है जो हर तरह पर हीन दीन बने हैं और गाली भी खाते हैं।

———o———

Mental food

मानसिक भोजन।

बिलायत के बड़े २ प्रसिद्ध

"जर्नलिस्ट" अखबार लिखने वाले निश्चय करते हैं जैसा मनुष्य का शरीर बिना खूराक के नहीं रह सक्ता वैसाही मन को भी आहार की दरकार है नित्य और हरदम मन कुछ सोचता या कोई नई बात के जानने को लालचाता रहता है; शरीर की तृप्ति पहुचाने वाले इने गिने दस बीस पचास तरह के व्यंजन निकाले गए हैं छह से छह ५६ प्रकार बस अन्त है; मन कितने तरह के भोजन चाहता है यह किसी मन वालेही से पूछना चाहिये जिस्के तृप्त करने को हजारों ५६ प्रकार समर्थ नहीं हैं; उनसे तो लाचार ही है जो बेमन के हैं मन रखकर उस्को नित्य नये २ भोजन से सन्तुष्ट रखने को अच्छे कारीगर रसोईदार की हाजत न हो यह कोई बात ही नहीं है; अफसोस हमारे लोगों में वैसे तरहदार मन वाले हई नहीं "ये गाहक करवीन के तुम लोग्ही करवीन" वह कारीगर रसोईदार हम लोग हैं मन वाले को ऐसे २ सरस व्यंजन पका कर खिलावें कि हाथ चाटा करे और जितना खाता जाय लालच बढ़ती रहै; पुराने लोगों ने शृङ्गार और आदि नौरस निश्चय किये हैं हम कहते हैं अच्छे सुकवि के लिए नौ क्या नौ हजार रस भी थोड़े हैं सुलेखकों के लेख के एक २ शब्द से नयो रस टपकते हैं पर रसिकों के लिये "करबीन" आंखों के लिए नहीं जिनके आगे हम अपनी जान भी निकाल कर रखदेंगे तो भी तेरी खातिर में कुछ नहीं" मासिक पत्रिकाएं उसी मन की लालच बुझाने को प्रचलित की जाती हैं जिनमें कटु तिक्त कषाय मधुर आदि छहो तरह के व्यंजन तैयार मदि पकाये पर से रहते हैं जो लिप्त रस का रसिक हो मन मानता खाकर अघाता रहै अब गैरत और शरम उन मुफ्तखोरों के लिए है जो इतनी मेहनत से बने हुए हमारे व्यंजनों को मुफ्त में खाया चाहते हैं।

अखण्ड कीर्ति और अचल यश बड़े भाग्य से मिलता है ॥

अखण्ड कीर्ति और अचल यश उस भाग्यवान पुण्यशील को प्राप्त होता है जो निःस्वार्थ शुद्ध मन से परमार्थ और परोपकार के काम में तत्पर रहता है चाहो कोई राजा हो चाहो बादशाह हो चाहो नबी हो पैगम्बर हो वा अवतार हो निःस्वार्थ परोपकार किए बिना यश की स्थिरता नहीं होती ; सच्ची वीरता तथा पुरुषार्थ तथा महत्व यही है जो परमार्थ में लगाया जाय और दीन दुखी प्रजा के दुःख मोचन और उनकी वांछा पूरन करने में कुछ उदारता दिखलाई जाय केवल प्रबल प्रताप और उग्र शासन होने से प्रशंसनीय राज्य पद नहीं होता ; विचार कर देखिये तो किसी २ पशु पक्षियों में भी ये बातें पाई जाती हैं व्याघ्र वन वन चारियों पर आतङ्ककारी और उग्र शासन होता है जिसे चाहता है मार डालता है कितनों को छोड़ भी देता है पक्षियों में बाज बहरी आदि कितने नभचरों को पकड़ के खा जाता है और छोटे २ पक्षी सब उससे डरते हैं ऐसाही कीड़े मकोड़ों में कितने जीव जन्तु उन पर बादशाहत करते हैं पर उनमें से कीर्तिमान और सुयश भागी आजतक किसी को न सुना ; जो कहिये बहुत से सिपाह या लशकर होने से सुयश मिलता है तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि टीड़ियों के समान किसी का सुविस्तीर्ण दल नहीं सुना जाता पर वह दल भी प्रजा के विनाश ही में कुशल होता है ; ऐसाही सब तरह जहां तक हो सके दिन रात केवल खज़ाना बढ़ाने में प्रवृत्त रहना और भांति २ के करके बोझ से प्रजा को सब तरह पीड़ा पहुंचाय धन का आकर्षण करना कीर्तिकारक नहीं है क्योंकि चोर बटमार दुराचारी लोग भी तो धन ही के संचय में अपने सारे गुप्त ढंग और तस्करी विद्या को चरितार्थ करते रहते हैं तो सिद्ध हुआ कि येनकेनप्रकारेण धन बटोर खज़ाना जोड़ना भी शुद्ध सत्कीर्ति को नहीं बढ़ा सका ; हम उन देश और प्रजाओं के भाग्य की कहां तक बड़ाई करें जहां निःस्वार्थ परोपकारी सत्पुरुषों का प्रादुर्भाव होता है चाहै वे किसी मत के आचार्य हों वा राजा हों जो ढूंढ़ २ लोगों के दुःख दुर्गति निवारण का अनेक उपाय करते रहते हैं ; इसी के मुकाबिले में उस देश के प्रजाओं के अभाग्य का सिन्धु का भी पारावार

नहीं है जिनकी चिल्लाहट और आर्तनाद को कोई सुनता भी नहीं न उनके दुख दर्द का किसी को खयाल होता है जैसा कि भारतवर्ष की सम्पूर्ण प्रजा रमान के आंसू मुंह ढक ढाढ़ रो रही है कि हमारी गो रूपा लक्ष्मी को मांसाहारी हिंसाविहारी अत्याचारी लोग निश्शेष किये देते हैं जिन गौओं को हमारे पुरखे लाखों वर्ष से पाल रक्खा है जिसकी हानि के कारण हम हत वीर्य निर्धन रोगी और अल्पायु होते जाते हैं पर हमारे रुदन को कोई नहीं सुनता; फिर हम पश्चिमोत्तर देश वासियों का यह विलाप २ लफटिनेंटो से चला आता है कि गरीब परवर राज काज में हिन्दी जारी कर दीजिए कि हम सब प्रजा को सब बातों में सुबीता हो पर आज तक किसी ने बात न पूछा कि यह अनाथ प्रजा क्यों रोती है इस अरण्य रोदन का आज तक अन्त नहीं हुआ, चिल्लाते २ गला फट गया आवाज़ धीमी पड़ती जाती है चित्त का उद्वेग घटताही नहीं हम समझते हैं कदाचित् यह विलाप ऐसी भाषा में मुख्य कर हिन्दी में होता है जिसके सुनने समझनेवाले वेही हैं जो उस रोने में शरीक हैं इसी से कुछ असर नहीं होता कदाचित यह रोदन फरंगी भाषा में होता और कोई देश का लाट फरंगी बच्चा सुन लेता तो कुछ अचरज न था कि न्याय से हमारे आंसू तो पोंछता पर उन्हें क्या पड़ी है कि अपना २ धन्धा छोड़ भूरी सत्कीर्ति बटोरैं सत्कीर्ति की सौदागरी और रुपया पैदा करने वाली सौदागरी कभी एक नहीं हो सकती यह तो समझदार लोगों की समझ और न्याय के आधीन था कि जिस काम से अपनी कुछ हानि नहीं है और लाखों किरोड़ों प्रजा का कल्याण और उपकार होता है तो उसके करने में क्यों सत्पुरुष लोग कोताही करें; हमको बड़ी शङ्का है कि श्रीमती प्रतापवती महारानी राजराजेश्वरी विक्टोरिया के राज्य प्रबन्ध के इतिहास में जो अनेक भाषा के कवियों के हाथ से लिखा जा रहा है कदाचित हम लोगों का यह हिन्दी का रोदन वैसाही न बना रहे जैसा शुभ्र चन्द्र मण्डल में श्यामल कलङ्क है कोई न कोई ऐतिहासिक विद्वान आप लिख देगा कि किरोड़ों प्रजा ने चिल्लाहट मचाई और प्रस्तुत गवर्नर को कुछ हानि भी न थी पर प्रजा का आंसू किसी ने न पोंछा; ये राजपुरुष शिरोमणि महाशयो आप लोगों का नियोग और स्थिति कुछ

भारतभूमि में इसी लिये है कि आप लोग सर्वदा भाव से परम्परा स्वामिनी का सुयश बढ़ाने वाला काम करें यह प्रजा का अश्रु मार्जन और महारानी के सुयश की रक्षा आपही लोगों के आधीन है इस लिए आप लोगों में दो चार और पुरुष इस काम पर लग्न हो जांय तो प्रजा का यह अरण्य रुदन सब तरह शांत हो सकता है और विजयिनी महारानी की सत्कीर्ति कथा में प्रतिष्ठमान यह अपवाद पहिलेही से दूर हो जाय; आप की अखण्ड प्रभु शक्ति के निकट यह बात शोभित नहीं होती कि प्रजा चारो ओर एक छोटी सी बात के लिए दोहाई मचावे और आप उसे न सुनें अथवा सुन के आना कानी करें और अपनी कृपा के कटाक्ष से अवलोकन न करें बस हमारे अविनय को क्षमा कर इसी यही दक्षिणा दीजिए कि अब इस विषय पर हम को ज़ियादह न लिखना पड़े।

———o———

आज कल किनकि ज़ियादती है

अमीर और राजाओं के दरबार में खुशामदकरे खुशामदियों की; ज्योतकरियों में सालों की; सिविलियन और यूरोशियन लोगों में ईर्षी धूर्तों की; डाकखाने और तारघरों के महकमे में कम पढ़ों की; अख़बार के ग्राहकों में नादिहन्दों की; बनियों में सूद खोरों की; अदालत में वकीलों की; अमलों में रिश्वत की; वैद्यों में नीमहकीमों की; दफ्तरों में आप्रेंटिस सिखने वालों की; ज़मीदारों में प्रजा पीड़कों की; बाज़ारों में विलायती चीज़ों की; रजवाड़ों में भौंना और नहुए निज़ामों की; हिन्दुओं की समाज में नाइत्तिफाकी की; अंगरेज़ों में स्वजाति पक्षपात की; सुशिक्षितों में नास्तिवाद की; हिन्दू मत में भिन्न २ सम्प्रदायों की; मारवाड़ियों में खूसटों की ज़ियादती है; महाजनों में नीची बुद्धि वालों की कसरत है, हमारी अशिक्षित समाज में बेहूदगी की कसरत है; हिं॰प्र॰ के लेख में थोथी फुटी की बातों की कसरत है।

रा॰ प्र॰ ला॰ डुमरांव॰

कभी हमारे दिन भी फिरेंगे।

सम्पादक महाशय कभी हमारे दिन भी फिरेंगे ; कभी इस भारत में भी सूर्य्योदय होगा; यहां की बांझ धरती भी कभी सुपुत्रों को जनेगी; अरे अभागे ऐसे समय तू रोने बैठा है देख हजारों नहालों से कहीं हिन्दुस्तानी हर साल बड़ा २ इमतीहान पास कर लम्बी चौड़ी उपाधियां और ऊंचे २ ओहदे पाते जाते हैं अब यह समय हसने का है रोने का नहीं; अजी हां साहब मैं भी समझता हूं हमारे सैकड़ों श्रीयुक्त व्यरिष्टरी आदि कितने तरह की बड़े २ इमतिहान पास कर अहल विलायती अब हजारों महीने मैं कमाते हैं तो फिर इससे क्या हमारा इनसे क्या बना और इस गारत भारत को उनसे क्या लाभ पहुंचा; आपही कहिये हमारे भाइयों में से ऐसा कौन अब तक हुआ है जो विलायत मे जाय कोई नई बात पैदा कर लौटा हो जिसकी चिरस्थायी कीर्ति का गान अन्य देश वाले गा रहे हों और कोई ऐसी करतूत कर दिखाया हो जिससे बाहर का रुपया यहां ढो लाया हो; अथवा अहस भारत से बहने वाला उस नदी के प्रवाह को रोक दिया हो जो अपनी वेग गामिनी धारा के साथ हमारी चंचला लक्ष्मी को बहाये लिये जाती है; हमारे ही देश की विद्या को अंगरेज चुरा ले गए उसी को हमने मर २ पच २ सीखी तो इसमें हमारी श्रेष्ठता क्या हुई और फिर अपने ही देश में आय उसने बड़ी २ तनखाहें फटकारा तो क्या सिद्धि भई स्तुति तो तब थी कि हिन्दुस्तानी विलायत के बड़े २ ओहदे पा कर विलायत का रुपया हिन्दुस्तान को लौटाते; आपही इसे उन्नति कहि कहिये कि हमारा ही रुपया हमसे नोच खसोट इकट्ठा किया गया अराब सुलकें उड़ाये नये फ़ेशन के पीछे हैरान रह एक २ के दस २ दे विलायत वालों को मालामाल कर दिया ; ताकि क्या

कहना अच्छी उन्नति हुई सभ्यता को नाक रखली।

महाशय हम हिन्दुस्तानियों की ऐसी अङ्गरेजी पढ़ने से लाभ क्या इस उन्नति का आप उन्नति कहिये जिस अभिमान का ठौर नहीं है; इतनी विद्या पढ़ी अन्त चाकर के चाकर बने रहे नौकरी न मिली तो भूखों मरे मक्खियां भिनकाया किये, बहुत सा रुपया कमाय सब सानन्द आमोद प्रमोद करने ही का नाम उन्नति है तो तुमने क्या उन्नति की हमारे देश मे अभी ऐसी २ रंडियां कीसों पड़ी हैं जिन्होने विलायत का नाम भी नही सुना है और ऐसी पण्डिता हैं कि पांच पांच सौ रुपया एक रात के नाच का लेती हैं कहिये इतना तो हमारे नौशिक्षित विलायत जाय अंगरेजों का जूठा खाय जूता पोंछ भी न कमा सके तिसपर यह ऐंठ; प्यारे पाठको इस अल्प सन्तोष और आत्मसुख रत हो जाने का कारण क्या है मैतो समझता हूं यह दोष इन मे दोही कारण से आगया है एक तो इनमे आत्म निर्भर selfdependence नहीं है दूसरे आठ दस वर्ष तक मूर्ख मा बहनो के बीच रह कर उनकी मूर्खता की बाते देख सुन एक प्रकार का ऐसा कुसंस्कार दृढ़ मूल हो जाता है जो युवा होने पर अनेक विद्याओं के पारङ्गत होने से भी दूर नहीं होता; दूसरे यह बाल्य विवाह हमारी सम्पूर्ण उन्नति पर कुल्हाड़ा चला रहा है जिसके सबब से आत्म निर्भर selfdependence इनमे आने ही नहीं पाता लड़कपने ही से कुटुम्ब पालन रूप जंजाल मे फस दिन रात नोन तेल की फिक्र मे व्यग्र रहते हैं समाज मे इज्जत के साथ अपनी बात बनाये किसी तरह निभते जांय सोई बहुत है देश की उन्नति गई भारमे; कितने लोगोंकी सम्मति है जब तक बड़े २ कारखाने हिन्दुस्तान मे न खोले जांयगे तब तक यहां का रुपया न बढ़ेगा पर मेरी छोटी सी बुद्धिमे

जाता है कि परिणाम इसका भी कुछ नहीं है एक पेंच बिगड़ा कि लाखों खाक में मिल गये जब पास विलायत फिर जाय और एक २ रेज़ी पुरज़ी फिर से खोल कर बनाये जांय तब ठीक हो; अथवा अङ्गरेज़ कह दें हम हिन्दुस्तानियों को कल न बनावेंगे तब तो लाखों क्या करोड़ें मिट्टी में मिल गये; इससे मैं समझता हूं देश की पूरी भलाई तभी होगी जब ऐसे २ कारखानों की नेव यहीं से उत्पन्न हो हमारे यहां के राजे महाराजे जो बारी कर एक बार दस पांच लाख रुपया दे डालें और उस रुपये से शिल्प विद्या का एक पाठशाला खोला जाय तो दसौ वर्ष में हम किसी के मोहताज न रहेंगे तब अलबत्ता कह सक्ते हैं कि भारत में सूर्योदय हुआ— भवदीय

—o—

नूतन चरित्र उपन्यास।

बाबू रतन चन्द प्लीडर हाईकोर्ट का लिखा हुआ।

१ अध्याय।

विषकाला और विवेक राम।

विवेक राम अपने मित्र दौलत राम के साथ हाथरस के रेलवेस्टेशन पर पहुंचे परन्तु वहां पहुंच मालूम किया कि दिल्ली की रेल तो खुल गई पर दो घंटे बाद एक दूसरी गाड़ी आवेगी उसी की इन्तिज़ारी में दोनों वहींके मकान पर जाकर बैठे; परन्तु दो घंटे का बीतना ऐसे ठौर जहां किसी तरह की कोई दिलचस्पी की बात न थी बड़ा कठिन था; विवेक राम ने अपने दोस्त दौलत राम से कहा यार अब यहां ये दो घंटे कैसे कटैं; हम खास देहली के रहने वाले हैं और हरदम अब से शौक अय्याशी नाच तमाशे खेल कूद हंसी ठठोली में बिताते हुए वक्त काटा चुके हैं घर से चलती बार इन्द्र मती को साथ लिये आये होते तो यह घंटा कैसे चैन से कटता; दौलत राम ने जवाब दिया जिस पर ईश्वर की कृपा है जिसका आप पर समझो सब पदार्थ हर एक जगह मिल सक्ते हैं आप कुछ फिकिर न कीजिये अभी आप कोई न कोई सामान दि

रागी का यहीं मेल देगा; इस गांव में बहुत बड़ी लड़कियों की एक पाठशाला है जिस्में कुल ज़िले भर की लड़कियां पढ़ने और काम सीखने को आती हैं परन्तु उस पाठशाले की पाठक स्त्री बड़ी चिड़चिड़ही और सख़्त मिजाज़ है अपने मकान की पास से किसी मर्द को कभी निकलने भी नहीं देती।

विवेक राम की तबियत उस ओर मिज़ाबल ही राग़िब हुई पूछने लगा वह स्त्री जो उस पाठशाले की अधिष्ठात्री है क्या काम करती है उसका हाल कुछ बताओ और वहां क्या २ पढ़ाया जाता है और क्या २ काम सिखलाया जाता है क्या फीस देनी होती है और क्या खुराक की बाबत खर्च पड़ता है? दौलत राम ने कहा मैं आप के इन प्रश्नों का उत्तर क्योंकर दे सक्ता हूं यदि आप चाहें तो आपी खुद चल कर उस स्त्री से पूछ लें मेरी उस मकान के पास आजतक कभी नहीं गया।

विवेक राम जो अति चतुर और स्त्रियों के सब गुन ढंग जानने में बड़ा प्रवीण था बोला मैं उस स्त्री से ज़रूर बात करूंगा और देखूंगा यहां कोई बात मेरी तबियत के माफिक मिल सक्ती है या नहीं; परन्तु यह गांव देह कालियों का है इस्से अच्छी गुन ढंग वाली स्त्रियां कहां जिस्के लिये मैं इतनी कोशिश करूं; इन लोगों में अकल और तमीज़ जो स्त्रियों में सब से बड़ा गुण है और जिस्के कारण वे हम लोगों का मन तुरन्त अपनी मूठी में कर लेती हैं कहां से आ सक्ता है।

दौलतराम जवाब देने को था कि इतने में दो स्त्रियां जो रेल पर सवार होने को उसी पाठशाला से निकली थीं आईं उनमें एक की उमर १६ वर्ष की और दूसरी की २० वर्ष की थी बड़ी स्त्री ने चपरासी को ४ पैसे देकर माल असबाब सब तुलवा दिया और दोनों एक निराले स्थान में जा बैठीं; विवेक राम ने जिस समय उस छोटी स्त्री को देखा तभी से उस्के मनमें काम की चिनगारी ने धुआं देना शुरू किया और यही उस्की इच्छा हुई कि किसी न किसी तरह इससे कुछ बात चीत करूं पर यह बात असम्भव थी क्योंकि देश रीति के अनुसार अनजनी आदमी जवान औरत से बात चीत नहीं कर सक्ता इस विचार से विवेक राम ने अपने मित्र दौलत राम से कहा कि कोई ऐसी तदबीर करो जिस्से इस मनोरमा से कुछ बात करने का मौका मिले; दौ-

लतराम जो इन बातों मे बड़ा धूर्त था टहलता २ उस बड़ी स्त्री के पास गया और पूछने लगा आप कहां जाओगी; उस बड़ी स्त्री ने जिसके पहिनाव से मालूम होता था कि वह चाकरानी थी उत्तर दिया मैं तो कहीं नहीं जाती हूं लेकिन (छोटी स्त्री की ओर इशारा कर) यह बेटी दिल्ली को जायगी इसे मैं सवार कराने को आई हूं; दौलतराम ने फिर पूछा यह किसकी बेटी है यहां कैसे आई और अकेली रेल पर कैसे जायगी; वह उस मज़दूरनी से बातें कर रहा था पर कन अखियों से दृष्टि उसी छोटी स्त्री की ओर लगी थी; जिस समय ये दोनों मनुष्य उसकी ओर देख रहे थे उस समय वह स्त्री नीची गरदन किये धरती की ओर तक ती थी और उसको कुछ भी उनके खराब बुराई का हाल नहीं मालूम हुआ। मज़दूरनी ने कहा यह दीवान सिंह सूबेदार की बेटी है यहां हमारी पाठशाला मे सिलाई का काम सीखने को आई है अब उसके भाई ने दिल्ली को जल्द बुलाया है सो मैं यहां इसे सवार कराने को आई हूं यही मेरी मालकिन की आज्ञा है और इसका हाल मे कुछ नहीं जानती; दौलत राम ने एक रुपया उस चाकरानी को दिया कि वह किसी तरह विवेक राम की दो बातें उससे करादे; रुपया देखतेही उसकी तिउरी बदल गई और लाल पीली आंख कर रेल के चपरासी को पुकारा; वे दोनों जिन्हों ने दिल्ली की मज़दूरिन की यह इमानदारी कभी ख्वाब मे भी न देखी थी इसलिए अपना मतलब इसी तरह रुपये देकर निकालते थे घबरा गये और ढाढस बांध उस मज़दूरनी से कहा आप खफा क्यों होती हो मज़दूरिनी ने जवाब दिया तुम आमीरों को भले मानुस नहीं जो मुझे रुपये का लालच दे मेरे धरम से मुझे डिगाया चाहते हो और तुम दोनो यहां से टल जाओ नहीं तो चपरासी को बुला तुम्हारी सब कलई खोल दूंगी।

ये दोनों अपना सा मुंह लिये कान पूंछ दबाय वहां से चले आये पर विवेकराम का जी उस छोटी स्त्री मे ऐसा फंस गया कि वह किसी तरह उसके चित्त से नहीं उतरती थी और जब तक बैठा रहा उसी की ओर टक टकी लगाए था; यद्यपि दौलतराम ने बहुत समझाया परन्तु प्रीति की रीतिही निराली है जहां एक बार जी मे जगह कर लिया कठिन यत्न से फिर उखाड़े नहीं उखड़ती दौल

तराम का समझाना बुझाना कुछ कार
गर न हुआ ; जिस समय दौलत राम
मजदूरनी से बातें कर रहा था वह लड़
की गरदन निहुराये २ थक गई तो विवे
कराम की ओर एक बार देखा था वह
उस समय सांचेका ढाला सा इसका दम
कता हुआ चेहरा एक बार देख लिया
था काम की चिनगारी जो पहले ही से
धूआं दे रही थी उस समय से तो मानो
धधक उठी ; दोनों लौट कर जब अपनी
जगह में आये तो विवेकराम ने दौल
तराम से कहा निश्चै उस लड़की ने
मुझपर जादू कर दिया जो मेरे जी में
उसकी ओर से इतनी प्रीति बढ़ गई है
कि बिना उसके मिले मेरा काम तमाम
हुआ चाहता है ।

थोड़ी देर पीछे रैल का घंटा बजा सब
लोग अपनी अपनी गठरी मोटरी ले स
वार होने पर मुस्तैद हुए उस वक्त दौल
तरामने सलाह की कि हम तुम दोनों इ
सके साथ गाड़ी के एकही कमरे में बैठें त
ब रास्ते में इससे बात चीत करने का अ
च्छा मौका हाथ आ जायगा। इसका पता
ठिकाना सब पूछ रक्खेंगे देहली पहुंचने
पर तो फिर क्या जो चाहेंगे सब हो
जायगा ; वह मजदूरिनी सिर्फ रैल तक
पहुंचाने को आई थी एक कमरे में अके
ली उसको बैठाय उसका सब माल असबा
ब उसके सुपुर्द कर वहां से चली गई, ये
दोनों भी जब रैल चलने पर हुई झट
दौड़ कर उसी गाड़ी पर जा बैठे और
रैल चल दी ·   क्रमशः ·

अब हम न रहेंगे ।

काले लोगों को हमारा मुकद्दमा
फैसल करने का अधिकार न मि
ले नहीं तो हम न रहेंगे, मान जा
इये साहब मान जाइये; नहीं जो
हम नहीं माननेके अब हम न रहें
गे हम अपना सब डेरा डंडा उ
ठाय सीधे इङ्गलेंड सिधारते हैं ;
अब ये हिन्दुस्तानी हर एक उमदा
नफीस चीजों के लिये झंकते र
ह जांयगे ; अब न इन्हें उमदी से
उमदी घड़ियां मिलेंगी, न उमदा २
शराब मयस्सर होगी, न मैनचेस्ट
र का कपड़ा हाथ लगेगा न कल
कत्ते के टौनहाल में गाली देने वा
ले जुड़ेंगे देसी लोगों को हमारा
गुलाम बनादो हिन्दुस्तानी अख
बारों का मुहबन्द करदो; पिलही
रोग वाले नेटिवों का एकही घूंस

से हमें मालामाल करते हो ; बाजार की चीज़ें हमें मुफ्त मिला करें ; हुजूर कहने वाले हमारी खुट को बजाया करें ; राजा साहब से खुशामदी हमें मिले; नहीं तो हम न रहेंगे; फिर हिन्दुस्तान का रुपया इंगलैंड को कौन ढोवे जायगा; पायोनियर और इंगलिशम्यान को कौन मदद देगा ; समझ रखिये हमारे जाने से सब बिगड़ता है। रा० प्र० ला०

स्कूलों में आत्मशासन की कारर्वाई शुरू हो गई।

पहली मार्च से स्कूलों में आत्मशासन की कारर्वाई शुरू हो गई अब से सब कागजात केवल कमेटी के पास होंगे और वहीं रुपये की रसीद आदि भेजी जायगी पिछले महीने में जो कारर्वाई हुई उसके देखने से तो कोई बात अभी यथावस्थित नहीं लखती, गवर्नमेन्ट की राय है कि जितना खर्च स्कूलों का है सब कमेटी से मिले कोई हेडमास्टर अपने दस्तखत से कुछ भी न मंगा सके इससे यह बात सिद्ध हुई कि अब से हेडमास्टर गजटेड और नान गजटेड दोनों एक से हो गये इतना भेद अलबत्ता रहा (चाहो यह भेद आगे को रहे या न रहे अथवा भूल से हुआ हो हम कुछ नहीं कह सके) कि गजटेड हेड मास्टर ने अपनी तनखाह का बिल खज़ाने में भेज कर रुपये मंगा लिया और बाकी लोगों का बिल कमेटी के पास होकर लोगों को तनखाहें मिलीं पीछे से यह भी हुक्म आया कि वह सब बिल इन्सपिक्टर के यहां कौंटर सिगनेचर के लिये आया करें इसका तात्पर्य कुछ नहीं खुलता जब इन्सपिक्टर को रुपये से कुछ सम्बन्ध नहीं तो उनके दस्तखत भी व्यर्थ हैं इस कारर्वाई से इतना नुकसान अलबत्ता होगा कि लोगों की तनखाह अब देर से मिला करेगी आश्चर्य इतना ही है कि गजटेड हेडमास्टर अपनी तनखाह अपनी खास

ज़िम्मा दारी से ले सक्ता है तो अपने मातहतों की तनखाह लेना अब तक रहा क्यों नहीं मंगा सक्ता ? यदि सरिश्ते तालीम के सेक्रेटरी को शक हो कि कोई ज़ियादह रुपए न मगाले तो डइरेक्टर या इनस्पेक्टर के यहां से लोगों के नाम और उनके तनखाह की फिहरिस्त मंगाले ऐसा होने से किसी को कुछ क्लेश न पहुंचेगा और आत्मशासन का सब लोग धन्यवाद करेंगे।

मिडिल क्लास की परीक्षा का खराब नतीजा।

मिडिल क्लास वर्नेक्यूलर की परीक्षा का परिणाम इस वर्ष बहुत ही बुरा हुआ प्राय: १४०० विद्यार्थियों में केवल आठवें हिस्से के उत्तीर्ण हुए अधिकांश उनमें के हिसाब के सवाल में नाकामयाब हुए ; यह तो हम पहलेही लिख चुके हैं कि हिसाब के सवाल इस परीक्षा में जो लड़के शरीक रहे हैं उनके वित्त के बाहर थे और जब तक यही परिपाटी परीक्षा की रहैगी बहुत कम लड़के उत्तीर्ण हुआ करेंगे ; परीक्षक लोग अङ्गरेजी किताबों से सवाल देते हैं और अपनी योग्यता का सर्वस्व उन्ही प्रश्नों से प्रगट कर दिखाते हैं हिन्दी या उर्दू में अभी वैसी पुस्तकें हैं नहीं न दिहाती मदर्सों के अध्यापक १० या १२ से अधिक तनखाह के होते हैं तब लड़कों का इसमें कौन सा कुसूर कहा जाय जो ऐसे कठिन प्रश्नों का उत्तर वे न लिख सकें ; सच तो यों है कि इस मिडिलक्लास की परीक्षा से अङ्गरेजी पढ़ने वालों की बड़ी हानि पहुंच रही है इतिहास भूगोल और हिसाब सब देश भाषा में पढ़ाये जाते हैं इससे अङ्गरेजी की लियाकत अब लड़कों की बहुत कम होने लगी है देश भाषा में उमदा पुस्तकों के न रहने से भूगोल इतिहास और गणित सब में वे कच्चे रह जाते हैं और यह कचाहट उनकी इनट्रेंस आदि इमतिहान में आगे को

बहुत अख़र आती है या तो उन्हें एक बारगी कड़ी मेहनत करना पड़ता है नहीं तो दो एक बार नाकामयाब हो तब उत्तीर्ण होते हैं; श्रीमान लायल साहब जो अब तक प्रजा के सुख की चिन्ता में रहे हैं और आगे भी रहेंगे शिक्षा विभाग से इन बुराइयों को दूर कर हमें अवश्य अनुगृहीत करेंगे; सुगम उपाय लड़कों की कचाहट दूर होने की यह है कि देशभाषा में और अधिक अच्छी २ पुस्तकें बनवाई जांय जैसा सर विलियम म्यूर के समय बनवाई गई थीं और वे पुस्तकें देहाती मदर्सों में जारी कर दी जांय और अधिक तनखाह वाले अच्छे पढ़े लिखे अध्यापक नियत किये जांय तब किसी को ये शिकायतें न रहेंगी।

अक्षपाददर्शन।

इस दर्शन के प्रणेता महर्षि अक्षपाद वा गौतम हैं इसमें न्याय वा तर्क करने की युक्ति विशेष रूप से प्रतिपादित की गई है इस लिए इस दर्शन को न्याय वा तर्कशास्त्र कहते हैं इसमें अनुमान करने की रीति बहुत उत्तम है इसी इसका दूसरा नाम आन्वीक्षिकी विद्या भी है (प्रत्यक्षश्रवणानन्तरं ईक्षा मननं अन्वीक्षा तन्निर्वाहिका आन्वीक्षिकी) अर्थात आप्त तत्व के श्रवण के अनन्तर उसके अनुमान रूप मनन का निर्वाहक शास्त्र; इस न्याय शास्त्र की उपयोगिता प्रायः सब शास्त्रों में पड़ती है क्योंकि बिना तर्क के यथार्थ तात्पर्य ग्रहण किसी शास्त्र का न हीं हो सक्ता; भगवान् बृहस्पति ने कही भी है "जो कोई तर्कशास्त्र के अनुसार तात्पर्य का अनुसन्धान करता है वही शास्त्र के सत्यार्थ को जान कर धर्माधर्म के निर्णय में समर्थ हो सकता है केवल शास्त्र का अवलम्बन कर धर्म का निर्णय सर्वथा अयुक्तिक ठहरेगा" पक्षिल स्वामी ने कहा है "यह आन्वीक्षिकी विद्या सम्पूर्ण विद्या की प्रदीप स्वरूप है यावत् कर्मों की उपाय और निखिल धर्म की आश्रय है" गौतम प्रणीत सूत्रात्मक यह न्याय शास्त्र ५ अध्याय में विभक्त है और हर एक अध्याय के दो दो आह्निक हैं; प्रथम अध्याय के प्रथम आह्निक में प्रमाण आदि ९ पदार्थों का लक्षण है द्वितीय आह्निक में वाद को प्रारम्भ कर निग्रह स्थान प-

ग्रंथ ७ पदार्थों का लक्षण कहा है; द्वितीय अध्याय के पहले आह्निक में संशय परीक्षा और प्रत्यक्ष आदि ४ प्रमाण के अप्रमाणिक होने की शङ्का का निराकरण और दूसरे आह्निक में अर्थापत्ति आदि प्रमाण का अनुमान में अन्तर्भाव किया है; तीसरे अध्याय के पहले आह्निक में आत्मप्रभृति अर्थ पर्यन्त ४ प्रमेय पदार्थ की परीक्षा दूसरे में बुद्धि और मन की परीक्षा है; चौथे अध्याय के पहले आह्निक में प्रवृत्ति से अपवर्ग पर्यन्त ६ प्रमेय पदार्थों की परीक्षा और दूसरे में तत्त्व ज्ञान की परीक्षा है; पांचवें अध्याय के पहले आह्निक में जाति पदार्थ का विभाग और दूसरे में निग्रह स्थान के विभाग का निरूपण है; पदार्थ इनके मत में १६ हैं इसी से ये षोडश पदार्थवादी कहलाते हैं वैशेषिक वाले छः ही पदार्थ मानते हैं पर ये १६ मानते हैं तद्यथा॰ प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रह स्थान।

जिसके द्वारा सब वस्तु का निर्णय किया जाय वह प्रमाण पदार्थ है प्रमाण ४ प्रकार के हैं प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इन चारों के द्वारा यथाक्रम प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, और शाब्द बोध यह ४ प्रकार की प्रमिति पैदा होती है नेत्र आदि इन्द्रियों के द्वारा यथार्थ रूप से सकल वस्तु का जो ज्ञान उसे प्रत्यक्ष प्रमिति कहते हैं जो ६ प्रकार की है घ्राणज अर्थात नासिका द्वारा यथार्थ गन्ध और तद्गत सुगन्धि दुर्गन्धि का प्रत्यक्ष हो जाना घ्राणज प्रमिति है; रासन अर्थात रसना इन्द्रिय द्वारा खट्टा मीठा आदि रस और तद्गत मधुरत्व तिक्तत्व आदि जाति का प्रत्यक्ष हो जाना रासन प्रमिति है; चाक्षुष अर्थात नेत्र द्वारा नील पीत आदि रूप और नील पीत आदि रूप विशिष्ट द्रव्य नीलत्व पीतत्व जाति का प्रत्यक्ष होना चाक्षुष प्रमिति है; त्वाच अर्थात त्वचा के द्वारा शीत उष्ण आदि स्पर्श और तादृश स्पर्श विशिष्ट द्रव्य का प्रत्यक्ष होना त्वाच प्रमिति है श्रावण अर्थात कर्ण इन्द्रिय द्वारा शब्द और तद्गत षड्जत्व और ऋषभत्व आदि जाति का प्रत्यक्ष हो जाना श्रावण प्रमिति है मानस अर्थात मन के द्वारा सुख दुःख आदि आत्मा की वृत्ति और आकार को सुखत्व दुःखत्व आदि जाति का प्रत्यक्ष हो जाना मानस प्रमिति है।

व्याप्य पदार्थ को देख व्यापक पदार्थ का जो ज्ञान उसे अनुमिति कहते हैं ; जिस पदार्थ के रहते जो पदार्थ का अभाव न हो उसे उस पदार्थ का व्याप्य कहते हैं एवं जिस पदार्थ के न होते जो पदार्थ न हो उसे उस पदार्थ का व्यापक कहते हैं; जैसा वह्नि के बिना धूम नहीं रह सक्ता, यहां धूम वह्नि का व्याप्य हुआ क्योंकि धूम पदार्थ के रहते वह्नि पदार्थ का अभाव किसी तरह नहीं हो सक्ता एवं जिस स्थान में धूम रहैगा वहां वह्नि का अभाव नहीं होगा वहां वह्नि धूम का व्यापक हुआ क्योंकि वह्नि पदार्थ के न रहते धूम पदार्थ नहीं रह सक्ता; अनुमान ३ प्रकार के हैं पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट ; कारण देख कार्य के अनुमान को पूर्ववत अर्थात् कारण लिङ्गक अनुमान कहते हैं जैसा मेघ को उठते देख वृष्टि रूप कार्य का अनुमान होता है ; कार्य देख कारण के अनुमान को शेषवत् अर्थात् कार्य लिङ्गक अनुमान कहते हैं जैसा नदी की अत्यन्त वृद्धि रूप कार्य देख वृष्टि रूप कारण का अनुमान होता है ; कारण और कार्य भिन्न केवल व्याप्य वस्तु को देख जो अनुमिति हो उसे सामान्यतो दृष्ट अनुमान कहते हैं जैसा आकाश मण्डल में पूर्ण चन्द्र का उदय देख शुक्ल पक्ष का अनुमान होता है। शब्द द्वारा जिसका बोध हो उसे शाब्द कहते हैं सो दो प्रकार का है दृष्टार्थक और अदृष्टार्थक जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष सिद्ध है उसे दृष्टार्थक कहते हैं जैसा दूध और दधि हो हमारी पुष्टक अति उत्तम है इत्यादि ; जिसका अर्थ अदृष्ट है उसे अदृष्टार्थक शाब्द बोध कहते हैं जैसा यज्ञ करने से स्वर्ग होता है गङ्गा स्नान से पाप कटता है इत्यादि विधि वाक्य; श्रुतिस्मृति और आप्त वाक्य मूलक हमारे हिन्दूधर्म तथा क्रिस्ट आदि दूसरे धर्मों की बुनियाद यही शाब्द प्रमाण है; मिल हमिलटन आदि अंगरेज़ी दार्शनिक जो कट्टर नास्तिक हैं इस शाब्द प्रमाण को प्रमाण अङ्गीकार नहीं करते; प्रमेय पदार्थ १२ प्रकार के हैं तद्यथा आत्मा, शरीर इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दु:ख और अपवर्ग; आत्मा और शरीर का लक्षण इनके मत में भी वैसाही है जैसा कणाददर्शन में लिख आये हैं; इन्द्रिय दो प्रकार की हैं नासिका चक्षु कर्ण जिह्वा त्वचा ये ५ बहिरिन्द्रिय हैं अन्तरिन्द्रिय एक मात्र मन है;

रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द ये ५ अर्थ पदार्थ हैं रागद्वेष मोहादि दोष पदार्थ हैं; बार बार जनन मरण को प्रेत्यभाव कहते हैं; जिसके द्वारा जो बात निष्पन्न हो वह उसका फल है जैसा शास्त्रानुशीलन का फल ज्ञानोदय है; अत्यन्त दुःख निवृत्ति रूप मोक्ष को अपवर्ग कहते हैं; अनिश्चयात्मक ज्ञान संशय है; जिस विषय का उद्देश कर जो व्यक्ति जिस काम के करने में प्रवृत्त हो वह प्रयत्न है जैसा क्षुधा की शान्ति के लिये भवकारी सना आदि प्रयत्न है, प्रस्तुत विषय के दृढ़ करने को उसका उपन्यास किसी प्रसिद्ध स्थल से करना दृष्टान्त है जैसा "इस पर्वत में अग्नि है क्योंकि धुआं देख पड़ता है जहां २ धूम रहेगा वहां २ अग्नि अवश्य रहेगी जैसा पाकशाला में" यहां इस वाक्य में जैसा पाकशाला इतना अंश दृष्टान्त है। अनिश्चित विषय का शास्त्रानुसार निर्णय सिद्धान्त है जैसा क्या करने से मुक्ति होती है यह जिज्ञासा होने पर "तत्व ज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः" इत्यादि शास्त्र द्वारा तत्व ज्ञान से मुक्ति होती है यह निश्चय हुआ; सिद्धान्त ४ प्रकार के हैं॰ सर्वतंत्र, प्रतितंत्र, अधिकरण, और अभ्युपगम; जिस बात को सब शास्त्र और सब मत वाले स्वीकार करैं वह सर्वतंत्र सिद्धान्त है जैसा परधन हरण पर स्त्री संसर्ग मिथ्या वाद आदि बातें सर्वथा निषिद्ध हैं दीन पर दया सत्य बोलना परोपकार आदि सुकर्म सर्वथा विहित हैं यह सर्वतंत्र सिद्धान्त हुआ जो बात शास्त्रान्तर से सम्मत नहीं है उसे अपने शास्त्र से मान लेना प्रतितंत्र सिद्धान्त है जैसा वैशेषिक वाले विशेष पदार्थ मानते हैं यद्यपि यह विशेष पदार्थ शास्त्रान्तर से सम्मत नहीं है, एक बात के स्वीकार से दूसरी बात का स्वीकार आपही सिद्ध हो जाय उसे अधिकरण सिद्धान्त कहते हैं जैसा यह बात मान लेने से कि ईश्वर जगत का कर्ता है दूसरी बात इसे अवश्य माननी पड़ेगी कि ईश्वर में जगत के पैदा करने की क्षमता है; एक बात को साफ २ न कह प्रकारान्तर से उसे मान लेना अभ्युपगम सिद्धान्त है जैसा ईश्वर है या नहीं इसे बिना स्पष्ट किये यह मान लेना कि जगत ईश्वर निर्मित है इससे ईश्वर का होना सर्वथा सिद्ध हुआ। विचाराङ्ग वाक्य विशेष को अवयव कहते हैं जो पांच तरह का है प्रतिज्ञा, उपन्यास हेतु उदाहरण, उपनयन, निगमन, जिस बात

को सिद्ध करना हो उसके उपन्यास को प्रतिज्ञा कहते हैं जैसा पर्वत में वन्हि के साधन निमित्त "पर्वतोवन्हिमान् कुतः धूमात्" पर्वत में अग्नि है इस लिए कि धूम है यहां "धूमात्" का उपन्यास हेतु है ; पर्वत में धूम रहने से अग्नि को रहने से इस शङ्का के दूर करने को "यो यो धूमवान् स सवन्हिमान्" अर्थात जहां जहां धूम है वहांही अग्नि है जैसा पाकशाला इत्यादि वाक्यों का प्रयोग उदाहरण है ; उदाहरण से अग्नि में धूम का व्याप्य उपनयन है जैसा "वन्हिव्याप्य धूमवांश्चायम्" अर्थात वन्हि व्याप्य धूमवान् यह पर्वत है ; प्रकृत वस्तु के साध्य के उपसंहार वाक्य को निगमन कहते हैं जैसा "तस्मात् वन्हिमान् पर्वतः" इस हेतु इस पर्वत में वन्हि है इत्यादि वाक्य । आपत्ति विशेष को तर्क कहते हैं। यथा "यद्ययं मनुष्यः स्यात्करचरणादिमान्स्यात्" यदि यह मनुष्य होता तो अवश्य इसके हाथ पांव आदि अङ्ग होते । यहां यदि ऐसा होता यह तर्क हुआ । हार जीत की इच्छा न रख केवल प्रकृत विषय के तत्व निर्णय को वादी प्रतिवादी के बीच जो विचार वह वाद है ; प्रकृत विषय के तत्व निर्णय पर कुछ ध्यान न दे वाद में जीतने की इच्छा से पर मत खण्डन और स्वमत स्थापनार्थ जो वादी प्रतिवादी में नानाडम्बर पूर्वक झूठो बकवाद वह जल्प है। अपने मत का स्थापन हो या न हो केवल दूसरे के मत के खण्डन को जो वाग्जाल का आरम्भ वह वितण्डा है ; प्रकृत विषय का वास्तविक साधन न होने पर भी आपाततः प्रकृत विषय का साधक जिसे जान पड़े उसे हेत्वाभास कहते हैं, वक्ता जिस अर्थ के तात्पर्य से जो शब्द का प्रयोग करे उस शब्द का वह अर्थ ग्रहण न कर विपरीत अर्थ की कल्पना कर मिथ्या दोष का जो आरोप वह छल है यथा "हरिप्रसाद अहं अश्नामि" हरि का प्रसाद हम खाते हैं हरि शब्द से वक्ता का तात्पर्य विष्णु अर्थ को त्याग हरि शब्द का अर्थ वानर कल्पना कर तुम वानर का उच्छिष्ट खाते हो तुम सब म्लेच्छ हो तुम्हारे साथ हम आहार विहार कभी न करेंगे छल हुआ ; इन्हीं षोडश पदार्थों के विशेष ज्ञान से आत्म तत्व का ज्ञान होता है अर्थात आत्मा शरीर आदि से अलग है यह स्पष्ट प्रगट हो जाता है सुतराम् शरीर आदि में आत्म बुद्धि रूप मिथ्या ज्ञान नहीं उपजता इस प्रकार राग द्वेष आदि दोष का कारण

स्वरूप मिथ्या ज्ञान के निवृत्त होने से
राग द्वेष जनित धर्माधर्म रूप कार्य की
भी जड़ कट जाती है जब कि धर्म अधर्म
नहीं फिर २ जनन मरण का मूल कारण
है तो जब वह स्वयं न रहा तब जनन
मरण कहां रह सका है और इसी दुःख
से छुटकारे ही का नाम मुक्ति है सिद्धान्त
यह कि महर्षि गौतम प्रकाशित इस
शास्त्र का सम्यक् अभ्यास मुक्ति साधन का
सर्वोत्तम मार्ग है ।

—o—

कुछ नहीं ।

हमारी बोल चाल में कुछ नहीं
यह कैसा सीधा सादा मोहाविरा
है जिसके कहने से न किसी तर
ह का तरद्दुद न सुनने से कुछ ए-
च पेंच; हम जिसे कहैं कुछ नहीं
उसे समझो सब कुछ; दो आदमी
एक जगह बैठे बात चीत कर र
हे हैं जिसमें संसार भर का सब स
लोबिदा गांठ डाला किसी ने आ
कर पूछा क्या जी क्या कर रहे हो
बोले कुछ नहीं; सब कुछ लें देवें
धरें कहैं सुनैं खांय पियें बोल चा
ल में पूछने पर कहैंगी कुछ नहीं ;
बाजार से चली आती हैं सद्दहा
चीजों का मोल तोल किया होगा
कितनी चीजें खरीद लाए रास्ते
में कोई दोस्त मिला पूछा क्या लाये
बोले कुछ नहीं ; इससे अकसर लोग
पूछ बैठते हैं इस महीने में क्या२
चोटीका मजमून लिखा पत्र का
क्या मूल्य पाया हम भी झट मन
और इसी अवाज से कह देते हैं कुछ
नहीं ; सोच२ नई उपज की गठीले
से गठीले आशय लिख कर तै
यार करो पढ़ने वाले इधर उधर
का दो एक पेज उलट पुलट पत्र
फेंक नाक भौं सिकोड़ कह बैठते
हैं कुछ नहीं है ; उस समय हमारे
कुढ़े हुए जी से पूछना चाहिए कि
उस कुछ नहीं कहने वाले पर इ
से क्या कुछ नहीं रंज और क्रोध
आता ; लड़का व्याहने गये इतना
दहेज पाया कि जर जेवर से घ
र भर गया भाई बिरादरी वाले
आय २ पूछने लगे कहो भाई स
मधियाने में कैसी खातिरदारी
हुई क्या २ दहेज पाया चिड़ चि
ड़हे समधी राम बोले कुछ नहीं
क्या कहें भूरापार उतारा ; इस

कुछ नहीं ने समाज मे यहां तक ज़ोर पकड़ लिया है कि ईश्वर जो इस दृश्यमान जगत सी प्रत्यक्ष है कि कोई इसका कर्ता धर्ता है सो भी यह तेरे लोगों से कहा जाता है इसका मूल कारण कुछ नहीं है यह संसार सदा से योंही चला आया है और चला जायगा।

—o—

क॰ व॰ सु॰ को क्यासूझा

राजा के मत के मण्डन मे क॰ व॰ सु ने एक पूर्ती लिखा है ये लिखते हैं जितने हिन्दुस्तानी अखबार हैं और अङ्गरेजी भी जिनके मालिक हिन्दुस्तानी हैं जो खोल कर राजासाहब को जो न हीं कहना सो कहरहे हैं और ईर्षा के धूम को जाज्वल्यमान कर रहे हैं—सिद्धान्त है "बहुभिर्न विरोद्धव्यम्" राजा क्यों ऐसी बात कर गुजरते हैं जो सब उन से चिढ़ उठते हैं एक के मुकाबिले मे बहुत लोग दोषी किसी तरह नहीं हो सक्ते, वास्तव मे राजा इसी लायक हैं कि इनको बुरी करतूत से उत्पन्न कलङ्क के गीत की शहनाई बजारकार गाई जाय; आगे फिर लिखा है—राजा साहब के व्यङ्ग और रसभरे गूढों का समझना सबका काम नहीं है—हां अलबत्ता ईर्षा लिये ऐसे भद्दीपन के साथ खुशामत का गूढ मर्म समझना सब का काम नहुआ सो क्या अचरज है कान पूछ कटाय बछड़ों मे दाखिल होने वाले क॰ व॰ सु॰ को ये गूढ़ व्यङ्ग अब कुछ २ समझ पड़ने लगे हैं—सुधा तू निश्चय समझ जिस भरोसे तू ने अपने लेख का सब रङ्ग ढङ्ग बदल राजाकी प्रशंसा हुई सो कभी होना नहीं है यह वह गुड़ नहीं है जिसे चीटें खांयगे राजा ऐसे कब के उदार हैं जो अपने निज द्रव्य से तेरी कुछ सहायता करेंगे न अब वह स्कूल के इन्स्पेक्टर रह गये कि शिफारिस कर थोड़ी बहुत कापियां सरकारी मदर्सों मे बिकवा देंगे तब अपना क्रम छोड़ नेनू की नाक बन कर किसी के कहने पर फिसल जाना व्यर्थ है

हम लोगों का मन्दादर तो इस सुधा की ओर से तभीसे हो गया जब से सुधा का प्रवर्तक रसिक शिरोमणि उस चन्द्र ने अपनी चांदनी इस पर से हटाय इसे घोर अन्धकार मे छोड़ दिया ; हा यह वही राजा हैं जो किसी समय इस सुधा के पूरे दुशमन हो इसको सत्यानाश मे मिलाने के लिये कोई बात नहीं छोड़ रक्खा जो अब इस समय प्रतिफल मे उनको सी तान मे तानपूरा मिला रही है—धिक्कातरताम्—शरम इस गीदड़ पन पर— राजा जी अब हम तुम्हें क्या कहें कलकत्ता के अखबार भारतमित्र और उचितवक्ता भरपूर चित्थाड़ तुम्हारी कर चुके अब और कुछ कहना केवल पिष्ट पेषण है ; इस सुधा को भी हमने तुम्हारे कहे लगाया केवल सुधाही पर क्या है कुल बनारस को हमने उसी खाते मे दर्ज कर लिया यही कारण है कि बनारस कालिज के सुशिक्षित वहां के रईस तथा इतर लोगों में और २ स्थानो की अपेक्षा बोदापन और भीरुता दिन २ बढ़ती जाती है आगरा अलीगढ़ आदि स्थानो मे जहां राजा की छाया भी नहीं पहुंची वहां कैसी उत्तेजना बढ़ रही है ; श्रीमान् लार्ड रिपन को ऐसा झूठा खुशामदी देश का पूरा शत्रु दूसरा कहे को मिलना है हमारे अभाग्य की पराकाष्ठा थी जो ऐसे आदमी दोवर्ष के लिए हम लोगों के प्रतिनिधि होकर कौंसिली किये गये खैर किसी तरह ये दो वर्ष बीतैं राजा जी से पिण्ड छूटे ।

—०—

बङ्गवासी से २४ मार्च
राजा शिवप्रसाद का गुणगान ।

प्रभू तुम कौन हो ?

धवलतुषार मण्डित उच्च हिम गिरि के शिखर देश से सागर गर्भ स्थ कुमारिका पर्यंन्त निर्जीव निष्पन्द जड़ भारत वासी पूछते हैं प्रभु तुम कौन हो ? बङ्गदेश के बङ्गाली बिहार के बिहारी पंजाब के पंजाबी उड़ीसा के उड़िया बम्बई के पारसी मंदराज के मदरासी सब भय और

विस्मय पूर्वक आर्त ध्वनि पूरित कण्ठ से एक मुंह हो पूछ रहे हैं "प्रभु तुम कौन हो"? प्रभु तुम कौन हो? तुम्हें हम नहीं चीन्ह सके तुम्हें बहुत कुछ छिलाया डोलाया और सब भांत खोटे खरे को परख चुके पर यह भी नहीं वह भी नहीं सिवा इस कहने के तुम्हें कुछ भी न पहचान सके; जिस पुण्य भूमि के पाद तल में पुण्यसलिला सरिद्वरा भागीरथी बहती हैं जहां के कङ्कर शिवशङ्कर समान हैं उस भुवन विख्यात वाराणसी में प्रभु सुनते हैं तुम्हारा आविर्भाव हुआ है; हे मायावी प्रभु तुम्हारी अनन्त और अपार माया की एक कणिका भी हजार सिर पटका पर न जान सके तो अब लाचार हो पूछते हैं। हे प्रभु तुम कौन हो? हे तारापुरग्रामाधिपते महाराज चेतसिंह के वंशधर तुम्हारे किस गुण से प्रसन्न हो तारापुर की ज़मींदारी तुम्हें दे डाला; हे राजन् निविड़ अन्धकारमय माया जाल का भेद कर हमें यह बतलाइये कि तुम्हारे ही समकक्ष अद्वितीय प्रतिभाशाली बिहार के इन्स्पेक्टर बाबू भूदेव मुकर्जी बहुत कुछ चेष्टा करने पर भी सि॰ आ॰ ई॰ ई॰ की उपाधि के सिवा राजा की पदवी क्यों न पा सके; तुम्हारे ही समान खुशामदी कलकत्ते के बाबुओं में जगदानन्द जिस राजा की उपाधि के लिए आज तक ललाय रहे हैं हज़ार २ यतन करने पर भी कृतकार्य न हो सके; असमय सेवक कष्टांटासपालको जो पदवी मयस्सर न हुई सैयद अहमद खां बहादुर को जो प्रतिष्ठा प्राप्त न हुई हे प्रभु तुमने अपने बुद्धि बलोदय से किस अंगरेज़ राज कर्मचारी के नयन युगल में धूर झोंक अपना हिमायती कर लिया कि उस उपाधि के पाने में कुछ भी प्रयास न करना पड़ा; हे प्रभो अब यह बतलाइये कि इस राजत्व उपाधि की प्राप्ति आप के "हृदय" का गुण है या "मस्तिष्क" का? प्रभु तुम्हारे गूढ़ रहस्य का मर्म भेद करने में असमर्थ और हत बुद्ध हो यह जिज्ञासा हमें हुई है कि प्रभु तुम कौन हो? प्रभो हरजाम स्ट्रॅची के समय आप की माया कहां बिलाय गई थी? क्यों ऐसा चूके कि बनारस से ढकेल कर आगरे बदल दिए गए? महापुरुष आप अपने जीवन चरित्र का पत्रा खोल कर हमें दिखाइये कि खुशामद परवश हो आपने किस २ स्थान से कौन २ खैरख्वाही किया है पंजाब के युद्ध में जब कि अंगरेज और सिक्ख लड़ रहे थे आप किस महा कर्म के साधन की दीक्षा ले बढ़ा गए थे सन ५७ की सिपाही म्यूटिनी के

घोर विप्लव में आपने क्या २ कारस्थाई की है? प्रभू तुम उत्तर पश्चिम के इलाके कारनाम हा किस गुण से बड़े लाट के दरबार में सहज प्रवेश पा गए हम तुम्हारे अलोकसामान्य अचिन्त्य हेतुक व्यापार को अनुमान भी नहीं जान सकते इस लिए घबड़ा कर पूछते हैं प्रभू तुम कौन हो? हे सर्व मायाविद महामते सतु शाफिस खादी अब तुम्हारी जीभ के आगे नाच रही हैं ऐसा न होता तो व्यवस्थापक सभा को अपने वागाडम्बर से चमत्कृत और आमोदित न कर सकते; हे सर्व सामर्थ्य युक्त आपने हम सब हिन्दुस्तानियों के लिए जो (sheep) भेड़ शब्द का प्रयोग किया इसका मर्म आप ही जान सकते हो अहो दीप सवावतस सकारा तुम्हारे चरणारविन्द में साष्टाङ्ग दण्डवत कर तुम्हारी इस असामान्य मनस्विता का पार न पाय पूछते हैं प्रभू तुम कौन हो? हे प्रभू तुमने अपनी वक्तृता से हमें अनेक नई २ बात सिखाई हमें अब तक ज्ञान न था कि तुम २५ किरोड़ भारतवासियों के प्रतिनिधि होकर व्यवस्थापक सभा को सुशोभित किए हो आज हमने जाना कि तुम रसातल गत भारत भूमि के एक मात्र उद्धार कर्ता हो अहा दीर्घाकारी वराह भगवान् आप व्यवस्थापक सभा में हमारे प्रतिनिधि स्वरूप हुए इस लिए "हम सब इस भाग्य पश्चिमोत्तर वासियों के दौर्भाग्य की सीमा नहीं है" तुम्हारे पूर्व पुरुष जगन्नाथ महतावराय भारतीय इतिहास में चिरस्थायी कीर्ति कर गए हैं अर्थात् एक जगत देश हितैषी जो देशी राजाओं के राज का मूलोत्पाटन कर अंगरेजी राज्य का बीज डालने के लिए क्लाइव को मुर्शिदाबाद में बुला भेजा उनमें एक जगन्नाथ भी थे आप उन्हीं जगन्नाथ के सुयोग्य वंशधर पैदा हुए; आप उस कुल के ऐसे कुलाङ्गार नहीं हो कि विदेशी लोगों के स्वार्थ रक्षा निमित्त ज्युरिस डिक्शन बिल के अनुकूल अपनी राय दे जगन्नाथ के निष्कलङ्क कुल में कलङ्क लगाते; हे तारापुर ग्रामाधिपते हे जगन्नाथ कुल कलङ्क हे स्वार्थ साधन निमित्त गौराङ्गभक्त तुम्हारे इतने २ गुणों का परिचय हमें मिला तौ भी तुम्हें न पहचान सके कि तुम कौन हो सो अब तुम अभ्यन्तर का किवाड़ खोल साफ २ कहो प्रभू तुम कौन हो?

अग्रिम मूल्य	२।)
पश्चात देने से	३।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुर्जन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या मैं जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st April 1883. Vol. V.] [No. 8.

प्रयाग चैत्र कृष्ण ७ सं० १९३९ जि० ५ [संख्या ८

भारत दुर्दशा नामक नाट्य रासक भारत भूषण श्री बाबू हरिश्चन्द्र लिखित "Indian fall" a dancing opera १८ प्रकार के उपरूपकों में यह नाट्य रासक भी एक उपरूपक है जो हाल के क्षत्रिय पत्रिका में मुद्रित हो प्रकाशित हुआ है; यह रूपक हास्य रस प्रधान होता है और बीच २ गान इस्में हर एक राग के अधिक होते हैं; और पात्र भी नाच कर आते हैं वे नृत्य भी कर-

ते हैं बाबू साहब ने इसे ६ दृश्यों-
मे रचा है यह नीलदेवी से भी
बहुत चढ़ बढ़ कर है इसके छठो
दृश्य उत्तमोत्तम हैं पर पाचवां
दृश्य तो इतना उत्तम है कि हम
कहां तक इसकी सराहना करें;
पञ्च भारत भूषण यदि अठारहो
उपरूपकों का ऐसाही एक २ न-
मूना बना डालते तो उन सबों
का एक बार फिर से उद्धार हो
जाता और हिन्दी के भण्डार मे
अनमोल रत्नो का संचय हो जा-
ता यह काम इन्हो के योग्य है
क्योंकि दूसरे किसी मे हम इस
बात की क्षमता नही देखते और
न इनके लिये यह कुछ दुष्कर है
केवल मन की लहर बहर होना
चाहिये।

भाषा दीपिका।

लखनऊ के एक आर्य समाजी
की बनाई हिन्दी मे गद्य पद्य सं-
ग्रह की एक उत्तम पुस्तक; इसके
२ भाग हैं पहले भाग मे एक प-
ण्डित और एक मुंशी की सम्वाद
मे उर्दू के ऐब और हिन्दी के गुण
अच्छी रीति पर प्रगट किये गये
हैं दूसरे मे बाबू हरिश्चन्द्र का
पद्य रचना मे एक लेक्चर है
जिसे बाबू साहब ने अपनी अनु
पम कवित्व शक्ति के कारण हम
लोगों के देखते २ एक घंटे मे सो
दोहे बना कर प्रयाग हिन्दी वर्द्ध-
नी सभा मे पढ़ा था; ये सब दोहे
एक बार हमारे पत्र मे छप चुके
हैं पर ग्रंथ कर्ता को न जानिये
क्या हानि थी कि इस बात को
स्वीकार नहीं किया यह भी हमा
रे उत्साह बढ़ाने की बहुत अच्छी
तदबीर है कि पत्र खरीद कर
पढ़ना एक ओर रहे जहीं से
मांग मूंग लोग स्वाद ले लेते हैं
और कोई विषय इसमे का कभी
उद्धृत कर किसी मौके से लिखें
गे तो हमारे पत्र का नाम तक
न देंगे; मूर्ख मण्डली जो हमारी
कुछ सहायता नहीं करती इसका
हमे कुछ मलाल नही है हम उन
मत्सरी महन्तों को क्या कहें जो
हिन्दी के परम पोषक अपने को

माने बैठे हैं और करतूत उनकी ऐसी देखी जाती है आर्य्य समाजियों मे इस दोष का सन्निपात अधिक देखा गया है स्वामी जी की हां मे हां न मिलावै वह उनके किसी काम का नहीं चाहो कैसाही गुणाढ्य क्यों न हो; तीसरे भाग मे हिन्दी की कुलाङ्गना और उर्दू की गणिका मान पद्य रचना मे एक रूपक बांधा गया है सो भी बहुत अच्छा है हिन्दी के रसिकों के लिये यह पुस्तक संग्रह के योग्य है।

मुद्राराक्षस।

विशाख दत्त के संस्कृत नाटक का अनुवाद बाबू हरिश्चन्द्र रचित; राजनीति की काटछांट दिखलाने को यह नाटक एकही है हिन्दुस्तान के अद्वितीय politician राजनीतिज्ञ चाणक्य की राजनीति कौशल का सब मर्म इस दृश्य काव्य के द्वारा साङ्गोपाङ्ग पूरी तरह पर प्रगट किया गया है बाबू साहब ने बड़े परिश्रम से भाषा भी इसकी ऐसी उत्तम और संस्कृत से जिसका यह अनुवाद है इतनी मिलती हुई लिखा है कि कदाचित् दूसरे किसी से असम्भव था; इसनाटक का विषय plot इतना कठिन और उलझियाउ है कि किसी नौसिखिया भाषा लेखक कृत अनुवाद होता तो और भी साधारण पाठकों को अरोचक और निरस लगता, सिवा अनुवाद के इसकी पूर्व पीठिका और footnote टिप्पणी मे ऐसी २ बातें लिख दी गई हैं जो antiquarian पुरावृत्त जानने वालों को लाभ का निचोड़ है बनारस लाइट प्रेस मे छापा गया है।

जमीने चमन गुल खिलाती है क्या क्या। बदलता है रङ्ग आसमां कैसे कैसे।

यह ज़माना हमेशा एक वज़ग पर कभी कायम नहीं रहता कल कुछ था आज कुछ है कल फिर कुछ और का तौर हो जायगा;

काल जिसे हम बहुत बुरा समझ-
ते थे और जिसका करना ऐब
और समाज तथा धर्म के विरुद्ध
था आज उसके लिये पछता रहे
हैं और दिलोजान से चाहते हैं
कि किसी तरह उसका प्रचार हो
कोई वह समय था जब कि यह
जाति पांति का फर्क समाज और
धर्म का एक प्रधान अङ्ग था ब-
ल्कि भारत वर्ष सब देशों में श्रेष्ठ
और परम पावन इसी लिये कह
लाया कि यहां चातुर्वर्ण्य का वि
वेक है और यहां के लोग बड़े
आचार विचार से रहते हैं आज
होते २ अब वही आचार विचार
की ढिलावट मूर्खता की पहचान
और सभ्य समाज में घृणित होग
ई और इस जाति पांति के झग
ड़ेही पर देश की कुल फजीहत
और सत्यानासी का दार मदार
आ लगा है लोग रोम२ से विला
यत जाने के लिए फड़क रहे हैं
और आचार प्रवर्तक पुरानी ऋषि
मुनि तथा बुड्ढों को जी से सरा
प दे रहे हैं कि किसी तरह इन
खसोमों को आंख मुदे हम इस
कैद और बन्धन से छुटकारा पाय
अपने मन की कर गुजरें; एक
वह समय था जब कि अकबर ने
भल २ चाहा कि विधवा विवाह
प्रचलित किया जाय और टोडर
मल आदि कई एक अकबर के
मुसाहिब जो अक्किल पेशवीनी
और सुधरावट के नमूने हो गए
इस बात पर मुस्तैद भी थे लल्लू
जगधर ने ऐसा एक पच्चड़ निका
ला कि करी कराई सब बात
नष्ट हो गई और समाज से लल्लू
को यहां तक प्रतिष्ठा हुई कि
सभी लोग उनके नाम से बिकते
हैं वरन ललुआने मेहरे चौधरों
की नाक हो रहे हैं; आज दिन
उसी लल्लू के नाम लोग झीखते
हैं और सैकड़ों बाल रंडायें दुःख
कर्षित हो उनके नाम पर उंगु
लियां फोड़ती हैं अब इस समय
मिलते तो तिल २ मास उनकी
गीध और चीलों के जियाफत में
जाती और हम भी पांच ऐसी
ठनकाते कि चांद टोया करते ;

अभी को हमारे देश वासी मद्य पान को ऐसी बुराई समझते थे कि सुरापान ५ महापातकों मे एक पातक माना गया था और ब्राह्मणो के लिये तो इसकी रुकावट इतनी सख्ती से की गई थी कि मदिरा से भीगी ठिकुरी भी भूल से पांव के तले आ जाय तो सचैल स्नान और चन्द्रायण व्रत करे तो शुद्ध हो; पीछे से वाम मार्ग के प्रचलित होने पर यह ५ मकार मे एक और गङ्गाजल से भी अधिक पवित्र समझा गया कट्टर वामियों का सिद्धान्त है कि मरती बार तुलसी सोना की जगह बिना मद्य मुंहमे रक्खे मरैं तो गती होन होगी खैर यह तो चालाक लोगों ने अपने मजे के लिये मजहब का एक आड़ निकाल लिया था इन दिनों की सुसभ्य मण्डली वामियों के उस मजहबी कैद को भी बेहूदगी समझा और खुला खुली सरेमजलिस बरमला ढालती है बल्कि अब तक इससे परहेज़ है पक्का सभ्य नहीं हुआ और न अभी रोशनी उसमें आई; एक समय था जब कि हमारे ब्राह्मण भाई सकल गुण गौरव पूर्ण हो भारत वर्ष के बुद्धि तत्व का सर्वस्व अपनी मूठी मे कर यहां की प्रजा को काठ की पुतली बनाय जैसा चाहा वैसा नाच उनसे नचाया हिन्दुओं को सिवा रोज़ २ गढ़हे मे गिराने के उनके बढ़ाने को कोई तदबीर न सोची अपना खातिर ख्वाह मतलब गांठने से अलबत्ता न चूके और अन्त को आप बिगड़े सो बिगड़े कुल हिन्दुस्तान को अपनी भिक्षा से खाक मे मिला दिया; वेही ब्राह्मण अब इस समय जैसा कंगाल और नीच हो गये हैं कि कोई दूसरा वर्ण इनके समान असभ्य मोहताज और हीन दीन नहीं है जितना नीचा काम सब इन्हीं के बांट मे पड़ गया है इस देश के और २ लोग उभड़ते जाते हैं पर इनका अधःपात दिन २ बढ़ता जाता है; एक वक्त यह भी

था कि ब्रिटेन का क्षुद्र टापू किसी गिनती में नहीं लिया जाता था वहां के लोग यहां तक असभ्य और लाचार थे कि जानवरों के चमड़े का कपड़ा पहना करते थे और उन्ही के मांस से ज्योंत्यों कर अपना पेट पाल लेते थे भेड़ियों से रक्षा करते थे और अपने देवतों को मनुष्य का बलि चढ़ाते थे वेही अब जगतीतल के ललाट मणि हो रहे हैं जिनके समान धनमान बुद्धिमान उद्यमी साहसी शूर वीर और सकल गुण मण्डित कोई नहीं है जिनकी भाषा समस्त विज्ञान दर्शन और साहित्य का भण्डार गृह बन रही है उदय से अस्त तक जिनका एकाधिपत्य है जिनके रोब से हम लोग थरथराते हैं जिनके एक blow मुष्टि प्रहार से मृत्यु बसती है उनके मुकाबिले में हम लोग कैसेही पढ़े लिखे सुयोग्य हों फिर भी कालेजित दासही कहलावेंगे ; विलायत को हम इस महा परिवर्तन का नमूना क्यों कहैं इस श्मसान भूमि भारत ही को क्यों इसका लक्ष्य न करें जो कभी सोने फूल फूला था दूसरे देश का कोई सौदागर या ताजिर जान पर खेल सैकड़ों सख्तियां झेल अकस्मात मन्दी और खुशनसीबी से यहां पहुंच जाता था वह मालामाल हो अपने सात पुश्त की रोटी यहां से कमा ले जाता था और जैसा इन दिनों यूरोप निवासी समझे जाते हैं वैसाही यहां के लोग दूर देशवालों से स्वर्गीय जन माने जाते थे यह देश जगत भर का शिक्षा गुरु था यहां की चाल चलन रीति नीति और भाषा सब को शिरोधार्य थी सो अब भर पूर पेट भरने के लिये भी लालायित हो रहा है ऐसे २ कितने नमूने इस महा परिवर्तन के हैं जिनको छोटी २ बातों का हम गाते रहैं तो एक तो यह लेख योंही नीरस है पढ़ने वाले और भी नाक भौं सिकोरेंगे इससे इस विषय पर हम मौनावलम्बन कर महा।

आस्तिकों की पदवी का अनुसरण करते उसी बड़े मालिक की मरजी पर छोड़ देते हैं जिसे भूरी भरे भरी ढरकावै सब इख़्तियार है।

बदनसीब को भलों से भी भलाई नही बदी रहती।

इसमें सन्देह नहीं हमारे ज़िले के मेजिसटरेट मि० पिटरसन बड़े सीधे कोमल और सरल चित्त हैं पर हिन्दुओं के हक़ में इनसे भी कोई नेकी न बन पड़ी मुसल्मान ओहदे दारों की कसरत एक तो योंही इस ज़िले मे थी इन्हों ने कई एक और बढ़ाये अब यहां ८ तहसीलदारों मे केवल दो हिन्दू रह गए बाक़ी सब मुसल्मान हैं नायब तहसील दार सिवा एक के कोई हिन्दू नहीं है सो भी बहुतों के दांतों चढ़ा है हमको लाला अजोध्या प्रसाद तहसीलदार के बदल जाने का बड़ा पछतावा है यद्यपि बनारस के कलक्टर पोरटर साहब ने इनको इस ज़िले से मांग कर बनारस को हुज़ूर तहसीली मे किया है पर हमको अपने ज़िले से ऐसे कार गुज़ार ओहदेदार के निकल जाने का अफसोस है और दूना अफ़सोस इस बात का है कि हिन्दू की संख्या कम थी एक मुसल्मान और बढ़ाए गए क्या किया जाय अब न्याय नही है।

नूतन चरित्र।

२ अध्याय—चलती रेल।

जब रेलचलदी चिन्तका ने सिर उठा कर देखा तो मालूम हुआ कि दो मनोहर युवा अच्छा सुथरा कपड़ा पहने गाड़ी के उसी कमरे में और बैठे हैं और आपस में कुछ बात चीत कर रहे हैं; परन्तु वे लोग ऐसी भाषा में बोलते थे कि जिसे वह बाला समझ नहीं सकती थी यद्यपि अकेली उसको दो जवान मर्दों का साथ बड़ा भयावन जान पड़ा पर गाड़ी चलती थी वहां से हट जाने को क्या उपाय कर सक्ती थी इस लिए अब मे यही ठाना की आगे के स्टेशन मे दूसरी गाड़ी पर सवार हो जाऊंगी; यह सोच एक किताब जिसे उसने पाठशाला मे पढ़ रक्खा था निकाल पढ़नेलगी

और अपनी आंख उस पर ऐसा गड़ोया कि उन दोनों ने ऐसा समझा कि हमारा सब प्रयत्न व्यर्थ हुआ वह तो सिर उठा कर देखती भी नहीं ; दौलतराम ने मन में सोचा कि ऐसे मौके पर इस मनमोहनी को अपनी ओर मुखातिब न कर सके तो कुल हुनर जो हमने इतने दिनों में दिल्ली के उस्तादों से सीख रक्खा है सब बे फाइदा हुआ ; विवेक राम की ओर इशारा कर बोला यार जो इस्से कुछ बात चीत किया चाहते हो तो जो तुम कहो तो करो थोड़ी सी धूर्त्तता तो करनी पड़ेगी पर यह तुम्हारी ओर खातिरखाह बज़ू हो जायगी ; विवेकराम ने कहा क्या ? इसने जवाब दिया मैं इसे छेड़ता हूं तुम इसकी तरफदारी कर मुझ से लड़ने को मुस्तैद हो जाना फिर मैं इस गाड़ी से उठ जाऊंगा तब यह अकेला पाय जरूर तुम से बोलेगी मैंने इस सज धज और निराले ढङ्ग की ऐसी को नहीं देखा कैसीही औरत हो मैं उसे उभाड़ने के फन में अपने को बड़ा उस्ताद समझता था पर इसके बारे में मेरी कोई कला न चली कि इसका कुछ भी इरादा टटोल सकते ; विवेकराम पहले तो दौलतराम के इस इरादे को बहुतही बुरा जाना पर पीछे से जब देखा कि कोई उपाय इस्से मेल पैदा करने को नहीं निकल सकती तब उसके कहने पर राजी हो गया ; यह सब बात चीत इन दोनों की एक ऐसी भाषा में हुई कि वह भोली भाली इसे कुछ भी न समझ सकी ; दौलतराम अपनी जगह से उठ उस स्त्री के सन्मुख की बेंच पर जा बैठा और टकटकी लगा कर गुस्ताखी से उसे घूरने लगा तो भी उस रमणी ने कुछ ध्यान न दे वरन घूंघट खींच लिया ; उसका मुखचन्द्र छिपा हुआ देख विवेकराम का मन चकोर अत्यन्तही उकताने लगा पर कुछ वस न था क्या करें ; उस रंगीली ने अपनी किताब का पढ़ना न छोड़ा और दृष्टि उसी किताब में लगाए रही ; जब दौलतराम ने देखा कि यह तदबीर भी खाली गई और उस मनोरमा की नजर ज़रा भी इसकी ओर न फिरी तब वह उसका घूंघट खोल हाथ पकड़ कहने लगा प्यारी मैं आप से पूछता हूं इस बे रहम किताब का नाम मुझे बता दीजिए जिसने आप के मन रूपी मीन को ऐसा जाल में फँसा रक्खा है कि हम लोगों को तुम से वार्त्तालाप का सुख नहीं प्राप्त करने देती है। स्त्री ने इतने पर भी झट

का है अपना हाथ छुड़ा लिया और चुप चाप बैठ रही ; दौलतराम इस तदबीर को कारगर होते न देख उसका घूंघट अपने हाथ से हटाकर बोला—प्यारी हमारे भाग क्या ऐसेही मन्द रहेंगे कि हम आप की सूरत भी न देख सकें—दौलतराम की इस ढिठाई पर उससे न रहा गया क्रोध से लाल आंख कर बोली तुम भले आदमी नहीं हो जो किसी की बहू बेटी को बुरी निगाह से देखते हो मैं तुम्हें इसका बड़ा दण्ड दिलाऊंगी अब तुम यहां से उठ जाओ नहीं अच्छा न होगा—उसकी ये बातें सुन विवेकराम बोल उठा—दौलतराम तुम मेरे परम प्रिय मित्र हो परन्तु इस समय की ढिठाई तुम्हारी मुझ से नहीं देखी जाती जब तक यह कुछ नहीं बोली थी मैं यही समझता था कि यह सब चोचले तुम्हारी ढिठाई इसे सोहाती है पर अब निश्चय हो गया कि इन बातों को यह पसन्द नहीं करती बस अब उचित है कि इन सब लुच्चपन की बातों से मुंह मोड़ो ; दौलतराम गुस्से में भर जबाब दिया और ऐसी सूरत बनाई जिस्से सच्चा गुस्सा उसके चेहरे से मालूम होने लगा—तुमसे हमारी दोस्ती है पर तुम हमारे मालिक नहीं हो इस लिये तुम्हारी बात मानना कुछ मुझ पर फर्ज़ नहीं है मैं इस औरत के साथ गुस्ताखी नहीं करता परन्तु हां मेरा जी इसकी सूरत देखने को ऐसा चाहता है कि मैं इसे अपनी आंख की पुतलियों में बैठा लूं इसी लिए ये बातें मैंने कही थी ; परमेश्वर की कसम मैं इसकी साथ गुस्ताखी हरगिज़ नहीं करता फिर उस स्त्री की ओर देख कर कहा—प्यारी मेरे ऊपर ज़रा भी रहम न करोगी क्या मुझे अपने हुस्न अदा का प्यासाही रक्खोगी ; विवेकराम ने फिर कहा तुम इस जगह से उठकर दूसरे कोने में बैठो किसी भले मानस की देखादेख दिक करना शराफत के बाहर है ; दौलतराम ने उत्तर दिया तुम को क्या ? हम यहां से कभी न उठेंगे क्या तुम्हारे दादा की यह गाड़ी है जो ऐसी हुकूमत दिखाते हो यह औरत क्या तुम्हारी कोई मा बहन है जो इसके लिए तुम मुझ से इस कदर लड़ने को तैयार हुए ; हमारी तुम्हारी जनम की दोस्ती इस एक औरत ना चीज़ के लिए बिगाड़े डालते हो। थोड़ी देर में यह तो यहां उठ कर चली जायगी पर फिर हमारा तुम्हारा मेल होना कठिन होगा ; विवेकराम ने उत्तर दिया तुम

मूर्ख और कमीने हो जो ऐसी सुशीला को दिक करते हो। ऐसे बदमाश आदमी से हम दोस्ती नहीं रक्खा चाहते बस अब तुम यहां से फौरन उठ जाओ नहीं तो हम तुम्हारी भली भांति गत करेंगे ; दौलतराम ने कहा तुम अपनी दाल रोटी की गत बनाओ हमारी क्या गत कर सकते हो। तुम्हारी इस धमकी से मैं नहीं उठ सकता ; विवेकराम ने गुस्से से दौलतराम की बांह पकड़ ली दोनों हाथा पाई करने लगे दौलतराम ने उस स्त्री से पुकार के कहा कि तेरे कारन हम दोनों में से एक का खून आज होता है ; इतने में विवेक राम ने उसे नीचे गिरा दिया और अपने हाथ से उसकी गरदन दबाई और वह मरा २ कह चिल्लाने लगा तब तो उस बाला ने घबड़ाकर विवेकराम की ओर प्यार से देख कर कहा आप मेरी खातिर से इसे अब छोड़ दीजिये यह अपने किये का फल पा चुका ; उस बाला की चितवन में निस्सन्देह कुछ जादू का असर था विवेकराम ने तुरन्त ही उसे छोड़ दिया और कहा इसे मैं जा कर पुलिस के हवाले करूंगा ; उस रमणी ने कहा अब इन सब बातों को भुला दीजिए क्योंकि अब इन बातों के बढ़ाने से मेरी बड़ी बदनामी है ; इतने में दूसरा स्टेशन आ पहुंचा दौलत राम ने अपनी गठरी हाथ में उठाई और वह वहां से उतर गया। जहां ऐसी सख्त दिल औरत हो उसके साथ हम नहीं बैठा चाहते ; जब वह चला गया विवेक राम ने उस स्त्री से पूछा यदि तुम अकेली ही बैठा चाहती हो तो हम भी दूसरी गाड़ी में चले जांय परन्तु खौफ यह है कि कहीं कोई दूसरा ऐसा ही बदमाश इस पर आ कर तुम्हें तंग न करे ; उसने घूंघट की ओट से जवाब दिया कि आप बड़े भले आदमी जान पड़ते हैं आप से मुझको कुछ डर नहीं है मैं आप की बड़ी एहसान मन्द हूं और सदा आप का गुन गाऊंगी ॥

अध्याय ३ चलती रेल ।

विवेकराम और चित्रकला दोनों उसी गाड़ी पर बैठे रहे और रेल चल दी वह स्त्री अपनी किताब में ध्यान लगाए चली जाती थी और वह अलग एक कोने में बैठा था लेकिन मन उसका उसी रमणी में चुभा था जब चित्रकला पढ़ते २ थक गई तो किताब बन्द कर रख दी तब विवेकराम ने पूछा ; जो आप गुस्ताखी न समझती हों तो बतलाइये आप का नाम

किन अफसरों को सुशोभित करता है कि सको बेटी हो यहां क्यों कर आना हुआ था—अब अकेली देहली को क्यों जाती हो—वहां कहां रहोगी और वहां आप क्या काम करोगी ? यह सब मैं बिन प्रयोजन नहीं पूछता वरन मैं भी वहीं का रहने वाला हूं—यदि आप कुलीन की लड़की हैं तो मैं चाहता हूं कि अपने घर की स्त्रियों से तुम्हारा मेल मिलाप करा दूं तुम्हारे चालचलन और सुभाव के न सूने से हमारे घराने की स्त्रियां भी सुशिक्षिता हो सदैव तुम्हारा धन्यवाद करती रहेंगी ; इस मेरे पूछने को गुस्ताखी आप समझती हों तो माफ कीजियेगा तुम कुलीन घराने की हो मैं भी कमीना नहीं इस कारण कोई बात नहीं ऐसी चाहता जो आप की इच्छाके विरुद्ध हो।

चित्र कला पहले तो कुछ हिचकिचाई पर पीछे से सोच समझ बोली- ऐ साहब मैं समझती हूं आप कुलीन घराने में पैदा हैं आपने मेरी ऐसे समय सहायता की जिसे मैं कभी न भूलूंगी; साहब मैं दीवान सिंह सूबेदार की बेटी हूं मेरे बाप गदर में एक पलटन के सूबेदार थे जब सब पलटन की पलटन बागी हो गई मेरे बाप उसे छोड़ अंगरेजों से आ मिले थोड़ी देर बाद उन बागियों ने पलटन के सब साहब लोगों को मार डाला उन्हो के साथ मेरे बाप की भी बड़ी गत की गई; वहां पर मेरे बापके किसी दुश्मन ने एक झूठी चिट्ठी पलटन वाले बागियों की ओर से लिख कर उसकी जेब में छोड़ दी जब मरे हुए लोगों की तलाशी की गई तो वह चिट्ठी निकली जिसके कारण मेरे बाप का मेल उन बागियों से पाया जाता था इस लिये सरकार ने हम लोगों को खाने तक को कुछ न दिया; मा मेरी पहलेही सुरधाम को सिधार चुकी थीं तो अब बाप के मरने पर मैं और मेरा भाई दोनो बेवारिस हो गए रिश्तेदारों ने हम लोगों को पहलेही से छोड़ दिया था बाप के उपरान्त तो वे लोग हम दोनो की सूरत तक देखना गवारा न कर सके इस तरह हम दोनों भाई बहन बिनदाम इस असार संसार में भांत २ की ऊंची नीची दशा के साथ टक्करें खाने को बच रहे; जब उस फौज के कर्नैल ने हमारा हाल सुना तो उन्हें बड़ी दया आई हमारे बाप ने एक बार लड़ाई में अपनी जान का खौफ न कर कर्नैल साहब को बचाया था वह बात साहब को इस समय याद आई और

हम दोनों को बुलाय अपनी गोद में बैठाय बहुत सा दिलासा दे प्यार के साथ बोले अभी तक तो तुम सूबेदार के औलाद थे पर अब आज से हमारे हुए यह कह साहब ने भाई को तो देहली के स्कूल के सिपुर्द किया और हमारे पढ़ाने और काम सिखाने आदि का सब खर्च १५ वर्ष तक के लिये अपने ऊपर ले इस बालिका पाठशाला मे भेज दिया; अब कर्नैल साहब लाहौर मे बहुत बीमार हैं उन्हों ने तार मे खबर मेरे भाई को दी है कि तुम दोनो भाई बहन तुरन्त आओ इस लिये मै देहली को जाती हूं वहां ष्टेशन पर मेरे भाई मुझे लेने को आए होंगे; आप को मै बड़ी ही एहसान मन्द हूं जो मुझे ऐसे बदमाश आदमी से बचा रक्खा। मेरा भाई जब इस बात को सुनेगा आपका बड़ाही धन्यवाद करेगा। विवेक राम इस स्त्री की अमृत वाणी रूपी कर्ण अञ्जलियों से पी निहाल हो गया और यही सोचने लगा कि मीठी बोली ही पूरा वशी करण मंत्र है देखो इसके वचनों के सुनने से मेरा मन कैसा मोहित हो गया मैने बहुतेरे शहर देखे पर ऐसी आज तक की अमृत सरीखी वाणी बोलने वाली स्त्री कहीं न पाया है ईश्वर जैसा मेरा मन इसकी ओर लग गया है वैसाही इसका चित भी मेरी ओर फिर; अब यह बेला मैभी थोड़ा सा अपना हाल तुमको सुनाता हूं मै हरदत्त दास जो बहादुर शाह के खजानची थे उनके खानदान से हूं औ देहली मे रहता हूं यदि आपको या आपके भाई को किसी बात की जरूरत हो तो मैं आप को सब तरह मदत करने को मुस्तैद हूं इतने मे बड़े गुल शोर की आवाज सुनाई दी चिक्कला घबड़ा कर पूछने लगी अजी साहब यह गुर शोर काहे का है; विवेक राम सिर खिड़की बाहर कर देखा तो मालूम हुआ कि एक दूसरी गाड़ी भी चली आती है यह अति व्याकुल हो बोला प्यारी अब हम दोनो का अन्त आ पहुंचा; यह दोनो रेल आपस मे लड़ जांयगी तब न जानिये हम लोगों के लिये क्या कयामत हो इस वास्ते मै बहुतही थोड़े अक्षरों मे अब अपना सब हाल सच्चा २ तुम्हे सुनाये देता हूं मै बड़ा बदमाश था परन्तु जब से आपको देखा सब बदमाशी भूल गया आपने मेरे चित्त मे ऐसा वास कर लिया कि तुम्हारी सूरत मेरे जी से एक पल को भी नहीं उतरती अब आप मुझे अपनी गुलामी

ने क़बूल करने का पक्का वादा करैं जिस्से मैं भी तो ठंडक से मरूं चित्र कला ने कहा यह समय ऐसी बातों का नहीं है आपको मैं न पूरी उम्मेद देती हूं न निरास करती हूं न बिना सलाह अपने भाई के कुछ कर सकी हूं ये बातें यह कह रही थी कि विवेक राज ने अपनी दोनो बाहैं उसकी गरदन मे डाल दी क्योंकी यह छूटने को हुई थी कि दोनो गाड़ियों मे बड़े जोर से टक्कर लगी· क्रमशः

जैमिनि दर्शन ।

महर्षि जैमिनि प्रणीत द्वादशाध्यायक यह दर्शन समस्त वेद का विचार स्वरूप है इसी लिये इसका मीमांसा यह अन्वर्थ क नाम है; वेद विहित मार्ग पर सुख पूर्वक चलने के लिये यह याथोय रथ सदृश और श्रुतिस्मृति का विरोध भञ्जक मध्यस्थ स्वरूप है जो कोई मीमांसा दर्शन का दर्शन न कर शास्त्ररूपी महार्णव मे कुधको सार धर्म को ग्राह किया चाहता हो उसे मूढ मानना चाहिये क्योंकि बिना मीमांसा शास्त्र की सहायता श्रुति वा स्मृति वाक्यों के तात्पर्यार्थ को निश्चय करना अति दुरूह है जैसा वेद मे लिखा है सोमयाग मे " पांव की धूलि यूपवाले शाष्ट मे देना उचित है " किन्तु किस्के पांव की धूलि इसका कुछ भी निश्चय नहीं किया गया इस स्थल मे मीमांसा दर्शन का अवलम्बन कर विचार करना सुगम है यथा सो प्रयाग मे सोम के क्रय नि- मित्त गौका आनयन लिखा है अब कि स्थानान्तर के इस लेख से गौका उपक्रम इस याग मे पाया जाता है तो इस सम्बन्ध से गौही की पाद धूलि सिद्ध होती है, मीमांसा के अनेक अधिकरण हैं प्रथक २ विषय के एक २ सिद्धान्त को अधिकरण कहते हैं और प्रत्येक अधिकरण के ५ अङ्ग हैं तद्यथा विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त और सङ्गति । जिस्की उपलब्धि निमित्त विचार हो उसे विषय कहते हैं और उस विचार मे जो किसी प्रकार का सन्देह उठ खड़ा हो वह संशय है; असत्पक्ष के अवलम्बन को पूर्वपक्ष कहते हैं वादी के मत को निरसन पूर्वक उत्तर को सिद्धान्त कहते हैं और तात्पर्यार्थ निर्णय की सङ्गति, जैसा श्रुति मे लिखा है इन्द्रयाग मे औदुम्बर वृक्ष की शाखा का स्पर्श करै यहां औदुम्बरीय शाखा का स्पर्श रूप विधि विदित हुआ किन्तु कात्यायन की स्मृति मे लिखा है औदुम्बरीय का वेष्टन करै अब यहां

स्मृति और लेखन इन दोनो मे क्या करना उचित् है इस दुबधे को संशय कहते हैं श्रुति और स्मृति का परस्पर बिरोध पूर्वं पक्ष हुआ इस पूर्वं पक्ष का आपाततः निर्मूल करने वाला जो उत्तर वह सिद्धान्त ठहरा और इस सब बिचार से जो बात निर्णीत हुई वह सङ्गति है। मीमांसा के मत् से इन्द्रादि देव सचेतन वा शरीर धारी नहीं हैं किन्तु जिस देवता का जो मंत्र वेद मे लिखा गया है वह मंत्रही उस देवता का स्वरूप है मंत्रातिरिक्त कोई देवता हैं इस्मे कुछ प्रमाण नही है यदि मंत्र भिन्न कोई शरीरवान् व्यक्ति देवता हैं जो कर चरण आदि अङ्ग बिशिष्ट हैं तो छोटे से घड़े किम्बा मृत्तिका अथवा धातु निर्मित विग्रह मे तादृश बृहदाकार ऐरावत सहित इन्द्र आदि देवों का समावेश उस सङ्कीर्ण घट वा मूर्ति मे क्यों कर हो सक्ता है। इनके मत से वेद अपौरुषेय अर्थात् किसी का बनाया हुआ नहीं है वेद यदि किसी का बनाया हुआ समझा जाय तो वेद के या वद् बिषय किसी प्रकार सत्य नहीं हो सक्ते इस्मे कुछ सन्देह नहीं कि उस्का कोई न कोई अंश अवश्य मिथ्या होगा क्योंकि ईश्वर की सृष्टि मे अद्यापि कोई ऐसा नहीं हुआ जिसे किसी बिषय के किसी अंश मे कुछ न कुछ भ्रान्ति न हो भानुव्यक्ति की घुणाक्षर न्याय से कोई २ बात किसी २ अंशमे सत्य ठहरने से सर्वांशमे सत्य नहीं हो सक्ती जब की शिष्टाचार के अनुसार सब लोग वेदोक्त बिषय को सत्य मानते हैं और उस्मे जैसा कहा गया है उसी के अनुसार कर्मों के अनुष्ठान मे पूरा बिश्वास रख बड़े २ क्लेश और शरीरायास सहपर लोक मे स्वर्गं साधन को मुख्य उपाय मानते हैं तो जब वेदही भ्रान्ति मूलक और सर्वांश मे सत्य न ठहरा तब संसार के काम क्योंकर चल सक्ते हैं तस्मात् यह बात सिद्ध हुई कि वेद अपौरुषेय अर्थात् किसी मनुष्य का बनाया नहीं है; इस्मे नैयायिक लोग यह शङ्का करते हैं कि यह कौन सा नियम है कि वेद यदि सत्य है तो नित्य भी हो ईश्वर जो सर्वथा भ्रान्ति शून्य सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् करुणासिन्धु और परात्पर है उसी ने सभों पर अपनी सर्वसाधारण कृपा का प्रकाश कर सृष्टि के कल्याणार्थं निज आज्ञा रूप वेद का निर्माण किया है जिस्से सब लोग वेदोक्त मार्गं का अवलम्बन कर अपने २ अभिलषित को प्राप्त हों और असत् मार्ग से

पदार्पण न कर घोर तर तर्क में जाने से बचे रहे ; नैयायिक लोग इस प्रकार सूक्ष्मानुसन्धान कर वेद को ईश्वर रचित न मानते हैं किन्तु परमेश्वर जब शरीरवान् नहीं है तब यह क्योंकर सम्भव हो सक्ता है कि मुख आदि शरीरावयव के बिना वेद की रचा हो जब उसके मुख ही नहीं है तो किस प्रकार उसने अकारादि वर्णों का उच्चारण किया होगा ; ये सब बातें नैयायिक लोगों ने अपने सिद्धान्त के विरुद्ध भी तर्क में वादी से जय प्राप्त करने की इच्छा से मान लिया है ।

सोना और सुगन्धि ।

हमारे देश के महाजन व्यवसाय में बड़े कुशल लेन देन हिसाब किताब में बहुत साफ और स्वच्छ कहीं पढ़े लिखे भी होते तो क्या कहना था सोना और सुगन्धि दोनो का मेल होता ; अङ्गरेज़राज कर्म्मचारी बहुत कुछ पढ़े लिखे सभ्यता से अगगण्य समझदारी के नमूने रोब और संजीदगी से भरे पुरे होते हैं कहीं जाति पक्ष पात के कारण सङ्कीर्ण हृदय न होते तो सोने में सुगन्धि होती हम हिन्दुस्तानियों की किसी मामिले में इकतलफ़ी न की जाती और भरपूर न्याय होता इस सोने को सुगन्धिदार करने का एक मात्र उपाय क्रिश्चियन विश्व का जारी ही जाना भी है ; हमारे नवशिक्षित युवक ग्रेज्युयेटेड सब तरह पर होनहार साहसी और Boon to the country देश के शुभसूचक भावी परिणाम मालूम होते हैं ज़रा मिज़ाज की तेजी और सर गरमी घट कर कोमल और स्थिर प्रकृति बन जाते सोना में सुगन्धि होती ; पुलिस का महकमा खल और दुष्टों से प्रजा के जान और माल की रक्षा के लिये सरकार ने मुकर्रर किया है पर पुलिस खुद इतना अत्याचार करते हैं कि जिसे हम इसे सोना में सुगन्धि होने के बदले कोढ़ में खाज कहेंगे ; ऐसा हो सरकारी रसम इस क़दर ज़ियादह न बढ़ जाता कि मुद्दई मुद्दाले दोनो लड़ते २ फ़क़ीर हो जाते हैं तो इनसाफ़ के हक़ में अदालत भी सोना में सुगन्धि थी ; हमारे देश की कुलवती स्त्रियां जैसी chaste पाक दामन होती हैं वैसाही इन में शऊर और तालीम होती तो सोने में सुगन्धि हो जाती ; हमारे पत्र की लिखावट में कड़ाई न होती जैसा लोग बदनाम करते हैं तो यह भी

होने मे सुगन्धि का योग होता पर क्या करें नहीं बन पड़ता लाचारी है।

—०—

नाम।

नाम के कायम रखने को लोग न मालूम किये क्या क्या काम करते हैं कुआं खोदाते हैं; बावली बनाते हैं; बाग लगाते हैं, मोहफिल सजाते हैं; चैन और सदावर्त चलाते हैं; नाम के लिये लोग लाखों लुटाते हैं; सच पूछिये तो इस संसार मे सिवा नाम के और है क्या? इसी से सिद्धान्त है "नाम काल नहिं खाय" निर्वंशी अपने वंश का और होते देख नामही के लिये सैकड़ों खर्च कर लड़का मोल लेते हैं; जिसे नाम चलाने को एक वंश भर कायम रहे; नाम लेते हैं—नाम रखते हैं—नाम करते हैं—नाम धरते हैं—नाम धराते हैं—नाम पड़ता है नाम चलता है—नाम चढ़ता है—नाम लिया जाता है—कोई नेक नाम है—कोई बदनाम है—कोई शुभ नाम है—बिनाम का कोई नहीं है संसार में जितनी वस्तु हैं सब का एक नाम है और सब से बढ़ कर नाम राम नाम है—"हरिनाम गांवा भक्ति हेत प्रह्लाद गांवा"—हरिर्नामैवनामैव नामैवममजीवनं; कलौनास्त्येवनास्त्येव नास्त्येवगतिरन्यथा"—कितनो का नाम लोग दाम के कारण पर बस ही लेते हैं जपर की चर्चा समाप्त गोधन दास तिनकौड़ी मल के पास इत्तिफाक से बहुत सा रुपया जुड़ गया न आप भर पेट खाता पहनता है न दूसरे को खाते पहनते देख सक्ता है न उस दाम से यह लोक पर लोक का कोई काम निकला; जो समाज मे यहां तक मनहूस समझा गया है कि सबेरे भूल से कहीं नाम उसका मुंह पर आ जाय तो दुकानदार लोग नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं ऐसे जीवन मृतक का नाम केवल दामही के कारन लिया जाता है और जो ज़रूर के माफ़िक हाजत पर लोगों को उनके पास जाना ही पड़ता है नहीं तो कौन को खूब सूरती मल जी के नाम से फटी पड़ती है कि इन दास और मलों के नाम का माला जपा करे यह केवल दाम ही को चाहे सो कराये; कितनो का पुनीत नाम दाम से कुछ सरोकार नहीं केवल उनकी अच्छे काम से देवताओं के समान जपा जाता है जैसा श्री रामचन्द्र नल युधिष्ठिर सीता की सती और दमयन्ती इत्यादि ये सब पुण्यश्लोक पवित्र चरित्र और प्रातःस्मरणीय हैं; कितने लार्ड रिपन

से ऐसे नेक नाम और सर्वजन उपकारी हैं जिनका नाम लेते चित्त आनन्द निर्भर हो गदगद हो उठता है; कितने छूछी और लिटन से कपटी कुटिल हैं जिनका नाम सुन कानको कोढ़ होता है और ऐसा एक स्वाभाविक क्षोभ जी मे आता है कि रोके नहीं रुकता; कितने हलाकू चंगेज़ और नादिर से जगत शत्रु हैं जिनकी चर्चा सुन भय से गर्भवती स्त्री गर्भ गिरती हैं; कितने इसी नाम के लिये मर रहे हैं जग मे कुछ उनका रहे नाम न जाय कोई नाम न रक्खे एक की जगह चाहो दस लुटै कितने हिन्दुस्तानी रईस इसी नाम के पीछे गारद हो गये; कितने घिचर गुदड़ू आदि ऐसे नाम रक्खे गए हैं जिसे सुन जी कुढ़ता है और नाम धराने वालों को गाली देने का मन होता है नाम; बिकता है देश की बनी चीजें कैसी ही नफीस क्यों न हों किसी बिलायती नाम की मुहर उस पर न हो कौड़ी काम की नहीं; नाम चढ़ता है गांव के पट्टे मे नाम चढ़ता है सरकारी रजिस्टरों मे नाम चढ़ता है अदालत के कागजों मे नाम चढ़ता है किताब मे नाम चढ़ता है ईश्वर न करे महाजनों की बही मे किसी का नाम चढ़े एक २ के सौ २ भरते जांय फिर भी जन्म भर उद्धार न हो; नाम पुकारा जाता है जिन लोगों को अदालत जाने का कभी काम पड़ा है वे जानते होंगे कि नाम की कैसी फजीहत की जाती है इज्जतदार हैं दस बीस पचास आदमियों में हाल नाम है किसी ने गवाही मे नाम लिखा दिया चार रुपये का अदना प्यादा भीतरही से ऐसी मारता निकला मुद्दई का फलाना गवाह हाजिर है; दरबार मे कुरसी मिले इस ऐज़ाज़ मे फस सैकड़ो खर्च किये और मुंशी साहब के खुशामद से आए किसी तरह हमारी तकदीर से दरबार मे बुलाये गये; दरवाजे पर भीड़ की भीड़ तोड़ि पर मोड़ि गिरे पड़ते हैं किसी तरह उनकी भी बारी आई नाम पुकारा गया निढाल हो गये मानो बाप पुरखा बैकुण्ठ सिधारे; वहां गये बैठ रहे चले आये किसी ने बात भी न पूछा पर अहमक इस ख्याल से कि दरबारियों मे फर्द मे हमारा नाम चढ़ा रहे इस कदर खराब खस्ता हुए; नाम लिखा जाता है न हो कि पुलिस की कारैकर तुक मे किसी का नाम लिख दिया जाय; नाम निकलता है समाज के बीच जिस हाल मे जिसका नाम निकल जाय अखाड़े मे

और आशिक माशूकों की तरक्की के किसी तरह का सदुपदेश जो नाटकों के अभिनय का मुख्य उद्देश है कोई नहीं निकलता न इन से हम लोगों को किसी तरह की सहानुभूति है जो हमारा किसी तरह का उपकार इन तमाशों से इन्हों ने कभी किया हो इनको केवल रुपया कमाने से मतलब है सो ख़ातिरख़ाह साल में दो एक बार आकर कमा ले जाते हैं और अन्य प्रकार से कुछ हानि की और लोगों की तबियत खराब करजाते हैं; न इनके नाटक से हमारी भाषा की कुछ तरक्की है हिन्दी से कुछ सरोकार नहीं उर्दू में अभिनय करते हैं सो भी भ्रष्ट उर्दू न जिस का मुहाविरा सही न लबजों में किसी तरह का मजा केवल चमकदमक और नाच रङ्ग से लोगों को मोह लेते हैं इन बातों की तरक्की तो आपही इस मुल्क में कसरत से है और इन्हीं सब कामों से तो हम धूर में मिले जाते हैं तब इनका नाटक मानों आग में घी का छोड़ना हुआ; नाटकों से हम लोगों का यत्न यह था कि लोगों की तबियत ऐसे बेहूदा खेल तमाशों से रोक सुसभ्य विनोद की ओर रुजू करते सो इन पारसियों ने और भी घट कर डाला अब इनकी चमक दमक के आगे हमारे शिक्षा सम्मिलित नाटक कोंकर किसी को रुच सके हैं नाटक यह भाषा के प्रकरण सराहने योग्य हैं जैसा की बंगाल के नेशनल थियेटर वाले दो एक बार यहां आकर अपने अभिनय से नाटक के सब भेद और [illegible] इमें बताया वैसा ही इन पारसियों ने नाटक को नष्ट और ग्लानि कारक इमें जना दिया इनके तमाशे की [illegible] हमारे देश के लिये निःसन्देह बड़ी हानि है।

———o———

कणादृदर्शन।

पूर्वप्रकाशितानन्तर

क्रियाको कर्म कहते हैं कर्म ५ प्रकार के हैं उत्क्षेपण ऊपर फेंकना, अपक्षेपण नीचे फेंकना किसी वस्तु का आकुञ्चन सकुचित वस्तु को फैला देना प्रसारण है, भ्रमण जैसे गमन तिर्यक गमन आदि जितनी हरकत चाल सब इसी ५ कर्म के अन्तर्गत हैं और यह ५ कर्म पृथिवी जल तेज वायु और मन के अतिरिक्त किसी द्रव्य में नहीं पाया जाता जाति पदार्थ नित्य है और यह अनेक वस्तु में रहता है जैसा घटत्व जाति सम्पूर्ण घट

साम्य मे है पर अपर भेद से जाति दो प्रकार की है जो जाति अधिक स्थान मे पाई जाय वह पर जाति है और जो अल्प देश मे रहै वह अपर जाति है; विशेष पदार्थ भी नित्य है आकाश और परमाणु प्रभृति एक २ नित्य द्रव्य मे एक २ विशेष पदार्थ हैं; यदि विशेष पदार्थ न होता तो परमाणु के अलग २ भिन्नता का निश्चय किसी तरह न होता द्रव्य सहित गुण और कर्मका, द्रव्य गुण कर्म सहित जातिका, नित्य द्रव्य सहित विशेष पदार्थ का जो सम्बन्ध एवम् अवयव सहित अवयवी का जो सम्बन्ध उसे समवाय पदार्थ कहते हैं; अभाव पदार्थ ४ प्रकार का है प्राग अभाव अर्थात् पहले से न रहा हो पर पीछे से हो, प्रध्वंसा भाव अर्थात् आदि मे रहा हो पर पीछे से न हो, अत्यन्ता भाव न पहले रहा हो न पीछे से हो, अन्योन्याभाव जैसा घट पट नही हो सका न पट घट हो सका है ; इन पदार्थों के सिवा और कोई पदार्थ नही है किन्तु इन्ही के भीतर यावत् पदार्थ अन्तर्भूत है और इन्ही पदार्थों के सम्यक् ज्ञान से मुक्ति की सिद्धि है इस लिये वैशेषिक शास्त्र का जानना बहुत आवश्यक है ।

भारतेन्दु ।

इसका बिज्ञापन पढ़ते २ मुंह पिराने लगा सुनते २ कान झांझर हो गया पर अब तक यह ऐसे के हाथ मे था जो इसकी अव्यवस्थित दशा का कुछ भी परिवर्तन न कर सका परन्तु अब यह एक सुयोग्य के हाथ मे आया है अनुमान होता है कदाचित् इसकी दशा सुधर जाय; प्रचलित मासिक पत्र तथा निरर्थक कई एक साप्ताहिक पत्रों से हमे इसकी लिखावट उत्तम जचती है यदि बराबर इसके नम्बर ऐसही चटकीले निकलते रहैं ; नागरी के लिये इसका एक प्रस्ताव उचित जान यहां पर हम मुद्रित करते हैं उसी से पढने वालों को इसके लेख की सब कारीगरी खुल जायगी ।

महा राक्षसी सभा ।

गत अन्धकार पक्ष की तमोवती अमावस्या की अर्द्ध निशा में लंका पुरी से सात समुद्र पार कलंकापुरी के टौनहाल में एक बड़ी भारी महा महाराक्षसी सभा

हुई। जिसमें स्वयं सुख कदन भगवान् दश वदन लंका रावण रावण स्वयं सभापति थे, तथा उनके अन्यायी भाई कुम्भकरण वा मिस्टर मेघनाद आदि एक लक्ष पुत्र, और सवा लक्ष पौत्र प्रपौत्र आदि भी विद्यमान थे, ऐसेही सज्जनों के रिपु महाराज हिरण्यकशिपु वा उनके दुखदाता भ्राता हिरण्याक्ष तथा आनरेबुल मिस्टर वाणासुर प्रोफेसर मुरासुर प्रोफेसर मयासुर, त्रिपुरासुर, शुम्भासुर, निशुम्भासुर ऐस्करी न मुलि मिस्टर जृम्भ कालिनेम, विप्रचिति, जम्भ, राहु, केतु, वृत्रासुर, शंबरासुर, दिगम्बर, जलंधर, आदि और भी अनेक असुर यूथ यूथप अपने दल बल सहित यथोचित स्थानों पर शोभायमान थे, तथा इनसे भिन्न पांच कोटि राक्षस, दस कोटि असुर अट्ठारह कोटि दैत्य पचीस कोटि भूत पचास कोटि पिशाच, चौदह अरब दानव यह सब भी अपनी २ ब्राञ्चलियर कम्पनी बांध कर सभा मण्डप के बाहर रक्त नेत्र, दन्तवेत्र, कराल भृकुटी कुटिलमुख, अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित भयङ्काकार खड़े थे।

सब से प्रथम सुधर्म रिपु महाराज हिरण्यकशिपु ने अपनी कुर्सी से उठ कर भुओं सूरत से यह प्रस्ताव किया, कि हे निज भुजोपार्जित त्रिभुवन राज्य, हे भिक्षकारी पातलोक भय साम्राज्य, हे दुर्दान्त अशान्त भ्रान्त प्रकृति, हे दुर्जन हे प्रदीप्त ज्वलन, हे सर्वनाशकारी, हे प्रलयाधिकारी हे व्याकुलीकृत, नरनारी हे कुचक्र सहचारी, दैत्य नारीगण ! क्या आप लोगों ने नहीं सुना कि भगवान इन्द्र मन्वन्तराधिपति, जिनका आधिपत्य हम असुर लोगों पर, और मरण शील मर्त्यलोक के लोगों पर समान है, उन्हों ने हम लोगों को उपद्रवी जान कर यह आज्ञा प्रचार करी चाही है कि यदि हम लोग आगे से अपनी बंदूक की परीक्षा करने के लिए किसी अन्य जाति मनुष्य पशु को वध करें, अथवा हम लोगों को मृगया विनोद में साधारण पशु वध से कुछ आनन्द न हो, तो किसी क्षण भंगुर अथवा सर्प विशेष पशु को मारें, वा जब हम लोग सुरापान से मस्त होकर उनके भिटों में आग लगा दें, इत्यादिक अवस्थाओं में नर्क तुल्य मर्त्यलोक के पापी, पातकी, पामर, नीच, भेड़ से भी अधम, मनुष्य हमें राज्य नियम से गिरफ्तार करके दण्ड दें, और उचित जाने तो हमें कारागार में भी भेज दें, हे दैत्य मण्डली मण्डन पुरुषो ! हे राक्षस कुलावतंसो क्या यह हृदय भेदी मर्म

छन्तक वृत्तान्त, आप लोगों को सह्य है? क्या आप सब बड़े बड़े महानुभाव दुःख भाव लोगों के रहते० आप लोगों की आंखों के आगे—आप लोगों के शिष्ट समाज हालकों का—ये भेड़ तुल्य मनुष्य सन्तान अपमान करें यह आप लोग देख सके हैं क्या आप लोगों के भक्त भोज्य दासानुदास, पादुका परिष्कारक पशु तुल्य मनुष्य आप लोगों पर राज्य करें और आप लोग यह देख करके भी समझ करके भी सुन करके भी निश्चन्द, निश्चिन्त, निश्चल, और जीवित रहें, इससे अधिक दुःख, लज्जा परिहास और क्षोभ की क्या बात है। हा हन्त! हा हन्त!! हा हन्त!!!

यदि आप लोगों में कुछ भी आसुरी भाव हो, यदि आप लोगों की नसों में तनिक भी दैत्य रक्त हो, यदि आप लोगों में कोई भी जगन्माता दिति और दनु के उदर से उत्पन्न हुआ हो, और किसी ने भी अपनी राक्षसी माता का उष्ण दुग्ध पिया हो, तो उठो! और अभी मनुष्य कुलको मनुष्यों के धर्म को मनुष्यों के गुरु ऋषि, मुनि, आदिकों को मनुष्यों की स्त्रियों को मनुष्यो के धन द्रव्य आदिकों को मनुष्यों के गौ घोड़ा आदि पशुओं को मनुष्यों को अगली पिछली शाखा संतानों को मारय! मारय! उच्चाटय! उच्चाटय विदारय! विदारय! छिंधि! छिंधि! भिन्धि! भिन्धि! मार! मार (चारों ओर मार २ की ध्वनि छा जाती है, और तालियां बजती हैं, तथा अस्त्र शस्त्र लेकर असुर गण आस्फालन करते हैं) तदनन्तर भगवान् दश वदन अपनी रदन निकाल कर दश मुख से खड़े होकर कहने लगे। हे मेरे सर्वस्व असुर गण! अहो मह छिन्नमिदं कालगत्यादुरत्यया। आकल्पत्नुपागतैर्शिरो मुकुटसेवितम्।" मेरे रहते कन्दु वर्ग की यह दशा हो त्रिकाल संभव नहीं! चाहे सूर्य्य पश्चिम में उदय हो, चाहे हिमालय समुद्र को तर जाय, परलोक रावण रावण के रहते मूढ़ मनुष्य वंश साम्राज्य करें कथमपि संभव नहीं। क्या मनुष्यों के परमेश्वर रामचंद्र के साथ मेरा पराक्रम आप लोग नहीं देख चुके हो? यदि ऐसा हो तो इन मुट्ठी भरे पच्चीस करोड़ मनुष्यों को दसों हाथों से पकड़ कर समुद्र में डुबो दूं, और आप रसे शिव सहित कैलाश पर्वत उनके सिर पर रखदूं जो समुद्र में ही बैठे बैठे हम लोगों की पदुका सहा करें माभैः! माभैः! करतालो ध्वनि और उपवेशन)

तदन्तर और सब असुर इस प्रकार बोले;

कुंभकर्ण। कुछ हमारे अन्न दाता परिचाता, बड़े भ्राता ने कहा है, वह बहुत उचित है, क्योंकि मनुष्य वंश में इतना साहस ही नहीं कि हम लोगों पर राज्य कर सकें यदि कदाचित् ऐसा वज्रपात हो, तो मैं अपने दोनों कानों की शपथ कर के कहता हूं कि समस्त मनुष्य कुल को अपने उदर में भर जठराग्नि में भस्म सात करदूं तब आप लोगों से साक्षात् करूं, नहीं तो किसी ज्वाला मुखी पहाड़ में अग्नि पात करूं ताली बजती है और उपवेशन,

हि॰ क। मैं पहलेही बहुत कुछ कह चुका हूं अब इतना ही कहता हूं कि यदि ऐसाही संयोग हो तो आप लोग आनन्द में शयन करें मैं फिर वही कोर्ट मार्शल जारी करदूंगा जो मैंने नृसिंहावतार से पहले जारी कर दिया था, जिसके अमल में आने से मनुष्य तो क्या बड़े बड़े देवता भी अपने घर द्वार छोड़ कर स्वर्ग से ऐसे भाग गए थे, जैसे चोदह आर्डिनेन्स के जारी होने से कलकत्ते से वेश्या। बस आप लोग इसकी उपेक्षा न करें ताली बजती हैं और बैठ जाता है,

हिरण्याक्ष। मैं भी अपने पूज्य भाई की राय से एक मतहूं। आप लोग मेरा पराक्रम जानते ही हैं यदि आप आज्ञा देंतो अभी "कनक इव ब्रह्मांड उठाऊं" अर्थात सारी पृथ्वी को दूसरी बार रसातल में पहुंचा दूं तब आप लोगों को मुंह दिखाऊं (खंभ ठोकता, ताली बजती और बैठता है)

मिस्टर मेघनाद। मै इस प्रवीन विंशति शताब्दी के सिविलिजेशन के समय में लड़ाई भिड़ाई नापसंद करता हूं, मैं इस आज्ञा के विरुद्ध, मर्त्य, स्वर्ग, पाताल में ऐसी ऐसी वक्तृतायें करूंगा, जिससे सब की चित्त वृत्ति मनुष्यों से फिर जायगी, और मनुष्यों को इतनी गालियां दूंगा जो वह डर जायंगे, और अपनी वाणी के जोर शोर से ऐसा घोर आन्दोलन मचाऊंगा, कि भगवान इंद्र स्वयं इस आज्ञा को उठा लेंगे (तालियां बजतीं और अन्य अन्य " का शब्द होता है और बका बैठ जाता है)

आनरेबल बाणासुर। मैं भी अपने परम मित्र मिस्टर मेघनाद की अनुमति से एक मति हूं, और जैसा उन्होंने वक्तृता द्वारा अपनी जाति का मंगल करना विचारा, मेरे एक हजार भुजा हैं, मैं इन के द्वारा इतने आर्टिकल इस आज्ञा के

चिह्न लिखूंगा, कि पृथ्वी का कण कण इसी विषय में अंकित हो जायगा, आप लोग घबराय नहीं, तन, मन, धन, से अपनी जाति का अपमान बचायेंगे ।

(करताली ध्वनि और उपवेशन)

इसके अनन्तर दो गज की सफेद दाढ़ी वाले पोंफिवर सुरासुर उठे, और बहुत उत्स्वर से चिल्लाकर कहने लगे " देखो मैं बहुत बुड्ढा, कांदिश, बाधक, न नास ख, किसी प्रकार का बल मुझे नहीं है, पर मैं भी मरते मरते इतना उपकार अपनी जाति का कर जाऊंगा कि बहुत से लाखों से भी न बनेगा । अर्थात् जब मैं मरणासन्न हूंगा तब मरने से दो घंटे पहले अपनी नोट बुक में लिख जाऊंगा कि "इस राजा ने जहर देकर मुझे मारा।" बस इतना लिखना ही उस राजा के राज्य को मिट्टी में मिला देगा " इस हठ के ऐसे उत्तेजक वाक्य सुनतेही चारों ओर तालियां बजने लगीं, और धन्य २ शब्द से दिङ्मंडल व्याप्त होगया और संपूर्ण अस्त्र शस्त्र धारी बाराह्रियर सैन्य गण मारय ! मारय ! विद्रावय ! विद्रावय उच्चाटय ! उच्चाटय ! खिंखि खिंखि ! भिंखि भिंखि ! शब्द करके धूल उड़ाते, और शोर मचाते, मर्त्य लोक की ओर चल दिये. और समस्त दैत्य गण भी उनके पीछे पीछे हो लिये इसके आगे जो कुछ हुआ, वह आगे वर्णन करेंगे ।

सवैया ।

बढ़ो चहुँ ओर ते आवै लुवार कीवार करो बँद देर न लावो । टाटी टँगावो अँगूरन की तेहि माहिँ गुलाब कली छिरकावो ॥ भौंरो उसीर घनी घनसार केदार भरी जल कंज कुड़ावो । ना तो पराम करैगो पयान महान कसाई ये ग्रीष-म आवो ॥ १ ॥

सवैया ।

भूँडू की धूर धँसा से तपै बड़वा नल ज्वाल चलै में समावो । आग सी भारी हवा बहै लोगन भी तलता सब ठाम नसावो ॥ चौलगी समान फुहारे छुटैं कोउ पाछो उपाइ केदार करावो । ना तो पराम करैगो पयान महा न कसाई ये ग्रीषम आवो ॥ २ ॥

अग्रिम मूल्य २।)
पश्चात देने से ४।)

Printed at the *Light Press*, Benares, by Gopeenath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली. को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st May 1883. Vol. V.] [No. 9.

प्रयाग वैशाख कृष्ण ७ सं० १९४० जि० ५ [संख्या ९

खुशी क्या है।

लोग कहते हैं इन पर भगवान की कृपा है ये बड़े खुशी हैं पर कोई ठीक निश्चय अब तक न हुआ कि यह खुशी क्या चीज है जिस्के लिए संसार में सब लाल आ रहे हैं कोई २ बहु परिवारी और बड़े कुनबे को खुशी और सुख मानते हैं कच्चे बच्चे लड़के वालों से घर भरा हो एक इधर रोता है दूसरा उधर पड़ा चिल्ला रहा है सब ओर किच पिच गुल

और मच रहा हो एक बाबा की डाढ़ी खसोटता है एक कान भी अता है एक गोदमें बैठा है दूस रा सामने पड़ा मचला रहा है बाबा बेवकूफ बनो मन फूटेरा से मगन होते जाते हैं और अपनी बराबर भाग्य मान और धन्य किसी को नहीं समझते; कोई २ इसी को बड़ी खुशी मानते हैं कि बहुत सा रुपया पास हो उ-लट पूलट उसी को बार२ गिना करें न उसे खांय न खरचैं सांप बने बैठे२ ताका करें,जैसे हो तैसे जमा जुडती जाय, बात जाय पत जाय, लोक मे निन्दा हो, कोई कितनाही भला बुरा कहै, पर गांठ का पैसा न जाय; किसी की स-मझ मे हुकूमत बडी खुशी है अ-पनी हुकूमत के ज़ोर से गरीब दुखियायों को पीस उनका लहू सुखाय२ न्याय हो चाहो अन्याय हो अपना सुख और अपने फा-यदे मे ज़रा भी कसर न पड़ने पावै यही बड़ी खुशी है ; किसी की मत मे शरीर का निरोग रहना परम सुख है इसीसे यह कहावत प्रचलित हुई "तन दुरुस्ती हजार न्यामत,, पुलिसवालों को इसी मे खुशी है कि रोज़ एक भला मानुष एंड़े बेड़े मामिलों फंसा करे जिस्में नित्य नई हांडी उन के घर चढती रहै; बदमाश और शोहदों की खुशी इस्मे है कि पुलिस तथा दूसरे अधिकारी जिन के सिपुर्द शहर की देख भाल की गई हो कोई ऐसे तैसे वे रोब दाबी और सुस्त हो जिस्मे हमा री चढ़ बनै नित्य फउज जमा रहै आठ पहर चौसठ घडी में एक प ल के लिये भी जुआ का पुरखरवा बन्द न रहै रईस भले आदमी जिसे वे तकै उसी गर्द मे मिलाये बिना बाज न लें; फिर इस खुशी मे कुछ निश्चय नहीं है कि एक ही बात सब के लिए खुशी का बाइस हो वही बात एक के लिए खुशी होती है दूसरे के लिए रंज ज्यूरिस डिक्शन बिल का पास हो जाना हम हिन्दुस्तानी काले आदमियों के लिए पुच जन्मो-

त्सव समान है अङ्गरेज़ गोरे चम ड़े वालों के लिये इतना रंज का बाइस है कि उनसवों का मानो किरोड़ों का नुकसान हो रहा है; कभी २ हमे अपनी खुशी रोकना पड़ता है हमारा एक परोसी से दीवाल मर गया जैसे तो इतना खुश हुए कि मानो कारू का ख़ज़ाना हाथ आया पर लोक लाज से चार भाइयों मे छिपाने के लिए ख़ामख़ाह उस मरे हुए के नाम पछतानाही पड़ता है क्या कहें मर गये बहुत अच्छे थे भाई मौत से किस्का बश है इसी मुकाम पर तो आदमी हारा है; सचपूछि ये तोइस खुशी को वुनीयाद कुछ नहीं है केवल प्राप्य वस्तु का अभाव अर्थात जो वस्तु हमेप्राप्त नहीं है उस्का मिलजाना खुशी है ईश्वर करै खुशी रह कर पीछे से दुखी कोइ न हो न हो तो उस दुखी जीवन से मरना श्रेष्ट है—सुखहीदु:खान्यनुभूपशोभते घनान्धकारेष्विवदीप दर्शनम् । सुखेनयोजातिनरोदरिद्रतां धृत:शरीरेणमृत:सजीवति----दु:खैकमात्र सारे इससंसार मे रह सुख से जीवन पार करने को वहुतों की खुशी चाहना पड़ता है मालिक को खुशी---हाकिम की खुशी---मा वाप की खुशी शागिर्द को उस्ताद की खुशी आशिकतन का अपने दिलदार यार की---शहर के रईसों को मेजिसटरेट साहव की---बाजार के दूकानदारों को कोतवाल शहर की---मातहत क्लार्कों को सर दफ्तर साहव की---छोटे२ गुमास्तों को मुनीम जी की इत्यादि हजार२ तरह पर हर एक कोने अँतरे खुशी को खोजते फिरो पर कुछ ईश्वर का करतव है कि सच्ची खुशी तभी आदमी को मिलती है जब खुशी की खुशी हो।

—०—

हाकिम हारे मुहमे मारे।

सच है हुक्म उन्ही का हाकिम उन्ही के कानून उन्ही का कायदा उन्ही का कचहरी उन्ही की अदालत उन्ही के तव माग्य हीन बाबू

सुरेन्द्र नाथ का हद से ज़ियादह स्वच्छन्दता के लिये छट पटाना ना समझो नहीं तो क्या कहना चाहिये इस्में सन्देह नहीं कि सुरेन्द्र नाथ का लेख किसी कदर कड़ा हो गया था पर इस लायक नहीं कह सक्ते कि उनको दो मास का कारावास दिया जाय इसीसे हम कहते हैं हाकिम हारे मुंह से मारे; हम लोगों को बड़े दुःख की बात है कि कुट भइयों की कौन कहै ऐसे प्रतिष्ठित ओहदे दार हाईकोर्ट के जज आदि भी डाह परवश हो उन्हीं छोटे लोगों के समान जो मे इतना बुग्ज़ रक्खें तो निश्चय होता है कि अङ्गरेजी कौम मे यह एक स्वाभाविक बड़ा भारी दोष है सुरेन्द्र नाथ के निसबत जो कुछ किया गया वह बिलकुल ईर्षा की मूल पर हुआ न इसमे कुछ कानुन की पाबन्दी हुई न न्यायही किया गया न सुरेन्द्रनाथ की इस्से किसी तरह की तौहीन हम लोगों की दृष्टि मे है बल्कि पहले से अब उक्त बाबू साहब दस गुण अधिक प्रतिष्ठास्पद और माननीय हो गये और देश हित चाहने वाले लोगों के बीच अब ये माला के सुमेर तुल्य बन गये परन्तु मसल है "बुढ़िया मरने का रंज नहीं किन्तु यम घर देख गये" आज सुरेन्द्र बाबू के लिये जो किया गया कल हम लोगों के लिये भी वही बात तैयार है जो कहीं ऐसी बातें औैंर ऐसी कड़ाई के साथ forcible language न लिखी जांय तो ऐसा तैसा लेख पाठकों को रूच कब सक्ता है और न समाचार पत्र प्रचार करने का कोई फल निकल सक्ता है क्योंकि जोर देकर लिखने मे जो कुछ असर पैदा होता है वह सीधी सादी लिखावटों मे कभी सम्भव नहीं है; यह सब ज्युरिसडिक्शन बिल के बारे मे जो आन्दोलन किया गया उसी का परिपाक है न इलबर्ट साहब इस बिल को कौंसिल मे पेश करते न इतनी चौड़ी खाड़ी हम और हमारे जे

तारों की बीच पड़ती जिस्से भेद बुद्धि की हजारों कोठियां तैर रही हैं।

नूतन चरित्र।

अध्याय ४ रेल का टक्कर।

टक्कर के लगते गाड़ी सड़क से अलग जा पड़ी और ये दोनों दो मिनिट तक बेहोश एक दूसरे से लिपटे हुए उस गाड़ी में पड़े रहे० ; गाड़ी के टकराते स मय विवेकराम ने अपनी दोनों बाहें इसी मतलब से चित्रकला के गले में डाली थीं ताकि गाड़ी के उलटनेपर वह उसपर गिरे जिस्से किसी तरह का जरर उसे न पहुंचे सो ऐसाही हुआ भी चित्र कला को कुछ भी चोट न आई और व हतही थोड़ी देर बाद वह होश में आ गई देखा तो विवेकराम उसके नीचे पड़ा है चारो ओर चिल्लाहट और हाय २ मच रही है ; कोई मरा २ पुकार रहा है कोई अपने साथी या स्त्री पुत्र के नाम ले२ रो रहा है किसी की बांह उखड़ गई है किसी की जांघ कट गई है कोई अधमरा कशिकाम है, कोई पुकार रहा है मुझे निकालो मेरा दम घुट रहा है ; चित्रक ला विवेकराम की बाहें अपने गले से निकाल बिलख बिलख रोने लगी इतने में विवेकराम को भी होश आया देखा तो गाड़ी उलटी हुई धरती पर पड़ी है और चित्रकला सिरहाने बैठी आंसू बहा बहा रो रही है ; वह अपने मन में कहने लगा हाय मैं इस तुच्छ जीव निमित्त अपनी प्राण प्यारी को अपनी जान के लिए ऐसी फिकिरमन्द देखता हूं क्या यह स्वप्न है कि ऐसी भोरी गम्भीरी स्त्री को भी प्रीति वश हो धीरज छोड़ विलाप करते सुनता हूं—यदि यह स्वप्न नहीं है तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि ऐसाही नित्य गाड़ी टकराया करें क्योंकि यह सुख जो मुझे इस समय प्राप्त हुआ पहले कभी नहीं मिला था ; अब यह उस बाला से कहने लगा आप मेरी कुछ फिकिर न करें कहो तुम्हें तो कुछ चोट नहीं लगी अब इस विपत्तिकाल में मैं आप की जो कुछ चाहो सेवा करूं ; चित्रकला बोली महाशय मैं ईश्वर की दया से चोट से बच गई परन्तु आप को इस दशा में देख ऐसी दुखी हूं कि जैसी चोट के लगने से भी न होती अब आप इस गाड़ी से दबे हुए हैं सो आप को इस्से छुटाने का कुछ उपाय करूं क्योंकि थोड़ी देर में जब लोग यहां आजावेंगे तो सौ सौ तरह की

कल्पना कर २ हम तुम दोनों को बद्नाम करेंगे तब हमारा बिना मौत का मरना होगा ; विवेकराम बोला यद्यपि गाड़ी की चोट से जांघ के दबने का मुझे दारुण दुख है परन्तु आप के रसीले वचन सुन २ सब दुःख क्लेश भूल जाता है ॥

इन दोनों की इस तरह की बातें हो रही थीं कि दौलतराम दो कुलियों को साथ लिए आया और कहने लगा देखो तुमने मेरे साथ इतनी बुराई की तो भी मैं तुम दोनों की मदत करने को आय मुस्तेद हुआ—विवेकराम ने कहा मुझे मरजाना कुबूल है लेकिन तेरी मदत से इस क्लेश से छूटना मंजूर नहीं तू यहां से फौरन चला जा और कभी मुझे अपनी सूरत न दिखाना—इसको इस बात पर गुस्से में भर दौलत राम लौटने को था कि चित्रकला बोल उठी आप मेरी प्रार्थना का कोई अनुचित अर्थ न समझें तो विनती करती हूं कि विवेकराम की बातों का कुछ खयाल न कर इनको इस दारुण दुख से बचाओ दौलतराम ने अपनी कुलियों को आज्ञा दी वे गाड़ी को उठा कर विवेक राम की जांघ निकाली यद्यपि सही सलामत निकल तो आया परन्तु जांघ की हड्डीयां सब अति शिथिल हो गईं चित्रकला भी अलग हट बैठी इधर चोट की चोट उधर प्यारी का अलग होना इन कारणों से विवेकराम का जो कोट पोट हुआ जाता था कोट २ यत्न से चित्त को ढाढ़स बांधता था पर धीरज न होती थी; इतने में रेल के अधिकारी भी पहुंच गये और गाड़ी सब दुरुस्त कर आगे चलने की आज्ञा दी—उस समय विवेकराम चोट के कारण आगे को नहीं जा सक्ता था और डाक्तर साहब ने भी हुकुम आगे जाने का न दिया परन्तु चित्रकला वहां न रुक सकी क्योंकि उसका भाई दिल्ली के स्टेशन पर उसकी बाट जोह रहा था दूसरे अब उसके चोट भी न लगी थी तो उसके वहां पर रह जाने का कोई कारण न था अब इसे जाते देख विवेकराम बोला—मैं बड़ा अभागा हूं जो दिल्ली तक साथ चल कर आपके भाई से न मिल सका मैं यह भी नहीं कह सक्ता कि आप मेरे लिये देरी करें और यहां रह जाओ सांझ की गाड़ी में सब साथ चलें क्योंकि अभी हमारी तुम्हारी जो खास प्रीति नहीं भई जो इतनी दया मुझ बेचारे

पर करी—चित्रकला ने मुसकिराकर उत्तर दिया महाशय जो मुझे दिल्ली पहुंचने की बड़ी जरूरत न होती तो किसी तरह का खयाल मुझे इस समय आपके पास रहने से न रोक सक्ता जैसा मैंने पहले निवेदन किया परन्तु इस समय मुझको एक मिनट भी रास्ते मे रुकना ठीक नही इसे आप खुद समझ सक्ते हैं—इस पिछले शब्द के उच्चारण समय उस्के मन की वृत्ति यद्यपि बहुत रोकी गई पर एक बिन्दु जल जो चुपचाप उस्के नेत्रों से ढरक पड़ा प्रकाशित कर दी—रेल मे सवार होते समय चित्रकला फिर बोली—महाशय मै आप का उपकार जन्म पर्यन्त न भूलूंगी और दिल्ली मे आपसे मिलने पर मेरा भाई आपका बड़ाही धन्यवाद करेगा; विवेक राम ने कहा आकबत की कौन कह सक्ता है मै नहीं जानता आपके चले जाने पीछे मेरी क्या दशा हो खैर जाइये यह यात्रा तुम्हारी निर्विघ्न हो मुझे भूल न जाना; चित्रकला बोली मै आपके उपकार का बदला न दे सकी इस बात से बड़ी लज्जित हूं परन्तु जो ईश्वर ने चाहा और आपके चाल चलन और कुल का सब ठीक २ पता लग गया तो—कुछ और कहा चाहती थी कि रैल चलदी विवेक राम उसी जगह रह गया और चित्रकला गाड़ी मे बैठ दिल्ली को रवानह हुई।

५ अध्याय।

रैल के टकराने और चित्रकला के उसी मे सवार रहने की खबर उस्के भाई चेत राम को देहली के स्टेशन पर जब पहुंची तो वह बहुत घबड़ा कर भांत २ का कल्प बिकल्प मन मे करने लगा; पहले उस्के मन मे आई कि तार भेज खबर मगावें फिर सोच कर जी मे कहा कि यहां स्टेशन के सब लोग कह रहे हैं कि जान से कोई नहीं गया सिर्फ दो आदमी घायल हुए हैं तो इस आनेवाली ट्रेन की परखलें—इतने मे रैलके आने का घंटा बजा; चित्रकला जिस समय से विवेक राम से अलग हुई उसी क्षण से उस्के मन मे विवेक राम की चाह का अंकुर जमा जो उस्के सरल स्वभाव निर्मल चित्त वृत्ति और परोपकार आदि स्वच्छ जल के सींचने से प्रतिक्षण बढ़ने लगा; दिल्ली के निकट आने पर अब इसने सोचा कि यदि मै इस्का जिकर अपने भाई से करूंगी तो वह मर्दों मे बैठने का दोष मुझमे लगा नाराज होगा और

अचंभा नहीं कि दौलतराम से लड़ने को गई हो इस कारण वे सब बातें जो रेल पर गुज़री थी अपने भाई से कहना मुनासिब न समझा—जब गाड़ी देहली के स्टेशन पर पहुंची तो चेतराम दूर से अपनी बहन को गाड़ी पर बैठी देख अति प्रसन्न हुआ और समीप आय पूछा कहो तुम्हें इस टक्कर से किसी तरह का सदमा तो नहीं पहुंचा और थोड़े से अक्षरों में इस्का उत्तर सुन सुचित हो फिर कोई प्रश्न न किया; दोनो बहन भाई स्टेशन के पास ही एक सराय में जाटिके और लाहोर जाने का सब बन्दोबस्त कर सराय चलती बार इरादा किया कि करनेल साहब के मुख्तार धनपत राम से भी मिललें इस मतलब से चलते वक्त गाड़ी वाले को हुक्म दिया कि घंटा भर के वास्ते धनपत राम के मकान पर हम थोड़ी देर ठहरेंगे वहीं हमको उतार देना।

यह धनपत राम देहली के ढंग दारी में अपने को किसी से कम नहीं समझता था और दिन रात सैकड़ों चट्टे बट्टे लड़ाया करता था बल्कि यही उस्की जीविका थी चेतराम को आते देख उठ खड़ा हुआ और झुक कर बड़े अदब से सलाम किया चेतराम को अचरज हुआ कि आज इस आदर का कारण क्या है परन्तु कुछ समझ में न आया; खैराफियत के बाद चेतराम ने कहा इस समय की गाड़ी पर हम कर्नैल साहब के पास लाहोर जाते हैं कहो फिर तो कोई नई खबर साहब की नहीं आई—धनपतराम ने जवाब दिया मुझको बहुत सी बात आप से करना है ठहर जाइये थोड़ा सा का काम बाकी है उसे खतम करलूं तब आप से बात चीत करूंगा-यह सोचा हमारा रेल का समय बीत जायगा तो आज की गाड़ी में जाना न हो सकेगा और मुफ्त में हरज होगा; धनपतराम उस समय ऐसी सूरत बनाई जो हर्ष और शोक दोनो से मिश्रित थी और जिस्का बनाना उसने देहली के बड़े २ उस्तादों से बरसों की शागिर्दी में सीखा था बोला अब आप लोगों का वहां जाना कुछ जरूर नहीं है हमारे नाम इसी समय दूसरा तार आया है उस्से जाना गया कि कर्नैल साहब पर लोक वासी हुए और अपनी सब माल मताल और नकदी वगैरह का-मालिक आप व आप की बहन को कर गये हैं इस खबर को सुन चेतराम को भी रंज थोड़ा और हर्ष

बहुत हुआ तुरन्त दौड़ कर अपनी बहन
से इस खबर को जा सुनाया दोनो करनैल
साहब की मृत्यु से किसी कदर रंजीदा
तो हुए पर असंख्य धन की प्राप्ति सुन प्रसन्न
भी इतने हुए कि फूले नहीं समाते थे-य
ह तुरन्त वापिस आया और धनपतराम
से कहा तो अब हम दोनों को लाहौर
जाना कुछ जरूर नहीं है धनपत भी
बहुत सी शिष्टाचारी के बाद अपने घर
मे पुकार कर कहा ये दोनों मेहमान
आये हैं इनकी खूब अच्छी तरह खातिर
दारी करो मै अभी कचहरी जाता हूं
वहां से लौट कर और सब बातों का
इन्तिजाम किया जायगा; यह कह धन
पतराम तो कचहरी को चले गए और
उनकी बीबी ने इन दोनो की ऐसी खा
तिरदारी की कि दोनो का सब दुख
भूल गया और जितने आराम आदमी
को दूसरे से मिल सक्ते हैं सब चेतराम
और शिवकला को प्राप्त हुए।

खाना खाने के पीछे चेतराम और शिव
कला सोने के बहाने एकान्त मे गये पर
नींद उनको कहां थी दोनो उस अप
रम्पार धन की रक्षा आदि की फिकिर मे
पड़े जो करनैल साहिब से उनको मिलने
वाला था और बड़े २ विचार मन

इनके मे आने लगे चेतराम बोला
बहन अब हम तुम दोनो को इस
दुनिया की सब तरह की लज्जतें
और मजे हासिल होंगी अब मै तुम्हारे
लिये निहायत उमदह सवारी और
जोड़े पोशाक के लिये देहलीकी अमीरी
जाहिर हो तैयार कराऊंगा क्योंकि वे
जो २ सुख आदमी को रुपये से आकर
मिल सक्ते हैं अब तुम्हारे लिये मौजूद
करावेंगे और इच्छा पूर्वक जैसा तुम
चाहोगी वैसाही किसी बड़े अमीर के
घर तुम्हारी शादी कर देंगे एक निहाय
त आलीशान मकान इसी शहर मे बन
वावेंगे और उसमे झाड़ फानूस आदि
शीशे आलात इतने लगावेंगे जिसके देख
ने को लोग दूर २ से आवेंगे उमदह २
फर्श फरूश मकान के लिये तैयार करावें
गे और बहुत अच्छा और सुथरा एक
बाग भी उस मकान के सहन मे
लगवावेंगे जिसमे तरह २ के मेवे जात
जो इस मुल्क मे नहीं पैदा होते दूर २
देशों से मंगा कर लगावेंगे-बीच मे संग
मरमर का एक हौज़ बनावेंगे और चारों
ओर रविशों पर दूब जमवादेंगे रोज उस
पर छिड़काव हुआ करेगा जिस वक्त
चांदनी खिलेगी वहां पर सैर करने से

ज़िन्दगी का मजा हासिल होगा।

चेतराम के ख्याल के घोड़े मन रूपी भूमि में अक्लि रूपी लगाम सहित दौड़ा रहा था उस समय चित्रकला को कुछ औरही बात का नशा चढ़ा था यह सोचने लगी "नहीं मालूम विवेक राम का क्या हाल हुआ दूसरी बात इसको मन में यह भी थी कि विवेक राम का सब हाल गुप्त किसी से पूछना चाहिये कि वह कैसा आदमी है यदि वह सज्जन पुरुष हो तो उसे साहब सलामत बनाये रहें नहीं तो छोड़दी जाय" जब चेतराम से बातें कह चुका चित्रकला बोली अभी आप क्यों हवा के घोड़े दौड़ा रहे हो इश्वर वह दिन लावे देख लिया जायगा अभी तो वही मसल है सोवें झोपड़ी में सपना देखें महलों का--ये दोनों इस तरह बातें कर रहे थे कि धनपतराम एक बन्द लिफाफा लिये हुए आए और दोनों को बुला कर कहा यहां आइये इस लिफाफे में कर्नैल साहब का वसीयत नामा आया है इसे सुनिए यह सुनतेही दोनो भाई बहन हड़बड़ा कर धनपतराम के पास चले आये इसने उस बन्द लिफाफे को खोला तो उसमें वह वसीयत नामा निकला जिसे धनपतराम सब पढ गया और अन्त को यह कहा भाई चेतराम तुम्हारे न पहुंचने से कर्नैल साहब का दिल किसी ने तुम्हारी ओर से फेर दिया कल तक तो तुम्हारेही मालिक होने की खबर आई थी तअज्जुब की बात है तुमको कुल का मालिक न बनाते तो कुछ तो जरूर देते इस वसीयत नामे में तुम्हारा नाम तक नहीं है हमको बड़ा धोखा हुआ और तुम्हारा बहुत नुकसान हुआ परन्तु क्या किया जाय ईश्वर की इच्छा में किसी का वश नहीं है-चेतराम यद्यपि बड़ा धैर्यवान् था परन्तु इस नाउम्मेदी पर घबड़ा गया बोला यह तो हकीकत में बड़े अचरज की बात आप सुनाते हैं कि हम को कुछ भी न दिया अगर यह सच है तो अभी फिर हमें फकीरी भोगना पड़ेगा और दो चार बूंद पानी के भी उसकी आंख में झलक आये इतने में चित्रकला बड़े धीरज के साथ कहने लगी भाई क्या फिकिर करते हो जिनको कर्नैल साहब कुछ नहीं देगए वे क्या भूखों मर जांयगे हमको उन साहब का बड़ा ही धन्यवाद करना चाहिये कि उन्होंने दयालुता से इतने दिनों तक हमारी खबर गीरी की जब कि हम लोग नाबालिग और बेहा-

ह पांव की थे फिर नहीं मालूम हम दोनों को एक बारगी ऐसी बुरी हालत मे कर देने से ईश्वर ने हमारे लिये क्या भलाई सोचा है हम लोग थोड़ी बुद्धिवाले केवल वर्तमान सुख दुख सह एक प्रकार का होनहार शुभा शुभ बन्धान बांध लेते हैं परन्तु ईश्वर जो सदा सब पर दयालु है और जिसकी इच्छा के बिना हम अपने सामर्थ्य भर कोई काम नहीं कर सके हमारा भविष्य शुभ अशुभ परिणाम सब जानता है इस लिए हमको उसी करनी पर चाहे वह हमारे अनुकूल हो वा प्रतिकूल कभी असन्तुष्ट न रहना चाहिये अब धनपतराम जी से बिदा हो सराय मे चलना चाहिये और वहां इस बात की फिकिर करें कि काल से खाना पीना क्यों कर चले।

ईश्वर की अपरम्पार माया देखना चाहिये दोनो भाई बहन जो एक घड़ी पहले कई लाख के धनी समझे गये थे और १५ वर्ष तक १००) महीना जिनके पढ़ाने लिखाने और काम सिखाने मे खर्च हुआ करता था वे अब एकही घंटे के भीतर ऐसी दीन दशा मे आगए कि जब तक हाथ की कुछ मिहनत न करें खाने को मिलना भी कठिन होगया धनपत की भौजी ने अब पूछा कि कर्नैल साहब ने इन्हें कुछ नहीं दिया इनका सब आदर सन्मान उसी क्षण से बन्द कर दिया और ब्यालू के समय बजाय पक्की और खाजा खाजे के जैसा दो पहर को उन्हे परसा गया था सिर्फ दो २ मोटे पराठे उनको खाने को दिया संसार की ये सब विलक्षण चरित्र देखने योग्य है और अकलमन्दों को इससे शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए दूसरे दिन भोर को उठतेही किशनचन्द ने चेतराम से कहा अब यहां पल भर ठहरना उचित नहीं क्यों कि जहां सत्कार नहीं वहां कुत्तों के समान टुकड़े खा कर जीना निरे अपाहिज और निःपुरुषार्थी का काम है चेतराम ने कहा ठीक कहते हो और दोनों धनपतराम से बिदा हो देहली की सराय मे आ टिके

क्रमशः

हंसः प्रमोद

मुमुक्षू को ४ बात अवश्य जानिवे योग्य है कर्म, उपासना, ज्ञान, विज्ञान निष्क्रिय ; सो कर्मों मे सब से उत्तम कर्म यज्ञ

है गीता मे श्रीमुख वाक्य है यज्ञ: कर्मसुकौशलं यज्ञों मे सब से उत्तम जप यज्ञ है यज्ञानांजप यज्ञोऽहं गीता-भगवान् कहते हैं यज्ञो मे जप यज्ञ मेरा रूप है और भी मनु० सर्वेषामेवयज्ञानां जपयज्ञोविशिष्यते-सब यज्ञों मे जप यज्ञ सब से श्रेष्ठ है-सो जप ३ प्रकार के हैं वाचक उपांशु मानस इन तीनो मे मानस श्रेष्ठ है मानस जप मे अजपा जप यथा अनयासदृशीविद्या अनयासदृशोजपः। अनयासदृशीपुण्या नभूतोनभविष्यति ॥ वह अजपा जप यही सोहं है जो आपसेआप प्रतिश्वास मे हुआ करता है; अब उपासना सुनिये यह ऐसी उपासना है जिसे यह जीव अविच्छिन्न सोते जागते दिन रात किया करता है यथा-हंकारेणवहिर्याति सः कारेणविशेत्पुनः। हंसेतिपरमं मंत्रं जीवोजपतिसर्वदा ॥ फिर ऐसी विलक्षण उपासना है कि जिसकी उपासना की जाती है वह परमात्मा और जो उपासना करता है वह जीव दोनो मे कुछ भेद नही है जो उपास्य देव है वही उपासक भी है हंसावहंच त्वंचार्यं सखायौमानसायनौ। एवं समानसोहंसो हंसेनप्रतिबोधितौ इत्यादि वाक्यों से जीव और परमात्मा की अनन्यता सिद्ध भई अनन्याश्चिन्तयन्तोमां येजनाःपर्युपासते। तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहं॥ पुरुषःसपरःपार्थ भक्त्यालभ्यस्त्वनन्यया इस लिये सोहं यह उत्तमोत्तम उपासना भई; रहा ज्ञान सो सब ज्ञानो मे आत्मा का ज्ञान सब से प्रधान है यथा आत्मज्ञानविहीनाम् मूढास्तेपच्यन्ते नरकनिगूढाः। हंसः सोहं० हम सोई हैं० सो हमी हैं तत्वमसी महावाक्य का सिद्धान्त स्वरूप इस प्रकार परोक्षज्ञान सिद्ध करने वाला दूसरा कोई सुगम उपाय नहीं है नशास्त्रैर्नापिगुरुणा दृश्यतेपरमेश्वरः। दृश्यतेस्वात्मनैवात्मा स्वयासत्वस्थयाधिया॥ न बहुत सा शास्त्रानुशीलन से कुछ काज सरता है न गुरु और

कर पिला दे सक्ता है सत्व गुण मे स्थित बुद्धि वाले को वह आत्मा आपसे आपही दीख पड़जाता है योग वाशिष्ठ के इस श्लोक का लक्ष्य भी इसी सोहं पर है; बिना नाम के रूप काज्ञान नहीं होता सो वह रूप प्राकृत नहीं जो वैखरी नाम से हो किन्तु वह आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है तो वैसाही नाम भी चाहिये सो सच्चिदानन्द स्वरूप चाहिये सो सच्चिदानन्द विशिष्ठ नाम यही हंस है इसी हेतु से यह हंस विज्ञान अर्थात् विशेष ज्ञान हुआ और निष्क्रिय का तो यह रूपही है क्योंकि इसमें योग समाधि आदि किसी वस्तु को अपेक्षा नही है इसमें गीता की भी अनेक प्रमाण हैं नेवकिञ्चित्करोमीति युक्तोमन्येत तत्ववित् सबुद्धिमान् मनुष्येषु सयुक्तः कृत्स्न कर्मकृत् इन युक्तियों से इसकेद्वारा कर्म उपासना ज्ञान और निष्क्रिय उत्तम से उत्तम सिद्ध होता है जो मुमुक्षु के लिये अवश्य ज्ञातव्य है।

ज्यूरिस डिकशनबिल से हमें क्या लाभ है।

इस ज्यूरिस डिकशनबिल ने हमें कौन सा नौलक्खा हार पहना दिया और कौन से उत्तमोत्तम पद पर हमें बैठा दिया जिसके लिये हम अब तक लालायित हो रहे थे जिसके कारण गौराङ्ग समाज सब ओर से अब विकल हो रही है और उनके सङ्कीर्ण हृदयाकाश मे हमारी तरफ़ से एक विलक्षण बिभीषिका उत्पन्न हो गई है यहांतक कि उनकी संपूर्ण मण्डली की मण्डली डाह कलुषित हो रही है, जो मुनसिफ मिज़ाज़ हैं और अपनी उदार प्रकृतिसे वे लगाव इनसाफ किया चाहते हैं उनके लिए भी वही कानून है जो कानून सङ्कीर्ण हृदय ईर्षी और जाति पक्षपात की मैल से मैले हो रहे हैं तब रङ्ग पर क्या चाहो काला हो या गोरा नैचों की शोभा का जल सब के लिये एक सा है केवल चितवन मे भेद है और फिर

जो कानूनों का गुप्त मर्म कुछ और है ऊपर ही से इस कदर चिकनाय चुपड़ाय दिये गए हैं क्या हाथी के दांत जो दिखलाने के हैं वे खाने के समय काम दे सक्ते हैं तब तो लाचारी है; अथवा इसका भीतरी तात्पर्य कदाचित् यह हो कि हिन्दुस्तानी सिविलियनों का नम्बर दिन २ बढ़ता जाता है जब ये बहुत हो जांयगे तो रोजही इन काले लोगों का गोरों के साथ मुटभेड़ आ पड़ैगी इस लिये पहिले ही से इसकी जड़ काट रक्खें जिसमें जित और जेता के फर्क में फर्क न पड़ने पावे; इस सूरत पर चाहिये कि हर एक जाति वाले अङ्गरेज यूरेशियन हिन्दू मुसल्मान पारसी जैनी सभों के लिए उनकी २ कौम का हाकिम हुआ करे और वही उनका मुकद्दमा फैसल करे तब ठीक ठीक न्याय होगा नहीं तो जैसा अङ्गरेजों को इस से चिढ़ है वैसा सम्भव है कि इन सभों को भी एक दूसरे से अवश्य किसी न किसी बात की शिकायत रहैगी, सच २ तो यों है कि इस बिल के आन्दोलन ने अङ्गरेजों की कौम की सब कलई खोल दी और जैसे सङ्कीर्ण हृदय थे वे आप ही आप खुल पड़े; यह हमारी भूल थी जो इन्हें उदार प्रकृति समझे थे हम लोग तो भी भले कि इनकी मुकाबिले सुशिक्षा के इतने अभाव पर भी इनके सदृश सङ्कीर्ण हृदय नहीं है और ये इस प्रकार सब के सब ज्ञान विद्या होने पर भी जी के इतने छोटे हैं कि ज़रासी बात में चिढ़ उठे जिसका जो स्वाभाविक गुण दोष है वह नहीं जाता—नीम न मीठो होय सींच गुड़ घीसे इसे पछतावा इतनाही है कि महारानी की काली गोरी प्रजा के बीच सहानुभूति के बदले दिन २ मैल जमती जाती है इसका भावी परिणाम अच्छा नहीं जान पड़ता।

———o———

बाबू सुरेन्द्रनाथ और कलकत्ता हाई कोर्ट!

इस गरमी के मौसिम में जब काम करने को जी नहीं चाहता शरीर और

सब लोग आराम ढूढते हैं ऐसे समय एक ऐसी भारी घटना का होना जिस्से एक छोर से दूसरे तक कुल हिन्दुस्तान आग से आग खौल उठा है इस्से एक तह फाइदा तो अलबत्ता हुआ कि आज कल इस निठाले मे अखबार वालों का एक भारी मैदान मिल गया जिसपर मन मानता अपनी कलम का घोड़ा दौड़ा रहे हैं और कुछ दिनों के लिये फराकती हुई क्योंकि यह विषय ऐसा नहीं छेड़ा गया जो जलदी चुक जायगा परन्तु जिस बात पर यह आन्दोलन आरम्भ हुआ और क्या इसका परिणाम होगा उसके सोचने से उनको बड़ा खेद होता है जो समझदार हैं और जिनके मन में ऐसी घटनाओं का असर भरपूर जाकर चुभता है जैसा बाबू सुरेन्द्रनाथ के मन में चुभी ऐसे लोगों के चित्त में बड़ी भयावनी कल्पनाएँ उपजती है पहले यह कि जिसका कुछ ध्यान गुमान न था न किसी की यह इच्छा थी खामखाह एक मजहबी मामिले पर मुबाहिसा पैदा हो गया इलबर्ट तथा इंगलैंड के मान को उचित देने वाले अंगरेजों का यह खूब मालूम है कि भारतीय प्रजा को जैसे कोई बात इतना नहीं व्यापती जितना उनके मज़हब मे किसी तरह की दस्तंदाजी, जान कान की आरसी क्या दूर की जाइये सन् ५७ के गदर के बड़े भारी उपद्रव का कारण अभी बहुतों को स्मरण होगा जिस्से भारत कुछ का कुछ हो गया; यह सिर्फ मजहब के वसूल हैं जिन मे इस देश की जुदी २ कौम बंगाली पंजाबी मरहठे इत्यादि सभों का ऐक मत्य हो सकता है; हिन्दू मत के सैकड़ों आभ्यन्तर भेद हैं जिनसे मुल्क को कितनी खराबी हो रही है कुछ परवाह नहीं किन्तु जब उस धर्म रूप महावृक्ष को किसी पत्ती को भी कोई छूएगा तो सम्पूर्ण वृक्ष एक बारगी हिल उठेगा गोविषयक आन्दोलन इसका दृष्टान्त मौजूद है; अब हिन्दुस्तानियों का दास्य भाव, डरपोक पन, क्षमा, एक की जगह आधीही मे सन्तोष आलस्य, सब सुप्रसिद्ध है इस्से किसी को कुछ उजर न होगा किन्तु ईश्वर न करे इनके मजहब को कोई छेड़े और धर्म मे किसी तरह का दाग लगने पावे ; ये सब बातें बरदाश्त कर लेंगे बड़े २ ओहदे न मिलें सही सै, व्यापार दिन २ घटता जाता है पूंजी कम होती जाती है कुछ फिकिर नहीं, पुलिस या कोई दूसरे राज कर्मचारी मन माना अत्याचार से इन्हें

पीसा करैं सब सहैंगे रेलवे स्टेशनो पर टिकट लेने समय सैकड़ों धक्के खांय पर रेल छोड़ दूसरी सवारी पर न जांयगी, बागभद्दन समान अपनीही पृथ्वी अपना मुल्क अपना ऐश्वर्य्य हजारों बर्ष से कोई दूसरा भोग रहा है यवनो से ये कितना पाददलित हुए पर यह सब देख इनका खून कभी जोश मे न आया, हजारों ब-हाने से सैकड़ों तरह के टेक्स लगाये जांय जिनका देना हमको और हमारे बाल बच्चों को अखर रहा है मानो निज तन का रक्त काढ़२ दे रहे हैं बराबर देते जांयगी जरा चूं भी न करैंगी पर याद रहे मज़हब में दूसे मत छेड़ो जो बात हमारे मुल्क में तुम्हारे खिलाफ पर होउसे तोड़ दो राज्य प्रबन्ध में विघ्नकारी जो कुछ तुम्हे समझ पड़े जैसा सती का होना था उठादो परन्तु जिस्से तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं है उस्से हमें अपनी राह जाने दो हमारी बेव-कूफी पर मत हंसो हमको यह ठीक विश्वास है कि इस मुकद्दमे की जड़ ठा-कुर जी का लाना मत सम्बन्धी बात न होती तो हाईकोर्ट के विरुद्ध सम्पूर्ण भा-रतवर्ष सुरेन्द्रनाथ का साथ कभी न देता कुल राज्य के दफतर और कचहरियों मे ऐसा कोई नही है जिस्की प्रतिष्टा हाई-कोर्ट से हमलोग अधिक मानते हों और जिस पर हम अपनी स्वच्छन्दता की रक्षा का सबसे बड़ा भरोसा रक्खे हुए हैं portable जो मूर्ति एक जगह पर स्थापित नहीं है उसका मँगाना हिन्दू धर्म को तौ हीन है या नही इस्के उचितानुचित के बिचार का भार हम अदालत ही पर छोड़ते हैं राह निकल गई तो मथुरा अयोध्या आदि स्थानो की अति माननीय राधारमण बांके बिहारी आदि ठाकुरों की मूर्तियां भी काम पड़ने पर अब कच-हरियों मे तलब की जांयगी; यह नही कि केवल सुरेन्द्र बाबू को यह बात खट-क गई किन्तु हिन्दु मात्र को बुरा लगा पर इन कमबख्तों की इतनी हिम्मत नही जो कुछ कर सकैं सबर यहां तक कि अपने धर्म मे बिगाड़ देख जान से हाथ धोवैठेंगे पर वे मुह से कुछ कहैंगे नहीं; वल्लभ कुल के गोसाईं दाऊजी का किस्सा प्रसिद्ध है लाट साहब ने हाथ मिला लिया था इस लिये म्लेच्छ स्पर्श दूषित अपने को समझ यह देह अब श्री ठाकुर जी की सेवा के काम की नहीं तन त्याग दिया; वाहरे अकिल अन्ध धर्म लाड़ा पर वह जमाना गया जब कि गम खाकर बैठ रहना एक तारीफ

की बात थी अब बिना कहे नहीं चल सका। तब सुरेन्द्र नाथ का क्या दोष ठहरा जो उन्हों ने नारिस साहब के इस अविचार कारिता पर उलझ उठे; किसी की भली या बुरी करतूत कितनी ही उस्तादी और ढंगदारी से की जाय अन्त को छानते २ जो कुछ उसका छिपा हुआ मर्म है बिना प्रगट हुए नहीं रहता; हम जाना चाहते हैं मूर्ति को तलब कर कचहरी मे मगाने से इस मुकद्दमे की कौन सी वाकफीयत नारिस साहब को हुई और मूर्ति नई है या पुरानी इस बात को क्या परख साहब ने करली फिर भूल को स्वीकार न कर यह बात घंघोटा कि हमने दोनो फरीकैन की रजामन्दी से और कई एक अमलों से पूछ कर मूर्ति मगाया था नारिस साहब के अविवेक और अविचार कारिता का पक्का सबूत है; फरीकैन की राय कैसी? (अर्थीदोषांनपश्यति) गर्ज मन्दाबा यथा फरीकैन तो दोनो अपनी २ जीत चाहते थे उन बेवकूफों को इतनी समझ कहां कि राज कीय प्रबन्ध के बर्ताव मे politically आगे के लिये हमारी बड़ी जड़ कटती है सदा के लिये यह बात दृष्टान्त हो जायगी जिस हाकिम का जी चाहेगा ऐसाही हमारी मत सम्बन्धी बातों मे हस्ताक्षेप कर गुजरैगा; नारिस साहब को क्या उनकी समझ मे तो वह विष्णु विग्रह साधारण धातु या पत्थर था उसे विष्णु प्रतिमा का भाव तो निरर्थक हिन्दूपन के अभिमानी हम लोगों को है जिनके जी मे किसी को इस्की चोट न लगी; किरानी वैष्णव शैव शाक्त तथा दूसरे संप्रदाय वाले मजहब की पाबन्दी के पीछे अन्धे आपस मे एक दूसरे को खाये लेते हैं वैष्णव शैव को नही देख सक्ता शैव वैष्णव को देख जल भुन खाक होता है पर यह बात क्या हो गई और आगे के लिये इस्से क्या नुकसान हर पहुंचेगा किसी के ध्यान मे न आया बाबू सुरेन्द्र नाथ यद्यपि हिन्दू समाज की बहुत सी बेहूदा कैद से मुक्त हो बूढ़े अर्थो हाक्क हिन्दुओं की नजर मे हेठे जचते हैं पर यह बात जो सरासर अन्याय की थी उन के जी मे चुभ गई; धिक्कार निरर्थक ऐसी मजहबी सर गरमी और अर्थोडाक्सी पर खैर यह सब तो हम बहका कर प्रकरणान्तर की समालोचना करने लगे थे अब प्रस्तुत पर फिर लौटते हैं दूसरी बात अपनी भूल के संशोधन मे जज्ज साहब ने कहा कि हमने अपने से प्रेटर इसटर

पूछ लिया था पर उनका यह कहना भी निहायत पोच है सरकार की नौकरी बजाने वाले हां मेहां मिलाने मे अति कुशल अमलों को कौन नहीं जानता केवल उनकी पूछने पर निर्भर होना ना-रिस साहब का निरा साहब पन है; दूसरे यह भी ख्याल करने की बात है कि अखबारों के एडिटरों का क्या हक और कहां तक इख्तियार है सोचना चाहिये कि यह भाग्य हीन देश जिनके अधिकार मे हैं वे इस्को किसी बात से सम्बन्ध नहीं रखते उनसे और हमसे जमीन और आसमान का फरक है उन की कौम दूसरी मजहब दूसरा उनकी चाल चलन हमसे न्यारी आब हवा औरही वे ठंडे मुल्क के रहने वाले हम ग्रीष्म प्रधान देश के बसीवासी तिसपर बड़ा समूह उनका हमसे हर तरह पर अलग रहा चाहता है हमारे समाज हमारी रीत रस्म बात व्योहार किसी मे वे नहो मिला चाहते बल्कि इस बात की बड़ी यत्न मे रहते हैं कि उनकी कोई बात मे हिन्दुस्तानी पन न आने पावे तब क्यों कर मुमकिन है कि वे अच्छी तरह सब पोशीदा हाल हमारे हर एक मुल्की दीनी और सामाजिक दस्तूरों का जान सक्ते हैं माना कि वे पढ़ लिख सक्षात बृहस्पति तुल्य हो स्वर्ग मे उतर कर आये हैं पर फिर भी हमारे और उनके बीच एक medium बिचवई अवश्य रहना चाहिये जिस्के द्वारा हमारा सब छिपा हुआ हाल हमारे अन्य देश वासी हाकिमों को मालूम हुआ करे; यह जरिया अखबार से बढ़कर दूसरा नहो है फिर अनुभव होते२ यह भी मालूम हुआ कि जिस ढरें पर ब्रिटिश गवर्नमेंट का राज्य चल रहा है उस्में बड़े२ हाकिमों और बड़े२ ओहदेदारों को अपनी मनमानी कर गुजरने मे यदि कोई बात रोक सक्ती है तो Public opinion सर्व साधारण का ऐक्य मत्य है अतएव अखबार के एडिटरों का यह एक मुख्य काम या फर्ज है कि जब किसी हाकिम या राजकर्मचारी को किसी बात मे बेजांय भूल करते देखे सर्व साधारण public की ओर से उनको चैतन्य कर दे; इस ब्रिटिश राज्य के बर्ताव के ढरें से यह निश्चय होता है कि हमारे हाकिमों को यदि यह डर न होता कि कहीं हमारे विरुद्ध कोई कुछ न कहे सुने इस्से जहां तक हो इन्साफ होता रहे तो एकही दिन मे सब उथलापथल हो जाता फिर भी कितने बारीक और

पोशीदा मामिलों मे सरासर अन्धेर हु-आही करता है हां अलबत्ता ऊपरी Superficial मोटी बातों से चौकसी रहती है और जहां के सर्व साधारण की ऐक मत्य Public opinion का ज़ोर नहीं है वहां की जो कुछ कैफीयत है हमारे पाठकों को भरपूर मालूम है बल्कि यह पश्चिमोत्तर देश । एक उदाहरण हो सका है हिन्दुस्तान में ऐक मत्य का जो ज़ोर कलकत्ते मे है वह कहीं नहीं है ; यह बात नहीं है कि नारिस साहब ने यह पहली चूक की है उनकी राय हम गरीबों पर जैसी है उसका हाल कई तरह से प्रगट हो चुका है अगर किसी दूसरे जज ने ऐसा किया होता तो शायद लोगों को इस कदर बुरा न मालूम होता मगर नारिस साहब को यह नहीं कह सक्ते कि इस काम को उन्होंने भूल से किया है; खैर जो हो इस बात पर हम ज़ियादह जोर नहीं दिया चाहते पर जिन पर सर्व साधारण की अनुमति के प्रकाश करने का भार रक्खा है उनको यह बहुत जरूर था कि इस विषय पर बिना भरपूर आन्दोलन किये न जाने देते इसलिये कलकत्ते के कागजों ने जो इस्कदर लिखा पढ़ी की तो कुछ अनुचित नहीं हुआ परन्तु हम यह नहीं कहते कि बङ्गाली अखबार के एडिटर ने जो लिखा वह सब बात सच थी या की उसकी भाषा कड़ी न थी परन्तु इतना कहेंगे कि क्षमा मांगने पर हाईकोर्ट सी प्रतिष्ठित अदालत को यह बात बहुतही ओछी जंचती है कि बाबू सुरेन्द्र नाथ सरीखे आदरणीय पुरुष का किसी प्रकार की सजा या जुरवाना करना ।

—o—

Recreation मन बहलाव ।

लोग कहते हैं आज हमे कुछ काम नहीं है, वेकाम जी घबड़ाता है, फलाने काम से हैं काम से जाते हैं हम अपना काम करते हैं, तुम निकम्मे हो, यह चीज तो किसी काम की नही है इत्यादि-हम नहीं जानते इस काम के क्या माने हैं सच पूछिये तो संसार मे कोई कभी वेकाम नहीं रहते यावज्जीव मात्र अनुक्षण कुछ न कुछ काम कियाही करते हैं गीता का सिद्धान्तही है "नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्य कर्मकृत" फिर न इस संसार की सर्जित पदार्थों मे कोई वेकाम है कदाचित् काम के निसबत इस भांत २ की कहावतों के यह माने हो सक्ते हैं कि संसार का क्रम है लोग मुह से कुछ और

कहते हैं पर मतलब उनका किसी खास काम करने से रहता है सो न हुआ तो मानो कुछ काम ही नहीं है, खैर इस काम के जो कुछ माने हो वेकाम हमको क्या करना चाहिये और हम क्या करते हैं यह सब यहां पर लक्ष्य करने लायक है, जब आदमी को कुछ काम नहीं रहता तो अवश्य अपना दिल बहलाने को कोई न कोई काम करता है; कितने अपने सब काम काज से फुरसत पाय दिल बहलाव के लिये हवा खाने को बाहर जाते हैं सदर सड़क के एक छोर से दूसरे तक दो चार चक्कर किये कभी इस कोठे पर ताका कभी उस अटारी पर दो चार इशारे बाजी हुई दिल बहल गया घर चले आये; हमारे देश की अधिकांश अशिक्षित या शिक्षित समाज का विनोद मुजरा हुक्का बैठकों मे बैठ हाहा ठीठी और धौल धक्कड़ है; कितने चले जाते हैं राह मे दो दोस्त मिल गये दो दो कच्ची पक्की उन्हों ने इनको कही ये उनको दो चार औंड़ो बौंड़ो सुना दिया अपनी २ राह ली सब थकाहट दूर होगई मन बहल गया; हमारे देश की स्त्रियों का मन बहलाव लड़ना है घर के काम काज पिसौनी कुटौनी से छुटकारा पाय जब तक दांत न किरैं और आपस मे झोटिं झोटा न करलें तबतक कभी न अघायंगी; चुगल चबाई बुढ़ी घूतों का मन बहलाव चबाव और निन्दा है दो चार पुराने खब्बीस इकट्ठे हो तमाखू पिक्कर थूकते जाते हैं और कोई हजार वर्ष का पुराना जिकर छेड़ बहुधा बिरादराने के मामिले की कोई बात अवश्य रहैगी नाक चढ़ाय २ मुह बगार २ किसी भले मानुष के गुण मे दोष उद्घाटन करते दो चार कच्ची पक्की कह सुन लिया मन बहल गया; कोई २ ऐसे मनहूस भी हैं कि फुरसत के वख्त जब कुछ काम न हो किसी अन्धेरी कोठरी मे हाथ पर हाथ रक्खे पहरों तक चुप चाप बैठे

रहने ही से उनका दिल बहलता है; आज २ नौमिखिये नई रोश नी वाले जिनका किया धरा आज तक कुछ नहीं हुआ देशो न्नति रूपी विक्षिप्तता mania से विक्षिप्त आज इस सभा मे जाय हड़ाकू मचाया कल उस क्लब मे जाय भूरी टांय २ कर आप मन बहल गया; इन्ही मे कितने गुरूघंटाल घाऊ गप्प कि सी क्लब या समाज के सिक्रेटरी या खजानची बन सैकड़ों रुपया वसूल कर कराय डकार बैठे भाडों की नकल सवारी की स-वारी जनाना साथ-आमदनी की आमदनी दिल बहलाव मुफ्त मे सच पूछो तो इनका दिल बहला व सब से अच्छा हमे ऐसा दिल बहलाव मिलता तो सिवा दिन रात दिल बहलाने के काम कर ने के डाह न जाते; धन्य हम, धन्य हमारा देश, धन्य हमारी समाज, जिनके बीच नई तरहदा री और नये अन्दाज के एक से एक बढ़िया दिल बहलाव मौजूद हैं क्या कहें अघा न रही बहुत से अनोखे ढंग के दिल बहलाव रहि जाते हैं।

सांख्य दर्शन।

"इस शास्त्र के प्रवर्तक महर्षि कपिल हैं जिन्होने इस दृश्य जग त् को * आध्यात्मिक आधि भौ-तिक आधि दैविक त्रिविध ताप तापित देख तत्व ज्ञान का उत्पा दक षड़ध्यायात्मक यह सांख्य शास्त्र का प्रकाश किया है इसमे २५ तत्वों की संख्या गिनती की गई है इसी से इसका नाम सां-ख्य है"; "२५ तत्व ये हैं मूल प्रकृति

* आध्यात्मिक दुःख २ प्रकार के हैं शारीर क और मानसिक वात पित्त कफ इन ती नों के कोपसे उत्पन्न ज्वरादि रोग अथवा इन तीनों मे एक के कोपसेउत्पन्न व्याधि शारीरिक ताप है; काम क्रोध लोभ मोह भय विषाद ईर्षा या प्रीयतमके वियोग से उत्पन्न शोक मानसी ताप है। मनुष्य पशु पक्षी सांप बिछू आदि जङ्गम या संथावर पदार्थ द्वारा उत्पन्न दुःख आधि भौतिक ताप है। यक्ष राक्षस भूत प्रेत आदि के आवेश से उत्पन्न दुःख आधि दैविक ताप है।

महत्तत्व अहङ्कार, पञ्चतन्मात्रा अर्थात् शब्दतन्मात्रा, स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रा, रसतन्मात्रा, गन्धतन्मात्रा, आंख, कान, नाक, जिह्वा त्वचा ये ५ ज्ञानेन्द्री मुख, हाथ, पांव, पायु, उपस्थ, ये ५ कर्मेन्द्री और मन पृथ्वी, जल, तेज, वायु आकाश, ये पञ्च महा भूत और पुरुष। इन में कोई तत्व केवल प्रकृति अर्थात् उत्पन्न करने वाला मात्र है कोई विकृति अर्थात् दूसरे तत्व के विकार से आप उत्पन्न हुआ है कोई प्रकृति विकृति दोनो है अर्थात् आप स्वय एक तत्व से उत्पन्न हो दूसरे तत्वों के उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखता है कोई तत्व न प्रकृति न विकृत ही है अर्थात् न वह आप किसी तत्व के उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखता है न स्वयं किसी से पैदा भया है।

केवल प्रकृति अर्थात् उत्पन्न करने वाला मात्र जिस्को प्रधान कहते हैं उसी का नाम मूल प्रकृति भी है "मूलंचाभीप्रकृतिश्च" मूल जो प्रकृति ऐसा समास करने से प्रधान की यह संज्ञा अन्वर्थक हुई क्योंकि यह आप महत्तत्व आदि कार्य समूह का करने वाला है परंतु इस्का करने वाला कोई दूसरा नही है यदि हम प्रधान को किसी का कार्य माने तो कोए दूसरा उस्का कारण मानना पड़ैगा दूसरे का कोई तीसरा तीसरे का चौथा ऐसाही बराबर मानने से कारण की अनवस्था हो जायगी इसी से इस्को मूल प्रकृति अर्थात् मूल कारण कहते हैं; जबतक सत्व रज तम ये तीनो गुण बराबर रहते हैं तबतक उस्की प्रकृति या प्रधान सञ्ज्ञा है जब इन तीनो मे कुछ घट बढ़ हो जाता है तभी वह विकृत हो तत्वान्तर को उत्पन्न करती है; महत्तत्व अहङ्कार और पञ्च तन्मात्रा ये सातो प्रकृति विकृति दोनो है क्योंकि महत्तत्व जिस्का दूसरा नाम अन्तः करण है मूल प्रकृति या प्रधान की विकृति अर्थात् प्रधान से उत्पन्न हुआ है

और अहङ्कार की प्रकृति अर्थात् अहङ्कार का पैदा करने वाला है इसी तरह अहङ्कार तत्व जिस्का दूसरा नाम अभिमान है महत्तत्व की विकृति है अर्थात् अहङ्कार अन्तःकरण से उत्पन्न हुआ है वही अहङ्कार तमोगुण के अधिक होने से पञ्च तन्मात्रा का प्रकृति अर्थात् पैदा करने वाला हो जाता है; १० इन्द्री एक मन .५ पृथिव्यादि महा भूत ये १६ प्रकृति अर्थात् उत्पन्न किसी को नहीं करते और अहङ्कार से आप स्वयं उत्पन्न हुए हैं इस लिये ये १६ केवल विकृति हैं, पुरुष नित्य और अपरिणामी है न वह किसी को उत्पन्न करता है न आप किसी से उत्पन्न हुआ है इस कारण न वह प्रकृति हुआ न विकृति ही है।

प्रकृति त्रिगुणात्मक है त्रिगुण मे सत्व गुण सुख स्वरूप लघु और प्रकाशक है अर्थात् समस्त विषय का प्रकाश सतो गुण के द्वारा होता है वृत्तियां इस्की सब शान्त हैं; रजो गुण दुःख रूप है सतो गुण और तमो गुण जो अपने २ कार्य मे प्रवृत्त होते हैं उनका प्रवर्तक रजो गुणही है जैसा वायु आप चल कर अन्यान्य वस्तु को सञ्चालित करता है इसी तरह सत्व और तमो गुण यद्यपि अचल हैं परंतु रजो गुण द्वारा चालित हो अपना २ कार्य संपादन करते हैं वृत्तियां इस्की सब घोर हैं तमो गुण मोह स्वरूप गुरु और आवरक है वृत्तियां इस्की मूढ़ हैं अर्थात् मूढ़ता के बिना सहारे तमोगुण को निज कार्य करने मे किसी प्रकार प्रवृत्ति नहीं हो सकी; ये तीनो गुण अपने २ कार्य करने मे परस्पर एक दूसरे की सहायता किया करते है इससे इस जगत का कारण जो त्रिगुणात्मिका प्रकृति है उसमे जो सुख स्वरूप है वह रज गुण है और जो मोह और मूढता स्वरूप है वह तमोगुण है ; जैसा मैत्र को अपनी स्त्री सत्यवती मे सतोगुण के प्रादुर्भाव से सुख होता है स-

पत्नी को रजोगुण के प्रादुर्भाव से उसी सत्यवती का जार है उसी तमोगुण के उदय से मोह होता है ; तस्मात् यह संपूर्ण सुख दु:ख मोह स्वरूप और त्रिगुणाही इसका प्रधान कारण जान पड़ता है इसी प्रयोजन की श्वेताश्वतर उपनिषद में श्रुति भी है। अजामेकां लोहित शुक्ल कृष्णां वह्वी: प्रजा जनयन्तीं सरूपा:। अजोह्येको जुषमाणोनुशेतेजहात्येनां भुक्तभोगामजान्य: ॥ वह अजा अर्थात आप ही आप उत्पन्न भई है अकेली है और लोहित वर्ण अर्थात् रजोगुण युक्त है श्वेत अर्थात् सतोगुणी है और कृष्ण अर्थात् तमो गुण विशिष्ट है अपने रूप के समान अर्थात् जैसी वह है वैसी बहुतसी प्रजा को उत्पन्न किया है ; एक कोई जो आपही आप उत्पन्न हुआ है उस अजा माया के वश मे पड़ा सो रहा है दूसरा अज अर्थात् परमात्मा उस माया का भोगकर उसेत्याग देता है; महत्तत्व बुद्धि स्वरूप है इसी बुद्धी तत्व के द्वारा कर्तव्य अकर्तव्य का निश्चय होता है जिसे अध्यवसाय कहते हैं सो बुद्धि का एक धर्म है जैसा नील पीत आदि वर्ण घट पट आदि का एक धर्म है और नीला घट पीत पट इन वाक्यों मे नील और पीत वर्ण सहित घट और पट का अभेद प्रतीत होता है वैसाही धर्म और धर्मी के अभेद से कहीं २ बुद्धि और उस का धर्म अध्यवसाय दोनो एकही प्रतीत होते हैं सुतराम अध्यवसाय शब्द का अर्थ बुद्धिही प्रतीत हो सक्ता है; इसके अतिरिक्त बुद्धि के ८ धर्म और भी हैं यथा धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य इनमे पहले ४ सतोगुण से उत्पन्न हैं और पिछले ४ तमोगुण से पर रजोगुण सहायक दोनो मे रहता है बिना जिसके संसर्ग के सत्व और तम मे कार्य करने की शक्ती ही नहीं आसक्ती।

क्रमश:

अग्रिम ३।) पश्चात ४।)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st June 1883. Vol. V.] [No. 10.

प्रयाग जेठ कृष्ण ७ सं० १९४० जि० ५ [संख्या १०

बाबू हरिश्चन्द्र कृत पुस्तकों की प्राप्ति।

नाटक-इस नाम की छोटी सी पुस्तक मे बाबू साहब ने नाटक रचना का सर्वस्व रख दिया है इसमें नाटकों के अङ्ग उपाङ्ग नाटक बनाने की बिधि और उनके गुण दोष प्राचीन नाटकों की संक्षिप्त समालोचना आधुनिक हिन्दी नाटकों का गुण दोष निरूपण तथा योरोपीय भाषा के नाट-

कों का विचार सब बड़े पाण्डित्यके साथ प्रगट किया गया है अत एव इस छोटी सी पुस्तक को हम नाटक की मंजूषा कहैं तो उचित है बिना इस पुस्तक को अच्छी तरह पढ़े नाटक बनाने का शौकिन निरा उजडुपन और जो नाटक पढ़ने के शौकीन हों उनके लिये तो यह मानो एक दिव्य नेत्रांजन है यह अवश्य संग्रह योग्य है विशेष क्या लिखें पढ़ने ही से इसका सब हाल मालूम होगा बनारस मेडिकल हाल प्रेस मे छपी है मूल्य ✓) हैं।

विद्या सुन्दर नाटक ।

श्री हरिश्चन्द्र विरचित डुमराव देशाधिपति श्री महाराज राधा प्रसाद सिंह देव बहादुर की सहायता से मल्लिकचन्द्र और कंपनी द्वारा प्रकाशित यह दूसरी बार छापा गया है नाटक अति ही उत्तम है और हिन्दी के उत्तम नाटकों मे गणनीय है।

धर्म दिवाकर ।

यह मासिक पत्र कलकत्ते से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ है इसके लेख केवल धर्म सम्बन्धी विषयों पर हैं भाषा इसकी बहुत ही परिस्कृत और ललित है मूल्य इसका वार्षिक डाक व्यय सहित १) है यह पत्र धर्मशील पुरुषों के अवश्य लेने योग्य है सारसुधा निधि यंत्रालय से प्रकाशित होता है।

धनंजय विजय व्यायोग ।

संस्कृत का मूल ग्रंथ जिसका यह अनुवाद है वही महा नीरस और किसी काम का नही है तब अनुवाद क्यों कर बढ़िया हो सक्ता है यह पहले हरिश्चन्द्र मेगजीन मे छप भी चुका है अतएव समालोचना द्वारा इसका गुण दोष दरसाना व्यर्थ है क्योंकि लोगों ने पढ़ पढ़ाय इसका जो कुछ स्वाद था जीर्ण कर डाला।

मान लीला ।

यह खिलवाड़ की एक छोटी सी पुस्तक है आर्य प्रेस बनारस में छपी है मूल्य -) है।

"लेजिस्लेटिव" कानून कारी सभा का उद्देश्य ।

पूर्व काल में जो कि एक प्रकार असभ्यता का समय समझा जाता है Administration of Justice अदालत के ज़रिये इंसाफ होने का कोई ठीक तरीका न था राजा अपनी मन मानी जो कुछ कर गुज़रै वही न्याय और इंसाफ था इसी से यह कहावत चल निकली है "राजा करै सो न्याव पासा पड़ै सो दांव" मनु ने भी राजा ही पर सब दारमदार रक्खा है राजा को एक देवांश माना है आठो दिक्पाल का अंश उसी रहता है-इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च । चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रानिर्हृत्यशाश्वती: । यस्मादेषांसुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्मितोनृपः । तस्मादभिभवत्येष सर्वभूतानि तेजसा । बालोपि नावमन्तव्यो मनुष्यइतिभूमिपः । महतीदेवता ह्येषा नररूपेणतिष्ठति--उस समय हर एक मुकद्दमे के लिये राजा को अपने मन का नया २ कानून गढ़ना पड़ता था राजा तक इत्तिला होने की क्या २ कायदे थे जिसे सोच समझ अब इस उन्नीसवीं शताब्दी से हम उनपर हंसते हैं; फरियादी को कागज़ की बनी पोशाक पहिन कर आना पड़ता था । नक्श फरियादी है किसको शोखिये तसवीर का । कागज़ी है पैरहन हर पैकरे तसवीर का। कहीं बड़े ऊंचे पर डंका रक्खा रहता था जिसके बजने पर मालूम होता था कोई फिरयादी आया है; जहांगीर की न्याव का ६० मन का सीकड़ प्रसिद्ध है किले से बाहर तक लगा था घंटियां उसमें लटका करती थीं फरियादी आकर उस सीकड़ को हिला देता था एक साथ सैकड़ों घंटियां बज उठती थीं, जहां

गौर को मालूम पड़ जाता था कि कोई फरियादी आया है-वह भी ज़माना लोगों ने देखा होगा और अब यह भी देख रहे हैं ; इङ्गलैंड के प्रबल प्रताप के कारण अंगरेज़ी सभ्यता का सितारा यहां चमक रहा है इनसाफ का दरवाज़ा छोटे बड़े सब के लिये एकसां खुला है न्यायार्थी के लिये जितनी कठिनाई थी सब दूर हो गई इस राज्य में जैसा और सब बातों की सुगमता और आराम है वैसाही न्याय और इनसाफ में भी अदालत का उत्तम प्रबंध प्रजा के जान माल की भरपूर रखवाली कर रहा है; एक समूह ऐसे लोगों का जिनकी योग्यता और लियाकत मानो कसौटी में कसी हुई है वेही समय २ जैसा उचित समझते हैं पुराने कानून मन सूख और नए इजरा करते हैं; अङ्गरेजी राज्य के उदार शासन ने कुछ दिनों से इस समूह में हिन्दुस्तानियों को भी शरीक किया परन्तु हम बड़े दुःख के साथ इस बात को कहते हैं बल्कि जिसे प्रगट करते शरम आती है कि उनके होने से हमें कोई लाभ न हुआ ; चिरकाल तक केवल नाम और प्रतिष्ठा के लिये राजा लोग कौंसिली किये जाते थे जिन का होना न होना दोनो एकसा था बीसों वर्ष तक दिमाक पिच्ची कर कठिन अभ्यास और परिश्रम से जिस "पोलिटिक्स" इल्म हुकूमत को यूरोप के विद्वान् सिख कर यहां आय कौंसिल के मेम्बर होते हैं उसे हमारे शतरंज बाज़ राजे क्योंकर समझ सक्ते हैं कि इन्तिज़ाम मुल्की क्या चीज़ है जिन्हों ने सिवा ऐश इशरत या पूजा के कभी एक मुहूर्त या पल भर के लिये भी जन्म पर्यन्त ऐसी २ बातों की ओर अपनी तबियत नहीं रुजू किया; उपरांत गवर्नमेन्ट के उसी उदार शासन ने अपनी उदारता को थोड़ा और विस्तार दे राजाओं का पिण्ड छोड़ प्रजाओं में से कौंसिली चुनना मंजूर किया

फिर भी हमारा वह प्रयोजन सिद्ध न हुआ भड़राज बीच मे कूद पड़े जिस्का परिणाम यह हुआ कि ठौर२ उनकी प्रतिमा जलाई गई ; हमे लाभ तभी होगा जब कि ये मेम्बर अधिक बढ़ाए जांय कमसे कम ५ आदमी हर एक प्रेसिडेंसी के लिए जांय और ये लोग एक्स्ट्रा असिसटेंट कमिशनर या सबार्डिनेट जज हों या रहीसों मे से जो बड़े मुलाज़िम और इन्तिज़ाम सलतनत के मार पेच खूब समझते हों और अंगरेजी भी अच्छी तरह जानते हों; ये लोग बड़े २ ज़मीदार और रईसों से लिखा पढ़ी और राहरसम बराबर रक्खा करें जिस्से किसी बिल या कानून पास होने के पहले उनकी राय भी मालूम हो जाया करे और इस कौंसिल की जो कुछ कार रवाई हो वह सब देशभाषा मे छप कर एक२ उस्की कापी एडिटरों के पास भेज दी जाया करे; उदार संप्रदाय के मुकुट मणि श्रीमान् लार्ड रिपन के समय इस्का संशोधन अति आवश्यक है तब इस लेजिसलेटिव सभा का भरपूर मतलब बर आ सक्ता है।

किम्वदन्ती

किम्वदन्ती है कि राजा शिवप्रसाद ने कौंसिल की मेम्बरी से इसत्याफा दिया था पर लार्ड रिपन ने मंजूर नहीं किया ; हम पूरा विश्वास करते हैं कि यह भी गुरुओं की गुरुआई है समाज मे अपना गौरव बनाये रखने को खासकर बनारस के लोगों के बीच राजाही ने शायद इस अफवाह को उड़ा दिया है नहीं तो लार्ड रिपन साहब को ऐसा क्या मीठा है कि राजा भागते फिरते और लार्ड रिपन इन्हें धाय २ के पकड़ते। ठौर २ पुतला जलाया गया इस मुलाहिज़े से रिपन साहब क्या इन्हें नहीं छोड़ा चाहते या हांमे हां मिलाने इन्हें बहुत अच्छा आता है इस्से इन पर उक्त महो

इथ बहुत प्रसन्न हैं या कि घर २ और आदिमी २ मे इनकी अकीर्ति की कालिमा छा रही इस अनुरोधन से इन्हें रखनाही उचित समझते हैं या कि जन्म पर्यन्त शरिस्ते तालीम मे रह कर सिवा मियां गोरी के दूसरे काम को कभी छांड़े नही गए इसे राज नीति का मर्म समझने वाला इस पश्चिमोत्तर और अवध मे दूसरा कोई पैदाही नही हुआ इस लिये लाचार हो इन पर हमारे बादशाह साहबका इन पर बड़ा आग्रह है जो हो यह बात निरी वे बुनियाद अफवाह मालूम होती है; अब यहां पर बिचार इस बात का है कि कौंसिल की मेम्बरी के लायक कैसा आदमी होना चाहिये तहां पहली बात उसमें यह हो कि अपने मुल्क का पूरा दोस्त हो; अच्छे कुल का हो; न्याय अन्याय अच्छी तरह समझता हो; कानून महोदधि का पारङ्गत हो समाज मे सदैव नेकनाम रहा हो और सब से वड़ी बात यह हो कि Who hase made politics his subject of study जिसने राज नीति को अपने अध्यायन का प्रधान बिषय कर रक्खा हो ऐसा आदमी हाईकोर्ट के वकीलों मे अलबत्ता मिल सक्ता है उन्ही मे से कोई किया जाय तो यथार्थ मे मेम्बरी का काम भरपूर निबाहेगा; राजा या राजा से खुशामदी टट्टू फिर ठूंस दिये जांयगे तो हम लोग सदा के लिये अपना करम ठोंक बैठ रहेंगे क्योंकि इतने आन्दोलन पर भी सरकार को कान न हुआ तो अब काहे को कान होगा यह प्रतिमा आदि का जलाना जो २ बातें राजा के निसबत की गईं उस सब का मर्म यही था कि सरकार ऐसी २ बातें खूब सोच समझ के किया करे।

वर्षा।

गर्मी गई वर्षा आई; और मुल्कों मे बहार के मौसिम की बड़ी चाह होती है हिन्दुस्तान का मौसिम बहार वर्षा

है; गन्दा भी इतना कि सहस्र (मेनीटेरिअम) से मस्तक से सिर पटकैं एक ज़रा भी सफाई अपना असर नहीं पहुंचा सकी बरसै तो खराबी न बरसै तो खराबी; बरसता है तो जहां देखो तहां कीच २ घर के भीतर बन्द बैठे रहो बाहर पांव रखने का मन नहीं होता जहाज़ के बम्बे समान बड़े २ पारनालों के नलों की इतना छर्दि राग घेर उठता है कि उनकी बरसों की संचित पूंजी निकल जाती है; म्युनिसिपालिटी के सत् असत् प्रबन्ध की सब कलई निकल पड़ती है, मेहतर साहब का फराकती और मन माना चैन हो जाता है, विष्णु शयन के साथ ही सफाई वाले अधिकारियों ने भी कुम्भकर्ण की निद्रा में लम्बी तानी किये रहौं जो गन्दगी के इस खास अमल से की सिर पचावै लोगों को भी तनिक स्वास्थ्य मिला रोज की धमकी और घुड़की से बचे; नहीं बरसता तो मारे उमस के जी घबड़ाता है पसीनों से तर बतर न दिन कल न रात चैन, हैजा का की बन पड़ती है चुन २ कर हाथ लगी फिरने भांत २ के मलेरिया ज्वर डेंगू आदि को घर २ ज़ियाफत परसी रहती है; इन ऋतुओं के झट पट अदल बदल से प्रकृति की प्राकृतिक लीला का वैभव जैसा प्रगट होता है वैसा किसी दूसरी बातों से नहीं ४ दिन पहले "नातिप्रेयान् शरीरिणाम्" प्राणी मात्र को दुखदायी गरमी का मौसिम था; इस मुल्क में यदि कोई खराब से खराब मौसिम है तो यही गरमी; हिन्दुस्तानियों का आलूस्य धन आलस्य को जमने वाली भी यही है दिन में जो सुस्ती और बिकलता घेरती है कि बिना सोए किसी तरह कल नहीं पड़ती; दो पहर दिन का सन्नाटा आधी रात को भी मात करता है कभी २ चील का कि कियाना सोनार या लोहारों के हथौड़ों की खुट खुट या बाज २ घरों में रोटी पानी से फुरसत पाय मेहतिन मेहरियों की सूप के पछोरने की फटर २ आवाज़ के सिवा कुछ नहीं सुनाई देता; दर दिवार सब में से आग निकलती है पानी पीते २ जी पानी होता जाता है खस खाना की कौन कहे बर्फ के कुण्ड में एक नहीं हजार बार गोता क्यों न लगाओ असली तरावट से भेंट कहां; दिनके चलने वाले रेल के मुसाफिरों से इसकी कैफीयत पूछनी चाहिये

जिनका दम नहीं निकलता और सर सामान भीत का सोहिया रहता है; वह कठोर मौसिम गरमी का किसी तरह राम २ कर बीता ऐसे बेचैनी के समय में भी हमारे पुराने बुजुर्गों ने कैसी अकिलमन्दी का निचोड़ जाहिर किया है कि इस समय मिलते तो हम ज़रूर उनका खुर छूते; चैत कुआर आदि महीने जिनमें सब तरह का आराम न बहुत जाड़ा न बहुत गरमी उन्हे खुर साम कर डाला गरमी के महीनों में उन्हीं ने न जानिए क्या ताफगी समझा कि काम काज ब्याह सादी सब इन्ही महीनों में करने की आज्ञा दे दी जैसी लगन की भरभराहट इस वैशाख जेठ में हो जाती है कि जी व्याकुल हो उठता है हलवाई और बनियों की दूकान पर जिनिस चुक जाती है पण्डित जी की इसमे भी खातिरखाह चांदी है कितने तो इस लगन की कमाई साल भर खाते हैं; खैर ज्यों त्यों कर गरमी बीती पाप कटा अब इस बरसात की बहार आई संसार का क्रमही है "सुखस्यानन्तरंदुःखं दुःखस्यानन्तरंसुखम्"। मध्यान्ह सूर्य की ललाटन्तपखरतर किरणों से तापित महीमण्डल दो ही दिन की वर्षा में शान्त और शीतल प्रकृति धारण कर लेता है; कर्षकों को हर्ष बर्द्धक वर्षा की इस सोहावनी सम भावनी ऋतु की किसे चाह नहीं है पर खेतिहरों का साल भर के लिए मरना जीना तो इसी के आधीन है; यह वह मौसिम है जिसका असर मनुष्यों की पांचों इन्द्रियों पर पहुंचता है हरे मखमल की शोभा का अनुहार करने वाली हरियाली देख नेत्रों को जो सुख और तरावट पहुंचती है वह अनिर्वचनीय है; दामिनी की दमक श्याम मनोहर काली पीली घटा की नई २ छटा का सुख दुख सब नेत्रों ही को होता है; कजली मलार सावन आदि नए नए रागों को सुन २ कैसे अपूर्व आनन्द का अनुभव कान को होता है; बड़े २ जहाजों बहबचे जिस समय एक बारगी फूट कर बहते हैं उस दम नासिका बेचारी से पूछना चाहिए जिसके अथाह दुःख की कहीं थाह नहीं रहती; बड़े २ डांस कुटकी तथा बरसाती कीट पतङ्ग के बाढ़ का जो कुछ असर है वह त्वगिन्द्री को भर पूर पहुंचता है बरसात की जिही मक्खियां जहां से झांकोगे ताक कर फिर वहीं आय ऐसा बैठेंगी मानो विंध्य शिला बदन पर टूट पड़ी; सौंधी ब

सु ओं का बहुत भाती है सैकड़ों करावा गुलाब और केवड़े के छिड़काव पर भी दिमाग का वह खुशबू की तरावट नहीं पहुंच सक्ती जितनी सोंधावट की सुगन्धि पानी पड़ते पर ८ महीने की सूखी जमीन से निकल घ्राण इन्द्री को तृप्त करती है; हमारे अमीर उमरा पतङ्ग से फारिग हो लाल उड़ाने में लगते हैं; जहां देखा तहां मेढ़कों का शब्द कुछ २ इन डिग्रीओं के पण्डितों के समान व्यर्थ की टर २ नाध देते हैं मोर और पपीहाओं का सुहावना लेक्चर सुन २ अवण इन्द्री को एक असीम आनन्द मिलता है हिन्दुस्तान ऐसे देश में जहां के लोग कारीगरी या बाहर जाकर बनिज व्योपार करने में सर्वथा दत्त चित्त नहीं है और खेती ही को अपनी मुख्य जीवन वृत्ति समझा है ऐसे असाहसी और निरुद्यमियों की प्राण रक्षा क्यों कर होती यदि वर्षा के पर्यन्य रूपी भगवान कृपा कर दयार्द्र दृष्टि विलोकन पूर्वक इन्हे जीवनदान दे जीवन दान न करते; वर्षा ऋतु मे ऐसे २ ईश्वरीय गुण समझ प्राचीन बुद्धिमानों ने संवत्सर का प्रसिद्ध नाम वर्ष रख दिया सच २ वर्ष का चलना बिगड़ना इसी वर्षा के आधीन है तब यह क्यों इस ऋतु के नाम से अपनी को अङ्कित न किए रहे गरमी भर यरादह बाजार और सड़कों पर सत्तू फांकते रहे अब इस बरसात मे मनमाना रबड़ी जितनी चाहो खाओ कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं है खैर मनाओ म्युनिसिपलिटी के सत्प्रबन्ध को जिसकी बदौलत बरसात के सब सुखों का अनुभव हर साल तुम्हे होता जाता है।

नूतन चरित्र अध्याय ६।

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति।

सराय में पहुंच जब दोनो ने अपनी दशा पर ध्यान किया तो दोनो की आंख से आंसुओं की धारा बहने लगी थोड़ी देर बाद चित्रकला अपने स्वाभाविक धैर्य गुण के कारण सब दुःख भीच रोक बोली भाई रोने से काम नहीं चलेगा अब कल से कुछ फिकिर रोजगार की करो; आप तस्वीर खींचने का काम बहुत अच्छा जानते हो और मैं सिलाई के काम मे होशयार हूं यही दोनों रोजगार इस समय पेट भरने के लिये अङ्गीकार करना ठीक है पीछे ईश्वर की इच्छानुसार जैसा होगा देख लिया जायगा, चेतराम ने उत्तर दिया जब तक मैं जीता

हूं और हाथ पैर काम करने लायक हैं यह क्यों न होगा कि अपनी प्यारी बहन का उदर पालन निमित्त क्लेश सहते देखूं इस लिये बहन तुम कुछ फिकिर न करो सिर्फ तसवीरों ही को बना २ बेचूंगा तौभी दोनों के खर्च के लायक निकाल लूंगा परन्तु मुझे सोच इतना ही है कि हमारी सब आशा बात की बात में जड़ पेड़ से उखड़ कर वे बुनियाद हो गई और यह निश्चय हो गया कि पहले से किसी बात की उम्मेद बांधना निपट नादानी है अब इस समय सब ओर मुझे अन्धियारा ही अंधियारा देख पड़ता है जगत् श्मसान तुल्य जीर्ण अरण्य सा प्रतीत होता है; प्यारी बहन तुम भले मानुषों की स्त्रियों के समान घर का सब धन्धा किया करो मैं तसवीरें बना २ गंगा राम मुसौविर की दूकान पर रख आया करूंगा वह बेंच दिया करेगा आना रुपया कमिशनका उसे दे दिया जायगा; बहन ने फिर कहा मैंने सिलाई का काम परलोक के लिये नहीं सीखा ऐसे २ काम इसी लिये सीखे जाते हैं कि विपत्ति काल में उदर पालन अच्छी तरह हो अब फिर इससे जियादह मुसीबत और कौन सी होगी कि कल खाने को तभी मिलेगा जब गाढ़ी जोहत की मेहनत करेंगी सिवा इसके देहली का तनक्का खर्च ठहरा तुम्हारे अकेले की कमाई से दोनों का गुजरान अच्छी तरह होना बहुत कठिन है; लखनऊ और देहली में तो बड़े २ घरानों से भी स्त्रियां घर बैठी सुईकारी और कसीदे का काम करती हैं और मर्द बाजार में बेच आया करते हैं इसमें कोई बात अनुचित नहीं है; जो आप मेरी बात मानें तो मेरी बनाई टोपियां आप बाजार में शाम को बेच आया कीजिये अथवा किसी व्योपारी के हाथ घरही पर बेच दिया करो जो दिन भर में दो टोपियां तैयार कर सकूंगी तो आठ आने नफे के कहीं गये नहीं भाई की आंखों में मोती सी आंसू की बूंद झलक आई कहने लगा मैं अभी मुर्दा नहीं हो गया जो बहन तुमको सीने पिरोने की सखत मेहनत करने दूं पर बानगी दूं बड़े आदमियों का रुपये की हवस बहुत होती है इसी से वे अपनी स्त्रियों से जो काम करने लायक है सो भी जो नहीं करने लायक है सो भी सब तरह की मेहनत उनसे लेते हैं नहीं तो क्या उदर पालन निमित्त स्त्रियों से मेहनत करानी चाहिये; जो तुम मेरा भला

चाहती हो तो मेरे कहने माफिक चलो ईश्वर सब भला करेगा नहीं चार छ: महीने भाई के साथ भूखी हो रहना; चित्रकला फिर उत्तर देने को थी परन्तु जब उसने देखा कि भाई की आंख से आंसू डबडबा आये रंज के सिवा और कुछ फल उसके उत्तर का न होगा तब केवल इतना कह चुप हो रही; मैंने सदा आप की बात मानी है तो अब क्यों न मानूंगी परन्तु तुमको अकेले मेहनत करते देख मेरा जी दुखेगा मेरे जी में तुम्हारी प्रीति ऐसी ही है कि अपना आराम छोड़ तुम्हारा आराम चाहती हूं और तुमको प्रसन्न देख मेरा जी अतिही प्रसन्न होता है इसी से मैंने यह बात कही थी अब जो आप की रजा मन्दी इसी में है तो मुझे भी आपकी आज्ञा मानने में कुछ उजर नहीं है।

यह सलाह कर भाई ने कहा सराय में भले मानुषों का रहना उचित नहीं इससे घड़ी देर यहां अकेली रहना जो तुम मंजूर करो तो शहर में जाय मकान रहने के लिये ठीक कर आऊं; बहन की अनुमति पाकर चेतराम शहर को गए रास्ते में गंगा राम तसवीर वाले की दूकान पर भी होते गए और उससे बात चीत करने में थोड़ी देर हो गई और उसकी दूकान से कुछ थोड़ी दूर पर भले आदमियों के पड़ोस में एक अच्छा सुथरा मकान ३) महीना के किराये पर ठीक कर कहारों को साथ लिये चित्रकला को लेने को आया परन्तु सराय में उसे न पाय जो दशा चेतराम की हुई उसका तो किसी द्वारा प्रकाश करना कठिन जान पड़ता है; उस समय भांत २ की कल्पना इसके जी में चित्रकला की ईमान दारी के बाबत उठने लगी कभी को उसको जी में आती थी कदाचित् पाठशाला में उसने किसी से मुलाकात पैदा कर ली हो और मेरे साथ इस गरीबी दशा में रहना उसे पसन्द न हो इस कारण चली गई हो; कभी को सोचता था यदि ऐसा होता तो जाहिरा चले जाने और अपनी खुद पसन्द से शादी कर लेने से उसे कौन रोकता था जो चोरी से चली गई फिर जब उसके प्यार पर दृष्टि करता था जो वह हमेशा अपने भाई से करती थी तो यह सब कल्पना उसे झूठ जचती थी अन्त को चेतराम ने सोचा कि अब इसे काम नहीं चले गा उसका तलाश करना बहुत जरूरी है क्योंकि मेरा मन उसकी

बुराई की बाबत साक्षी नहीं देता वह लड़की बहुत अच्छी है और किसी के धोखे में आगई हो तो अचंभा नहीं।

चार छः आदमियों को साथ ले जो भठियारों तथा धनपत राम की सहायता से उसको मिल गए थे सहर के गली कूचों में इधर उधर ढूंढ़ने लगा परन्तु कुछ पता न पाया जो कोई इस बात को सुनता वह स्त्रियों की बुराई का जिकिर करने लगता और यह भी लोग कहते थे कि वह औरत बिना तुम्हारी रजामन्दी के नहीं गई यह सब सुन २ इसे भयानक क्रोध आता पर कुछ कर नहीं सकता था किसी की जबान पकड़ना उस की ताकत से बाहर था। बड़े अफसोस से थका मांदा एक जगह बैठा था कि एक अजनबी मनुष्य उसकी ओर इशारा कर अपने साथी से कहने लगा यही चित्रकला का भाई है और उसकी खोज में ४ दिन से हैरान है नहीं मालूम वह औरत कहां चली गई; चित्रकला का नाम सुनतेही उसको मोहब्बत ने जोश पर दिला जोश किया कि छिपकी वच गई उस अजनबी आदमी से पूछा कि भाई तुमको उसका कुछ हाल मालूम है उसने जवाब दिया मै सिर्फ इतनाही जानता हूं कि जब रेल से टक्कर लगी थी तब मैं भी उसी रेल में बैठा था मेरी बहन जो इरथला की पाठशाला में पढ़ाती थी मुझको बतलाया कि यह चित्रकला चेतराम की बहन है जो सिलाई के काम में सब से अव्वल है उस समय विवेकराम भी उसके साथ गाड़ी में बैठे थे जो यहां खड़े हैं शायद इनको उसका कुछ हाल मालूम हो तो पूछलो॥

विवेकराम ने जब सुना कि चेतराम चित्रकला के भाई यहां मौजूद हैं और उसका दो दिनों से पता नहीं लगता और वह उसे ढूंढ़ रहे हैं तुरन्त उनके पास आय कहने लगा यद्यपि मैंने आप को पहले कभी नहीं देखा परन्तु आपके गुणानुवाद आप की बहन चित्रकला की जबानी उस कमबखत दिन सुन रक्खा था जब दोनों रेलों में टक्कर लड़ी थी मैं आप की बहन के गुम हो जाने का कुछ हाल पूछूं तो आप कुछ अनुचित तो न समझिएगा और आप मेरी सहायता उसकी तलाश करने में कबूल करेंगे या नहीं? मैंने उसको केवल थोड़ी देर के लिए देखा था परन्तु मुझको उसका शील स्वभाव उसकी अमृत सदृश बाणी दयालु प्रकृति और परोपकारता ऐसी इष्ट पाई

कि मैंने उसके समान गुण दूसरी स्त्री में नहीं देखे, मैं चाहता था कि उसको आप के साथ देखता और जाने क्या २ मनोरथ चित्त में उसकी ओर से था परन्तु मैं बड़ा कमनसीब हूं कि देहली में आते ही पहिले उसके गुम हो जाने की खबर सुनी अब आप कृपा कर उसके गुम हो जाने का सब वृत्तान्त कहिये मैं भी भर सक आप की मदत करने को मुस्तैद हूं। चेतराम मन में सोचने लगा चित्रकला ने जब रेल का सब माजरा कहा था तब उसने विवेकराम का नाम तक नहीं लिया था दूसरे विवेकराम की सूरत भी देहली के गुण्डों की सी दृष्टि आती है चित्रकला हरगिज़ ऐसों से बात न की होगी फिर वह मुझ से कोई बात छिपाती न थी इस मनुष्य से रेल पर मुलाकात उससे हुई थी यह किसी तरह ध्यान में नहीं आता; सिवा इसके उसने यह भी खयाल किया कि ये लोग देहली के हैं इनसे धोखा और फरेब जो न बन पड़े वही अचरज है पर कोई वजह धोखा देने की साबित न हुई और उसकी बातों से यह अच्छी तरह प्रगट हो गया कि उसको बहन के खोजने में वह तन मन धन से तत्पर है; खैर जो हो अब चित्रकला का पता लग जायगा उस समय इन सब बातों का भेद खुल जायगा अभी ढूंढने में इसकी मदत लेना बहुत ज़रूर है यह सब आगा पीछा सोच विचार चेतराम विवेकराम से बोले साहब मैं बड़ा बदनसीब हूं यद्यपि साथ खास न मिलने के कारण उसने आप का हाल मुझ से नहीं कहा परन्तु आप के कहने से निश्चय होता है कि रेल की गाड़ी में चित्रकला से आप की बाखूबी जान पहचान हो गई है उपरान्त जो कुछ हाल था सब उसने कह सुनाया और पूछा आप की समझ में उसके गुम हो जाने का क्या कारण आता है विवेकराम ने उत्तर दिया यद्यपि मैंने उसे बहुतही थोड़े अर्से के लिए देखा था परन्तु उतनेही से विदित हो गया कि आप की प्रीति उसकी जी में जमी हुई थी मेरे नज़दीक किसी यहां के बदमाश ने सराय में खूबसूरत औरत को अकेला पाय धोखा दे ठग ले गया है आप खातिर जमा रखिए मैं उसका पता जल्द लगा लेता हूं॥

विवेकराम अपने नौकरों को ले चेतराम के साथ उसी सराय में गया जहां से चित्रकला गुम हो गई थी; विवेक

राम ने भटियारे से बुला कर पूछा वह
औरत कहां गई उसने कानों पर
हाथ रख जवाब दिया साहब मुझको
कुछ खबर नहीं मैं तो सुबह से मछलियां
फसाने जाता हूं चिराग जले आता हूं
मुझे क्या मालूम कौन मुसाफिर कहां
आया और कहां को गया॰ विवेकराम
जी इन बातों में निहायत चालाक और
अपने को एकता समझता था उसकी त-
ज़ुगुसगूमे कुछेक हिचक और लड़खड़ा
हट ऐसी पाया जिस्से निश्चय हो गया
कि भटियारे को इसका हाल जरूर मा
लूम है यह समझ उसे इसने अकेले में
बुलाय कहने लगा॰ मियां भटियारे तुम
भले आदमी मालूम होते हो इस्से तुम
हमसे गई न करोगे कल रातको ११ बजे
के बाद तुम और तुम्हारी भैइतरानी
इसी औरत के पीछे आपस में लड़ते थे
उस समय हमारा आदमी यहां मौजूद
था उसने सब हाल तुम्हारी लड़ाई का
सुन कर हम से कहा है॰ भठियारे ने
बीच में रोक कर जवाब दिया आप का
आदमी झूठ बोलता है हम तो कल ११
बजे के पीछे नहीं लड़े सिर्फ जोर से
बातें करते थे विवेकराम ने कहा आदमी
नौकरकी जात उनसे इतनी अक्किल कहां
कि तुम्हारी ओर की बातों और लड़ाई
के भेद कर सके पर जो तुम दोनों ने
आपस में जो २ बातें कीं उसने सब सुन
हम से ज्यों की त्यों कह दीं॰ भटियारा
घबराकर बोला आप ने इस तरह का
जासूस हम बेचारों के घरों में भेजना
कब से सीखा है साहब यह अच्छी बात
नहीं—हाय मैं इसी लिए उस रांड़ से
कहता था तब मेरा कहा न माना अब
न जानिए क्या फजीहत हो भटियारा
भागने पर था कि विवेकराम ने उसे दौ
ड़ कर पकड़ लिया—मियां अब भागने
से क्या होता है यदि तुम हमको भी अ
पने इस भेद में शामिल करो तो ईश्वर
की कसम हम तुम पर कुछ हरफ न
आने दें और जो हमको शरीक न करो
गे तो यह समझे रहना बचा फिर तु
म्हारा ठिकाना नहीं लगेगा—हमको
खूब मालूम हो गया वह स्त्री तुम्हारी भ
टियारी की सांट में गुम हुई है—हम
अभी पुलिस को खबर करते हैं अब वहां
से दौड़ आवेगी तो दोनों हाथ में हाथ
कड़ियां पड़ हवालात में भेजे जाओगे
यह मत समझो विवेकराम अकेला क्या क
रेगा हम उसकी पीठ पर हैं भटियारे ने
कहा क्यों घबराकर हमारी जान लिए

डालते हो कर नहीं तो डर क्या—क्या इस मामिले में हम पुलिस से डरते हैं पुलिस हमारा क्या करेगी जब चौकीदार ही चोरी करेगा तो पकड़ने वाला कहां से आएगा; आप अभी जाकर पुलिस मे रपट कीजिए और हमारे मकान से च ले जाओ नहीं तो मै दो एक को जे ह न्नत कर डालूंगा—विवेकराम अपने आदमियों को बुला कर कहा इस बद-माश को पकड़कर कोतवाली में ले चलो यह सब गुल और सुन भटियारी तालि यां पीटती आई और देखा कि विवेकराम के नौकर भटियारे को बांध रहे हैं तो झाड़ू ले विवेकराम की ओर दौड़ी मुए निगोड़े तू कौन है जो मेरे मरद को बांधे लिए जाता है अभी जाकर दाता सहाय से कहती हूं कि आप की बदौलत हमारा यह सब हाल हुआ एक छलिया हमारे भटियारे को पकड़े लिए जाता है।

विवेकराम भटियारिन को भी अकेले में बुला कर बहुत सी चिकनी चुपड़ी बातें कह सुन कुछ लालच कुछ धमकी दिखाय बोला बीबी हमको अच्छी तरह मालूम होगया है कि चित्रकला तुम्हारे ही घाट में गई है मेरा मतलब उसके लि ख जाने से नहीं है मरम से चाहता हूं कि मैं भी तुम्हारा शरीक हूं बीबी यह खूब समझे रहो यह शिकार तुम्हें अकेले को नहीं हजम होगा फिर तुमको ऐसा क्या मिला होगा जो हम न दे सकें हम तुमको एक के बदले दो देंगे और हमेशा मुंह मीठा करते रहेंगे तुम किसी बात का विचार कुछ पसोपेश किए सब भेद हम से कह दो—भटियारी ने कहा साहब यह मुझ से कभी होगा नहीं है भटियारे की ओर देखा और उन दोनों का आपस में कुछ इशारा हुआ जिसे विवेकराम सब भांप गया परन्तु और कोई इस बात को न ताड़ सका—विवेकराम ने कहा तुम दोनों आपस में सलाह कर लो पीछे जैसी तुम्हारी मर्जी हो वैसा करना जो आराम से अपने घर बैठना मंजूर हो और हमको सदा के लिए अपना दोस्त बनाना चाहते हो तो इसका सब भेद हमसे बतला दो और जो पुलिस के धक्के खाना पसन्द हो हवालात में रहना चाहते हो काठ में पांव पड़ना तुम्हें भाता हो तो तुम्हारी खुशी—यह कह अपने नौकरों को आज्ञा दिया खूब हुशियार रहना हम रोटी खाकर अभी आते हैं यह कह चेतराम को अपने साथ ले घर को चला आया। क्रमशः।

बात ।

बात क्या है बात किसे कहते हैं ? यह तो सब कोई जानते हैं कि यह शब्द पुराना हमारेही देश का है हमने इसे किसी विदेशी से मंगनी नहीं मांगा किन्तु शुद्ध हिन्दी और वार्त्ता का अपभ्रंश है-बात हमारी बात है हमारे देश की बात है बात संसार मे बड़ी बात है जिस्की बात है उस्की क्या बात है जिस्की बात नहीं उस्की क्या बात ; ईश्वर करे बात सब की बनी रहे बात गए बात नहीं मिलती बात से लोग सैकड़ों कमाते हैं-हुंडी वालों मे सिर्फ बात पर हजारों का भुगतान नित्य होता है दलाली वकीलोआदि पेशाही इसी बात का है बात हार गए बात खागए बात देदी बात देनी पड़ी बात बिगड़ गई-बात बनी है बात बनाते हैं बात मानते हैं;इस संसार मे ऐसे भी देश के लाल हैं जो बिगड़ी बात को बनाते हैं ; और एक ऐसे भी नीच प्रकृति नराधम हैं जो बनी बात बिगाड़ देते हैं बात करने का भी सलीका होता है बातन हाथी पाइयां बातन हाथी पा बात पर कायम रहना मरदानगी की पहचान है-आदमी की बात मे एक बात करामात है बात गये बात नहीं मिलती इसी से चतुर सयाने मौका पाय चुटकी बजाते बात की बात मे बड़ा २ काम निपटा देते हैं ; उमदा २ न्यामतें जो ईश्वर ने मनुष्य के लिये सृजी हैं बात यह एक ऐसी बड़ी ताकत है जिस्के करने की शक्ति केवल आदमी ही को दी गई है और सब जानवर इस्से महरूम रक्खे गये हैं-यह वह जरिया है जिस्से हम अपना इल्म और या काफीयत दूर तक फैला सक्ते हैं कहां तक कहा जाय यह वह शक्ति है जिस्के लिये मनुष्य की सृष्टि ज्ञानवान होकर ईश्वर की इतर सृष्टि मे सब से श्रेष्ट है यह शक्ति faculty मनुष्य मे न होती याने अगर बात करने की ताकत आदमी को न होती तो हम सब केवल पशु तुल्य रहते गूंगों को यह ताकत हासिल नहीं है इस लिये जितनी तरह की दुनियावी न्यामतों से वे महरूम रहते हैं इसी शक्ति से पुरानी विद्याएं जब कि छापने आदि का कोई प्रकार न था बराबर नसलन ब नसलन चली आईं बल्कि विचार दृष्टि से देखा जाता है तो लिखने को भी इस जमाने मे कोई बड़ी कदर न थी सिवा भुर्ज पत्र और ताड़ के पत्तों के इन दिनों की दिन २ बढ़ती हुई सभ्यता का

परिपाक ऐसे बढ़िया से बढ़िया कागज उन पुराने लोगों को कहां मयस्सर थे ; मानसिक परिश्रम से बचने को जैसा इन दिनों के लोग चिर काल के मनन का नतीजा अपने उमदा २ खयालातों को अक्षर विन्यास द्वारा लिखावटों मे कर डाला वैसाही उस समय के लोग जो मानसिक परिश्रम से मुह मोड़ना अपनी हतक समझते थे अतएव लिखावटों मे उन खयालों को न कर अपनी विलक्षण प्रतिभावाली स्मृति शक्ति याददाश्त मे केवल उसे रख वातों ही बात मे एक दूसरे से बड़ बड़ी २ विद्याएं कायम रक्खा; पतञ्जलि के महाभाष्य की पंक्ति है बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्ष सहस्रं प्रति पद पाठ विहितानांशब्दानांशब्दपारायणं प्रोवाचनान्तं जगाम बृहस्पतिश्च प्रवक्ता इन्द्रोध्येता दिव्यं वर्षं सहस्र मध्ययन कालः नचपारावाप्तिरभूत्—बृहस्पति ने इन्द्र के देवताओं के सहस्र वर्ष पर्यन्त प्रतिपद पाठ शब्द पारायण कहा पर अन्त तक न पहुंचे बृहस्पति ऐसे वक्ता इन्द्र ऐसे अध्येता देवताओं के सहस्र वर्ष का काल लगने पर भी शब्दों अर्थात बातों के अन्त को न पहुंचे तब मनुष्य खोट किसे गिनती मे हैं अपनी ४ दिन की जिन्दगी मे क्या कर सक्ते हैं वेद इतिहास पुराण वैद्यक ज्योतिष आदि क्या हैं सिवा इन्ही बातों की समष्टि के; इसी बात का एक दूसरा रूपान्तर चिट्ठी पत्री अखबार आदि हैं; कितने केवल बातों ही की रोटी खाते हैं हमारे राजा साहब इसी बात की बदौलत इस पद पर पहुंचे इन्हे जो कुछ इल्म और जैसी लियाकत है किसी को छिपा नही है पर बाहरे मधुर भाषिणी कोकिला लच्छेदार लश्राग गोयाई खुशामद के कुण्ड मे गोता मार जिस वक्त मिट्ठी मसी खे राजा साहब बातों के लच्छे छोड़ने लगते है उस समय मन को चाहो जितनी ही उतावली और क्रोध हो पर करण इन्ही को एक अनोखी शान्ति और लिहूं लिपटू चलो है; यह भी ख्याल रहे बात करना कोई सहज काम नहीं है लोग कहते हैं इन्हे बात करने को भी अकिल नहीं है सच पूछिये तो शऊर के साथ बात करना कोई सहज काम नहीं है; हम हिन्दुस्तानियों का कायदा है मुलाकात को गये एक बात सिवा तेरे मुह ताक रहे है न कोई ऐसी बात करते हैं जिस्से तरफैन को कोई फायदा पहुंचे न उनकी बात से कोई किसी

तरह पर खुश होता है जो कुछ बात उनके मुंह से निकलेगी वह या तो खुद गर्ज़ी से भरी निरी अपने मतलब की या कि दुनिया भर की झूठ सौटपटांग; कुछ ज़रा मज़हब मे दखल हुआ पक्के वेदान्ती दम्भ के रूपमकारी के पुतले बन गए और जो किसी लायक न हुए थोड़ी देर बैठे उकता कर उठके चले आये हम पूछते हैं ऐसों की मुलाकात मे कौन सा हज़्ज़ है जिन्हे बोलने तक का शऊर नही; कितनों की बात निरी खुराफात ऐसी बे सिर पैर होती है कि अपनी बक २ से दिमाग चाटलेते हैं पर अन्त को नतीजा इस बात चीत का कुछ नहीं रहता या तो शेखी और टून की लेंगे या जब तक बैठे रहें गे अपनाही दुख रोना रोते रहेंगे कितनों की आदत है कि वे अपनी बात के आगे दूसरे की सुनतेही नहीं; कितने बात रोगी ऐसे हैं जो बातों मे फस खाना पीना तक भूल जाते हैं, शेखसादी साहब का कौल है दो बात मूर्खता की हैं एक यह कि बात कहने के वख्त चुप रहे दूसरे यह कि चुपरहने के समय बहुत बोले कितने पर छिद्र दर्शी खल मनुष्यों को किसी का भलो अपूर्व बयान करने मे बड़ा चौखिला रहता है अपने से कैसाही बड़े से बड़ा क्यों न हो यहां तक कहें कोई राजा महाराजा क्यों न हो और उनके घरके गुलाम और कुत्ते से भी चाहो उनकी जान पहचान न हो और अपने मे चाहो बैसे सैकड़ों छिद्र और दोष हों उधर कभी ख्याल न कर दूसरों का ऐब एक का सौ २ बढ़ाय कहने मे बड़े प्रवीण बन जांयगे; बात भी कई तरह की होती है गन्दी बात जैसा बाज लोगों की इखलतकिया पड़ जाती है कि वे गाली सम्पुटित बात करते हैं चार लफ्ज बोल जरूर एक गाली मुंह से निकाल तब आगे बढ़ेंगे योंही बराबर गंडेदार बोलते जांयगे; भोंड़ी बात जैसा हमारे पण्डित जी सुहमी सुड़कते संस्कृत मे सनी टिड्डापाय की बुलनी कहा करो और घंटों फाका करें पर हिन्दी लिखने या बोलने का काम पड़े तो कभी एक मोहाविरा एक बात भी शुद्ध और बा काइदे न बोल या लिख सकेंगे; ईश्वर की रचना मे इस पण्डितों की एक सृष्टि ही निराले ढंग की है क्या कहना बात भोंडी समझ भोंडी अक्किल भोंड़ी सूरत भोंड़ी पहनाव पोशाक भोंडा ऐसाही इस देश की स्त्रियों में भाड़ुवा-रिने ; इस फिरके में भी भोंड़ा पन नि

रीं है विद्या का लेश न रहने से खैर स-
भ्भ और बुद्धि इनकी जैसी नीची और
औंड़ी है उसे तो हम कई बार कई तरह
पर दिखला चुके हैं आज इस जाति की
लड़िकी स्त्रियों का कुछ चित्र चित्रित
किया चाहते हैं मगर ढंगदारी और
हुस्न तो मानो ईश्वर ने इन्ही के बांट में
छोड़ दिया है ; खबीसिन भी सूरत क-
पड़ा ऐसा तरहदारी का पहनेगी कि
घेरदार लहँगों में नगोड़ी वैल के कूबड़
समान पर्वत का शिखर सा बड़ा भारी
पेट निकला रहै ; जैसा चीनियों में छो
टा पांव खूब सूरती में दाखिल है वैसा
ही इनमें अघासुर के उदर समान लम्बा
भारी पेट ; खुदा के फज़ल से इनकी बो
ली और चाल में भी एक अनोखे ढङ्ग का
नूर बरसता है सांझ को दसपांच इकठा
हुए जब एक निराली तान से आलापने
लगती हैं सुभानअल्लाह उस समय ईश्वर
की कुदरत याद आती है सारी राग
रागिनिएं लोट पोट हो जाती हैं गाने
और रोने में तमीज़ करना ज़रा काम
रक्खा है ; हम इस अनोखे फिरके का
ज़ियादह औड़ा पन यहां पर नहीं खो
ला चाहते डर लगती है कहीं ऐसा न
हो मत जो कोई कू कोई कू कार हमारा

दिमाग चाट डालें सेरों घी खाने पर
भी मगज़ को तरावट न पहुंचेगी; बातों
ही के अह्र में एक हेर फेर और एच पेंच
कि बात होती है इसका पूरा नमूना
किसी बने टइयां वाली गवाह की ग-
वाही है क्या मजाल जो हाकिम इनकी
एच पेंच को कहीं पर से गिरफ्तार कर
सकै ; व मुकाबिले महाजनों और पण्डि
तों की औड़ी बात चीत के शुस्ता और
शीरीनी मुसलमान भाइयों की बात भी
लक्ष्य करने योग्य है सरांय की भटियारि
न या मेहतरानी जैसी बा कायदे और
शुद्ध मुहाविरे की बात बोलेगी वैसी क-
दाचित हम लोगों के बड़े घरानों में भी
न बोली जाती होगी ; अब तो सैयद
अहमद खांजी ने उरदू का सब तर्ज़ ही
बदल दिया नहीं तो जिस वक्त वो उर्दूं
का ज़माना बना था उस समय इसकी
लस्सान गुस गू का बिल यादरास्त होती
थी जब कि इसकी एक२ लब्ज़ और बा
तोंकी भरपूर सेहत देहली और लखनऊ
की बेगमातों से हुआ करती थी ; इन्हीं
तरह २ की बातों में एक बात का बत-
ङ्गड़ होता है जैसा हम इतनी जूम कीसी
बात इस दो अक्षर पर इतना बड़ा बत
ङ्गड़ गा गए ।

हेर फेर के फिर नहीं।

पश्चिमोत्तर और अवध की सेल्फ गवर्नमेंट बिल के विचार करने को नैनीताल में एक कमिटी हाल में नियत हुई है जिसके "प्रेसिडेंट" सभापति बोर्ड के मेम्बर मि० कारमाइकेल हुए हैं उक्त साहब बहुत दिनों तक बनारस के कमिश्नर भी थे इस कमिटी में कई एक और अंगरेज राजकर्मचारी अवध के तअल्लुकेदार और दो एक छुट भइए राजे शरीक किए गए हैं उनमें राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द भी हैं; यद्यपि जो लोग हुए हैं उनमें हमारी समझ में ऐसेही कोई हों जो मुल्क के सच्चे दोस्त और हम लोगों के लिए जी खोल लड़ने का साहस बांध सक्ते हों पर राजा साहब जो हेर फेर फिर के ऐसे मौकों पर मेम्बर चुने गए सो तो अवश्यमेव हमारे हुक्कामों के representative प्रतिनिधि किए गए हैं क्योंकि हम लोगों से राजा से क्या सरोकार; सरोकार ही होता तो इनका पुतला जलाया जाता; अफसोस गवर्नमेंट को भी यह जिद्द है कि अटबद के ऐसे मौकों पर ऐसों को चुन कर रखना जो मुल्क के पूरे दुशमन हों और जिनसे सिवा राजकर्मचारी हुक्कामों की मतलब बरारी के हमारे फाइदे की कोई आशा नहीं पाई जाती हो; उस पर एहसान का कप्पड़ इतना बड़ा कि सरकार हिन्दुस्तानियों के नफा नुकसान की बातें उन्ही से पूछ कर करती है; या कि कारमइकेल साहब राजा को अपना गऊ समझ आप प्रेसिडेंट हुए तो हां में हां मिलाने वाले इन्हें क्यों न बुलाते ? मसल है जहां ब्राह्मन तहां नाऊ। जहां गङ्गा तहां झाऊ॥

सांख्यदर्शन।

पूर्व प्रकाशितानन्तर।

धर्म २ प्रकार के हैं एक अभ्युदय निमित्तक जिसे काम्य भी कहते हैं अर्थात् कुछ कामना चित्त में रख जो कर्म किया

जाय जैसा यज्ञ दान देव पूजन आदि जो इस लोक अथवा परलोक मे सुख प्राप्ति निमित्त किया जाता है दूसरा निश्रेय निमित्त या निष्काम्य कर्म जो केवल मुक्ति के लिए है जैसा अष्टाङ्ग योग आदि जिस्का बिस्तृत वर्णन पातञ्जलिदर्शन मे लिखेंगे; प्रकृति और पुरुष के भेद का विवेक ज्ञान है; बिषय वासना से छूणा वैराग्य है ; अणिमा आदि ८ सिद्ध जिनका विवरण पतञ्जलि दर्शन मे किया जायगा ऐश्वर्य है ; ये चारो धर्म ज्ञान वैराग्य और ऐश्वर्य पिछले ४ अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य बुद्धिके धर्म से विरुद्ध है; हमारे समान धनी विद्वान सूरवां कुलीन या कुटुम्बी दूसरा नही है इस अहं बुद्धि का नाम अभिमान है; अब पुरुष तत्व का कुछ विशेष वर्णन लिखते हैं।

पुरुष नित्य निष्क्रिय सत्व रज तम त्रिविध गुण शून्य चैतन्य साक्षी कूटस्थ द्रष्टा विवेकी सुख दूःख शून्य मध्यस्थ और उदासीन अर्थात किसी की भलाई बुराई से उसे कुछ सरोकार नही है; वह अकर्ता अर्थात् कुछ काम नहीं करता कार्य सम्पूर्ण प्रकृति करती है तस्मात् हम करते हैं हम सुखी या दुखी हैं इत्यादि प्रतीति जो जीवको होती है वह सब केवल भ्रम मात्र है; पुरुष प्रति शरीर का अधिष्ठाता आत्मा स्वरूप एक २ पुरुष है जिसे जीवात्मा भी कहते हैं; यदि सकल शरीर का अधिष्टाता एक पुरुष होता तो एक शरीर के जनन वा मरण से सब का जनना वा मरना होना चाहता था अथवा एक के सुखी या दुखी होने से सम्पूर्ण जगन्मण्डल को सुखी या दुखी होना चाहता था किन्तु ऐसा नही देखने मे आता इस्से निश्चय होता है कि प्रति शरीर के भेद से पुरुष नाना प्रकार का है और जो जैसा काम करता है उस्के अनुसार उस पुरुष को वैसा शुभ अशुभ फल भोगना पड़ता है स्थूल और सूक्ष्म के भेद से शरीर भी दो प्रकार का है वाड़ मास का यह पिण्ड जो मा के पेट से पैदा होता है उसे स्थूल शरीर कहते हैं उत्पत्ति और विनाश इसी का होता है ; जो सूक्ष्म शरीर है वह बुद्धि अहङ्कार ५ ज्ञानेन्द्री ५ कर्मेन्द्री मन और पञ्च तन्मात्रा इन १८ तत्वों की समष्टि है यह सूक्ष्म शरीर महाप्रलय पर्यन्त स्थायी रहता है और कर्मानुसार पशु पक्षी कीट पतङ्ग सिवा

कृत्तिका वृक्ष आदि के रूप से परिणत हो स्थूल शरीर धर लेता है और कभी मार्जार कभी शृगाल कभी फिर मनुष्य का तन ग्रहण कर लेता है; प्रकृति ने सृष्टि के आदि से एक २ पुरुष का एक २ सूक्ष्म शरीर निर्माण कर दिया स्थूल शरीर नया नया नहीं जन्मता सम्पूर्ण जीवात्मा ही पुरुष है जीवात्मा के अतिरिक्त परम पुरुष परमेश्वर कोई है उसमें कुछ प्रमाण नही है "ईश्वरासिद्धेः" ईश्वर किसी प्रकार सिद्ध नही हो सक्ता यह सांख्याचार्य कपिल का पहला सूत्र है।

अब यहां पर यह शङ्का होती है कि जैसा घट पट आदि वस्तु बिना किसी चेतन पदार्थ के अधिष्ठान के कोई कार्य्य नहीं कर सक्ती किन्तु जब कोई सचेतन उसका अधिष्ठाता होता है तभी जलाहरण आदि कार्य्य मे प्रवृत्ति होती है ऐसाही प्रकृति भी जड़ात्मक है सुतराम किसी सचेतन के अधिष्ठान के बिना जड़ात्मक यह प्रकृति कोई काम नहीं कर सक्ती अतएव यह स्वीकार करना पड़ा कि प्रकृतिका का अधिष्ठाता एक कोई सचेतन पुरुष पद वाच्य है पुरुष से भी जीवात्मा को प्रकृति का अधिष्ठाता हम कही नहीं सक्ते क्योंकि जीव गण अकृश स्थूल दर्शी और असर्व्वज्ञत्व आदि दोष दूषित हैं इस लिए सर्व शक्तिमान सर्व्वज्ञ सूक्ष्मदर्शी परमेश्वर को इसजड़ात्मक प्रकृतिका अधिष्ठाता मानना सर्व्वथा आवश्यक है; इसका उत्तर ये लोग यों देते हैं कि यह बात किसी तरह युक्ति संगत नहीं है क्योंकि प्रयोजन वश स्वकार्य्य करने में प्रवृत्ति पाई जाती है यह बहुधा देखने में आया है कि अचेतन पदार्थ चेतन के अधिष्ठान के बिना भी जीव के अर्थ की सिद्धि के लिए प्रवृत्त होता है जैसा बछेड़ा के जिवाने को जड़ात्मक दुग्ध मा के स्तन में आपही आप पैदा हो जाता है और समस्त लोक के उपकारार्थ समय २ मेघ वृष्टि करते हैं इसी प्रकार जीवात्मा के उपकारार्थ जड़ात्मक यह प्रकृति भी जगन्निर्माण रूप कर्म्म में प्रवृत्त होती है जैसा सांख्यदर्शन के सहाध्यायी ईश्वर कृष्ण जिन्हो ने संपूर्ण सांख्यशास्त्रको ७२कारिकामें बांध डाला है एक कारिका में लिख गए हैं—" वत्स विवृद्धिनिमित्तं क्षीरस्य यथा प्रवृत्तिरज्ञस्य । पुरुष विमोक्ष निमित्तं तथा प्रवृत्तिः

प्रधानस्य" यह जो आस्तिकों की एक डिंडिम घोषणा है कि ईश्वर जीवों पर कृपा कर प्रकृति को जगन्निर्माण रूप कर्म में नियुक्त करता है और आप स्वयं भी प्रवृत्त होता है यह बात भी अयुक्तिक सी प्रतीत होती है क्योंकि यहां पर यह शङ्का का उत्थान होता है कि परमेश्वर पहलेही जीवों के दुःख नाशार्थ सृष्टि के अनन्तर ? सृष्टि के पहले उसको प्रवृत्ति सम्भव नहीं है क्योंकि सृष्टि के पहले जब मनुष्यही नहीं हैं तो दुःख उन्हें कहां से हुआ जिससे उन्हें मुक्त करने के लिए उसे करुणा आई ; यदि हम ऐसा मानें कि सृष्टि के अनन्तर ईश्वर मनुष्यों को दुःख नाशमें प्रवृत्त हुआ तो अन्योन्याश्रय दोष आ पड़ता है अर्थात करुणा के आधीन सृष्टि और सृष्टि के आधीन उसको करुणा है और भी यदि परमेश्वर ने करुणाही के हेतु सृष्टि उत्पन्न किया तो किसी को दुखी होना ही उचित न था क्योंकि वह तो पक्षपात शून्य है और सभी उसके कृपापात्र हैं तब क्यों उसको सृष्टि में कोई सुखी और कोई दुखी देखने में आते हैं तस्मात् यह सिद्ध हुआ कि अचेतन प्रकृतिही पुरुष अधिष्ठान किला महत्तत्व आदि कार्य समूह के द्वारा जगत के निर्माण में प्रवृत्त होती है जैसा चुम्बक के सन्निधान से लोहे को किसी व्यापार में प्रवृत्ति हो जाती है वैसाही पुरुष यद्यपि निर्व्यापार है पर प्रकृति के सन्निधान से वह भी जगन्निर्माण आदि व्यापार में लगता है ; शेषमागे ।

बनारसी कजली ।

कैसन ऐंग्लो इंडीयनवां निकसिल निमकहराम । हमरै दाना खाय मोटैलै हमसेन करत गुमान । टौनहाल मे हम हिन्दुन के गरियैलै बिन काम । अपुआ के जितवैया पुकरिलै कहिलै हमे गुलाम । कच्ची पक्की लाख सुनैलि हिन्दुन कर लै नाम । गरियाइहिलि पीटि अपोरी गजब भयल रे राम । बढ़ि २ बोल किरंटेड बोलिलैं ज्ञेभुकिड भयल जुखाम । जौन होत बड़लाटरिपन प्रभु प्रजा वत्सल नय धाम । तौ हून हम के मजा चखाहूत एहि कर दामहि दाम ।

आवो प्यारे भारतवासी हिलि मिलि गावैं सुन्दर नाम । कहे लाट प्रभु रिपन हमारे पालत पिता समान । सदा हमारे सुख को चिन्तत और न चित कछु काम । क्रूर कुटिल अत्याचारिन को बात देत नहि कान । प्रजा

पचीस किरोर असीसत देत दुखिन को दान। पुत्र कलत्र सहित प्रभु चिर लौं सुखी रहैं भगवान।

जय जय लार्ड रिपन की बोलो लिवरल शासन को बाहार। भलो जुडे वेयरिंग अरु इलबट हंटर मिलि उदार। लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट बिल विदित सकल संसार॥ घर २ इलबर्ट बिल की चर्चा प्रजन अनन्द अपार। कूर कुटिल कंसर्वेटिव सब करि रहे हाहाकार। युग २ हमे रिपन प्रभु पालैं करैं सुनीत प्रचार।

चितावनी।

अब वर्ष समाप्त होने में दोही महीने बाकी रह गए हैं हम अपने पाठकों से विनय पुरस्सर चिताते हैं कि कृपा कर अपना २ मूल्य भेज दें एक तो टांकि टूक चुने २ थोड़े से ग्राहक उसमे भी मूल्य पाने को जून उनसे खिचखिच करना पड़े यह बात हमें सोहाती नहीं; दूसरे दाम समय से न मिलता रहेगा तो इस बोझ को हम कैसे वहन कर सकेंगे तीसरे बीसों तकाजे पर बहुत कुछ सिकोर कर कराय दिया भी किस काम का न उनको देते लिहाज न हमको पाने की खुसी।

ना देहनों से।

एक बार तो हम बहुतों का गुण गा चुके हैं जो बचे हैं और जिन्हें जानदार समझा था का-शाही आशा उनका अबार कोड़ते जाते रहे दूसरे महीने से उद्घाटन कर देंगे अबभी चेत जाते तो अच्छा होता; मालूम रहे हम और सम्पादकों के समान बेकदरी और जिल्लत उठाने को अपना पत्र दुरी २ नहीं करते फिरते और न बिना मांगे भेजते हैं केवल उन्हीं का सम्पर्क रखना चाहते हैं जिनके जी में किसी तरह पर यह समाई है कि पत्रों को द्रव्य से सहायता पहुचाना बड़ा श्रेष्ठ धर्म है उसमे भी हमारे पत्र को जो भूरे झाड़ से लड़ रहा है।

मूल्य अग्रिम १॥) पश्चात् ४॥)

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopeenath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st July 1883. Vol. V.] [No. 11.
प्रयाग आषाढ़ कृष्ण ७ सं० १९४० जि० ५ [संख्या ११

फ़क़ीरी

हाथ पांव और पांचों इन्द्रियां सब तरह सलामत रख किसी के सामने हाथ पसार दीन हो मांगने में किसी तरह की शरम और हिजाब न समझना इसी देश में है जहां कुछ आबादी का कम से कम चौथा हिस्सा केवल इसी जीविका से अपनी जिन्दगी काटता है ; ब्राह्मणों में तो थोड़ेही से ऐसे होंगे जिन्होंने दान लेने से मुंह मोड़ लिया है नहीं तो इनका समूह का समूह दान लेना अपना मुख्य धर्म और अपनी जाति की एक बड़ी शोभा समझ

रक्खा है; फिर जब विदेशी की भेंड़ कानों निकली तब यहाँ के लिए कौन भीख ब्राह्मणही इस देश के अग्र जन्मा और सब कुछ जब इन्होंही ने इस पेशेर में को इखतियार किया तब औरों की कौन कहै खुद छिले मगता बनने के लिये सैकड़ों बहाने निकाल लिये अच्युत गोपी वैरागका बन राम फटाका जमाय लगे मांगने "जात पांत पूछे नहिं कोय हरि को भजे सो हरिका होय" और अपने २ मतलब को सबों ने एक २ गढ़ लिया; क्षत्रियों ने भीख मांगने में भी अपनी छत्री पने की टेंट न छोड़ा—राम नाम शमशेर पकड़ ले खप्पा कटारा बांध लिया। दैया धरम की ढाल बनाके यम का द्वारा जीत लिया—बनियों से फकीरी में भी डंडी तराजू न छूटा—साईं मेरा बानिया सहज करै व्योपार। बिन डंडी बिन पालरे तौलै सब संसार—शूद्र बेचारे गृहस्थी का सब पेशा छोड़ने पर भी चाकर के चाकर रहे—राम झरोखे बैठके सब को मुजरा लेय। जाकी जैसी चाकरी ताको तैसो देय—बाहर से जो आए उनपर भी इस हिन्दी की हवा व्याप गई मुसल्मान अपनी सब जरीरी तारीरी भूल अन्त को मुजाविर सांई पीर पयगम्बर फकीर दुरवेश आदि अनेक नाम और रूप से लोगों को ठगने लगे फिर मांगने का अजर और सलीका जैसा इनमें है हम गवुभर हिन्दुओं की को भी नहीं आता; सच पूछिये तो भीख मागने को एक हुनर हमारे देश वाले समझते हैं कैसे २ रूप और भेख करते हैं जटा रखाते हैं खाक रमाते हैं गेरुआ रंगाते हैं कोई जई धातु बनते हैं कोई कनफटे हैं कोई दंड लिए डोलते है कोई सिरे मंगे रहते हैं औघड़ अघोरी सन्यासी उदासी सुथरे बेनवा आजाद आदि अनगिनत रूप धर २ लूटते खाते हैं; हमारी मूर्ख प्रजा के बीच जिनमें चिरकाल से कुसंस्कार ने ऐसी जड़ पकड़ली है कि कितनी ही चेष्टा इसे छुटाने को करो किसी तरह दूर नहीं होता भेख बाना जाता है आदमी के गुण दोष पर कभी ध्यान नहीं देते कैसाही आवारा हो भेख उसने धन्य का बना लिया हो उसका पूज्य हो गया यहां तक इस भिक्षुकी वृत्ति को तरक्की इस मुल्क में दी गई है कि सैकड़ों बल्कि हजारों इसी भीख की बदौलत लाखों और करोरों के धनी बने बैठे हैं; वल्लभ कुल के गोसाइयों की सच पूछो तो और क्या जीविका है सिवा

भीख जिन्हे एक २ पधरौनी मे लाखों
हाथ लगते हैं फिर यह असंख्य धन कभी
किसी सत्कार्य देश की भलाई मे लगा
भी आज तक किसी ने न देखा न सुना;
मन्द बुद्धी धर्मशील चेत्र और सदावर्त
कायम करते हैं माना कि कोई २ दो
एक सुपात्र के मुख मे भी वह अन्न घुणा
चर न्याय से पड़ जाता होगा कुछ निर्ख
ती हई नहीं देश भरके बक हत्ती ठग
बञ्चक लुटेरे धर्म शील मतिमन्द दाता
ओं का धन लूट २ आवारगी और कुढंग
की कितनी जीमत दे रहे हैं पर हमारे
भोले अन्धे मूढ़ दानी महाराज के जी मे
यह कभी नहीं आती कि इसपर कभी
ख्याल दौड़ाय इसे बन्द करने की चेष्टा
करते लाखों का धन साल मे खो देते हैं
और पुण्य के बदले पाप कमाते हैं अपना
तो नुकसान सहते हैं और देश को बुभु-
क्षित भिक्षुओं को आलसी और सुस्त किये
डालते हैं पर कौन कहे और किसे गौं
जो सुने; सरकार ने अपने कौम के लिये
अनगिनत चेरिटीहौस अन्धा खाना
आदि मुकर्रर किया है हमारी इस कुरी
त संशोधन मे वह भी कभी मन नहीं
लगाती; फौजदारी और दीवानी जिस्से
मुल्क का फायदा तो बराय नाम हैं पर
राजा को हर तरह का लाभ खातिरख्वा
ह है उसके लिये नित्य नये ऐक्ट और
बिल दूसरा हुआ करती हैं पर हमारे
समाज के कोढ़ साफ करने मे वह कभी
मुस्तैद हुई आज तक न सुनने मे आया;
सच पूछो तो अङ्गरेजी राज्य मे यह एक
बड़ा धब्बा है कि अपने लोगों के न बिग
ड़ने की सब तरह भरपूर कोशिश होती
है पर हमारे social intelectual and
religious reformation समाज बुद्धि त-
था धर्म मे सुधराव का कुछ असर पहुंचा
ने की कोई तदबीर नहीं की जाती;
यह खूब निश्चय हो गया कि "बिन भय
होहि न प्रीति" ये आप कभी कुछ न
करेंगी जब तक इनपर किसी तरह का
कोड़ा न रहे इन्हे मार २ राह लगाना
चाहिये राजा के लिये यह क्या
बड़ी शरम की बात नहीं है कि जिस्के
राज्य मे चौथाई से अधिक प्रजा भिखारी
बसती हों और गली २ कूचे २ भीखमंगे
लोगों को तंग करते आवारा डोलते फिर
ते हों और राजा उनकी कोई फिक्र न
करें; क्यों हमारे देश के धनियों से चन्दा
कर रुपया जमा हो सरकार की ओर से
एक चेरिटीहौस दानशाला या किसी
दूसरे तरह का कारखाना न खोला

जाय जिस्मे वे भिखमंगे पकड़ २ रक्खे जांय वहां जो जैसे हों उनसे वैसी मेहनत ले खाने को दिया जाया करे कुछ दिन बाद उनको मेहनत करने की आदत पड़ जायगी तब वह भीख मांगना उन्हे आपही न पोसायगा और जो अन्धे लूले अपाहिज हों उन्हे उस दान शाला मे कुछ खाने को दिया जाया करे; तीर्थ और मेले ठेलों मे इन भिखमंगों के लिये सख्त मुमानियत रहा करे मथुरा काशी गया आदि के तीर्थकी लुटेरे पंडे यात्रियों को बहुत तंग किया करते हैं उनके लिये भी कुछ तदारुक किया जाय मान लिया आज कानून पहले ही से जारी है उसी मे कुछ और घट बढ़ करदी जाय; सरकार अपने फाइदे के लिए तो भांत २ का कर इन्कमटैक्स चुङ्गी आदि लेती है हमारी समाज के सुधरावट निमित्त यदि इस प्रकार का कोई टैक्स भी लगाया जाय तो हमे कभी बुरा न लगे हर एक महाजन और रोजगारियों से तिसके अनुसार धर्मार्थ थोड़ा सा निकाला जाता है.उसी का कुछ हिस्सा इसमें दे दिया जाय तो क्या बुराई है; लार्ड रिपन साहब देशी कारीगरी और मेहनत को बढ़ाने मे बहुत कुछ दत्त चित्त हैं इसकी ओर क्या नहीं ध्यान देते लोगोंको कम्पलसरी के मुनासिब तौर पर यह किया जायगा तो आशा है कि सब लोग इसे मंजूर कर लेंगे हमारा बड़ा उपकार होगा और श्रीमान् रिपन बहादुर को यश मिलेगा और ऐसे २ प्रजाहितैषी के समय इन सब मूल कुरीतियों का संशोधन न हुआ तो आगे के लिए कौन आशा है।

देखना दिखाना

इन दोनों का परस्पर ऐसा नित्य सम्बन्ध है कि यदि इस देखने दिखाने की इच्छा का अङ्कुर मनुष्य मात्र के चित्त आलवाल मे न जमाया जाता तो यह जनाकीर्ण जगत् और जीर्ण अरण्य दोनों बराबर हो जाता; अङ्गरेजी मे एक कहावत है Where ever is demand there is a supply जहां कहीं चाह है वहां एक सामग्री भी चाह के मिटाने को की गई है जब देखने का शौक होता है तभी देखलाने की फिक्र भी होती है यदि दोनों बातें इस संसार से निकाल दी जाय तो इस दुःख रूप नश्वर जगत् में कौन

सा आनन्द और मज़ा रक्खा है जिसके लालच से सब तरह की झौंझट और अनेक प्रकार की ऊंची नीची दशा भोग भाग भी कोई जीने से कभी नहीं ऊबता; सच तो यों है कि देखना दिखाना ए दो बातें न होतीं तो यह दुनिया रहने काबिल न रहती भांत २ की तरक्की और सुधराई improvement की क्या जरूरत रही क लकत्ते के भावी बड़े प्रदर्शन की क्या आवश्यकता थी स्वर्ग की अपसराओं को भी मात करते अंगरेजी लेडियां अनोखे धज से सजी बजी हर किस्म की पार्टी और बाल में क्यों अपने चेहरों की चमक दमक से लोगों को चकित करती हमारे छैल छबीलों को नई २ तरहदारी क्यों सूझतीं, फेशन की तो जड़ही कट गई थी, इसी देखाने के लिए लोग कपड़े सवारी मकान आदि में हजारों लाखों बिलटा देते हैं हमारे तीन कौड़ी दास के सपूत अपनी काली कोइला सी छबि इसी देखाने ही की इच्छा से २ हज़ार की फिटिन जोड़ी पर सवार हो निकलते हैं; जो इस देखने देखाने का हौंसिला न होता तो बड़े २ शहर और जङ्गल दोनों बराबर थे; इसी देखने देखाने का दूसरा नाम तमाशा है सच पूछो तो यह जगतही एक तमाशा है स्त्री पुरुष लड़के बूढ़े अमीर गरीब मूर्ख विद्वान ऐसा कौन है जो तमाशा देखने से मुह मोड़ता हो और जिसके जी पर तमाशों का कुछ असर न होता हो या जो इसका मज़ा न उठाया चाहता हो; तमाशा क्या है? इसके रूप इसके ढंग इसके कारण अनेक हैं अनगिनत हैं अनन्त हैं; यह तो विदित है कि यह शब्द अरबी का है शब्दार्थ इसका देखने की जगह है और केवल चक्षु इन्द्री का विषय है; बहुत लोग कहते हैं सब वस्तु नहीं देखी जाती किन्तु जो देखने योग्य है वही देखी जाती है—परन्तु आज तक ऐसा कोई न मिला जो देखने के पहले यह बिचार लेता

हो कि जो देखने योग्य हो उसी को देखें न यही कोई लिखं कर सकता है कि देखने योग्य क्या है और क्या नहीं ; हमे खूब याद है जब राणी महाराणी के ज्येष्ठ पुत्र ने इस भाग्य हीन भारत को अपने चरण कमलों से कृतार्थ किया था उस समय हर एक शहरों मे उनके देखने को कैसी भीड जुटती थी लोगों को जो मेहनत पड़ी जो मुसीबत सहनेमें आई जिनका २ एहसान का सहना पड़ा जो वे झूठी हुई वह हमारे कितने पाठकों को आज तक याद होगा पर यह हमसे कोई बताए कि प्रिंस के साथ कौन चीज़ देखने लायक थी जिस्के लिए हर कहीं खिलकत टूट पड़ी कितनों को यह भी निश्चय न हुआ कि हमे चिरञ्जीवी राजकुमार का दर्शन हुआ या नहीं और हुआ तो वे कैसे थे; हम अपने घर पर बैठे हों राह मे शोर मचा चोर जाता है चट दौड़ के देखैंगे; मालूम हो दो आदमी लड़ रहे हैं मुह के बल गिरैंगे चोट खांयगे मगर देखेंगे ज़रूर ; इतनाही नहीं अगर उन दोनो मे से एक को अधिक चोट लगी है तो तमाशे की उतनी ही ज़ियादह ख़ाहिश तेज़ होगी; यह खबर मालूम हो कि कोई आदमी फासी पड़ता है या बेत खा रहा है फिर देखिए कैसा अम्बोह टूटता है; हम सुन पावें कि मह्ल्ले मे सेंध हुई है सुबह होतेही तमाशबीनो की इतनी भीड़ आ जुड़ेगी कि लोग हटाये न हटैंगे; अब हम पूछते हैं क्यों ऐसी ख़ाहिश होती है हम इस्का कारण यही समझते हैं कि मनुष्य मे यह एक स्वाभाविक गुण है कि वह लोकोत्तर घटना जो नित्य नहीं हुआ करती उस्के देखने को बड़ा उत्सुक रहता है और ऐसी एक घटना के संघटित होने पर बड़े चाव और उत्साह के साथ उस्के देखने मे प्रवृत्त होता है उसी का नाम तमाशा है; हमारे मुल्क मे तमाशबीनो के एक

खास माने लिये जाते हैं पर सच तो यों है कि संसार में सभी तमाशबीन हैं और यह इच्छा मान की सृष्टि में न रहती तो मनुष्य और पशु में कोई अन्तर न रहता।

———०———

पोस्ट आफिस के लिये विशेष कर्तव्य।

सरकारी राज्य में इस डाकखाने का मोहकमा जैसी तरक्की पर है और जैसा कुछ इस्से देश को लाभ है वह प्रत्यक्ष ही है जब से पोस्ट कार्ड और मनीआर्डर चला है तब से तो यह मोहकमा मानो अपनी उमदगी और रौनक की बलन्दी को पहुंच गया है अब विशेष कर्तव्य इन डाकखानो के लिये यह होना चाहिये कि जैसा पोस्टल नोट का रुपया शहरवाले डाक खानो से मिल जाया करता है वैसाही मनीआर्डर का दाम भी शहरही के डाकखानो से मिला करे क्योंकि थोड़ी २ रकमो के मनीआर्डर भंजाने को इतनी दूर कोस भर के फासिले पर बड़े डाकखाने मे जाना लोगों को बहुतही नागवार और क्लेश का कारण होता है इस्से सरकार का कोई नुकसान नहीं और हम लोगों की बहुत कुछ व्यर्थ की मेहनत बचती है खास कर इस इलाहाबाद के डाकखाने में अवश्य ऐसा इन्तिजाम होना मुनासिब है।

———

शांख्यदर्शन पूर्वप्रकाशितानन्तर।

पुरुष और प्रकृति का संयोग अन्धे और पङ्गुल के समान परस्पर सापेक्ष है जैसा एक अन्धा और एक पङ्गुल दोनों ने कहीं की यात्रा की अकस्मात किसी कारण से वे दोनों अपने अपने साथी लोगों से छुट कर मार्ग में भयाकुल होने लगे दैवात् उन दोनों का संयोग हो गया तो अन्धे ने पङ्गुल को अपने कान्धे पर चढ़ा लिया और दोनों एक दूसरे की सहायता करते चले पङ्गुल राह बतलाता था और अन्धा उसे अपने कान्धे पर चढ़ाए लिए जाता था; ऐसाही प्रकृति भोक्ता पुरुष की आपेक्षा रखती है और पुरुष भी उसे त्रिगुणात्मक

दुःख से छुटाकर मुक्ति के लिए प्रवृत्त करता है; जो कहो जब इन दोनों का संयोग हो गया तो इसका फिर वियोग कैसे होता है जो पुरुष अर्थात जीवात्मा की मुक्ति हो; जैसा जारिनी स्त्री जब किसी से पकड़ जाती है तो मारे लज्जा के निज पति के पास वह आपही नहीं जाती अथवा नटी जैसा नाटकों में एक बार अभिनय कर नाटक का अङ्कुर जनाय आप चली जाती है वैसाही प्रकृति पुरुष को जंजाल में छोड़ आप अन्तर्ध्यान हो जाती है।

प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द इन प्रमाणों को ये मानते हैं सम्पूर्ण कार्य मात्र को ये सत् मानते हैं अर्थात संपूर्ण कार्य अपने २ कारण से उत्पत्ति के पहले सूक्ष्म से मिले रहते हैं जब उस कार्य का आविर्भाव हो जाता है उसी को उत्पत्ति कहते हैं और जब वह अपने कारण में फिर लीन हो जाता है तब उसका नाश कहते हैं वास्तव में न कोई कार्य उत्पन्न हो न विनष्ट हो जैसा तिल धान्य और स्त्री के स्तन में यथाक्रम तैल तन्दुल और दूध सदाही रहता है किन्तु जब तिल को मीजो धान्य को माड़ो और स्तन को दुहो तो तिल तन्दुल और दूध पैदा हो जाता है; और भी कार्य और कारण का आविर्भाव तिरोभाव कछुआ के अङ्ग समान होता है जैसा कछुआ अपनी अङ्गों का फैलाव और सिकोड़ किया करता है वैसाही कार्य का भी अपने कारण से आविर्भाव तिरोभाव होता है; जो नहीं है उसकी उत्पत्ति और जो है उसका नाश यह जो नैयायिक और वैशेषिक वालों का मत है सो नितान्त भ्रम मूलक है क्योंकि कार्य और कारण का जब अभेद है तो इस कार्य को असत् और कारण को सत् कैसे मान सकते हैं पहिले जिसका अभाव था पीछे भी वैसाही उसका अभाव बना रहेगा पदार्थ का जो स्वभाव है उसे कौन बदल सकता है आज तक ऐसा कोई पुरुष नहीं देखने या सुनने में आया जो मौत को जीत कर सके अथवा स्त्री को पुरुष; इससे जो असत् अर्थात् नहीं था उसकी उत्पत्ति नहीं हो सकती और जो सत् अर्थात है उसका नाश भी नहीं हो सकता किन्तु वे पदार्थ स्थूल रूप से सूक्ष्म रूप में हो जाते हैं इसी से गीता में भगवद् वाक्य भी है—"नासतोविद्यतेभावो नाभावोविद्यतेसत: । असद् कारण से सत स्वरूप कार्य होता है यह बौद्ध लोगों

का सिद्धान्त भी अश्रद्धेय है बंध्या के पुत्र खरहा की सींग बालू में तेल जो सर्वथा नहीं है उस्से कभी किसी का कुछ कार्य हुआ हो यह कभी देखा या सुना नहीं गया ।

वेदान्ती लोग जो कहते हैं कि जैसा रज्जू में सर्प की भ्रान्ति और सीपी में चांदी की भ्रान्ति होती है उसी प्रकार सच्चिदानन्द परात्पर ब्रह्म में इस आरोपित जगत् का भ्रम होता है वास्तव में यह जगत् मिथ्या है यह इनका सिद्धान्त भी अप्रमाणिक और अश्रद्धेय है क्योंकि सदृश वस्तु में सदृश वस्तु की भ्रान्ति होती है न कि विसदृश की ; चांदी में सोने की भ्रान्ति किसी तरह नहीं हो सकती क्योंकि ये दोनों रङ्ग में विसदृश हैं सुतरां स्वच्छ सच्चिदानन्द में इस जड़ात्मक जगत् का आरोप कैसे सम्भव है अतएव इस प्रत्यक्ष जगत् को मिथ्या मान लेना भूल है ।

सृष्टि का क्रम सांख्य में इस प्रकार है पहले प्रकृति से महत्तत्व उत्पन्न हुआ महत्तत्व से अहङ्कार अहङ्कार ने सतोगुण के उद्रेक से ५ ज्ञानेन्द्री ५ कर्मेन्द्री और मन को उत्पन्न किया रजोगुण के उद्रेक से उसी अहङ्कार से ५ तन्मात्रा उत्पन्न हुईं जहां पहले शब्द तन्मात्रा से वायु हुआ जिसका गुण शब्द और स्पर्श है शब्द तन्मात्रा और स्पर्शतन्मात्रा सहित रूप तन्मात्रा से तेज हुआ जिसका गुण शब्द और रूप है ये तीनों तन्मात्रा सहित रस तन्मात्रा से जल हुआ जिसका गुण शब्द स्पर्श रूप और रस है ये चारो तन्मात्रा सहित गन्ध तन्मात्रा से पृथ्वी हुई जिसका गुण शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध है और इस ५ महाभूत से संपूर्ण चर अचर विश्व उत्पन्न हुआ इति ।

नूतन चरित्र अध्याय ७

॥ सहायता ॥

चित्रकला को लोग बहकाकर ले जाय ऐसे गुप्त स्थान में रक्खा जहां मनुष्य की कौन कहे देवताओं को भी उसकी खबर पहुंचना दुष्कर था वहां इसका ऐसा बुरा हाल था जिसको लिखते लेखनी भी दुखित होती है क्षण२ में मृत्यु उसके निकट खड़ी रहती थी और निश्चय है यदि उसके पास छुरी आदि कोई मृत्यु कारक वस्तु होती तो अपघात से कभी की उसका बारा न्यारा हो गया होता ; इस घोर बिपत्ति के समय यह बार २ ईश्वर से प्रार्थना करती कि हे

ईश्वर किसी मेरा पाप के कारण से इस विपत्ति से छुटने योग्य नहीं हूं तो जल्द ही मुझे उठाही ले थोड़ी देर पीछे जिस कमरे में वह कैद थी उसको हर एक कोने अँतरे में ढूंढ़ती २ एक बड़ी सी छूरीपाया जिस्से मनुष्य का अपघात अच्छी तरह हो सक्ता था अब इसने यह पक्का मनसूबा गांठ लिया कि जब सब यत्न इज्जत बचाने के व्यर्थ हो जांयगी तब अन्त को इसे काम में लाऊंगी और यह निश्चय कर लिया था कि बस दुनियां में मेरी जिन्दगी अब इतनी ही थी आज रात को वह अवश्य मेरे पास आवेगा और खुशी से न हो सकेगा तो जबर्दस्ती मुझे बेइज्जत करेगा हाय ऐसे समय वह मनुष्य जिसने रेल गाड़ी पर बदमाशों से मुझे बचाया कहां होगा—मेरा भाई भी मेरे गुम हो जाने से न जाने किस२ मुसीबतों को झेलता कहां २ मुझे ढूंढ़ा होगा जो प्रीति वह मुझसे करता है वैसी दुनियां में वह किसी से नहीं करता; हाय मैं अपने प्यारे भाई की भोली सूरत अब काहे को कभी इस जिन्दगी में देख सकूंगी—फिर संसारिक बहुत से सुख दुख का विचार मन में कर कराय अन्त को उसने यही सिद्धान्त किया कि धर्म विरुद्ध कोई काम कभी न करना क्या एक जान से दो चोरें होना है—यद्यपि यहां पर कोई नहीं देखता कि मैं क्या करती हूं और कदाचित् इस कैद से ईश्वर कृपा करें उसका घर बड़ा है बेदाग छुट भी जाऊं तो भी सीता समान मुझे कोई न पतियायेगा और यह दाग सदा के लिये गांठ बंधा रहेगा परन्तु जो हो अपना धर्म छोड़ना किसी तरह उचित नहीं है यह दृढ़ता कर रात्रि होने पर जब उसने समझा कि अवश्य मेरे मरने का घंटा निकट आता जाता है हाथ पांव धो परमेश्वर का स्मरण करने लगी उसका ध्यान पूरा भी नहीं होने पाया था कि किसी के आने की पैरों की आहट सुनाई दी तब वह ध्यान छोड़ उठकर संभल बैठी कि इतने मे दूसरे रावण से नौवाब साहब आय दाखिल हुए।

नौवाब साहब देर तक प्यार की नजर से उसपर देख बोले—बस बहुत जिद हो चुकी अब राजी हो कर हमारे घर की बेगम बन जाओ अब आज से तुम्हारी ही मरजी पर हमारा सब काम काज मुनहसर रहेगा। तुम हमारे घर की मालिक होगी कुल सियाह सुफेद सब की करता धरता तुम्ही होगी हमारी लाखों

को रियासत सैंकड़ों लौंडी गुलाम सब पर हुकुम रानी करोगी और कहां तक कहें हम भी तुम्हारे पायन्दाज़ की रोटी खांय में पड़े रहेंगे मेरी और सब बेगमातें तुम्हारी खिदमत और फर्माबरदारी किया करेंगी और यह १००) महीना तुम्हारे पान खाने को मुकर्रर किये देते हैं यह तुम्हें बराबर मिलता जायगा हमारे साथ में दुनिया के जितने मजे हैं सब तुम्हें बाखूबी हासिल होंगे अगर मुसल्मान होना कुबूल न करोगी तो हमी तुम्हारी खातिरन हिन्दू हो जांयगे तुम कहो अभी डाढ़ी मुडाय चुटिया रखा लें मैंने अपना तन मन धन सब तुमपर वार दिया जिस रोज से तुमको देखा तुम्हारी सूरत दिल मे बसी रहती है जब मैंने समझा और किसी तरह पर मतलब निकलना मुश्कील है तो यह खुशामदी की ।

चित्रलेखा ने बड़ी आधीनताई से उत्तर दिया साहब मुझे छोड़ दीजिये मैं ने अपने धर्म शास्त्र मे पढ़ा है कि स्त्री को शील पालन और अपने धर्म मे दृढ़ रहना उचित है चाहो जीवन न रहे और धर्म विरुद्ध काम न करना पड़े यह अच्छा मै उन स्त्रीयों मे नहीं हूं जो नाम मात्र को पढ़ लिख उचित अनुचित का कुछ ध्यान नहीं रखतीं अथवा अक्षर मात्र सिख दिन रात बुरी पुस्तकों के पढ़ने २ व्यसनरत हो खोटाई उनके जी में समा जाती है संसार मे सब को एक बार मरना तो है ही तब बेइज्जत हो थोड़े दिन जिई भी तो क्या ; इसी से आधीनताई से बिनती करती हूं कि जो आप मुझे जिन्दा रखना चाहैं और मेरी जान आप को न सुहाती हो तो आप अपने इस इरादे से बाज़ रहो धर्म विरुद्ध काम से जब मै अनमोल जीवन ही को तृण तुल्य समझती हूं तो संसारिक सुखों का क्या जिकर है आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये और जहां से मुझ लाई हो वहीं मुझे पहुंचा दीजिये इस बात की कसम खाती हूं कि कभी आप का नाम किसी के सामने मुंहपर न लाऊंगी और जन्म पर्यन्त आपकी एहसान मन्द रहूंगी आप को जीवन दान का पुन्य है हाथ जोड़ती हूं मै बड़ी गरीब हूं मुझपर दया कीजिये ।

उसके ये दीनता के वचन ऐसे थे कि यदि पत्थर के सामने भी बोले जाते तो वह भी पसीज उठता पर उस कठोर महाराक्षस नवाबके जीपर कुछ असर न

हुआ और बड़ी तमकनत और अभिमान के साथ जवाब दिया—अभी तक तो मैंने तेरी बात मानी और यही सोचता था कि रुक दिये अरे उसे जहर क्यों पिलाना अब मुझको मालूम होगया कि लातोंकादेवताबातो नहीं मानता किसो ने सच कहा है गवारों की अक्किल सिर में रहती है जब सर में खा लेता है तब अक्कलठोक हो जाती है इस्से मुझको भी तेरे साथ वही बर्ताव करना पड़ा जो तुम्हारे गाफिल लोगों के करने की जरूरत होती है—बस अब जियादह हुज्जत न कर फौरन हमारे पास आ नहीं तो अभी तुझे पिटवाय दुरुस्त करवाता हूं जिस्से फिर कभी हमारे पास आने से इनकार न करेगी।

चित्रकला बोली दुष्ट वे धर्मी तू क्या मेरे पुरखे तो सब बात अर उनें बस हट कर अलग बैठ नहीं तो दस बीस गालियां सुनाऊंगी मेरे जीते जी यह तेरा इरादा पूरा होना कठिन है कि मैं तेरे पास आऊं जब मैं मर जाऊंगी तब मेरी लाश का जो चाहना सो करना।

ये कठोर बातें सुन नवाब साहब ऐसे क्रोधित हुए कि जामेसे बाहर हो गये कुछ सोच विचार न कर पहले दर्वाजे सब बन्द कर आया जिस्से वह भाग कर कहीं निकल न जाय पीछे राक्षस की भांत मदोन्मत्त हो उस बेचारी सतीस्त्री को पकड़ने और बेइज्जत करने के इरादे से उस्के पास चला उसी समय चित्रकला ने भी बड़ी छुरी निकाला और चाहती थी कि अपना गला काट डाले कि पलंग के नीचे से एक पिस्तौल की ऐसी चोट लगी हुई कि चित्रकला के हाथ से वह छुरी गिर गई और वह राक्षस नवाब घायल हो गिर पड़ा और बैल की भांत दहाड़ने लगा।

जब वह गिरा हुआ पड़ा था कि पलंग के नीचे से एक मनुष्य निकला और उस्की छाती पर सवार हो कहने लगा ऐ बदमाश हरामजादे तूने ऐसा काम किया है कि तुझे ७ वर्ष का कैद होना चाहिये तूने इस बेचारी धर्मशीला अबला को ठग कर बे इज्जत करना चाहा था अब मैं तुझे किसी तरह जीता न छोडूंगा नौवाब गिड़गिड़ा कर बोला माफ कर मेरी जान मत मार जो कुछ कहो तुझे दें परन्तु यह बतला तू कौन है और हमारे कमरे में क्योंकर घुस आया यह कुसूर तो मुझ से बन पड़ा पर आगे के लिए कान उमेठता हूं ऐसा फिर

कभी न करूंगा अब तुम इस औरत को यहां से दूसरे दरवाजे होकर निकाल लेजाओ और इस माजरे की चर्चा किसुसे न करना नहीं तो मैं बदनाम हो जाऊंगा और तुम्हारे हाथ कुछ न आएगा। उस मनुष्य ने कहा मैं इस धर्मी औरतके धर्म की रक्षा वाली करने को ईश्वर का भेजा हुआ दूत हूं और अब तेरा बचना केवल इसी स्त्री की इच्छा के ऊपर है जो यह तुझे माफ करेगी तो छोड़ूगा नहीं तो यहीं मार कर डाल जाऊंगा— अब उस उल्लू नवाब ने चित्रकला से मिनती की तू मेरी माता समान है मेरा कुसूर माफ कर और मेरी जान बचा यह एहसान तेरा मैं जन्म भर न भूलूंगा।

चित्रकला जो अबतक मूर्छित पड़ी थी कुछ होशमें आई और नवाब कीये बातें सुन बिना सोचे बिचारे कह दिया तू मुझ को माता समान समझता है तो मैंने भी तेरा कुसूर माफ किया; चित्रकला के मुहसे यह सुन उस उल्लू नवाब की छाती पर बैठा मनुष्य तुरन्त उतर आया और उसको वैसाही घायल छोड़ चित्रकला को साथले पिछाड़ी की खिड़कीसे बाहर होतीआए और उसमनुष्यने अपनाबनाया हुआ भेख बदल डाला तो चित्रकला ने अपने सामने उसी मनुष्य को खड़ा पाया जिस्का पहले रेलकी गाड़ी में एक बार उस्का साथ हुआ था; यह सब देख वह सुन्दरी बड़ी अचम्भित हुई— अब विवेक राम ने देखा कि यह विस्मय रूपी अगाध्य समुद्र में डूब रही है तो अपने वचन रूपी डोरी छोड़ उसे निकालते यह बोला— प्यारी मैंने जान बूझ तुम को इस अचरज के समुद्र में डूबाया परन्तु आशा है अब तुम मेरी बात सुनोगी तो मुझे माफ करोगी। क्रमशः

नाम करण।

हम लोग इन प्रान्तों के रहने वाले जैसा और २ बातों में पीछे हटे हुए हैं वैसाही इस नाम करण में भी; सचतो यों है कि यह नाम करण समाज के अभ्युत्थान और अधःपतन की कसौटी है; नाम के सुनतेही किसी घराने या जाति के वृद्धि वैभव की पूरी परख हो सकती है बङ्गदेशी प्रभृति हिन्दुस्तान के और २ प्रान्त वाले कहां तक हमसे आगे बढ़े हैं और हमसे कितना अधिक

बुद्धि का विस्तार उनसे है यह उन के कारण रसायन कोमल और मधुर नामोंही से सूचित होता है वही हम लोग कहां तक बुद्धि वैभव से वञ्चित हो नीच हो गए हैं यह हमारे छन्ना मुन्ना आदि उनके नामों से प्रगट होता है उसी बुद्धि की कमीने हमारे बीच एक खयाल पैदा कर रक्खा है कि घिनौना और बुरा नाम रखने से लड़का दीर्घ जीवी होता है इसी बुनियाद पर ननकू मन कू चिथरू गुदरू नरकू घसिट्टू सुन सुन चुलबुल भोंदू भोंपत तिन कौड़ी दमड़ी छदमी आदि नाम पड़ गए भला इन बेहूदा और अनर्गल नामों मे किसी का कुछ अर्थ है किसी कहैं समझदारी का जौहर तो है; इस जौहर ने हमारी सहस्रा बातों को अप नी मूठी में कर रक्खा है एक यह भी अकिल का जौहर ही है कि स्त्रियां पढ़ाने लिखाने से फू लती फलती नहीं; मकान फू लता फूलता कैसाही पुराना घुना मैला और गन्दा हो सब लोग कबूतर की ढाबली समान सिकुर सिकुराय पिस पिस उसी ढाबली में रहैं वहीं खांय वहीं हगें हवा का सञ्चार कहीं से न हो क्योंकि पुरखों का नारा तो उसी कमरे में गड़ा है मारे सीढ़ और गन्द गी के पीले चाम से ज़र्द पड़ जां यगे क्या परवाह है फूले फलैंगे तो; कितनों मे बुद्धि की मन्दता का नमूना प्यार के सबब से नाम बिगाड़ कर धरा जाता है बच्चू लुच्चू चुन्नी मुन्नी लल्लू कल्लू आदि अपने लाड़िले लाल जी का प्यार और किसी तरह पर प्रगट कर ने से रहे तो नामही के द्वारा देख लाते हैं; पछैयें खत्री और माड़ वारियों के नाम मल से अन्त होते हैं जिनके नाम मे मल है तो काम में क्यों न होगा; छज्जू मल या गट्टू मल का क्या अर्थ है बड़ी से बड़ी लुगत और डिक्श नरी छान डालो गट्टू मल या छज्जू मल का अर्थ कहीं न पा- वोगे कोई २ जिनमे ज़रा तरह

दारी की बू समानी है अपने लड़कों का नाम साथ का फिए की रखते हैं रतन जतन साधो माधो सोहन मोहन सद्दू मद्दू इत्यादि पुराने ढर्रे को छोड़ कोई नई बात अपने मन से पैदा कर निकालना तो हमारी खमीरही नही है तब नाम में नया पन कहां से ला सकते हैं महादेव गनेश नारायण आदिएकही नाम के एक एक मुहल्लों में बीसों पाए जाते हैं न जानिए क्यों हमे इन नामों पर मिचलाई आती है फिर कुछ फर्क नहीं एक नोच जात तेली तमोली कहांर बनियां जो नाम रक्खेगा वही नाम बड़े प्रतिष्ठित ब्राह्मण क्षत्रियों में भी धराया जायगा ; ऐसाही स्त्रियों के नाम में गङ्गा जमुना गोमती पार्वती लक्ष्मी तुलसा आदि पांच सात नाम हेर फेर के रखाए जाते हैं मनु ने नदी पहाड़ वृक्ष या नक्षत्र के नाम वाली कन्या व्याहना मना किया है "नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीं नान्त्यपर्वतनामिकां। नयक्ष्यहिप्रेष्य नाम्नीं नचभीषणनामिकां ॥ अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीं। तनुलोमकेशदशनां मृदङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियं।" स्त्रियों के नाम में भी ऊंच नीच दरजे का कोई फर्क नहीं रक्खा गया बहुधा ऐसा भी होता है कि कन्या का जो नाम रक्खा गया है उसी नाम की बहू घर में आई तब एक नाम की दो हो गईं ; बङ्गालियों मे स्त्रियों के भी कैसे उत्तम और सरस नाम रक्खे जाते हैं यथा व्रजकामिनी निस्तारिणी विश्वमोहिनी कादम्बिनी मृड़ालिनी क्षीरोदवासिनी सरोजिनी कुमुदनी नलिनी सुकेशी शशिमुखी स्वर्णमयी इत्यादि हम लोगों मे जुग्गो पग्गो भग्गो बतस्रो नाम धरे जाते हैं फिर गृहस्थिन और वेश्याओं के नाम में भी कोई भेद हमारे देश में नहीं है बनारस आदि नगरों में वेश्याओं के भी यही सब नाम हैं सरस्वती कमला जानकी लक्ष्मी गङ्गा आदि नाम की अब भी मौ

जूद हैं ; मुसलमानों को हमलोग हर तरह पर नीच ठहराते हैं पर नाम धराने में हमसे सौगुना अच्छे हैं। फातिमा आहिशा जेनब मरियम आदि देवियों के नाम कभी उस जाति की वेश्याओं के नहीं सुनने में आए बङ्गवासियों के अन्दाज पर चन्द्रभागा विलासिनी कामिनी सुवदना स्वर्णलता मालती मोहिनी कामधुरा आदि नाम रक्खे जांय तो कौन सी हानि है पर कौन कहे सब धान बाइस पसेरी है भले मानुषों को जब इस का खयाल नहीं है तो रण्डी मुण्डियों का क्यों होनेलगा कितने ऐसे मुखन्नस नाम हैं कि न नर न मादा न जानिए किस असूल पर रक्खे गए हैं। सीताराम राधाकृष्ण गौरीशङ्कर रमाशङ्कर इत्यादि इन नामवालों को क्या समझना चाहिए औरत या मर्द दोनों एक साथही तो होही नहीं सकते ? सब तो सब चिंगू धौंकल मदारी आदि नामों का क्या अर्थ है। धोबी के घर भरसदास हैं बाह्मन पूत मदारी। कितने अपने नाम से आधे हिन्दू आधे मुसलमान हैं रामगुलाम मातावक्स कुवर बहादुर राजबहादुर आदि कितने जन्मे तो हिन्दू के घर पर नाम से पूरे मुसलमानही रहे राय बहादुर नौवाब बहादुर इत्यादि कितने नाम ऐसे हैं कि केवल नाम से हिन्दू या मुसलमान की तसरीह कभी न होगी ; खुन खुन खुन्नू मंगरू झम्मू कुम्मू इत्यादि ; मूर्खता के घसमे से निकल भक्ति की भावना ने हम लोगों के नामो की बड़ीही खाक उड़ाई अपने इष्ट देव का कोई नाम रख अन्त को दीन या दास पद लगा दिया न जानिए किस जून क्या सरस्वती निकलती है कहते २ अन्त को दीन और दास हो गए काम सब दास के तो नाम में दास क्यों न हों महेन्द्र उपेन्द्र सुरेन्द्र वीरेन्द्र ब्रजेन्द्र शैलेन्द्र आदि प्रभुता द्योतक नाम क्यों रखाएं दास्य भाव तो चिरकाल से नस २

में भर रहा है ; मनु ने दासा न्तनाम केवल हीन जाति शूद्रोंही के लिए धराना लिखा है सोमदत्त चारुदत्त भूरिश्रवा विष्णु मित्र यज्ञदत्त सुमति सत्यसेन कामपाल आदि नाम तो अब सपने के हो गए हमारी पुरानी अच्छी बातें सबी सपने की हो गईं तो नामही पर क्या है।

यूरोप की सभ्यता का जोश।

फ्रांस की राजधानी पेरिस नगर में बहुत दिनों तक एक नौजवान आदमी एक जवान औरत के साथ रहा करता था और इस अरसे में उस आदमी से उस औरत के कई एक लड़की लड़के पैदा हुए ; बाद उस नौजवान आदमी के बाप ने अपने लड़के को हर तरह पर समझाया कि वह उस औरत को अपनी व्याहता कर ले ता कि जो लड़के लड़कियां उस्से हुए हैं हराम के न कहलाएं परन्तु उस जवान मर्द के कतई इनकार पर बूढ़े बाप ने उस औरत को अपनी व्याहता कर लिया ; अब ज़रा सोचिए इस अनोखे खानदान का आपस में क्या रिश्ता हुआ वे सब लड़के लड़कियां और उनके हकीकी बाप आपस में भाई बहन हुए और उन लड़कों की मा उनके हकीकी बाप की भी मा हुई और बूढ़ा जो उस जवान मर्द का बाप था उन लड़के लड़कियों का भी बाप हुआ ; इस तरह पर इस उलझे हुए पेचीदे खानदान का सुलझाना ज़रा काम रक्खा है इसी तरह का एक किस्सा बैताल पचीसी में भी है। हिं॰मि॰

देवनागरी अक्षरों की कमनसीबी

इन दिनों बड़े २ ओहदेदार हाकिमों में इन प्रान्तों में हिन्दी जारी होने के लिए आपस में कुछ लिखा पढ़ी हो रही है इसकी टोह हमें कई ठौर से मिली है परन्तु कई एक हुक्कामों की राय है कि हिन्दी के एवज़ कइथी हो क्योंकि कैथी सब लोग जानते हैं

और आसान है; हम कहते हैं यदि उर्दू बदल कर कोई अक्षर किए जांय तो यही देवनागरी अक्षर हों क्योंकि शिकस्तह उर्दू के समान देवनागरी भी अक्षरों को लिपुआ और घसीट लिखावटों में बिगड़ते २ अन्त को आपही कैथी हो जायगी तब पहले से कैथी के लिए ताकीद रखने की जरूरत क्यों है फिर देवनागरी से कैथी न किसी तरह पर आसान है न अधिक लोग इसे जानते हैं हम अपने निज अनुभव से कह सक्ते हैं कि कैथी जानने वाले देवनागरी सहज में पढ़ लेंगे पर देवनागरी में जिन्हें अभ्यास है उनसे कैथी नहीं चलती; फिर दिहात के चन्द पटवारियों के अलावा कैथी कौन जानता है स्कूलों में बहुत दिनों से हिन्दी प्रचलित रहने से हिन्दी सब जान गए हैं कैथी में अब तक किसी ने लिखने पढ़ने का अभ्यास नहीं किया है किसी को क्या भान था कि इतनी रगड़ पर कहते २ बड़े मुशकिलों में सरकार पसीजी भी तो कैथी का अपना एक नया थाका चलावेगी; हिन्दी के लिए लोगों की दरखास्त और आवेदन पत्र दिए गए हैं कैथी को कोई नहीं चाहता तब बाजे २ नासमझ ओहदेदारों की क्यों ऐसी बेहूदा राय होती है; अमले लोग जिनसे पुरानी वासना अब तक दूर नहीं हुई चिर परिचित उर्दू को छोड़ते बहुत जबुर समझते हैं उर्दू अखबार वाले मियां भाई हमारे स्वच्छ और सुस्पष्ट देवनागरी अक्षरों पर यों ही भांतर का ताना मार रहे हैं कैथी जारी होने से उनकी और भी चढ़ बनैगी; अन्ट बिगाड़ू अपरिणामदर्शी हाकिमों को न जानिए क्या जिद है जो ऐसी राय दे रहे हैं कैथी के लिए आन्दोलन वैसाही बेहूदा है जैसा कभी २ कोई २ कोते अकिल के हाकिम रोमन की गीत अलाप उठते हैं; अन्त को हमारी यही राय है कि अदालतों में अक्षरों का परिवर्तन होना हो तो

देवनागरी अक्षर हों नहीं तो उर्दू ही रहै. "खाना गेहूं नहीं रहना एहूं" ॥

———o———

पवन परीक्षा

सूर्य मण्डल के धब्बे Sun's spot बुध और शुक्र आदि ग्रहों के transit ग्रहण हमारे पूर्वज आर्य लोग भली भांत जानते थे इसे हम कई बार लिख चुके हैं आज यह साबित किया चाहते हैं कि यूरोप की आधुनिक प्राकृतिक वस्तु विषयक विद्या Physical sciencs भी जिस्मे अब तक नित्य २ टटकी ईजादें होती ही जाती हैं उन आर्यों की सूक्ष्म बुद्धि से तिरोहित न थी; मनसून अर्थात् मौसिमी हवा के हाल से भी खूब वाकिफ थे इन दिनों की सभ्यता रोज २ "बारो मिटर" वायु मापक यन्त्र लगा कर जिस बात का पक्का निश्चय नहीं कर सक्ती उसे वे लोग केवल एक दिन की परीक्षा से वर्ष भर वृष्टि अनावृष्टि सुकाल कुकाल का निर्णय कर लेते थे इसी निर्णय का नाम पवन परीक्षा है यह दिन असाढ़ की पूर्णिमा है जो जुलाई महीने के आदि या मध्य मे पड़ती है यह दिन इतना इटाय के इस लिये रक्खा कि असाढ़ पूरा होते २ हिन्दुस्तान का कोई प्रान्त नहीं बच रहता जहां मौसिमी हवा का कुछ न कुछ असर न पहुंच जाता हो फिर पूर्णिमा इस लिये नियत की गई कि पूर्णिमा को see tide ज्वार भाठा के कारण यह मौसिमी हवा जो समुद्र की हवा है उस्मे अवश्य और दिनों की अपेक्षा विशेष गुरुता आजाती है और सूर्यास्त संध्या का समय भी इसी हिकमत से है कि सांझ को अवश्य वायु मे किसी प्रकार का अदल बदल हो जाता है दिन भर हवा का रुख और आकाश का रङ्ग जैसा रहता है वैसा सांझ को नहीं रह जाता खास कर इस बर्सात के मौसिम मे; इस लिये आषाढ़ी पूर्णिमा का यह सूर्यास्त काल वृष्टि का शुभ अशुभ फल सूचक एक अनोखा यंत्र समझा जाता है; अब तो थोड़े दिनों से ब्राह्मण निरे धन लोलुप आलसी और मूर्ख हो गए इस कारण उनकी सभी बात क्रम विरुद्ध हो गई नहीं तो पहले ब्राह्मण लोग इसे एक अपना बड़ा भारी लोकोपकारी काम समझते थे और ठौर २ दस बीस पचास जुड़ कर किसी ऊंचे स्थान मे जाय पवन के

परखने की भांत २ की उपाय करते थे और उनकी परीक्षा में जैसी हवा ठहरती थी उसी के अनुसार साल भर अच्छा या बुरा बीतता था, ज्योतिष के परमाचार्य वाराहमिहिर निज ग्रंथ वाराही संहिता में आठो दिशाओं के वायु का फल यों लिख गये हैं।

पूर्वः पूर्वसमुद्रवीचिशिखर प्रस्फालना घूर्णितश्चन्द्रार्कांशुसटाभिघातकलितो वायुर्यदाकाशतः। नैकान्तस्थितनीलमेघपटलां शारद्यसम्वर्धितां वासन्तोत्कटसस्यमण्डितलतां विद्यात्तदा मेदिनीम्।

यदाग्नेयो वायुर्ज्वलशिखराम्फालनपटुः प्रवत्यस्मिन्नोर्गभगवतिपतङ्गेप्रयसति। तदानित्योद्दीप्ताज्वलनशिखरालिङ्गिततला स्वगात्रोष्मोच्छ्वासैर्वमतिवसुधाभस्मनिकरम्।

तालीपत्रलताविताननरुभिः शाखान्नमावर्तयन् योगेस्मिन्प्रवतिध्वनन्नुपचमो वायुर्यदा दक्षिणः। सर्वोर्वीमनुवंताश्च गजवचालाङ्गुलैर्वेहिताः क्षीणाश्चाद्भवमन्दवारिकणिका सुष्यन्तिमेघास्तदा।

सूक्ष्मैलालवलीलवङ्गनिचयान् व्याघूर्णयन्सागरे भानोरस्तमयेप्रवत्यविरतो वायुर्यदा नैर्ऋतः। क्षुत्तृष्णासमरातुराखिलजनप्रस्तारभारच्छदा मत्ताप्रेतवधूरिवोग्रवपुषा भूमिस्तदालक्ष्यते।

यद्वारिणूत्पातैः प्रविकटघटाटोपचपलः प्रवातः पश्चार्धे दिनकरकरापातसमये। तदाक्षोपीताप्रवरनृवरावक्षसमराधरास्थाने २ प्रविरतवसामांसरुधिरा।

आषाढीपर्वकालेयदिकिरणपतेरस्तकालोपपत्तौ वायव्योद्दण्डवेगः प्रवतिघनरिपुः पन्नगादानुकारी। जानीयाद्वारिधाराप्रमुदितमुदितां मुक्तमण्डूककण्ठां सस्योल्लासैःकलितांसुखबहुलतया भाग्यसेनामिवोर्वीम्।

मेरुप्रस्तमरीचिमण्डलतले ग्रीष्मावसानेरवौ वात्यामोदिकदम्बगन्धसुरभि र्वायुर्यदाचोत्तरः। विद्युद्भ्रान्तिसमस्तकान्तिकलना मत्तास्तदातोयदा उन्मत्ताद्भुतनष्टचन्द्रकिरणां गांपूरयत्यम्बुभिः।

ऐशानोयदिशीतलोमरगणैः संसेव्यमानोभवेत्पुन्नागागुरुपारिजातसुरभि र्वायुः प्रचण्डध्वनिः। आपूर्णोदकयौवनावसुमती सम्पन्नसस्याकुला धर्मिष्ठाःप्रणतानयोन्नृपतयो रक्षन्तिवर्णांस्तदा।

आषाढ्यांपौर्णमास्यान्तु यद्यैशानोनिलोभवेत्। अस्तं गच्छति तीक्ष्णांशौ सस्यसम्पत्तिरुत्तमा।

इत्यादि कितनी बाते हैं जिनसे हमारे प्राचीन आर्यों का फिजिकल साएन्स का जानना अच्छी तरह पर प्रगट होता है जिसे न विश्वास हो वाराही संहिता अमूर चिन्तक आदि कई एक ग्रंथों को ध्यान दे पढ़े ; वायु मण्डल आकाश मण्डल भूमण्डल की जितनी आश्चर्य घटना ये phenomena हैं जिन्हे यूरोप वाले घमण्ड से फूल अपनी इजाद कहते हैं सब हम आर्यों ने पहलेही से खोज रक्खा है सुकाल वो अन्न कई एक अन्न के रोजगारी और उनके अनुयायी दो एक नीच ब्राह्मणों ने अबकी साल यहां पवन् परीक्षा से नैऋत्य कोण की वायु निश्चय किया है जिसका फल अवर्षण महंगी रोग आदि है पर हमने जहां तक उस दिन की हवा को परखा तो पश्चिमही रही जिसका फल सब अच्छा ही अच्छा है ।

यही ईश्वर की ईश्वरता है ।

क्या यही ईश्वर की ईश्वरता है कि जितने काम सब गड़बड़ अस्त व्यस्त और अनर्गल ठीक २ और व्यस्त भाव से कोई काम नहीं ; गुलाब के फूल में सृष्टि निर्माण चातुरी को छोर तक पहुंचाय समस्त सौन्दर्य उसमें ठूंस काटे पैदा कर दिए ; सिंह को इतना बलवान और तेजीयान बनाय कटि भाग उसका नितान्त क्षीण और निर्बल कर दिया ; भारतवर्ष को सब तरह सुवर्णमण्डित फलवन्त और उपजाऊ कर इसके जल वायु में सुस्ती आलस्य और निरुद्यमता का ऐब पैदा कर दिया ; इङ्गलैंड जहां सारे ठंड के लोग ठिठुर रहे हैं उसके जलवायु में ऐसा असर रख दिया कि उस भूमि का एक पुतला भी अपना स्वत्व भरपूर पहचानता है अपनी असामान्य धीशक्ति बुद्धि वैभव असीम साहस और उद्यम से बड़े २ विस्तीर्ण देशों को बलात् आक्रमण किए आज दिन जगतीतल का ललाट मणि बन रहा है ; आकाश महा सरोवर की शोभा चन्द्रमा सा अनोखा फूल खिलाय कलङ्क कीट की कालिमा से उसे क्षत और अपविद्ध कर डाला ; अब मनुष्यों मे देखिए तो किसी २ को बुद्धि तत्व की सर्वस्व पूंजी सौंप परम दरिद्र और निष्किञ्चन बना दिया मनुजों को जिनमे कोई अच्छे गुण

समझदारी और बुद्धि का लेश भी नहीं है क़ारूं का खजाना सौंप दिया ; रुपया पैसा माल खज़ाना ज़र ज़ेवर से घर भरा है सब तरह की विभव और हुकूमत हासिल है हुक्म और हाकिम दोनों में तूती बोल रही है ऊपर से देख लोग यही अनुमान करते हैं इन के बराबर भाग्यवान और प्रसन्न दूसरा कौन होगा पर इनका यह हाल है कि जब कभी अकेले में बैठ सोचने लगते हैं तो मारे दुःख के छाती दरकती है कि हाय हमारे पीछे इस विभव को कौन भोगेगा कोटि २ यतन करते हैं और हजार २ सिर पटकते हैं कि काना खोतरा कैसाही एक वंश हो जिस्से नाम का लेवैया पानी का देवैया तो हमारे पीछे कोई रहै पर कुछ करा धरा नहीं होता अन्त को मसोस कर रह जाते हैं ; जिन्हें फाके कशी हो रही है दो दिन बाद भी पेट भर खाने को नहीं मिलता उनके आगे पीछे खांव फिकरी करते छ सात सात डोलते फिरते हैं ; जिसके कोमल अङ्गों की मृदुता देख चमेली शरमा जाती है जिसकी अनविधे मोती सी आब के आगे सोना सौ सौ बार हाथ मल पछताय रह जाता है परी और हूर भी जिसके सामने बे नूर हैं उसका एक ऐसे क्रूर और जनखे के साथ संयोग मिला देता है जिससे उस लावण्यवती का सम्पूर्ण लावण्य अनसूंघा फूल सा व्यर्थ कुह्मलाकर रह जाता है ; ऐसीर कितनी उसकी ईश्वरता है जिस के कोई अर्थ और कोई माने नहीं है पर अन्त को बेबस हो लाचारी से कहनाही पड़ता है कि यह ईश्वर की ईश्वरता है ।

नेटिवज्यूरिसडिक्सनबिल । अर्थात्

फ़ौजदारी के योग्य देशी जज को भी अंग्रेज जज के सामान अधिकार देना जिससे देशी जज गोरे अपराधियों का भी न्याय करें । वास्तव में यह बड़ी अनुचित बात है कि देशी जज को किकाले जज के नाम से अंग्रेजों से

पुकारा जाता है काले की भांति गोरे अपराधियों का भी न्याय क्यों न करने पावें ? इसका कारण जातिपक्षपात स्पष्ट जान पड़ता है ; यदि ऐसाही रहेगा तो जहां गोरे रहेंगे वहां काले जज काहे को रह सकेंगे और होते २ अंत में जज बनने ही न पावेंगे; बिचारे काले मनुष्यों की जवानी लंडन में पढ़ते २ बीती विद्या बुद्धि और अनुभव में अपने अंग्रेज़ भाई जज के बराबर हुए पर हाय उनके काले रंग ने उनके लिये सब काला कर दिया । सन् १८७२ ई० में ऐक्ट १० फ़ौजदारी का पास हुआ था और इसके पहिले काले और अंग्रेज जज के सब अधिकार समान थे जब से यह ऐक्ट हुआ तब से यह रुकावट कर दी गयी कि गोरे अपराधी का मुक़द्दमा काले जज के यहां न पेश हुआ करे इस रुकावट का फल यह हो रहा है कि जहांकहीं अंग्रेज़ जज नहींहैं और काले जज हैं ऐसे स्थानों के गोरेआदमी जो चाहतेहैं सो करते हैं कोई उनके अत्याचार का देखने वाला नहीं है और जो दुःख हमारे पराधीन देशियोंको होता है वेही जानतेहैं पर अपने में इतना साहस न रखने से किसी से कहते नहीं हैं और साहस भी है तो धनहीन और निर्बल होने के कारण सैकड़ों कोस जा नहीं सके कि वहां जाकर वहां के अंग्रेज जज से अपना दुःख कहैं; क्या आश्चर्य है जिस दिन यह रुकावट का कानून बना होगा अंग्रेज़ों ने उस दिन हृदय से ईश्वरको धन्यवाद दिया होगा और हमारे अज्ञान और अबोध हिंदुस्तानियों को कुछ जानही न पड़ा होगा कि क्या हुआ । तब तो उनके धन्यबाद देने का दिन था अब गालियां देने रोने और घबड़ाने का समय है क्योंकि अब गोरे लोग देखते हैं कि अब स्वतंत्रता से अन्याय कर निष्कंटक रहने के दिन जाया चाहते हैं; सत्य है कौन अपराधी चाहता है कि

कोई मेरा न्याय करे और मैं दंड पाऊं । इस स्वतंत्रता को न छोड़ने के लिये गोरों ने साम दाम दंड भेद सब ढंग किये । सब नगरों में सभाएं कीं उनमें हिंदुस्तानी मर्द औरत को नालायक कहने के बाद बड़े लाट साहिब को अर्जियों के खर्रे के खर्रे लिख डाले महारानी बिक्टोरिया तक अर्जी साहब मेम दोनों ने भेजीं। सर्कार को धमकाया भी कि यदि हमारी स्वतंत्रता छीन ली जायगी तो अयं जी राज्य भी गया बीता समझना चाहिए हिन्दुस्तान में उद्यम के नाश होने की भविष्यत बाणी कही मानो सब हिन्दुस्तानी इन्हीं के फैलाए उद्यम से जीते हैं सो अब मर जांयगे अपना रुपया कोई कारखाने में न लगाने का इरादा लोगों को सुनाया मानो सब काम इन्ही के रुपयों से होता है सच है हमारे घर से आग लाय नाम रक्खा बसन्धर अंगरेज लोग कब से धनी हुए हमारेही महाजनों से ही उधार लेकर कोठी खोलते हैं अन्त में बहुधा दिवाला पीट चंपत होते हैं ; हमारे देश की परदेवाली औरतों को भी गाली देने से न छूटा और अपने मामिले में तो ऐसी बेहयाई साथ ली कि जब कुछ इंगलिशमैन में पढ़ो तो यही लिखा रहता है कि फलाने साहब शिकायत करते हैं कि कल रात को साईस बहरा भंगी या बाबू ने मेरी मेम या मिस के साथ कुकर्म किया या करना चाहा था पर अब उस का पता नहीं है पता कहां मिले किसी ने कुछ किया भी हो॰ यदि झूठ किसी पर लगा दिया तो खास उन्ही के जाति वाले गोरे जज अपराधी को ठीक गवाही के न मिलने से छोड़ देते हैं॰ कभी २ यह भी कह बैठते हैं काले लोग हमको या हमारे लड़कों को मारा॰ कहां तक यह कथा लिखें लोग इतने ही से समझ लेंगे कि यह सच है या झूठ और कालों को इतनी हिम्मत तो अभी सपने में भी न होगी कि गोरों को छेड़ें क्या आंख भर देख भी नहीं सकते गोरे लोगों ने लंडन में भी सभा कर उस सभा की ओर से सेक्रेटरी आव स्टेट फार इण्डिया को एक निवेदन पत्र दिया जिसमें यह प्रार्थना थी कि ज्यूरिसडिक्शनबिल न पास होवे॰ लार्ड किम्बर ने २६ जूलाई को यह निवेदन पत्र पाया और उसी दिन उत्तर दे दिया कि पार्लियामेंट की यह इच्छा है कि यह बिल पास हो तुम्हारा निवेदन पत्र लार्ड रिपन को भेज दिया जायगा और वे छोटे लाटों की सलाह ले कुछ तुम्हारे मन की सी किया चाहेंगे तो कर देंगे ॥

Printed at the 'Light Press,' Benares, by Gopee [illegible]th Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

7/10/83

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Augt. 1883. Vol. V.] [No. 12.

प्रयाग सावन कृष्ण ७ सं० १९४० जि० ५ [संख्या १२

महाजन।

गये महीने में हम लिख चुके हैं कि हमारी दयालु गवर्नमेन्ट को यहां के भिक्षुकों का इन्तिज़ाम करना अति आवश्यक है आज यह दिखलाया चाहते हैं कि हमारी समाज और हमारे देश में उन्ही भिक्षुकों के समान एक दूसरे प्रकार के लोग और भी हैं जिनकी नीच आचरण से पीड़ित प्रजा की रक्षा के लिये गवर्नमेन्ट और लेजिसलेटिव कौंसिल को

कृपा दृष्टि इधर होनाही चाहिये।

महाजन अर्थात् बड़े आदमी बड़े आदमी? क्या वे लोग जो अपने स्वदेशी भाई बन्धुओं से शरीर के बड़े मोटे चौड़े लंबे और भारी भरखं हों? नहीं नहीं तब क्या वे लोग जिन्हो ने किसी बुराई या भलाई मे एक ताई के साथ नाम पैदा करने से विख्यात हुए हों; या वे जिन्हा ने हरतरह की दस्तकारी या भांत २ के कला कौशल जिन दोनो बातों मे हम लोग बहुत पीछे हटे हैं अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से बड़ी कुशलता प्राप्त करली हो; अथवा वे लोग महाजन हैं जो अपनी प्रगल्भशो शक्ति और अभङ्गुर समाधि योग से यह लोक परलोक भूत भविष्य वर्तमान का सब हाल जान सक्ते हैं? नहीं २ वे भी नहीं तब क्या महाजन वे हैं जो संसार की सब विषय वासना को लात मार ईश्वर के निर्वाण पद मे लीन हो गए हैं? अथवा वे हैं जिन्मे काई मनुष्यों का बल और सिंह का सा पराक्रम होता है रणक्षेत्र जिनके क्रीड़ा करने और मन बहलाव की जगह है या तो कोई राजा महाराजा भूपति संम्राट होंगे? नहीं महाजन इन्मे कोई नहीं हैं इन लोगों मे महाजन कोई नहीं हैं तो इस मनुष्य योनि मे यह उपाधि धारी कोई नहीं हैं पशु विशेष हों या कीट पतङ्ग जलचर नभचर मे कोई हैं; अजी साहब महाजन इस देश के आदमी हमारे ही समान लहू मास का पिण्ड उनका भी और मन हरने वाली हरि की लाड़िली चञ्चला लक्ष्मी के कृपा पात्र होते हैं; जब अपनी पूंजी से किसी दीन दुखिया मोहताज को कुछ सहारा पहुचाते हैं तो मनुष्य समझे जाते हैं और जब कभी अपने धन से कोई क्षेत्र सदावर्त कूप तड़ाग आराम बाटिका आदि की चिरस्थायी नेव डालते हैं तो देवता और साक्षात् देवराज इन्द्र की पदवी पाने के योग्य समझे जाते हैं;

पर जब अपने बड़े खजाने से अल्प पूंजी को खींच कर मिला लेने के लिए जाल फैलाते हैं तब पशु और नीच से नीच अत्यन्त नीच कीड़ों से भी नीच तर समझे जाते हैं। महाजनी भी एक रोजगार पेशा या दूकानदारी है इस दूकान की पूंजी रुपया एक ऐसी वस्तु है जिस्के लिये सारा संसार ललचा रहा है और कौन ऐसा वीतरागी त्यागी होगा जिस्की रुपचन्द का नाम सुनतेही लार न टपक पड़ती हो; इस दूकान में रुपया खरीद फरोख्त होता है यह बात तो सभी लोगों ने अपने २ अनुभव से जाना होगा बिना रुपये के समाज का कोई काम नहीं चल सक्ता जो नितान्त असभ्य और वन्य हैं उन्हें चाहो रुपया का काम न पड़ता हो नहीं तो घर गृहस्थी रख कौन ऐसा है जिसे इस्की जरूरत न होती हो; रुपये वाले को क्या ऐहिक क्या पारलौकिक कठिन से कठिन कोई वस्तु अप्राप्य नहीं है; विपत्ति यह टाले, दुःख यह दूर करे, मान और प्रतिष्ठा इस्से मिले, इसीकी खोज में लोग बरसों तक हर तरह का क्लेश सहते हजारों कोस की धूर फांकते फिरते हैं इस्के कारण भाई भाई लड़ते हैं बाप बेटों से बिगड़ जाते हैं बड़े २ राजा महाराजा बड़े २ शूर वीर ऋषि मुनि साधु समाज सब इस्की आकांक्षा रखते हैं अतएव जिनके आदेश में यह है वे महाजन कहलाते हैं।

प्यारे पाठक इन महाजनों के चरित्र अनेक हैं अनन्त हैं अपार हैं इतने अधिक हैं कि उन सबों को हम किस गिनतीमें हैं जो कहैं शेषशारदा भी लिख कर पार नहीं पा सक्ते इस लिये उन सबों को छोड़ हम यहां पर केवल इनके लेन देन के विषय में कुछ कहा चाहते हैं; याद रहे रुपये से रुपया पैदा होता है याने जिसे रुपये की जरूरत हो वह जब रुपया ही देगा तब रुपया मिलेगा; जो

रूपया गरज मन्दा रूपया पाने के लिये देता है या देने का वादा करता है उसे सूद कहते हैं; यह विपत्ति सारे संसार सारे देश और सब समय थी और है; जिसे सूदकी आमदनी है वह आठो सिद्धि और नवो निधि को लात मारता है और जिनको सूद देना पड़ता है उनका प्राण शरीर से छूटने पर भी भूलता नहीं वरन नरक की यातना मे भी स्मरण रखता होगा और किस्की कहैं पीर पैगंबरों की रूह भी याद रखती होगी; जिनको सूद मिलता है वे संसार मे थोड़े हैं जिनको सूद देना पड़ता है वे बहुत और अनगिनत हैं।

भला तो क्यों साहब जिनको रुपये की हाजत हुई उन्होंने रुपये वाले से रुपया लिया और उस्के बदले उस रुपये मे और रुपये मिलाय जिसे आप सूद कहते हैं वापस दिया तो इस्मे बुराई क्या है? प्रत्यक्ष है हर एक समाज और देश मे ऐसे लोग न हों और लेन देन न करैं तो काम न चलै तब क्या कारण है जो पहरों से आप व्यर्थ की ठांय २ कर रहे हैं गवर्नमेन्ट की गोहार करते हैं उसे मदद के लिये बुलाते हैं सो क्यों? जो आपने कहा सब सच है इस्मे कोई बुराई नही, है जो महाजन जरूरत के वक्त रुपया देते हैं उनका भगवान भला करे हमारा लक्ष्य उन नीच महाजनों पर है जो बिना जरूरत देते हैं और उनकी खबर गवर्नमेन्ट अगर जल्द नही लेगी तो हमारे देश को प्रत्येक समाज सत्यानाश मे मिला न जानिये किस दशा को पहुंचेगी।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि रुपये मे बड़ी ताकत है जिसे ज़रूरत पड़ती है वह इसे दर २ खोजते फिरता है और जिस तरह मिलै लाचार हो सब अङ्गीकार करता है उस समय यह कोई नहीं सोचने बैठता कि उस्के मिलने की यह उपाय जांहै यावेजां सर्वथा लोक निन्दित है या नहीं

और परिणाम इसका अच्छा होगा या बुरा ; परन्तु बेजा कर्ज लेने वालों की जो २ मूर्खता है उसे आज यहां पर नहीं लिखा चाहते अभी का उनके जघन्य आचरण उनकी बेवकूफी और उनके सुधरने की उपाय फिर लिखेंगे इस समय केवल उनका हाल लिखते हैं जो उनकी बेजा और झूठी जरूरत के रफा करने को श्मशान के गीध समान ताक लगाये बैठे रहते हैं; गवर्नमेन्ट को चाहिये हिन्दुस्तान ऐसे देश मे जहां विद्या का प्रकाश अब तक नहीं फैला और सर्वसाधारण को और २ मुल्क वालों का हाल जानने के लिये कोई वसीला नहीं है न विद्या है न नेत्रांजन सदृश विद्या न science ने इनके मुंदे नेत्रों को खोल दिया न घर छोड़ कहीं अन्यत्र गये हैं कि देश विदेश घूमने ही से और २ देश वालों के उत्थान और अधः पतन का भरपूर हाल जानते हों; धर्म इन्हे सत्यानाश मे मिलाये है सो मन को ऐसी भारी बेड़ी पांव मे पड़ी है कि धर्म भ्रष्ट हो जांयगे इस डर से उस बेड़ी को तोड़ स्वच्छन्द होभी नहीं सक्ते दूसरे गैर मुल्कों मे जाय तिजारत का जो कुछ फायदा है उसे जान बूझ छोड़ बैठे हैं; ऐसी दशा मे सरकार को रुपये वालों से सर्व साधारण के रक्षा की बड़ी फिक्र करनी चाहिये और इनके बुरे व्यौहार और कर्मों से हमे खूब बचाना चाहिये; इन्ही के कुकृत्यों से पुरानी भूमि पति और ज़मींदार जिनको अपने असामी और रिआयों पर भरपूर मोहब्बत थी सब भांत अपनी हानि सहकर भी उनकी सदैव रखवाली किया करते थे और उन्हे किसी तरह पर नहीं बिगड़ने देते थे अक्सर मिट बिलाने ; नए २ लोग उनके स्थान मे भूमि के अधिकारी हुए; जिनके पास स्थावर या जङ्गम जायदाद है उनको रुपया मिलना कुछ बड़ी बात नहीं है क्योंकि हमारे देश मे

एक २ का दस २ लेने वाले सर्व्वासी ये रुपये वाले महाजन तो मौजूद ही हैं जिनको सदैव यह फिक्र रहती है कि हमारा रुपया कहीं लगता रहै तो ठीक है; तिजारत अर्थात् अपने देश की चीज और २ देशों मे लेजाना और वहां की यहां ले आना जिस्से बहुतेरी कौमो ने बेहद्द फायदा उठाया है यहांतक कि तिजारत ही करते २ वहांने २ इतना बड़ा राज्य पा गये जिस्पर और सब लोग अब हसद कर रहे हैं उस तिजारत की इनमे योग्यता नहीं उस्के चलाने की बुद्धि और और साहस दोनोसे हीन हैं और सब से बड़ा शत्रु जो इन्हें आगे बढ़ने से रोक रहा है वह मजहब है इतना शऊर नहीं कि रेल आदि बड़े २ कारखाने खोल मुल्क की Metterial prosperity वास्तविक संपत्ति बढावें; अब इनकी पेशे रोजगार या दूकान दारी की यह दशा है कि कभी आज तक किसी ने न सुना होगा कि पेशावर से जगन्नाथ तक या नेपाल से कमोरिन तक मे कोई बड़ी दूकान होस की किस्म की इन महाजनो की कहीं है जिन मे विलायत के सौदागरों के समान एक २ वस्तु करोड़ों की भरी हैं क्या रैली ब्रदर हमिलटन न्यूमेन वायल आदि के कोई मुरब्बाब का पर लगा है जो अपने इहत वाणिज्य के द्वारा विलायत और हिन्दुस्तान को एक किए हैं और रुपया सब यहां का ढोए लिये जाते हैं पर वैसी बुद्धि वैसा साहस उतना एका वैसा ढंग इनमे नहीं है जो उन की बराबरी कर सकैं अब रही हुंडी पत्री सो पेपर करेंसी और मनीआर्डर के आगे सब मारी पड़ी; यह सब को मालूम है कि मनीआर्डर से देश के लोगों को कितना आराम है घर बार छोड़ परदेश मे रहने वाले गरीबों को खा पहिन जो कुछ बचता था उसे अपने लड़के बालों मे पहुचाना अति कठिन था पहले तो

साबजी दस पांच की हुंडी का नामही सुन सिकोर करने लगते थे दलालों के झांव २ से फुरसत पाय घंटो बाद जी मे आया तो मुनीम साहब को हुक्म दिया इनसे इतना हुंडियावन लै हुंडी लिख दो वह हुंडी जब लड़कों के पास पहुची तो उसे भंजाना दुशवार हो गया साबजी साहब उस गरीब आदमी के छोटे बच्चों से कहते है अमानत लाओ तो रुपया मिले; यहां मनी आर्डर के द्वारा जो भेजिये वह जाता है निस्सन्देह उसे घर बैठे मिलता है भेजने वाले की चिट्ठी पहुचने के पहले डाकखाने मे रुपया पहुंच जाता है पाने वाला चाहो बड़े शहर मे हो या छोटे से छोटे ग्राम का रहने वाला हो; इस तरह हमारे महाजनो के रुपया लगाने के सब द्वार बन्द हुए तो अब बताइये वह कहां और कैसे लगाया जाय लक्ष्मी तो कभी स्थिर हो रहती ही नही अपने लिए अवश्य कोई न कोई राह निकाली लेती है तब महाजन इस लिये कि उनका रुपया कहीं लगा रहे उनसे व्योहार करेंगे जो कोई आंख का अन्धा गांठका पूरा किसी बड़े घराने का लड़का या ज्वान मिले ; भारत वर्ष मे ऐसे बहुतेरे घराने मिलेंगे जिन्मे एक दो ऐसे कच्ची बुद्धि वाले लड़के या ज्वान मौजूद हैं जिनका हिस्सा अपने घर की जायदात मे बहुत कुछ या कुछ न कुछ हई है पर कुल इन्तिज़ाम उस जायदात का घर का सरदार करता है छोटे बाबू साहब को इन्तिज़ाम करते या घर का कार बार देखते बुखार आता है; पढ़ना लिखना मानो उनके लिए बड़ी लज्जा की बात है फिर छोटे बाबू साहब पढ़ लिख करेंगे क्या ? तब घर से तो उन्हे उतनाही रुपया मिलेगा जितना आवश्यक और उचित है सो उतना तो बाबू साहब को पान सुपारी के लिये भी काफी नही है और जितनी जरुरतें उनकी ऐसी हैं

को घर वालों से नहीं कह सक्ता तब बहुत ही घबराया हुजूर खुदावन्द वालों से सलाह करने लगे जिनकी चुटकी बजाते ही आंख खुल जाती है "हैं" आप को रुपया न मिले नाम लेते ही मौजूद हुआ अलादीन को तो चराग रगड़ना पड़ता था तब जिन आता था छोटे बाबू साहब के पार्श्ववर्ती जिन और परियां हैं; बाबू साहब की नजाकत और मिज़ाज की कहां तक तारीफ की जाय तबले की ज़रा तेज ठनक और सितार की ज़रा कड़ी आवाज से सर दर्द पैदा होता है जिन पर परियां मरती हैं और जो कहीं यह सुनने में आया कि जिस दिन से बाबूसाहब को टेनडम पर चढ़े जाते देखा है उस दिन से फलानी परी बेताब है रुपये पैसे की बिल्कुल ख्वाहिश नहीं है सिर्फ आपकी रसीली चितवन और मीठी बोल की प्यासी है। अब हम पूछते हैं जो इन जिनों की साट में बाबू साहब को रुपया देते हैं कभी नेक नीयती से देते हैं ऐसे असामियों को सिवा कलिकाल के साव जी के दूसरा कोई नही कर्ज देने का इरादा न करेगा यह नहीं कि इस किस्म के फ़ज़ूल खर्च केवल हमारे ही देश में हैं पर दूसरों से से हमें क्या प्रयोजन हैं जहां तक हो सके हम अपने को सुधारें; यह तो हमने एक बात अपने लोगों की फ़ज़ूल खर्ची की यहां पर जाहिर किया ऐसी २ कितनी बातें हैं दादा जी मर गये उनकी और्ध्व दैहिक क्रिया ऐसी होनी चाहिए कि आज तक ऐसी किसी ने न किया हो कहां से माल सञ्चित कुछ ठहरा नहीं फन्द को साव जी की चङ्गुल में आ फंसे। जेठे लड़के का व्याह आ लगा ऐसा हो जो कुछ दिनों तक याद रहे चाहो बाद व्याह के चिरञ्जीव और उनके सन्तान को खाने का ठिकाना न रहजाय पर व्याह ऐसा हो कि कुछ काल तक लोगों को स्मरण रहे।

प्यारे सज्जन पाठको यह मत समझो कि यह सब चित्र हमने अपने मन से खींचा है या वास्तविक चित्र में केवल चमकीला रंग भर दिया है यह सब सच सच बीती बात हैं सरकार की ओर से इस सब का बन्दोबस्त न किया जायगा तो यह दुखी भारत और भी कराहेगा; फिर जो लोग ऐसों से व्योहार करते हैं उनका सब ढंग लोक विख्यात है ५ देते हैं १० लिखाते हैं उसमें भी सब नगदी ही कर्ज लेने वाले के हाथ लगता हो सो नहीं कोई भोला असामी पाय सावजी के घर की पुरानी धुरानी चीजें घोड़ा गाड़ी फर्श फुरूश शीशे आलात आदि टूटे फूटे असबाबों का मन मानता दाम वसूल हो जाता है; जिन लोगों ने इन नीच महाजनो से व्योहार किया है और जिनके साथ यह व्योहार किया गया है उनकी एक फिहिरिस्त लिखने लगें तो यह आशय जिसे पढते २ लोग थक गए होंगे वे ओर छोर बढजायगा और बहुतेरों को बुरा लगेगा; सारांश यह कि परिणाम में सावजी को हर तरह चांदी है असामी बेचारा दो २ कौडी का भी मंहगा हो जाता है उसे मुह दिखाते लाज आती है सावजी के द्वार की चौकी देते पांव घिसता है जिनो की अब कहीं सूरत नही देखाती परियां परिस्तान को उड़ जाती है कहने सुनने मे बाबूसाहब कहावत मात्र रहजाते हैं; सावजी को बिला तरद्दुद घर बैठे रूपया वसूल होता है क्योंकि बाबूसाहबका इस्तामर दस्तावेज़ पर मौजूद है अंगरेजी कानून से और सबूत चाहिये क्या? मुकद्दमा करने वाले अगर कोई हिन्दुस्तानी हुए तो सावजी के इस नष्ट और पतित आचरणो पर कुढ़ २ बुरी दृष्टी से देख देख मुद्दई को डिगरी देंगे अगर कोई अंगरेज हुए तो असल बात को वह क्या समझेंगे मुकद्दमा फैसला करने के पहले बड़ा भारी लेक्चर मुद्दाले को देंगे जि

स्का मतलब यह होगा कि जिस बात को लिख कर कुबूल कर ली उस्में उजर न होना चाहिये; अगर जैसी इस देशकी दशा है इस हालत में यह काइदा जारी किया जाय कि रूपया देने वाले सेभी डिगरी के समय सबूत मांगा जाय और जिसने हमारी ऊपर कही हुई झूठी ज़रूरत के लिये कर्ज़ लिया हो उस्के ऊपर अदालत से डिगरी न मिलाकरे तो हमारे देश से बहुत से अपव्यय और बुराईयां उठ जांय; हम उस गवर्नमेंट से इस बात के लिये निवेदन करते हैं जिसने कितने छोटे मोटे राजा बाबू और रईसों को कोर्ट आफ़ वार्डस के ज़रिये से बचा रक्खा इस सीगे से हमे जो कुछ फ़ाइदा पहुंचा है उस्के लिखने की ज़रुत नहीं है; हम उस सरकार को पुकारते हैं जिसने हालमें हुक्म दिया है कि मौरूसी जायदाद नीलाम न हुआ करे; हम उस कृपालु गवर्नमेंट को दोहाई देते हैं जिसने यह आज्ञा दी है कि अगर जिमिदारी का तो रहे तो तौर पर उस्का दखल बना रहे जिस्में उस्के पैदावार से असामी अपने लड़के बालों को पाल सकें; उसी उदार गवर्नमेंट के आगे यह कुछ बड़ी बात नहीं है कि इन निर्दयी महाजनो के चङ्गुल से हमे छुटाने के लिये हमारे इस सत्परामर्श पर ध्यान दे झूठी ज़रूरत पर रूपया दे एक का ४ भरने वालों को अदालत से पानेका कोई मजाज़ बाकी न रहने दे—किम्बहुना—

मौत और पैदाइस का खसरा।

लक्ष्मी नाम की कई हज़ार वर्ष की जर्जर हिन्दुस्तान की बुढ़िया कजा कर गई और उसी की सहेली सरस्वती नाभी डोकरी को खटका लगा है घड़ी पहर हो रहा है; अश्विनी कुमार के बाबा नई रोशनी वाले हजार २ ओझियां अमृत सञ्जीविनी बूटी की तमाम किमिश्टरी और डाक्टरी का ज़ोर निकाल उस्के गले मे गेरते हैं कुछ फ़ाइदा नहीं होता सत्यनाम का बूढ़ा जिसे बहुत दिनों से दमे का आज़ार हो गया था चल बसा;

धर्मनाम के प्राचीन तक नई शिक्षा के भय से त्रस्त हो भूमण्डल छोड़ कैलाश जाते हुए धर्म की सुनीति नाम की एक कौली बेटी को इलबर्टबिल के विरोधी अंगरेजों ने पशुमार से मार कर मार गिराया; इसी के दो सगे भाई विचार और न्याय अपनी प्यारी बहन के मरण दुःख की असह्य वेदना सहने मे असमर्थ हो शान्त होगये; इन्हने समाधि ले सत्य लोक की यात्रा की; विवेक नाम का एक बड़ा धनी सिधार गया; इसी के साथही नम्रता रामशरण हुई; सन्तोष नाम कुमार न जानिये किस कुसाइत मे यहां की पृथ्वी मे पांव रक्खा कि उद्यम और साहस दो यहां के बड़े वीर तन त्याग इङ्गलैण्ड मे जाय जन्मे; वीरता जिसे चिरकाल से क्षयी का रोग घेरे था सदा के लिए अपनी आंख मूंद महानिद्रा के वशी भूत होगई उसी के साथही वियोग मे स्वच्छन्दता भी सिर धुन २ सूख काय रह गई।

अब पैदाइश का खसरा सुनिये अविद्या नाम की एक राक्षसी न जानिये कहां से पैदा हो यहां के धनियों को जाय वरा जिनके संयोग से आलस्य, अनुद्यम, अनुत्साह, दुर्व्यसन, कुसंस्कार, आदि चौपट सन्तान पैदा हो देश को दरिद्र और दुःख सागर मे डुबो दिया; दम्भ ने जन्म धारण कर मिथ्या आचार कपट व्योहार मत मतान्तर के रामकटाका त्रिपुण्ड्र धारी महन्तों को जा गिराया; विषय वासना और लोभ पैदा हो कलियुग के कुटुम्बी ब्राह्मणों को जगाया; अस्वतन्त्रता पैदा हो पण्डित ज्ञानियों के गले को हार हुई; इङ्गलैंड की सभ्यता का प्रसाद सुराजन्म ले गई रोशनी को रोशन किया; नास्तिकता प्रगट हो नेचरियों को नष्ट किया; मौसिम गरमी मे कई महीनों की गर्भिणी नव पयोद का साथ पाय म्युनिसिपलिटी ने कोवी गन्दगी को जना फिर गन्दगी ने सफाई के अप्रबन्ध का सहारा पाय म्युनिसिपल कमिश्नरों के अयश की पताका फहराते है जाड़ा बुखार शीतज्वर आदि कितने शूर वीर लड़कों को पैदा कर कितने मुहल्ले और ग्रामों को अपने तावे कर लिया इत्यादि, हमारे इस मौत और पैदाइश के खसरे को कण्ठ कर जो रोज एक बार पढा करें उनके लिए हम सिफारिस करते हैं कि मरदुमशुमारी के महकमे की हेडक्लर्की उन्हीं को दी जाय

शिवराज शर्म्मा।

नन्हे से पति को बड़े उमर की पत्नी

इन दिनों बङ्गाल के प्रसिद्ध पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशय विधवा विवाह और बाल्यविवाह पर अनेकानेक उक्ति युक्ति शास्त्रों से निकाल २ यह सिद्ध कर रहे हैं कि विधवा विवाह वेद विहित कर्म है और बाल्य विवाह से भी बड़ी हानि दरसाते हैं किन्तु हाय यह कोई नहीं सोचता कि इस भारत भूमि में असंख्य स्त्रियां ऐसी पड़ी हैं जिनके पति अति छोटे हैं जिस्से वे अपनी मन कुढ़ २ अहर्निश आंसुओं की धारा से मुंह धोया करती हैं या पञ्चशर की असह्य वेदना न सह सकने से मा बाप और ससुर के कुल को डुबोती हैं कल्पना कीजिए स्त्री ८ वर्ष की है और पति की ७ वर्ष की अवस्था है यह तो प्रत्यक्ष ही है कि लड़कियां बहुत जल्द बढ़ती हैं वह तो बढ़ कर ज्वान स्त्री हो गई पर नन्हे से पति दुर्बल और जन्म के पिंडरोगी ठिठर कर जैसे के तैसे ही बने रहे; अब कहिए उस प्रफुल्ल और विकसित यौवना का मन क्यों कर एक छोटे से चूहे से सन्तुष्ट हो सक्ता है बड़े २ ज्ञानी ध्यानी मुनियों को जब मीनकेतन ने अपने वशीभूत कर लिया है तब उस बाला की क्या शक्ति है जो काम के बाणों को सह सके अवश्यमेव किसी पासी पड़ोसी पर दृष्टि डालेगी और अन्त को पक्की व्यभिचारिणी हो निकलेगी बहुधा ऐसा भी सुनने में आया है कि कभी कभी उसने अपनी ओर से अपने अज्ञान पति को छेड़ा है तो वे रोकर अम्मा को पुकारने लगे हैं; अब उस छोटे से पति के पक्ष में देखिए जब तक वे अच्छा पुरुष बनने से बढ़ कर बड़े हुए हैं तब तक में उनकी व्याहता स्त्रियों विगत यौवना हो कर बुढ़िया बन गई अब उस ज्वान पति का मन उस बुढ़िया से कब राजी हो सक्ता है तब ला चार हो चौक की हवा खाने लगे कभी अलावन्दी के कोठे तले टिक टिकी लगा रहे हैं कभी छोटन का नाम ले२ पेयाओं को नाक के बाल बनते हैं यहां तक कि नगर की कोई वेश्या नहीं बची जहां आप जाय थके न खाय आय हों इस तरह पर स्त्री पुरुष दोनो नष्ट होते हैं और जन्म पर्यन्त सिवा दुख के सुख उन्हें कभी नहीं मिलता पर हाय इस बुराई के उठाने और सुधारने को कोई कभी चेष्टा नहीं करता और कितने स्त्री पुरुष इस कुरीति के कारण नष्ट हो गए और होते जाते हैं।

लावनी ।

मेरे मात पिता को नेक तरस नहिं आया । क्यों नन्हे पति से व्याह मेरा करवाया ॥ दिन रैन पड़े ना चैन कहूं सखि प्यारी । पानी में जवानी मिली हमारी सारी ॥ मूरख माली मिला सोच यह भारी । मुर्झाय चली बिन जल फूली फुलवारी ॥ क्या जन्म पत्र जोशी ने ठीक मिलाया । जो नन्हे पति से व्याह मेरा करवाया ॥ कर गहूं तो डर कर रो रो हाथ छुड़ावै । मैं इधर कहूं वह उधरको भागा आवै ॥ ये काम बान को आग हिया सुलगावै । जल हीन कूप महं माहि लाज केहि खावै ॥ अमृत के बदले बिष ये मुझे पिलाया । जो नन्हें पति से व्याह मेरा करवाया ॥ मैं इसी सोच में पड़ी जी अपना खोजं रोरो के बिताऊं रात न सुखसे सोऊं ॥ असमय से सुख हर घड़ी मैं अपना खोऊं । किय जिन्हो ने ऐसा व्याह उन्हो को रोऊं ॥ जिस दिन से ब्याही गई न कुछ सुख पाया । क्यों नन्हे पतिसे व्याह मेरा करवाया ॥ मरजाय पुरोहित और वो लोभी नाई । जिन ऐसे के संग कीन्ही मेरी सगाई ॥ मर जाय वह रंडा सास औ मेरी माई । जिसने गरदन पर मेरे छुरी चलाई ॥ शिवराम ये इसने तुमको दुःख सुनाया । जो नन्हे पति से व्याह मेरा करवाया ॥

शि रा पं

नूतन चरित्र ।

अध्याय ८

नौवाब के घर पहुंचने का हाल ।

प्यारी जब तुमने हरथला के स्टेशन पर मुझे घायल छोड़ दिल्ली की राहली तभी से मेरे मन में यही बस गई कि कब चल्हूं औ दिल्ली पहुंच अपने प्यासे नयनों को तुम्हारे दर्शन से तृप्त करूं दो ही दिन बाद मैं भी वहां से रवाना हुआ और यहां पहुंचतेही तुम्हारे भाई का पता लोगों से पूछना शुरू किया और कहीं पता न पाय अतिही निराश हो गया अन्त को अचानक एक दिन तुम्हारे भाई से पहचान होगई पर पहचान के साथही यह दुःखदायी वृत्तान्त सुना कि तुमको कोई दुष्ट धोखा दे हर ले गया है; तब मैंने तुम्हारे भाई को बहुत सा दिलासा दे उनसे वादा किया कि मै बहन का पता लगा दूंगा; दो एक दिन बाद सराय की भठियारिन से कुछ टोह मिली कि इस नौवाब के घर मे तुम कैद

हो अब से तुम्हारी प्रीति के कारण अपनी देह और प्राण पर खेल इस नौवाब के घर की राह को निकट पहुचते २ पाली स वर्ष के उमर की एक औरत जिस्की जवानी ढल गई थी मिली जो इस मकान के बाहर निकली आती थी मै एक अजनबी परदेसी की सूरत से उसे सलाम कर चुप चाप थोड़ी दूर तक उस्के साथ चला—मैने तो उससे कुछ नही कहा पर वह मेरी ओर देख बोल उठी—कहो मियां गबरू क्या खबर है ? आप कहां से आए और मेरे पीछे क्यों लगे हो अबतो मै बूढ़ी होने पर आई सच कहो मेरे पीछे किस मतलब से लगे हो क्या मुझसे कुछ काम लिया चाहते अब तो मै बुढ़ापे के सबब तुम्हारे किसी काम की न रही; बाहरी जवानी जिन दिनो मै अपनी उमर पर थी सैकड़ों को कुएं झंखाती फिरती थी अब वही मै हूं कि कोई बात भी नहीं पूछता आज बरसों के बाद तूने इतनी मेरी कदर दानी की कि यहां तक मेरे पीछे लगा।

उस स्त्री की ये बातें सुन मैने जीमे ईश्वर की माया का स्मरण किया कि देखो इस्के मुख मे दांत तक न रहे पर अपने स्वरुप पर कैसी मोहित है कि उन्मत्त पुरुष की भांत बातें कर रही है पीछे मै भी बातों मे उस्का मन रख और अपने प्रयोजन के सिद्धि की संभावना समझ इस तरह पर बात चीत करने लगा; " मैं इस समय नौवाब साहब से मुलाकात को जाता था तुम ऐसी तरहदार को घरसे निकलते देख सब काम काज भूल मोह परवश हो तुम्हारे पीछे हो लिया मै उन मनुष्यों के समान मूर्ख नहीं हूं जो केवल खबसूरती पर मरते हैं ढंग और तरहदारी भी तो कोई चीज है; अब आप अपना हाल मुझे कुछ सुनाइये आप नौवाब साहब के यहां किस तरह पर रहती हो और जो चाहो तो वहां छोड़ और कहीं भी रह सक्ती हो या नहीं मेरी ये बातें सुन मनोमन मगन हो गई और १६ वर्ष की तरुणी " समान हाव भाव से मेरी ओर कटाक्ष की दृष्टि फेंकती मुस्किरा कर बोली " मियां आप क्यों मुझसे बातें बनाते हो मै ऐसी नादान नहीं हूं जो तुम्हारी इन चिकनी चुपड़ी बातों मे आ जाऊंगी तुम तो उस्तादही हो पर मैं भी उस्तादों की दादी हूं " यह कह खिला खिला कर हंस पड़ी कि दोचार दांत जो उस्के मुंहमे बच रहे थे ऐसे नजर आये मानो सियार

के भोठे मे हड्डियों के टुकड़े पड़े हों; मुझको उस समय अद्भुत रूप बनाना पड़ा मन मे तो बड़ी ग्लानि आई परन्तु बाहर से हर्ष और प्रीति प्रगट करना पड़ा ऐसे २ मौकों पर किस तरह बरतना चाहिए इसे मैने उस्तादों से अच्छी तरह पर सीख रक्खा है; मैने भी हंस कर उसकी हंसी का ऐसा जवाब दिया कि उसे निश्चय हो गया कि इस को जवान का जो मुझपर लग गया है बोली ऐ शख्स सच बता मेरे पीछे किस मतलब से लगा है।

मैने फिर हंस कर जवाब दिया आप उस्तादों की दाढ़ी तो बनती हैं पर मेरे मतलब को कुछ न समझ सकीं इस्से मालूम होता है कि आपने उस्तादों की सोहबत की है पर उनका हुनर कुछ नहीं सीखा इतना कह मै मुसकिरा दिया वह चिड्डो फिर बोली अजी साहब मै आपका मतलब सब समझती हूं पर मुझको अचरज इस बात का है कि आप जवान मै बुड्ढी आप मेरे पीछे क्यों लगे? मैने उत्तर दिया जो दुनिया से वाक़िफ़कार हैं वे प्रीति देखते हैं अवस्था नहीं मेरी प्रीति की परीक्षा आपको करनी चाहिए और आप की प्रीति की परीक्षा मै करूंगा; इतनी बात चीत होने के पीछे वह बोली जो आप मुझसे मोहब्बत किया चाहते हैं तो बिसमिल्लाह कीजिए मै सब तरह हाजिर हूं पर मैने भी हजारों आदमी देखे लेकिन आपके समान किसी को न पाया जो उमर पर कुछ खयाल न कर प्रीति ठानलें यह बात सच है कि प्रीति की रीति निराली होती है और जब पैदा हो गई तो आदमी को और किसी बात का खयाल नहीं रहता पर जिनकी उमर एक सी नहीं है उनमे प्रीति का हो जाना कठिन है।

मैने कहा जो दुनिया की हर एक बातों का तजरिबा रखते हैं वे खूब जानते हैं जो पक्के पान मे मजा रहता है वह कच्चे मे नहीं इसी बात पर ध्यान कर मैने अब आपसे प्रीति करना ठाना है अब आप मेहरबानगी कर यह दतलाइये यहां आप क्या काम करती हो और आपसे मुलाकात किस जगह और कैसे हुआ करेगी। उसने कहा मै नवाब साहब की बेगम की खवास हूं और उन्ही के पास अकसर रहती हूं इन दिनों नवाब के घर मे एक नई स्त्री को लोग कहीं से बहका कर लाये हैं आज कल मै उसी की सेवा टहल मे रहती हूं—साहब ऐ

लौट जाते थे परन्तु वे दिन अब अपने के हो गए अब मैं दूसरों की टहल कर अपना पेट पालती हूं; मै नवाब साहब के इसी मकान मे रहती हूं ठीक उसी कमरे के नीचे जहां वह सुन्दरी कैद है जिस्का रास्ता जमना की ओर से है जो आप मेरी चाह से फंस गये हो तो मुलाकात होना कुछ कठिन नही है मेरी कोठरी से एक जीना ऊपर को भी जाता है जिस्का हाल किसी को मालूम नही है मैने सोच रक्खा है कि और कुछ न हो सकेगा तो मै उस औरत को उसी रास्ते से निकाल दूंगी क्योंकि उस्के अपघात करने मे कुछ सन्देह नही उस्से मुझसे कुछ सरोकार नही है पर उस्की खिचाई पर मुझे तर्स आता है; अब मै जाती हूं एक घंटे मे लौट कर आऊंगी आप चाहें तो ११बजे उसी स्थान पर आ जाना मैने उत्तर दिया बहुत अच्छा फिर थोड़ी दूर उस्के साथ चला जब बजार आगया तो उस्के साथ चलने मे अपनी बे इज्जती समझ उस्से रुखसत हो वहीं ठिठक गया और अपने एक नौकर को इशारे से बुलाय हुक्म दिया उस औरत के पीछे २ जा और उस्से कुछ झगड़ा कर मकान उसे न लौटने दे; नौकर को उधर रवाना कर मै मकान को लौटा और मकान से एक हथौड़ा पिस्तौल गोली और बारूद लेकर यमुना के किनारे उसी ठौर पहुंचा जहां उसने बताया था और देखा तो एक खिड़की मे दिया जल रहा था और कान लगा कर सुना तो एक स्त्री के रोनेका शब्द सुनाई पड़ा मै जान गया यह वही मकान है फिर खोजते २ वह दरवाजा भी मिला मैने उस्का ताला तोड़ डाला और भीतर से सांकड़ बन्द करली फिर उसी जीने की राह से दरवाजा हथौड़े से तोड़ जिस समय आप कोने मे खड़ी ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं उसी समय मै आपके कमरे मे पहुंच पलङ्ग के तले जा छिपा पीछे जो हाल हुआ आप सब जानती ही हो। क्रमशः

नकटों का पन्थ।

एडिटर महाशय यह तो आप जानतेही हैं कि लक्ष्मण जी ने सूर्पणखा की नाक काटी थी तब से एक नकटा पन्थ चल निकला है और आज तक उस पन्थ के लोग बढ़तेही जाते हैं उसी लक्ष्मण महाराज की अनुकरण पर

इलवर्ट बिल के विरोधी अङ्गरेजों ने इनसाफ़ और डाह की नाक काट ली; स्वामी दयानन्द ने भाष्य बनाकर वेद की नाक काट ली; खुशामद की नाक भेड़ राजा शिवप्रसाद ने काटी; गीदड़पन की नाक अ०ब०सुधा ने काटी; तेजी की नाक कलकत्ते के अखबारों ने काटी; एडिटरों की नाक नादिहन्दों ने, आलस्य की नाक हिन्दुस्तानियों ने, उद्योग की बिलायत वालों ने हिन्दी में नाटक रचने वालों की नाक काशीनाथ सिरसा ने; झूठी सच्ची व्यवस्था दे २ धर्मशास्त्र की नाक काशी के पण्डितों ने काटी; औ उर्दू की नाक नागरी ने काटी और नागरी की नाक बिहार में कैथी प्रचलित होने से कट गई; नज़ाकत की नाक नखलौओं ने काटी; ईमानदारी की नाक अदालत ने काटी; रिशवती अमलों की नाक यहां के रेजिस्ट्रार मि० जेम्स ने अत्याचार की नाक पुलिस ने; हिन्दुओं के देवी देवताओं की नाक अदालत में मूर्ति तलब कर मौरिस साहब ने सवारियों की नाक रेल ने काटी; पण्डिता स्त्रियों की नाक रमाबाई ने काटी; सत्प्रबन्ध की नाक म्युनिसिपलिटी ने; प्रेस ऐक्ट की नाक श्री मान् लार्ड रिपन ने; और हम हिन्दुस्तानियों की बुराई चाहने वालों की नाक प्रायोनियर साहब ने; कहां तक गिनावैं यह नकटा पन्थ दिन २ बढ़ताही जाता है।

पं० विजयानन्द शर्मा
भदइनी बनारस।

इलवर्ट बिल के तूफान

हाल में अवध पञ्च और मित्रविलास के एडिटरों ने अपने २ पत्र में इस बात को सिद्ध किया है कि अंगरेज़ दोगले किरानी और हम काले आदिमियों पर दैवी मानुषी या भौतिक जो २ आफतें आ पड़ती हैं वह सब इसी इलवर्ट बिल के बदौलत; कलकत्ते में एक मेहतर ने मेम सा-

हब की क्यों छेड़ा ? इसी इलबर्ट की बदौलत ; साहब बहादुर को चपरासी ने क्यों ठोंका ? इसी की बदौलत ; इस साल शिमले और नैनीताल में गरमी अधिक क्यों पड़ी ? इसी की बदौलत ; हैज़ा क्यों फैला ? इलबर्ट की ब दौलत ; सूरत में अति वृष्टि हो ने से सैकड़ों आदमी की जान और लाखों का नुकसान क्यों हु आ ? इलबर्ट की बदौलत ; मेम साहब के साये में छुछूंदर क्यों घु सी ? इसी की बदौलत ; बाबा लोगों को बर्रें ने क्यों काटा ? इलबर्ट की बदौलत ; नहीं तो क्या कारण कि तलाशी लेने पर उनके छत्ते से इलबर्ट बिल के कुछ पन्ने निकले ; मि० जानबुल को खफगान क्यों हुआ ? इसी की बदौलत ; पिलपिली साहब को पागल कुत्ते ने क्यों काटा ? इलबर्ट बिल के सबब ; क्योंकि इङ्गलिश मैन लिखता हमने अप श्रम उस कुत्ते को इलबर्ट बिल प ढ़ते देखा है ; साहब और मेम साहब में जूती पैजार क्यों चली? इसी की बदौलत ; मटिया फूस साहब के छप्पर मे आग क्यों ल गी ? इलबर्ट बिल के कारन ; साहब के कपड़े दीमक चाट गए इसी की बदौलत ; किताबें कीड़े खा गए बटन धोबी के घर टूट कर रह गए सब इसी की बदौल त ; क्या कहें जितनी आफतें अं गरेज़ या हिन्दुस्तानियों पर प ड़ी या पड़ती हैं सब इसी की ब दौलत; पंजाब और उत्तरी हिन्दु स्तान में जो अवर्षण हो रहा है काल पड़ने की पूरी आशा है व ह भी इसी बिल की बदौलत; अ वध पञ्च साहब लिखते हैं श्रीम- ती महारानी अपनी गवर्नमेंट और अपनी कौम की बात और इज्जत रक्खा चाहें तो इस कमब ख्त बिल को न पास होने दें नहीं तो साहब लोग फिर कौड़ी के तीन २ हो जायंगे कोई बात न पूछेगा ; वास्तव में इस बिल भूत का डर हमारे साहबान अङ्गरे जों को ऐसाही है नहीं तो इस

रा कोई कारण नहीं जान पड़ता कि हर एक बात को ये लोग इलबर्ट बिल के साथ मिला कर गवर्नमेन्ट अपने कर्तव्य कर्म से रोकने को यहां और विलायत में इस भांति अन्दोलन मचाए हैं ; पायोनियर साहब कई बार लिख चुके हैं कि इस बिल के कारण बलवा होने का डर है हम अपनी न्याय परायण गवर्नमेंट को इस बात का निश्चय कराते हैं कि विद्रोह या अशान्ति जो कुछ हो सब उन्ही की ओर से होगी हम लोग किस माथे और कौनसी करतूत के भरोसे सिर उठा सक्ते हैं बल्कि हम लोग जैसे राजभक्त और सरल चित्त हैं यह बात लार्ड रिपन साहब के कोमल शासन Mild government ने भर पूर प्रगट कर दिखाया जो उन की उदार नीति पर निछावर हो बार २ मानी भी रही हैं हां यह बात कितने अंगरेज महाशयों को अलबत्ता नहीं सोहाती और लार्ड रिपन की उदारता के आगे उनकी कुछ न चल सकी तो बलवाही करने की भय गवर्नमेंट को दिखलाय अपने हसदी मन को मना लेते हैं।

प्रजा का हृदय विदारण।

जिस प्रजा के सताने के लिये आधि दैविक आधि भौतिक आधि दैहिक और ईति भीति आदि महोपद्रव निकले हैं कि जिन महोपद्रवों के निवारण और दमन के लिये जगदीश्वर ने राजा वा गवर्नमेंट को बनाया है हा कष्ट !!! उसी गवर्नमेंट की तरफ से हम प्रजाओं के हृदय विदारण का ऐसा प्रयत्न किया जाय कि जिससे हमारा कोमल हृदय सरोवर कि जिसमे राजभक्ति रूपा कमलिनी विकसित होती जाती हैं जल के खाक हो जाय; वह ज़हर से बुझाया हुआ प्रयत्न यह है कि अंगरेजी दफ्तरों और अङ्गरेजी भाषा वाले ओहदों पर वह हिन्दुस्तानी न नियत किया जाय जो हिन्दी भाषा

के साथ मिडल वा इंट्रेंस वा
एफ ए बी॰ए॰वा॰ एम॰ए॰ पा
स हो जबतक फ़ारसी उर्दू रूपी
सुर्खाब का पर न लगा हो—ठी
क है इस मद प्रजा इसी लायक हैं
अजापुत्रंबलिंदद्यात् दैवोदुर्बलघा-
तकः निस्सारांकदलींमत्वा छित्तु
कोनससुदाते—काटोसांप जहांमन
माने—महाराजाधिराज आप
को सबकुछ सामर्थ्य है चाहो हि
न्दी सहित अंगरेजी के उलीमों
की नाक कान कटवाओ औरर
जो जीमे आवे सो करो—हरह
री धरही को करै जो जननि सुत
हि विष देई—आपकी गोद मे प
ड़े हुए हैं जो जो सत्कार मन मे-
आवे करो अपराध और कसूर दि
न प्रति दिन बढ़ता ही जाता है
कि मातृ भाषा के साथ साथ रा
ज भाषा की उपासना करते हैं
फ़ारसी उर्दू की खिदमत गुज़ा
री से महरूम हैं ऐहुजूर फ़ैज़ गंजू
र नौवाब फ़ल्क शौकत खुरशैदर
काब यह खता इस गरीब रिया
या की ज़ात खासही से नहीं पैदा
हुई—किसी समय यह पश्चिमो-
त्तर देश अखंड कला निधि की प्र-
काश से प्रकाशित होगया था
और उस दयालु चंद्रमा का ना
म तामसन साहब बहादुर वैकुंठ
बासी था की जिनकी लफ्नेंट ग
वर्नरी ने यहां की मुख्य देश भा-
षा हिन्दी की बांह पकड़ी और
सौभाग्यप्रधान किया बांह गहे की
लाज बड़ों को अवश्य होती है इ
स मे कुछ संदेह नहीं है कि उक्त
वैकुंठ बासी की आत्मा इस लो
क मे होती तो अपने कृत कर्म
का फल करती न मालूम उनकी
पाक रूह किस लोक मे विराजमा
न है पर यह काम उन्होंने लफ्नें
ट गवर्नरी की योग्यता से किया
था; उक्त कर्म का निबाह हर एक
पद धारी को उचित है और बहु
तों ने किया भी ऐडमिनस्टन सा
हब बहादुर ने हिन्दी गजट जारी
कियाथा सर विलियम म्यौर ने
इनाम दे दे कर अनेक प्रकार की
ग्रंथ रचना से अधिक हृष्ट पुष्ट ब
नाया हर एक ज़िले लों स्कूल ब

धिक शोभा बढ़ाई और अब तक उसकी चमत्कारी राजराजेश्वरी की श्री के साथ साथ बढ़ती जाती है; यह सब कुछ है पर न मालूम किस दृष्टि ग्रह के फेर मे पड़गई शायद संगति के प्रभाव से लखनऊ मे रहते २ बक़रीद के दिनों में सरजार्ज कूपर बहादुर को हिन्दी की कुर्बानी का ख्याल पैदा हुआ हो; हा अफ़सोस है कि उक्त पुण्यशाली तामसन बहादुर ने इस अनुमान से इस को नहीं पाला कि यह हिन्दी भाषा सब प्रकार से हृष्ट पुष्ट होगी तो इसका गला पशुओं के समान काटा जायगा वरन उनके उन्नत हृदय मे यह अभिलाषा थी कि इस मुख्य देश भाषा की वृद्धि और प्रचार के द्वारा ब्रिटिश राज्यामृत सुधा फैलाये जांयगे और प्रजाओं के अंतस का अलर्क दोष शान्त किया जायगा इस मे कुछ संदेह नहीं कि जैसा उस पवित्रात्मा ने सोचा था वैसाही प्रत्यक्ष दीखने लगा हिन्दी भाषा का प्रचार और हिन्दी पुस्तकों का खर्च जैसा कुछ है वह सरिश्ते तालीम की रिपोर्ट से भी प्रगट है हमको वह क्लेश उतना असह्य नही है जो हिन्दी के अनादर और इसके प्रचार निर्मूलन प्रयत्न से हमारा हृदय जला जाता है और रोम २ से आह की लपक उठती है आंसू नही है मानो रक्त की धारा है जितना क्लेश हम लोगों को उस अपयश और कलङ्क का है कि जिससे श्री मती राज राजेश्वरी के विजय खंभ और न्याय पताका मे दाग लगा जाहता है खास कर ऐसे समय पर जब कि गवर्नर जेनरल और हमारे लेफ़िनेन्ट गवर्नर दोनों दयाशील और हमारे रीड साहब और ह्वाटन साहब बहादुर सेक्रेटेरियों के न्यायोपवन मे यह अन्याय भारवेरी नही सोहती कि हिन्दी सहित अंगरेज़ी का उत्तीर्ण छात्र अंगरेज़ी दफ़्तर मे काम न पावेगा जिस का बर्ताव शायद अब एकौन्टेंट जेनरल के दफ़्तर

मे हो रहा है यदि गवर्नमेन्ट इस हुक्म का संशोधन नहीं करती और अंगरेजी भाषा के ओहदे के लिये हिन्दी उर्दू को तुल्य योग्यता नही देती तो मानो अपने किये हुए अपरिमित और असंख्य उपकार को प्रजा से फेरा चाहती है हां जिस अंगरेजी ओहदे के लिये फारसी उर्दू की ज़रूरत हो उसमे उसकी कैद ज़रूर है और जिस ओहदे मे केवल अंगरेजी का काम है उस का उम्मेदवार चाहे हिन्दी सहित पास हो वा उर्दू सहित कोई फर्क न रहना चाहिए; हे साहबान अंगरेज़ो हम लोग आपसे विनय सहित प्रार्थना करते हैं कि आपको जगदीश्वर ने सब प्रकार की शक्ति दी है इस समय चाहो तो समुद्र को सुखादो पहाड़ों को टुकड़े २ कर डालो इस स्वर्णमयी वसुधा से जो मांगो सब तैय्यार है सोना चांदी तामा सीसा रांगा हीरा पन्ना मणि माणिक आदि जो कुछ पदार्थ हैं सब तुम्हारे ही लिये हैं पर इंसाफ रूपी जवाहिर को बचाये रहो उसपर न चोट करो यहां तक तो देखते हो कि हमी लोग जोत बोके नाज पैदा करते हैं पर जब भूख लगती है तो तुम्हारे बंगले पर हाथ जोड़ के मांगते हैं कि हुजूर आधसेर आटे की परवरिश हो तब भी आप लोगों को ऐसी दीन प्रजा पर दर्द न आई उलटा सलूक क्या हुआ कि इनकी बोल चाल और अक्षर भी दुनिया से उड जांय हम खूब जानते हैं कि आप हमें चाहें जितने बडे ओहदे पर नियत करें उस नौकरी से हम इन्द्र न बनेंगे किन्तु आपके सेवक रहेंगे रहा यह कि अपनी बोलचाल सब को प्यारी होती है कि जिसके लिये चिल्लाते २ कंठ सूख गया जिह्वा जड़ होगई फल यह दीख पड़ा कि हिन्दी की जड कट जाय फारसी की बेल फैले, अस्तु प्रभु समरथ कोशल पुर राजा। जो कुछ करैं उन्है सब छाजा॥ हमारी प्रार्थना का

मुख्य सिद्धान्त और निचोड़ यह है कि ब्रिटिस गवर्नमेंट को अगत्या न सब धर्मों से बढ़ कर न्याय रूपी अचल धन दिया है सो जिस काम से उसकी रक्षा होती रहे वही मुख्य ठहरे और हमारी भाषा हिन्दी के बड़े भारी विपक्षियों लोगों के सरगनह के ज़रा से शोर से हमारे न्याय परायण हुक्काम मोम की नाक न बन जांय ।

अनोखे जज का अनोखा फैसला ।

आगरे मे स्टेपिलटन नामी एक गाड़ी माज अगरेज ने मुनस्मात दिवालिया को बे क़ुसूर चाबुकों से पीटा था इस लिए वहां के कानूनमेंट मैजस्टरेटने उक्त साहब को ताज़ीरातहिन्द दफ़ा३२३ के अनुसार २०) जुरमाना और १ महीने के सख्त कैद की सज़ाय दी ; अपील होने पर वहां के सेशन जज ने यह आज्ञा दिया चूंकि स्टेपिलटन साहब का यह पहला क़ुसूर है और जेल में इन दिनों गरमी और बीमारी बहुत है इस लिए कैद के एवज़ ५०) जुरमाना साहब से और ले साहब को रिहाई कर दी जाय तो इस थोड़े से अदल बदल मे इन साफ़ मे किसी तरह का फर्क न हीं पड़ सक्ता ; धन्य ऐसे आदिल मुनसिफ ? काहे को कोई ऐसा गम्भीर बुद्धि वाला हाकिम पैदा हुआ होगा जो अपने भाई बन्धु अङ्गरेजों के मिजाज और तबियत को इस क़दर समझे हुए हो इन साफ क्या खाला जी का घर है साहब का पहला क़सूर किसी क़ुसूर की गिनती मे नहीं है और फिर जिस जेल की गरमी और बीमारी में काले हिन्दुस्तानी पड़े सड़ा करें उन्ही के बराबर साहब भी रक्खे जांयगे तो गोरे चमड़े की इज्जत क्या रही इलबर्ट बिल के विपक्षियों को यह बात याद रखने लायक है ।

Printed at the "Light Press," Benares, by Gopeenath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.